Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और जमाना बदल गया...

जमाना बदल गया-4

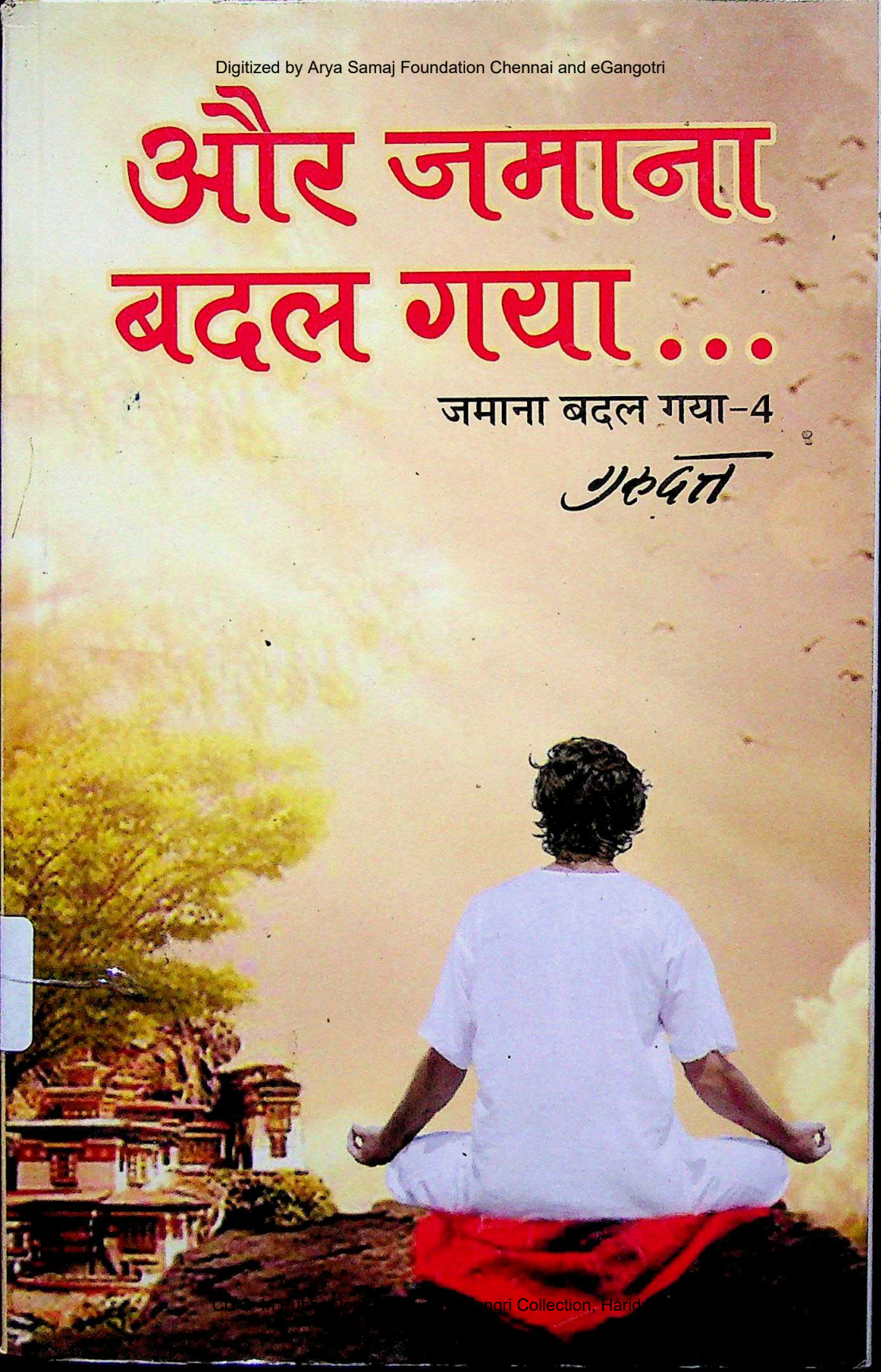

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection, Haridwar

167893
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्ष साहित्य
Complete Vedic Books Store
Yog, Vedic, Ayurvedic, Relegious
All Yog & Organic Products
(M) 9541317278, 8869821468
Web.: aarshsahitya.com

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

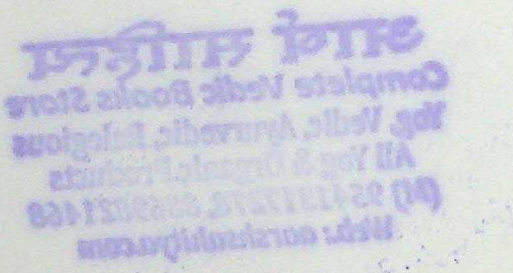

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और... जमाना बदल गया

जमाना बदल गया भाग-4

आर्ष साहित्य
Complete Vedic Books Store
Yog, Vedic, Ayurvedic, Relegious
All Yog & Organic Products
(M) 9541317278, 8869821468
Web.: aarshsahitya.com

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

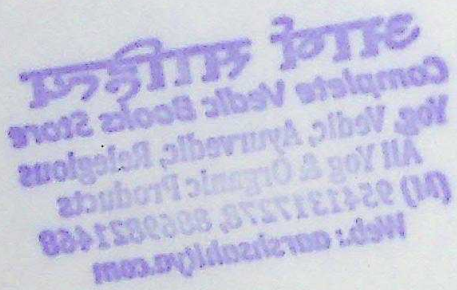

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और... जमाना बदल गया

जमाना बदल गया भाग–4

167893

गुरुदत्त

081
167893

आर्ष साहित्य
Complete Vedic Books Store
Yog, Vedic, Ayurvedic, Relegious
All Yog & Organic Products
(M) 9541317278, 8869821468
Web.: aarshsahitya.com

हिन्दी साहित्य सदन
नई दिल्ली–110005

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

R
089.9143
GUR-A

और... जमाना बदल गया

जमाना बदल गया भाग-4

© लेखकाधीन

मूल्य	:	रु. 550/–
संस्करण	:	प्रस्तुत रूप में प्रथम बार 2020
प्रकाशक	:	हिन्दी साहित्य सदन, 2 बी.डी. चैम्बर्स, 10/54 देशबंधु गुप्ता रोड, करोल बाग (पुलिस स्टेशन के समीप) नई दिल्ली–110005
ई–मेल	:	indiabooks@rediffmail.com hindisahityasadan@gmail.com
वैबसाइट	:	www.hindisahityasadan.com
दूरभाष	:	9213527666, 07065618655, 011–23553624
ऑफिशियल व्हाट्सऐप	:	9213527666
पृष्ठ संयोजन	:	विकास सैनी (09971840182)
मुद्रक	:	गोयल एन्टरप्राइसिस, नोएडा

Aur... Jamana Badal Gaya (Jamana Badal Gya Part-4)

By Guru Dutt

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

क्रम	विषय	पृष्ठ
	प्राक्कथन	7
1.	प्रथम परिच्छेद	11
2.	द्वितीय परिच्छेद	80
3.	तृतीय परिच्छेद	166
4.	चतुर्थ परिच्छेद	256
5.	पंचम परिच्छेद	355

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राक्कथन

इस उपन्यास को समाप्त करते हुए मुझे केवल इतना निवेदन करना ही शेष रहता है कि पूर्ण सौर–जगत में केवल पृथ्वी पर प्राणी–सृष्टि का होना ही अभी तक पता चला है। चाँद के विषय में तो बहुत कुछ चित्रित भी कर लिया गया है। कदाचित् कुछ ही वर्षों में मनुष्य वहाँ भी घूम आयेगा। यह बात भी निश्चित ही है कि मनुष्य को वहाँ अपनी प्रतिलिपि नहीं मिलेगी।

प्रश्न उपस्थित होता है कि पृथ्वी की यह विशेषता क्यों? यहीं पर कोटि–कोटि प्रकार के जीव–जन्तु और फिर उनमें मनुष्य जो लाखों मीलों की छलाँगें भरने लगा है, क्यों? अन्य दृश्य–अदृश्य नक्षत्र–ग्रहों आदि पर यह क्यों नहीं?

इसके साथ ही प्रश्न उपस्थित होता है कि अपने विचार से लाखों तथा अन्य अल्पज्ञों के विचार से सहस्रों वर्ष से भारतीय साहित्य, संस्कृति सभ्यता क्यों जीवित है? दूसरे देशों में ऐसा क्यों नहीं हो सका? जहाँ अन्य देशों में इतिहास की खोज वर्तमान से पीछे अन्धकार की ओर है, वहाँ भारत में खोज एक प्रकाशमान बिन्दु से वर्तमान के अन्धकार (अज्ञान) की ओर है। यह क्यों है?

आज से लाखों वर्ष पूर्व ऋषि यह कह गये थे–

न चित्स श्रेयतो जनो न रषन्मनो यो अस्य घोरसाविवासात्
यज्ञैर्य इन्द्रदधते दुवांसि सयत्स राय ऋतया ऋतेजाः।।

– ऋग्वेद 7–20–6

कोई ऐसा पुरुष अथवा जातिभ्रष्ट, घाटे में अथवा मरती नहीं, जो अपने मन्तव्य को, कष्ट एवं क्लेश सहकर भी पालन करती है, जो यज्ञों (लोक कल्याण) के द्वारा अपने पुरुषार्थ को परमात्मा में अर्पण करती है। ऐसा पुरुष अथवा ऐसी जाति सत्य की रक्षा करती है, धर्म पुत्रों को उत्पन्न करती है और धन–धान्य से सम्पन्न होती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहस्रों वर्ष पूर्व ऋषि ने यह कहा था–

ऊर्ध्व बाहुर्विरोभ्येष न च कश्चिच्छृणोति मे
धर्मादर्थश्च कामश्च स किमर्थं न सेव्यते।।

– म. भा. स्व. 5–62

मैं दोनों हाथ उठा–उठाकर कह रहा हूँ, धर्म का पालन करो। इससे मोक्ष तो मिलता ही है परन्तु अर्थ और काम भी प्राप्त होता है। इसपर भी मेरी बात कोई नहीं सुनता और इसका पालन नहीं करता।

लाखों और सहस्रों वर्ष पूर्व की कही बात भारत देश में आज भी कही जाती है। यह क्यों? अन्य देशों में खण्डहर मौन पड़े हैं। यहाँ वे सजीव चैतन्य रूप पथ–प्रदर्शन के लिए पुकार–पुकार कर कह रहे हैं। यह क्यों है?

इसका उत्तर जड़वादी अंट–संट देते हैं परन्तु किसी को उससे सन्तोष हुआ है क्या?

मूढ़ अभिमानी लोग यह कहते फिरते हैं कि यह 'एटम–एज' है। परन्तु प्रश्न तो यह है कि क्या इससे भूमण्डल में अधिक शान्ति है? क्या प्रतिमास क्रान्तियां, राजनीतिक हत्याएँ, गोली वर्षा अथवा राग, द्वेष, क्रोध, लोभ, मोह, अभिमान का प्रदर्शन कम हो गया है? क्या इस सम्पूर्ण तकनीकी उन्नति से मानव मन को शान्ति प्राप्त हो रही है?

शान्ति, सुख, निश्चिन्तता और निर्भयता तो दिखाई देती नहीं। यह क्यों? यदि यह कहूँ कि मैं दोनों हाथ उठा–उठाकर कह रहा हूँ कि धर्म का पालन करो, यही सुख, शान्ति और आनन्द का मार्ग है, अन्य सब गौण हैं; और यदि यह कहूँ कि धर्म का स्वरूप समझना चाहते हो तो भारतीय शास्त्रों को देखो, तो क्या गलत कहता हूँ? शास्त्र कहता है–

श्रूयतां धर्म सर्वस्वं श्रुत्वा चैवाव धार्यताम्।
आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्।।

पूर्ण धर्म का स्वरूप सुनो और उसका पालन करो। जो कुछ तुम्हें अपने लिए हितकर प्रतीत नहीं होता, उसका व्यवहार दूसरों पर न करो।

भूमण्डल में अन्य कहाँ इतना विषद्, इतना व्यापक, ऐसा अजर तथा अमर विचार दिखाई देता है। यह सन्देह रहित है कि पूर्ण सौर–जगत् में पृथ्वी विशेष विभूति युक्त ग्रह है। यह भी निश्चय है कि पृथ्वी पर भारत और भारतीयता में विशेषता है।

परन्तु यह सौ वर्ष के इतिहास का चलचित्र तो भटक रहे भारत का चित्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
है। इसको मोड़ मिलना चाहिए। मिलेगा। इसी में इसका कल्याण है। भूमण्डल का भी कल्याण इसी में निहित है।

'कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी।'

बात यह है कि यह हस्ती सत्य पर आधारित है।

वैसे तो यह उपन्यास है। इसके मुख्य पात्र काल्पनिक हैं। कुछ ऐतिहासिक पात्रों का भी इसमें समावेश है। यत्न किया गया है कि उनकी बातें अधिक से अधिक सत्य लिखी जायें। इसपर भी किसी के अपमान का कोई प्रयोजन नहीं है।

—गुरुदत्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रथम परिच्छेद

14 अगस्त, 1947 की प्रातः, आठ बज के लगभग कराची के गवर्नमेन्ट हाउस में मिस्टर मुहम्मद अली जिन्ना बेडरूम में अपने बिस्तर पर बैठे "बेड टी" ले रहे थे। बैरा चाय लेकर आया था और सामने खड़ा था। नियमानुसार तो चाय दे कर उसको चला जाना चाहिए था, परन्तु आज वह गया नहीं, खड़ा रहा।

जिन्ना ने चाय का घूँट ले, अपनी सुस्ती दूर करते हुए, प्रश्न भरी दृष्टि से बैरा की ओर देखा। बैरा इस दृष्टि का अभिप्राय समझ बोला, "साहब! मुबारकबाद देने के लिए खड़ा हूँ।"

"किस बात की मुबारकबाद दे रहे हो, जॉन!"

बैरा क्रिश्चियन था और जिन्ना साहब के पास वह पिछले बीस वर्षों से काम कर रहा था। वह बम्बई में 1928 में नौकर हुआ था। उसकी अपनी बीवी थी। वह भी उसके साथ ही जिन्ना साहब के बँगले 'मालाबार हिल' पर रहती थी। अब दो महीने से वे कराची में आकर रहने लगे थे और तीन दिन हुए वे जिन्ना साहब की बहिन मिस फातिमा के साथ गवर्नमेन्ट हाउस में आ गये थे।

पिछले दो दिन से जिन्ना साहब भी इस मकान में ठहरे हुए थे। 13 अगस्त को भूतपूर्व वाइसराय–हिन्द लार्ड माउन्टबेटन भी इसी मकान में आये हुए थे और वह पाकिस्तान का चार्ज जिन्ना साहब को दे गये थे। दोनों महापुरुष पिछली रात कई घण्टे तक बन्द कमरे में बैठे भावी नीति के विषय में विचार करते रहे थे। इनकी बातों में केवल एक व्यक्ति और सम्मिलित थे। वह थे बैरिस्टर लियाकत अली खाँ। लार्ड माउन्टबेटन साहब तो रात को ही अपने निजी हवाई जहाज में सवार हो दिल्ली चले गये थे। उनके जाने के उपरान्त दोनों पाकिस्तानी नेता आधा घण्टा–भर बातचीत करते रहे। दोनों अपने–अपने सोने के कमरे में रात के दो बजे के लगभग गये थे। इसी कारण जिन्ना साहब आज आठ बज जाने पर भी अभी सुस्ती अनुभव कर रहे थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जॉन फ्रांसिस अपने साहब का प्रश्न सुनकर मुस्करा दिया। उसने मुबारकबाद का कारण बताने के स्थान पर कहा, "साहब, अन्ना भी इस मुबारकबाद देने में शामिल है।" अन्ना जॉन की पत्नी का नाम था।

"शायद तुम लोग मेरे गवर्नर हो जाने की मुबारकबाद दे रहे हो।"

"हुजूर! हमारी नजरों में तो आप गवर्नर से बहुत कुछ ज्यादा पहिले ही थे। हम तो आजाद पाकिस्तान के आज पहिले दिन की मुबारकबाद दे रहे हैं। यह आपने एक मौजिजा[1] कर के दिखा दिया है।"

"क्या मोजिजा हुआ है इसमें?" जिन्ना ने संतुष्ट हो चाय लेनी आरम्भ कर दी।

जॉन मुँहलगा नौकर था। उसने मुस्कराते हुए कहा, "एक भी जान की कुरबानी के बिना आपने एक नया मुल्क पाकिस्तान बना दिया है।"

"और यह मैंने किया है?"

"इसमें भी कोई शक कर सकता है, साहब!"

"नहीं जॉन! न तो यह मेरे किये से हुआ है, न ही यह उन हजारों मुसलमानों के जिबह हो जाने की वजह से हुआ है जो दिल्ली, पटियाला, फरीदकोट, अमृतसर वगैरा में इन काफिरों ने किये हैं।"

"तो यह खुदा के करने से मानें। और खुदा ने आपकी...।"

खुदा का नाम सुन जिन्ना ने प्याला पलंग के समीप रखी चौकी पर रख कर कह दिया, "ओह, नो। वह खुदा नहीं हो सकता। वह जरूर शैतान था। जानते हो वह कौन था?"

जॉन कुछ न समझता हुआ मुख देखता रहा। जिन्ना साहब उसकी परेशानी देख हँस पड़े और हँस कर बोले–"क्यों, परेशान किस लिए हो जॉन! मैंने तुम्हारे खुदा को शैतान नहीं कहा और न ही यह पाकिस्तान उसने बनाया है।

"साथ ही यह समझ लो कि मैं उसका पैगम्बर नहीं हूँ, जिसने यह पाकिस्तान बनाया है। मैं तो उसके सामने बिका हुआ गुलाम हूँ।"

जॉन अभी भी कुछ नहीं समझा। वह अपने मालिक के इस कहने पर तो संतुष्ट हुआ था कि उसने खुदा को शैतान नहीं कहा, परन्तु वह समझा नहीं कि किसने यह पाकिस्तान बनाया है जिसको उसका विद्वान मालिक शैतान कहता है! जिन्ना ने बिस्तर से निकलते हुए कहा, "सुन लो। आइन्दा मुझको

---

1. चमत्कार।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस काम का मूजद[1] मत कहना। यह पाकिस्तान एक इन्कलाब पसन्द जला–वतन मौलवी अबीदुल्ला के दिमाग की इख्तराह[2] है। उस नीम–पागल ने इसका बीज डाला था। इसको मदद मिली है, हमारे मुल्क के एक निहायत काबिल शायर सर इकबाल से; मगर इसको पैदा किया है हिन्दुस्तान की अंग्रेजी सरकार ने, जिसने इकबाल साहब को सर का खिताब दिया था। इसके पैदा होने के वक्त ऐटली साहब ने दाई का काम किया और लार्ड माउन्टबेटन ने डॉ. बन इसको पैदा होते ही मरने से बचा लिया है।''

''तो हुजूर, शैतान कौन है इनमें?''

''हिन्दुस्तान की अंग्रेजी सरकार। मेरा मतलब है यहाँ की 'ब्यूरोक्रेटिक[3] सरकार। वह शैतान थी। उसने अबीदुल्ला के ख्वाब को अपने हमल में रखा, पाला–पोसा और वक्त आने पर इसको इस दुनिया में पैदा किया। पैदा होने के वक्त यह नौकरशाही मर रही थी। ऐटली साहब इसकी देखभाल कर रहे थे। ऐसा मालूम होता था कि उनकी देखभाल के बावजूद बच्चा पैदा होने से पहिले ही मर जाता। इसलिए ऐटली साहब ने 'डाक्टर.' माउन्टबेटन की खिदमात हासिल कर उसे यहाँ भेज दिया।''

''और मालिक! आप इस तस्वीर में कहाँ हैं?''

''मुझको उस शैतान औरत, हिन्दुस्तान की अंग्रेजी सरकार ने बेदाम का गुलाम बना लिया था। मुझको यह काम दिया गया है कि इसके बड़े हो जाने तक मैं इसकी परवरिश करूँ। डाक्टर तो यहाँ बहुत देर तक रह नहीं सकता। उसके बाद मुझको उसकी देखभाल करनी होगी।''

''मगर हुजूर! इसको मारने वाला कौन है? गांधी, जवाहर ने तो इसकी हिफाजत का वायदा किया है। उन्होंने इसकी हिफाजत के लिए बहुत कुछ किया भी है और कर रहे हैं।''

''ये गांधी और जवाहर भला क्या कर सकते हैं? मगर तुम नहीं जानते और मैं जानता हूँ कि हिन्दुस्तान गांधी, जवाहर के पहिले भी था और उनके बिना भी रहने वाला है। वह है हिन्दू–इण्डिया।

''हिन्दू–हिन्दुस्तान। इसके हाथ से पाकिस्तान पैदा होने से पहिले ही जिबह किया जाने वाला था और इसी से इसको आइन्दा में डर है।

---

1. जन्मदाता।
2 उपज।
3 नौकरशाही।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"देखो जॉन! अगर पाकिस्तान का बनाना एक–दो साल तक रुक जाता तो आसार कुछ ऐसे थे कि गांधी–जवाहर से लीडरी छिन जाती। हिन्दुस्तान में सावरकर और मुखर्जी नेता बन जाते और तब यहाँ सिविल–वार हो जाती। अंग्रेजी नौकरशाही तो जहाज में सवार हो बम्बई से रवाना हो जाती और मराठे, सिख, राजपूत, जाट सब मिलकर पाकिस्तान को दफना देते।

"यह तो ऐटली साहब ने, पाकिस्तान की अम्मी की नाजुक हालत देख डाक्टर माउन्टबेटन को यहाँ भेजा है और उसने कोशिश कर वक्त से पहिले ही 'डिलिवरी' करा दी है और अब इस सतमाहे बच्चे को रूई में लपेट कर रखने तथा नर्सिंग करने के लिए मुझको तैनात कर दिया है।"

जॉन था तो ईसाई, परन्तु वह अपने को और अपने मजहब को मुसलमानों के हाथों में अधिक सुरक्षित समझता था और हिन्दुओं से वह भी घृणा करता था।

जॉन फ्रांसिस सागर तट पर रहने वाले माहीगीरों में से था। वह मुसलमान था मगर एक ईमाई लड़की के मोह–जाल में फँस ईसाई हो गया था। उस समय इसका नाम जॉन मुहम्मद से जॉन फ्रांसिस रखा गया। फ्रांसिस एक ईसाई महात्मा का नाम है। जॉन की पत्नी अन्ना एक ईसाई बने हिन्दू की लड़की थी। यह अभी बच्ची ही थी कि इसका बाप हिन्दुओं की घृणा और उत्पीड़न से व्याकुल हो ईसाई बन गया था। अन्ना उस समय छोटी–सी बच्ची थी। उस समय की अवस्था का एक धुँधला सा ज्ञान अन्ना को था और वह ज्ञान सुखद् नहीं था। अन्ना के पिता के ईसाई हो जाने के उपरान्त उसको परिवार की सुख–सुविधा का ज्ञान भी था। इससे वह संतुष्ट थी।

जब जान मुहम्मद का अन्ना से परिचय हुआ और वह उससे विवाह की अभिलाषा करने लगा तो अन्ना ने कह दिया, "ईसाई हो जाओ।"

"क्यों?"

"सुख मिलेगा।" अन्ना का कहना था।

सुख का चित्र खींचा गया तो जान मुहम्मद जॉन फ्रांसिस हो गया। अन्ना ने उसको अपने पिता के द्वारा एक पारसी सेठ के पास नौकर करा दिया। वहाँ से वह मुहम्मद अली जिन्ना की नौकरी में चला गया। उस समय जिन्ना साहब बम्बई में वकालत करते थे, परन्तु राजनीतिक दृष्टि से वे एक कटी पतंग के समान थे।

सन् 1912 से लेकर 1921 तक ये कांग्रेस के एक ख्याति प्राप्त नेता बने रहे थे। कांग्रेसियों के प्रोत्साहन पर ही आपने मुस्लिम लीग में कार्य आरम्भ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
किया और उसके नेता बन गये। कांग्रेस का इसमें एक उद्देश्य था। हिन्दुओं में कांग्रेस की प्रतिष्ठा कम हो रही थी। हिन्दुओं के मस्तिष्क में श्री बालगंगाधर तिलक, लाला लाजपत राय और बाबू विपिनचन्द्र पाल का प्रभाव बढ़ रहा था। हिन्दू क्रान्तिकारी साधारण हिन्दू जनता का देवता बन रहा था। कांग्रेस के नेता अपनी शिक्षा तथा व्यवसाय के कारण तिलक आदि के साथ नहीं जा सकते थे और क्रान्तिकारियों का तो नाम सुनकर ही उनको पसीना छूटने लगता था।

इस कारण कांग्रेस की प्रतिष्ठा जन–साधारण की दृष्टि में गिर रही थी। इस प्रतिष्ठा को ऊँचा करने के लिए कांग्रेस के प्रायः सब तत्कालीन नेता विचार करने लगे। इस निमित्त मुसलमानों को कांग्रेस में खींच लाने का यत्न किया गया। सर आगा खाँ और कुछ अन्य अंग्रेजी सरकार–भक्तों ने अंग्रेजी सरकार की फूट डालने की नीति को सफल करने के लिये मुस्लिम लीग स्थापित की थी। इसकी स्थापना 1907 में हुई थी। पढ़े–लिखे मुसलमान और अलीगढ़ कालेज के ग्रेजुएट इस मुस्लिम लीग में नेता थे। जिन्ना साहब को लीग में सम्मिलित होने के लिए भेजा गया। जब जिन्ना साहब लीग के नेता बन गये तो मुसलमानों को कांग्रेस में अधिक संख्या में लाने के लिए विचार होने लगा। उसके लिए एक उप–समिति बनायी गयी। उस समिति में श्री जवाहरलाल नेहरू के पिता श्री मोतीलाल नेहरू कर्ता–धर्ता बन गये। इस कमेटी ने मुसलमानों का पृथक् प्रतिनिधित्व स्वीकार कर लिया। अंग्रेजी सरकार स्वयं यह प्रतिनिधित्व पहिले ही प्रस्तावित कर चुकी थी। यह देश में फूट डलवाने का बीजारोपण था। तत्कालीन कांग्रेसी नेताओं ने इसे स्वीकार कर दुहरा लाभ उठाने का यत्न किया। एक तो मुसलमानों को प्रसन्न किया और दूसरे सरकार की नीति का समर्थन कर सरकार को प्रसन्न कर लिया।

इसी समय एक अन्य घटना घटी। 1914 में प्रथम जर्मन युद्ध आरम्भ हो गया। इस युद्ध में जर्मनी की ओर टर्की हो गया। अतः टर्की पर अंग्रेजों को आक्रमण करना पड़ा और हिन्दुस्तान के मुसलमान अंग्रेजों के विरुद्ध भड़क उठे। इससे मुसलमान हिन्दुओं के साथ मिल जाने में अपना कल्याण मानने लगे। कांग्रेसी नेता तो सरकार भक्त थे और उन्होंने सरकार का पक्ष प्रबल करने के लिए मुसलमानों को रियायत देनी स्वीकार कर ली, जो सरकार दे रही थी। परन्तु युद्ध की नयी परिस्थिति के कारण सरकार का पक्ष दुर्बल ही हुआ।

उस समय तक तिलक जी छूट आये थे और कांग्रेसियों में तिलक–पंथियों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का बल बढ़ रहा था। साथ ही सरकार–भक्तों (नरम पंथियों) का बल कम हो रहा था। तिलक–पंथी मुसलमानों के अंग्रेजों के प्रति विरोध से स्वराज्य के पक्ष को प्रबल करने लगे। साथ ही क्रान्तिकारी आन्दोलन प्रबल हो रहा था।

विवश सरकार को मोन्टेग्यू चेम्स–फोर्ड सुधार देने पड़े। मिस्टर जिन्ना ने मुसलमानों को हिन्दुओं के समीप लाने में यत्न किया था। और इस समीप लाने का मूल्य भी लिया था। इस पर भी उसने मुसलमानों को अपनी लीग को कांग्रेस में विलीन करने की राय नहीं दी। मुस्लिम लीग अपने वार्षिक उत्सव कांग्रेस के साथ–साथ परन्तु पृथक मनाती रही। जिन्ना और उसके विचार के मुसलमान तिलक आदि हिन्दुओं से डरते थे।

1919 की कांग्रेस के उपरान्त कांग्रेस का चित्र भी बदला। कांग्रेस में गांधी, मोतीलाल तथा सी.आर. दास का प्रभाव बढ़ गया। तिलक आदि दूसरे दर्जे पर हो गये। इससे जिन्ना इत्यादि प्रसन्न थे, परन्तु मुस्लिम लीग में जिन्ना इत्यादि का प्रभाव कम होकर मौलाना मुहम्मद अली इत्यादि का प्रभाव बढ़ने लगा था। साथ ही सरकार का सक्रिय विरोध आरम्भ हुआ तो जिन्ना साहब कांग्रेस और लीग दोनों से पृथक् हो गये।

1926 तक कांग्रेस पूर्णतः महात्मा गांधी और मोतीलाल जी के हाथ में चली गयी थी। वहाँ जिन्ना के विचार वालों के लिये कोई स्थान नहीं था। मुस्लिम लीग अपने पृथक् उत्सव करने लगी थी। दोनों संस्थाओं में तालमेल नहीं रहा था। इस समय जिन्ना साहब फिर मुस्लिम लीग में जा पहुँचे और खान बहादुर और नवाबजादे इसमें सम्मिलित होने लगे।

जिन्ना साहब को मुस्लिम लीग में अपना नेता का पद पाने में कुछ समय लगा। 1930 के नमक सत्याग्रह के दिनों में जिन्ना साहब अंग्रेजी सरकार के साथ वैसे ही घुल–मिल गये थे जैसे 1912 से 1916 तक थे। ये महात्मा गांधी इत्यादि के कारण कांग्रेस और हिन्दुओं के घोर विरोधी हो गये। सरकार भी मुसलमानों को उछालने लगी। एक ओर जिन्ना साहब सरकार के प्रिय थे दूसरी ओर इकबाल 'सर' हो गये। 1914 में मुस्लिम लीग ने पाकिस्तान की माँग उपस्थित कर दी और 1947 में 15 अगस्त को जब स्वराज्य मिला, तब पाकिस्तान भी बन गया।

जॉन जिन्ना साहब की नौकरी में 1928 में आया था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिन्ना साहब अभी अपने मुँहलगे बैरे को अपने मन की और भी बातें कहने वाले थे कि बाहर से घंटी बजी। इस घंटी का मतलब था कि कायदे आजम साहब की बहिन भीतर आना चाहती हैं। जिन्ना साहब ने जॉन को कहा, "अच्छा, अन्ना को कहना कि उसकी मुबारकबाद का इनाम आज रात को देंगे, तब तक तो मुझको सिर खुजलाने की भी फुरसत नहीं।"

जॉन गया तो मिस जिन्ना भीतर आ गयीं। उसने आते ही कहा, "बाहर सब लोग इकट्ठे हो रहे हैं और आपने अभी तक गुसल भी नहीं किया।"

"रात तीन बजे तो सोया था।"

"पर भाई जान! आज खास दिन है। एक लम्बा प्रोग्राम है। नींद इन्तजार कर सकती है। यह प्रोग्राम इन्तजार नहीं कर सकता।"

"लो मैं पाँच मिनट में आया। सबको कहो कि कपड़े पहिन रहा हूँ।"

मिस जिन्ना बेडरूम से निकल गवर्नमेंट हाउस के ड्राइंगरूम में जा पहुँचीं। वहाँ ग्यारह लोग बैठे परस्पर बातचीत कर रहे थे। लियाकत अली साहब उनको समझा रहे थे। वे कह रहे थे–"रात लार्ड माउन्टबेटन यह वायदा कर गये हैं कि लाहौर पाकिस्तान में आ जायेगा, अगर वे चाहते थे कि लाहौर के स्थान कलकत्ता पाकिस्तान में शामिल करने को कहा जाता। मगर जब हमारे लीडर ने लाहौर पर इसरार किया तो वे मान गये। आज तो वे दिल्ली के जश्न में शामिल होने चले गये हैं। ये जश्न सोलह तारीख की सायंकाल तक चलेंगे और अगले दिन सुबह ही रैडक्लिफ मिशन की रिपोर्ट शाया हो जायेगी।"

उपस्थित नेताओं में नाजमुद्दीन साहब भी उपस्थित थे। अंग्रेजी राज्य–काल में वे बंगाल के मुख्यमन्त्री रह चुके थे। इस समाचार को सुन नाजमुद्दीन के माथे पर त्यौरी चढ़ गयी। वे बोले, "लियाकत साहब! कलकत्ता पर लाहौर को तरजीह देने की क्या वजह है?"

लियाकत अली ने कुछ सोच कर कहा, "हमारे लीडर यह समझते हैं कि लाहौर यदि हिन्दुओं के पास गया तो वहाँ सिक्खों का गढ़ बन जायेगा और वे तो कभी भी लाहौर हमारे कब्जे में आने नहीं देंगे। कलकत्ते की बात दूसरी है। वहाँ हम पीछे भी कब्जा कर सकते हैं। धोती–पोश बंगालियों को सीधा करना निहायत आसान है। वे यू.पी. व महाराष्ट्र के हिन्दुओं के साथ रहने की जगह मशरकी बंगाल के मुसलमानों के साथ रहना पसन्द करेंगे। वे बंगाली हमारा साथ देंगे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
बात कुछ ठीक ही मालूम देती थी। इससे सब चुप कर गये। इस समय मिस जिन्ना ने कहा, "भाई जान कपड़े पहिन रहे हैं और आने ही वाले हैं।"

इस पर लियाकत अली साहब ने बताया, "रात ही माउन्टबेटन साहब ने लाहौर के गवर्नर को टेलीफोन से कह दिया था कि लाहौर पाकिस्तान में जा रहा है। इस कारण वे लाहौर पाकिस्तानियों के हाथ में देकर छुट्टी कर सकते हैं।"

इस पर मौलाना बशीर के मुख से निकल गया, "खुदा का शुक्र है। लियाकत भाई, वहाँ के नये गवर्नर कौन मुकर्रिर हुए हैं।"

"अभी तो खलीफा मुहियुद्दीन साहब को चार्ज लेने के लिये कह दिया है। मगर पक्का गवर्नर तो पहिले पाकिस्तान की कैबिनट मुकर्रिर होने के पीछे फैसला करेंगे।"

"मैं उस ओहदे के लिये उम्मीदवार हूँ।"

"बशीर साहब, और भी बहुत हैं। इस मामले पर गौर करने की जरूरत है।"

"और ईस्ट पाकिस्तान के लिये?" नाजमुद्दीन का प्रश्न था।

"लीडर साहब ने ख्याल में तो फजलुलहक मौजूँ आदमी हैं, मगर अभी तो नाजमुद्दीन साहब को तकलीफ करनी पड़ेगी।"

नाजमुद्दीन प्रसन्न था, परन्तु उसने कह दिया, "मैं तो फजलुलहक को जेल में डाल दूँगा।"

"और सुहरावर्दी साहब को?"

"वे तो गांधी जी के साथ कलकत्ता में उनके सेक्रेटरी का काम कर रहे हैं।"

"तो फिर?" मौलाना बशीर ने इसका अर्थ न समझते हुए पूछ लिया।

नाजमुद्दीन ने कहा, "मेरे कहने का मतलब यह है कि वह काफिर हिन्दुस्तान में ही रह जायेगा। उसके लिये पाकिस्तान में आना मना कर दूँगा।"

इस पर लियाकत अली हँस पड़ा। हँस कर बोला, "अगर वह हिन्दुस्तान में रह गया तो कोई हिन्दू उसको गोली से उड़ा देगा। कम से कम कलकत्ता के सब हिन्दू जानते हैं कि उसने डायरेक्ट ऐक्शन के दिन वहाँ क्या किया था। देखो भाई जान! हम सब यह समझ रहे थे कि कलकत्ता पाकिस्तान में जायेगा। इस कारण वहाँ इस घोषणा के वक्त अमनोअमान रखना निहायत जरूरी था। इसीलिये लीडर साहब ने सुहरावर्दी साहब को गांधी जी के साथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
रहकर वहाँ काम करने के लिये भेजा हुआ है। गांधी जी की मदद से कलकत्ता के हिन्दुओं को पाकिस्तान मंजूर करने की तरगीव देने के लिये वहाँ भेजा गया है।''

''और गांधी जी यह करेंगे?''

''वे कर रहे हैं। बहुत से हिन्दू उनके कहने पर पाकिस्तान मानने पर राजी हो रहे हैं। मगर अब हालात में तबदीली हो रही है। अब हमारी तजवीज यह है कि लाहौर और मगरबी पंजाब से सब हिन्दू निकाल दिये जायें। लाहौर पर अपना पक्का कब्जा हो जाना चाहिए। मशरिकी पाकिस्तान का दारुल–सल्तनत ढाका होगा और कलकत्ता में अपने लोगों से बलवा हो जाना चाहिए। 16 अगस्त, 1946 से ज्यादा जबरदस्त बलवा होना चाहिए। तब हम कलकत्ता को भी पाकिस्तान में लेने का दावा कर देंगे।''

इस समय जिन्ना साहब चूड़ीदार पायजामा, अचकन और अफगानी टोपी पहिने हुए हाल में दाखिल हुए। सबने उठकर सलाम अर्ज की और मुबारिकबादों के वसूल करने के बाद सब बैठ गये। जिन्ना साहब अभी भी खड़े रहे और खड़े–खड़े ही कहने लगे–''आप ग्यारह दोस्तों को मैंने इसलिये बुलाया है कि मैं आपको पाकिस्तान की पहिली वजारत में शामिल करता हूँ। सिंध के वजीरों के बँगलों में आपकी रिहायश का इन्तजाम हो जायेगा।''

जिन्ना साहब के साथ ही एक स्टेनो टाइपिस्ट आया था और वह उनके एक–एक शब्द को लिख रहा था।

मिस्टर जिन्ना वहाँ बैठे लोगों से राय करने के स्थान आदेश देते प्रतीत होते थे। वे कह रहे थे और स्टेनो लिख रहा था।

''लाहौर में गवर्नर अभी आरजी तौर पर खलीफा मुहियुद्दीन साहब मुकर्रिर किये जाते हैं। ढाका, मेरा मतलब है मशरकी पाकिस्तान के गवर्नर नाजमुद्दीन साहब होंगे। पंजाब, सिंध और सरहदी सूबा तीनों मिल कर एक सूबा होगा...।''

इस समय मौलाना बशीर ने पूछ लिया, ''कश्मीर का क्या होगा?''

''वह एक हिन्दू राजा के मातहत है। लार्ड माउन्टबेटन साहब ने यह यकीन दिलाया है कि वह पाकिस्तान में शमिल हो जायेगा। हिन्दू राजा अभी तक नहीं माना। वह हिन्दुस्तान में मिलना चाहता है और अगर मुमकिन हुआ तो कश्मीर को आजाद मुल्क बनाकर रखना चाहता है। जवाहरलाल भी इस बात को पसन्द करता है। इस पर भी वह आजाद कश्मीर पर राजा की हुकूमत पसन्द नहीं करेगा। वह वहाँ जम्हूरियत चाहता है। जम्हूरी कश्मीर तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
पाकिस्तान का ही होगा। यह मैं अच्छी तरह समझ रहा हूँ।''

''और शेख अब्दुल्ला?'' बशीर साहब का प्रश्न था।

''उसकी कीमत देनी पड़ेगी। अभी तो वह जेल में है इसलिये उसकी कीमत का पता नहीं चल रहा। कुछ भी हो, उस पर सोचने का अभी वक्त नहीं।

''अब वजारत की यह मीटिंग खत्म होती है। कल फिर इसी वक्त दूसरी मीटिंग होगी। अब मुझे जलसे में तकरीर करने जाना है।''

सब लोग सलामालेकुम कर बाहर चले गये। बाहर जा मौलाना बशीर ने नाजमुद्दीन साहब से पूछ लिया, ''यह वजारत की मीटिंग थी या सैशन कोर्ट में जज फैसला लिखा रहा था।''

नाजमुद्दीन हँस पडा। उसने उत्तर नहीं दिया। बशीर का सवाल सुन सब लोग नाजमुद्दीन का जवाब सुनने के लिये कान इस तरफ कर खड़े हो गये थे।

नाजमुद्दीन हँस कर अपनी मोटर गाड़ी में सवार हो अपने होटल को चल दिया। वह एक होटल में ठहरा हुआ था। मौलाना के पास अपनी गाड़ी नहीं थी। वह पैदल ही चल पड़ा। वह कोठी से फाटक की ओर जा रहा था कि सामने से जॉन आता दिखाई दिया। मौलाना जानता था वह गवर्नर जनरल साहब का मुँहलगा नौकर है। इस कारण जॉन को सलाम करते देख खड़ा हो पूछने लगा, ''किधर से आ रहे हो जॉन!''

''साहब के घर में कुछ मेहमान आये हुए हैं। वे कोठी में उन मकानों में ठहरे हैं। फातिमा बी ने उनके चाय का इन्तजाम भी मेरे हाथ में दे रखा है। मैं वहाँ से ही आ रहा हूँ।''

''आज तो तुम्हारी पाँचों घी में होनी चाहिए।''

''हजरत! अभी तो घी कहीं दिखाई दिया नहीं। सूखी बिस्कुट–चाय ही है। अगर ख्वाहिश हो तो आइये, आपको भी मिल सकेगी।''

''ओह! मगर क्या अन्ना भी वहाँ होगी?''

''हाँ, उन मेहमानों का इन्तजाम वही कर रही है।''

''तब तो भाई चाय पीने का लुत्फ आ जायेगा।''

जॉन मुस्कराया और मौलाना साहब को लेकर 'आउट–हॉउस' की ओर चल पड़ा। उधर से ही वह आ रहा था।

मौलाना ने पूछ लिया, ''जॉन, तुमको साहब का कुछ काम नहीं क्या?''

''आपको चाय पिलानी भी तो साहब का काम ही समझता हूँ। आइये।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

R 089.9143 GUR-A
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्ना प्रातःकाल से इन मेहमानों के लिये खाने–पीने और स्नानादि का प्रबन्ध करा रही थी। जॉन भी, साहब को बेड–टी देकर प्रबन्ध देखने वहाँ जा पहुँचा था। जब उसने अन्ना को साहब का संदेश दिया कि वह उनसे भेजी गयी मुबारकबाद का इनाम रात को देंगे तो अन्ना मुस्कराई और बोली, "तो इतनी मशगूलियत में भी वे मुझको भूले नहीं?"

"अन्ना! तुमको जो कोई भी एक बार देख लेता है, वह भूल सकता ही नहीं।"

"मगर डार्लिंग, तुम तो मुझको भूलते जाते हो।"

"इसलिये कि तुमको याद रखने वालों की तादाद बढ़ रही है। इस पर भी मैं तुम्हारा खाविंद हूँ। प्रभु यशु और मदर के सामने हमने 'मैन ऐण्ड वाइफ' रहने का कौल लिया हुआ है। यह हम तोड़ नहीं सकते।"

"वह तो है ही।" अन्ना ने प्रेम भरी दृष्टि से उसकी तरफ देखा।

इस पर जॉन ने कहा, "अच्छा! तुम यहाँ से खाली हो अपने क्वार्टर में आ जाना। वहाँ कमला तुम्हारा इन्तजार कर रही है।"

"मेरा या जॉन फ्रांसिस का?"

"एक ही बात है।"

Gurukula Kangri Library
167893
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar

जॉन अपने क्वार्टर की तरफ जा रहा था कि मौलाना बशीर मिल गये। मौलाना भी अन्ना से लगाव रखते थे। जॉन उसको साथ लेकर पुनः इस 'आउट–हाउस' में चला आया।

अन्ना बम्बई से आयी एक पारसी औरत को प्रातः का अल्पाहार करा रही थी। उसने अपने पति को मौलाना के साथ लौटते देखा तो उस पारसी औरत को छोड़ खाने के कमरे से बाहर आ गयी।

"ओह! मौलाना साहब! आप उस साथ के कमरे में चलिये। आपके लिये चाय–पानी का इन्तजाम वहाँ हो जायेगा।

"जॉन! तुम इनके लिये इन्तजाम करा दो। मैं अभी आयी। मिसेज रुस्तम से एक जरूरी बात कर रही हूँ। बात खतम होने पर आती हूँ।"

जॉन मौलाना बशीर को लेकर दूसरे कमरे में चला गया। मौलाना बशीर ने जॉन से पूछ लिया, "यह कौन औरत है?"

"यह कहती है कि इसके कुछ बंगले कराची में हैं। वह उनके बदले में बम्बई में कुछ बंगले लेना चाहती हैं।"

"और इस काम के लिये यहाँ किस लिये ठहरी है?"

"साहब से इस काम में मदद लेने के लिये।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"वे क्या मदद करेंगे। मुझसे बात करा दो तो मैं सब काम ठीक करा दूँगा।"

"पर साहब, हम तो अपनी कमीशन तय कर रहे थे।"

"तुम उससे जो मरजी है करो। मैं यहाँ की पार्टी से अपना हिस्सा तय करूँगा।"

"तब ठीक है। करूँ बात?"

"हाँ, एक महीने में तबादला रजिस्ट्री हो जायेगी।"

"उसको डर लग रहा है कि भारत सरकार किसी प्रकार का आर्डिनेन्स जारी न कर दे, जिससे किसी पाकिस्तानी को वहाँ जायदाद बेचना मना न हो जाये।

"जब तक लार्ड माउन्टबेटन हैं, ऐसी कोई बात नहीं हो सकती। हमको यह पता चला है कि वह भारत के गवर्नर जनरल बनने वाले हैं।"

"तो मैं बात करूँगा। एक खोजा है। उसके कई मकान बम्बई में हैं। यहाँ कोई अच्छी कोठियाँ हुई तो वह उनसे बदल लेगा।"

इस समय अन्ना फ्रांसिस वहाँ आ गयी। मौलाना ने आते ही पूछा, "अन्ना, आज तो जश्न का दिन है। रात कराची में रोशनी हो रही है। कहो तो टैक्सी लेकर आऊँ?"

"मुझको आज फुरसत नहीं।"

"ओह! क्या काम कर रही हो?"

"फातमा बी ने मुझे अपने यहाँ दावत का इन्तजाम करने के लिये कहा है। दो सौ से ज्यादा चीदा–चीदा कराची की खातूनों को दावत है।"

"तब तो ठीक है। यह बहुत जरूरी काम है। पर जॉन तो मुझको चाय पिलाने का वायदा कर लाया है।"

"वह मैं बैरा को कह आयी हूँ। आती ही होगी।"

: 3 :

जॉन ने मौलाना और मिस्टर रुस्तम का सौदा करा दिया। अभी आजादी के जश्न समाप्त नहीं हुए थे कि कराची के तीन बड़े–बड़े बंगलों के बदले में बम्बई के तीन मैरीन ड्राइव के मकानों का सौदा हो गया। एक बम्बई के खोजा व्यापारी करीम बख्श ने अपने मैरीन ड्राइव के मकानों का सौदा किया था। रुस्तम ने पूछा, "कुछ और मकान भी हैं बम्बई में?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हैं तो। मगर मैं उनको रखना चाहता हूँ।"

"किस लिये?"

"मैं तो हिन्दुस्तान का नागरिक रहूँगा। इस पर भी कुछ जायदाद पाकिस्तान में भी रखना चाहता हूँ।"

"तो दोनों जहान का लुत्फ लेना चाहते हो?"

"मिल जाये तो क्या हरज है?"

मिसेज रुस्तम मुस्कराईं। उसने कह दिया, "मैं तो दो किश्तियों पर सवारी करना नहीं चाहती। अगर आपसे यह सौदा मुकम्मल हो गया तो मैं फिर कराची आकर रहने का ख्याल नहीं करती।"

"क्यों? यहाँ क्या खराबी है?"

"मेरे खाविन्द नहीं मानते।"

"तो खाविन्द को छोड़ दो। देखो मिसेज रुस्तम! मैं बताता हूँ कि कराची बम्बई से कहीं ज्यादा रौनक वाला शहर बनेगा।"

"पर हम तो बम्बई में भी रहना पसन्द नहीं करते। हमारा कारोबार लंदन में भी है। अभी तक हमारा हैड–आफिस बम्बई में था। अब हम वह लंदन में ले जा रहे हैं।"

जॉन को इस सौदे में मिसेज रुस्तम से पाँच हजार रुपया मिला और मौलाना को करीम बख्श से दस हजार मिला। इन दोनों के प्रयत्न से कराची का काम तो तीन दिन में समाप्त हो गया और करीम बख्श ने बम्बई में अपने वकील को लिख दिया कि रजिस्ट्री का प्रबन्ध कर दे। सितम्बर तेरह की बात है। जॉन एक चिट्ठी लेकर अपने क्वार्टर में आया। उसका मुख उतरा हुआ था। अन्ना ने पूछा, "क्या बात है? बहुत परेशान मालूम होते हो?"

"विलियम का खत है। दिल्ली में हमारे हाई कमिश्नर के पी.ए. लाये हैं। विलियम की बीवी दिल्ली में सड़क पर चलती–चलती मार डाली गयी है।"

"क्यों? उसने क्या किया था?"

"तो सब हिन्दू और मुसलमान कुछ करने पर ही मारे जा रहे हैं? लिखा है सात तारीख को दिल्ली में जोर का हिन्दू–मुसलमान फसाद हो गया था। लिल्ली आठ तारीख को साग–भाजी खरीदने गयी और फिर नहीं लौटी। दस तरीख को उसकी लाश एक नाले में पड़ी पायी गयी। पी.ए. साहब किसी काम कराची आ रहे हैं और मैंने यह खबर भेजनी ठीक समझी है। उसको ईसाइयों के कब्रिस्तान में दफना दिया गया है।"

अन्ना की आँखों से आँसू टपकने लगे थे। लिल्ली उसकी छोटी बहिन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थी। विलियम से उसकी शादी हुए दस साल हो चुके थे। विलियम दिल्ली में हाईकमिश्नर के खानसामे का काम करता था।

जॉन जानता था कि अन्ना लिल्ली से बहुत मोहब्बत रखती है। इसी कारण वह विलियम का पत्र सुनाने आया था। अन्ना क्वार्टर के बाहर बरामदे में बैठी थी। जब जॉन पूर्ण समाचार सुना चुका तो वह उठी और अपने सोने के कमरे में चली गयी। जॉन तो हिन्दू–मुसलमानों के एक–दूसरे को कत्ल करने के समाचार सुन–सुन कर कठोर हो चुका था। कुछ दिन हुए कोहाट से जाते हुए एक ट्रेन में हिन्दू कत्ल किये गये थे। फिर पटियाला में मुमलमानों के कत्लेआम की खवर आयी थी। इसके बाद पेशावर में हिन्दू मुहल्ले को आग लगा देने की खबर भी उसने सुनी थी। इस कारण यदि उसे दुःख था तो इस कारण कि लिल्ली उसकी गोदी में खेली थी। जब उसकी शादी हुई थी तब वह छोटी–सी बच्ची थी। वैसे वह समझता था कि दिल्ली में मुसलमानों से इस व्यवहार का बदला कराची में हिन्दुओं से लिया जायेगा।

वह इस बात से सन्तोष अनुभव कर अन्ना को सांत्वना देने के लिये उसके सोने के कमरे में जा पहुँचा। अन्ना अपने बिस्तर पर लेटी हुई तकिये में मुँह दिये विह्वल हो रो रही थी। जॉन उसकी खाट पर बैठ गया और उसकी पीठ पर हाथ फेर कर उसको चुप कराने लगा।

अन्ना कुछ देर तक रोती रही। फिर आँसुओं से भीगे मुख को ऊपर उठा जॉन से बोली, "मैं यहाँ से ऊब गयी हूँ।"

"कहाँ से?"

"पाकिस्तान और हिन्दुस्तान, दोनों से।"

"लिल्ली के मारे जाने से?"

"मेरे माता–पिता बम्बई में हैं। उनकी जान भी खतरे में हो सकती है।"

"परन्तु लिल्ली तो धोखे में मारी गयी है न! वह मुसलमान तो थी नहीं?"

"वह और उसका घरवाला दोनों मुसलमान की नौकरी करते थे। मेरे माता–पिता भी मुसलमान की नौकरी करते थे। यहाँ मुसलमान हमें नफरत से देखते हैं। क्या जाने एक दिन मुझसे भी कोई खराबी कर बैठें।"

"मगर तुम इस कोठी से बाहर जाती ही क्यों हो?"

"तो यहाँ कैदी बन पड़ी रहूँ? उस दिन कमला का घरवाला मनचन्दानी आया था और मुझको अपने घर ले गया। जब मैं उनके घर से निकली तो कुछ मुसलमान गुण्डे मनचन्दानी की कोठी के बाहर घूमते दिखाई दिये थे। वे मुझको भी हिन्दू समझ मुझसे छेड़–छाड़ करने लगे थे। बहुत मुश्किल से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बच कर आयी थी।''

''देखो अन्ना!'' जॉन ने उसके गालों से आँसू पोंछते हुए कहा, ''खबर है कि दिल्ली में दो हजार से ऊपर मुसलमान मारे गये हैं। उसका बदला यहाँ कराची में लिया जायेगा। जब तक दो हजार के बदले दस हजार मार नहीं दिये जाते तब तक मेरे दिल को तसल्ली नहीं मिलेगी।''

''पर यह तो गुनाह हो जायेगा।''

''गुनाह होगा या सवाब होगा, यह मेरे सोचने की बात नहीं है। मैं तो लिल्ली के कत्ल का बदला निकला देखना चाहता हूँ।''

अन्ना को यह दलील समझ नहीं आयी थी, मगर लिल्ली से उसका भी बहुत स्नेह था और उसे अपने मन में, सत्य ही लिल्ली के कत्ल के बदले की बात भली ही लगी। वह चुप कर रही।

इसके लगभग एक मास उपरान्त कमला भागती हुई अन्ना के पास आयी। अन्ना कायदे–आजम साहब के द्वारा दिल्ली अपने बहनोई को एक पत्र भेजने का प्रबन्ध कर आयी थी। पाकिस्तानी हाई कमिश्नर के दफ्तर के आदमियों की डाक एक विशेष डाक थैले में हवाई जहाज से नित्य जाती थी। आम डाक में उनके पत्र रोक कर खोले जाने की सम्भावना रहती थी।

अन्ना आयी तो कमला उसके क्वार्टर में बैठी उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। उसका मुख विवर्ण हो रहा था और वह आरामकुर्सी पर ढेर हुई बैठी थी। वह अपने ही विचारों में लीन थी।

अन्ना ने उसे इस प्रकार बैठे देखा तो उसके सामने खड़ी हो प्रश्न–भरी दृष्टि में उसकी ओर देखने लगी। कमला को चेतना हुई तो उसने उठ कर अन्ना को गले लगा लिया और रोने लगी।

अन्ना को यह समझ आया कि उसके साथ कुछ दुर्घटना हो गयी है। इससे वह उसको सान्त्वना देने लगी। वह उसको लेकर अपने सोने के कमरे में चली गई और उससे उसके दुःख का कारण पूछने लगी।

कमला ने अपनी कथा सुना दी। उसने बताया–''सब कुछ खत्म हो गया है। पिछली रात कुछ लोग हमारे घर में घुस आये थे और घर को लूटने लगे। मैं और रतन के 'फादर' उठे और वहाँ से भाग खड़े हुए। खिड़की में से कूद कर हम बाहर लॉन में आ गये और अँधेरे में एक झाड़ी में घुस कर छिप गये। इस समय रतन के चीख मारने की आवाज आयी। हम समझ गये कि उसको कत्ल कर दिया गया है। इतने में वे लोग घर का माल लूट–लूट कर ले जाने लगे। कुछ ही देर में बंगले को आग लगा दी गयी। अब तो आग की रोशनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में हमारा छिपा रहना मुमकिन नहीं रहा। हमने फैसला किया कि कोठी में से भाग निकलें। हम झाड़ी से निकल भाग खड़े हुए। मैं तो बेतहाशा पिछवाड़े की दीवार की तरफ भागी। मनचन्दानी मेरे पीछे–पीछे थे। मैं तो नौकरों के लिये दीवार में लगी चरखड़ी से निकल गयी, परन्तु रतन के 'फादर' मेरे साथ नहीं आये। उनको किसी ने देख पकड़ लिया था। मैंने एक सेकेण्ड के लिये खड़ी हो अपने पीछे देखा। कुछ लोग उनको पकड़ कर वापिस कोठी की तरफ ले जा रहे थे। मैं तो अपनी जान को ले भागी। यहाँ गवर्नर जनरल साहब की कोठी में सदर दरवाजे से तो आ सकती नहीं थी और पिछला दरवाजा खुला नहीं था। वह खुला तो मैं भीतर आ सकी हूँ। जॉन भाई यहाँ भी नहीं थे और तुम भी नहीं थीं।''

''तो अब क्या करोगी?''

''मैं क्या जानूँ?''

''तुम ईसाई हो जाओ, तुम्हारी किसी ईसाई से शादी कर देंगे और तब तुम हिफाजत से यहाँ रह सकोगी।''

कमला चुप थी। वह मन में कुछ सोच रही थी। दो दिन पूर्व ही मनचन्दानी साहब के एक मुसलमान दोस्त ने उनसे मिल कर कहा था कि वे अपने परिवार सहित मुसलमान हो जायें। मनचन्दानी ने उनको समझाने का यत्न किया था कि वह किसी मजहब से ताल्लुक नहीं रखता। उसको ऐसे ही रहने दिया जाये।

इस पर कहने वाले ने कहा था, ''तो नाम बदल लो और बच्चे की सुन्नत करा दो।''

''क्या नाम रख लूँ?''

''मुहम्मद मुनीर मनचन्दानी। देखो मनचन्दानी, तुम्हारे दस्तखत नहीं बदलेंगे। अभी तुम मनमोहन हो और अपने दस्तखत एम.एम. मनचन्दानी करते रहो। मुसलमान हो जाने पर भी वही दस्तखत रहेंगे।''

''तो तुम मुझको मनमोहन की जगह मुहम्मद मुनीर बुला लिया करो।''

''इस तरह नहीं। तुम सब स्थानों पर यही लिख कर भेज दो। अपने बैंक में और रजिस्ट्रार के दफ्तर में, जिससे तुम्हारी जायदाद मुहम्मद मुनीर के नाम से हो जाये।''

''बहुत अच्छा। दो–चार दिन में यह प्रबन्ध कर दूँगा।''

''और लड़के की सुन्नत?''

''वह भी हो जाएगी।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसका दोस्त तो सन्तुष्ट हो गया, परन्तु मनचन्दानी और उसकी पत्नी सन्तुष्ट नहीं थे। उसी दिन से वे वहाँ से भाग जाने का विचार करने लगे थे। मनचन्दानी ने अपना सब धन बटोर लिया। बैंकों के चालू खाते में से सब रुपया निकाल कर सोने में बदल लिया। घर का फरनीचर इत्यादि बेचा जाने लगा। पिछले दिन वह हवाई जहाज के दफ्तर में गया था। वह सीट बुक कराना चाहता था। उसको पासपोर्ट दिखाने के लिये कहा गया। इस पर उसने अगले दिन पासपोर्ट लाने का वायदा किया था।

ऐसा प्रतीत होता है कि उसके भाग जाने का समाचार वहाँ से बाहर निकल गया और रात उसके घर पर धावा बोल दिया गया।

अब कमला को अन्ना कह रही थी कि यदि उसने कराची में सुख से रहना है तो उसे ईसाई हो जाना चाहिए। कमला इसमें आपत्ति नहीं कर रही थी। इस पर भी उसने कहा, "अन्ना! जॉन भाई से कह कर मिस्टर मनचन्दानी का पता करो और यह भी कि क्या मैं अपने घर वाले की सम्पत्ति की मालिक बन सकूँगी।"

"तुम यहाँ हमारे घर में रहो, मैं पता करने की कोशिश करती हूँ।"

कमला को विश्वास हो चुका था कि उसका लड़का और पति मर चके हैं। इससे वह अत्यन्त घबराई हुई और अनिश्चित मन थी। अपनी सम्पत्ति के विषय में भी वह गवर्नमेण्ट हाउस के बाहर बैठी–बैठी विचार करती रही थी। सब कुछ जो लूटा गया था, उसके अतिरिक्त स्थावर सम्पत्ति बहुत थी।

मध्याह्न के समय जॉन कायदे आजम साहब से मिल सका। प्रातः से लंच के समय तक कायदे आजम एक गुप्तमन्त्रणा में व्यस्त थे। वहाँ का काम समाप्त कर वह खाने के कमरे में आये तो उसे अकेला देख जॉन ने कह दिया, "साहब! अब तो कराची में भी लूट–पाट होने लगी है।"

"हाँ। हमको मालूम है। यह मनचन्दानी तुम्हारा दोस्त है न। वह पाकिस्तान से दगा करने वाला था। खलकत ने उसको दगा देने के नाकाबिल बना दिया है।"

"उसकी बीवी बच गयी है?"

"सच? कहाँ है वह?"

"इस वक्त अन्ना के पास है। बहुत डरी हुई है और अपने मुस्तकबिल पर परेशानी महसूस कर रही है।"

"उसको कहो कि मुसलमान हो जाये।"

"पर हुजूर, वह और उसका घरवाला तो ईसाई हो चुके थे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"ईसाई? यह किसने बताया है तुमको?"

"मुझको खुद मालूम है। प्रेस्बिटेरियन चर्च में उसके कुनबे ने बपतिस्मा लिया था।"

"मगर वह तो कराची से सब जायदाद को सोने में बदल कर भाग रहा था।"

"नहीं हजूर! वह भाग नहीं रहा था। वह तो यहाँ सोना इकट्ठा कर उससे फारेन ऐक्सचेंज बटोर रहा था। उससे वह तिजारत करना चाहता था।"

"हिन्दुस्तान में सोना ले जाकर क्या करता?"

"हुजूर, यहाँ सोने का भाव पचहत्तर रुपये तोला है। भारत में यह एक सौ रुपया है। वह दस सेर सोना ले जा रहा था। अस्सी हजार रुपये से वह डालर खरीदता और फिर उससे पाकिस्तान में माल मँगवाता। इस तरह वह खुद भी मालामाल हो जाता और फिर पाकिस्तान को भी फायदा होता।"

मिस्टर जिन्ना को अफसोस इस बात का लगने लगा था कि यदि इंग्लैंड में यह खबर फैली कि पाकिस्तान में ईसाइयों को भी मारा और लूटा जा रहा है तो इसकी प्रतिक्रिया पाकिस्तान के लिये ठीक नहीं भी हो सकती। उन्होंने जॉन से कहा, "हम चाहते हैं कि मनचन्दानी का ईसाई होना मशहूर न किया जाये।"

"पर हुजूर, वह तो लार्ड बिशप को चिट्ठी लिख रही है।"

"तो उसको मना कर दो।"

"मगर उसको कुछ सहूलियत की बात कहूँ तब ही यह हो सकेगा। वरना वह तो अपनी जिन्दगी से भी बेजार मालूम होती है।"

"वह क्या चाहती है?"

"वह बिशप को लिखना चाहती है कि वह उसकी जान और माल की हिफाजत का इन्तजाम करायें।"

इस पर जिन्ना साहब कुछ क्षण तक गम्भीर हो विचार करते रहे। फिर बोले, "इतना तो हम भी कर सकते हैं।"

"अगर हुजूर इतना हुक्म जारी कर दें तो मैं उसको चिट्ठी लिखने से मना करने की कोशिश करूँगा। अन्ना भी बहुत दुखी है। वह कहती थी कि हम भी तो ईसाई हैं और अगर ईसाइयों के साथ भी वही कुछ होने लगा है जो हिन्दुओं के साथ हुआ है, तो एक दिन हम भी मार डाले जाएँगे।"

जिन्ना ने मुस्कराते हुए कहा, "तो तुम्हारे पास भी कुछ लूटने के लायक है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"तो हुजूर! क्या यह लूटना रुपये के लिये हो रहा है?"

"हाँ। पाकिस्तान को रुपये की सख्त जरूरत है। हिन्दुओं के पास बहुत रुपया है। वह एक बार मुसलमानों के पास आ जाये तो फिर हम उसे मुल्क के फायदे के लिये इस्तेमाल कर सकेंगे।"

"पर हुजूर! पाकिस्तान के गवर्नर जनरल का वफादार नौकर अगर अमीर नहीं होगा तो फिर और कौन होगा?"

"ओह! तो यह बात है!"

"हाँ हजूर! कुछ तो बुढ़ापे के लिये इकट्ठा किया ही है।"

"पर तुम बूढ़े हो रहे हो क्या?"

"हुजूर! अब पचास साल का हो गया हूँ। 'ओल्ड एज' तो शुरू ही समझनी चाहिए। कम–से–कम अन्ना तो मेरे लिये यही समझती है।"

"हाँ। वह तुमसे बहुत छोटी है।"

"जी उसकी उमर पैंतीस के करीब है।"

"अच्छा, तुम मनचन्दानी की बीवी से कहो कि उसके खाविन्द की सब जायदाद उसको मिल जायेगी। वह विशप को न लिखे। मैं कुछ दिन के लिये कराची से बाहर जा रहा हूँ। ईद के पीछे ही लौट सकूँगा। तब तक तुम उसको अपने घर में ही रखो। मैं लौट कर सब इन्तजाम उसकी हसबमंशा कर दूँगा।"

: 4 :

जिन्ना साहब उसी सायंकाल रावलपिण्डी के लिये रवाना हो गये। अन्ना ने कमला को समझाना शुरू कर दिया था कि उसकी सब सहायता इसलिये हो रही है कि उसका ईसाई होना गवर्नर जनरल बहादुर से कहा गया है। अब उसे ईसाई हो ही जाना चाहिए। कमला मान गई थी। साथ ही वह चाहती थी कि कोई ईसाई युवक मिले तो ईसाई होने के साथ ही वह उससे शादी भी कर लेगी।

जिन्ना साहब रावलपिण्डी गये। फिर कोहाट और बन्नू के इलाके में गये। वहाँ से वे लौट कर रावलपिण्डी चले आये। रावलपिण्डी से उन्होंने तार भेज अपने बैरे जॉन और अन्ना को लाहौर चले आने के लिये कह दिया। जॉन को कुछ यह समझ आया कि साहब कुछ दिनों के लिये कराची से बाहर रहने वाले हैं और उनको उसकी सहायता की आवश्यकता है। पिछले सत्रह वर्ष

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
से वह उनके पास बैरा का काम कर रहा था। वह अपने मालिक की आवश्यकताओं को भली–भाँति समझता था। इस कारण तार आने पर उसको विस्मय नहीं हुआ।

अगले दिन जॉन और अन्ना हवाई जहाज से लाहौर पहुँच गये। मिस्टर जिन्ना अभी रावलपिण्डी से नहीं आये थे। जॉन को लाहौर के गवर्नमेंट हाउस में रहने को स्थान मिल गया।

जिन्ना साहब को लाहौर पहुँचने में देरी हो रही थी। सब कुछ वैसे नहीं चल रहा था, जैसा वह चाहते थे। उन्होंने अपने गवर्नर जनरल के पद पर नियुक्त होने का प्रथम महान् कार्य आरम्भ कर दिया था। यह कार्य था कश्मीर पर आक्रमण।

लाहौर का गवर्नर खलीफा मुहियुद्दीन जिन्ना साहब के आने की प्रतीक्षा में था। वह बहुत परेशान था। वह चाहता था कि शीघ्रातिशीघ्र सूबे में अमनो–अमान हो तो तामीरी[1] काम शुरू किया जाये। उसके दिमाग में एक बात थी कि मुल्क में अमनो–अमान होगा तो यह सब प्रकार से मजबूत होगा। उसको पाकिस्तान हिन्दुस्तान से बहुत दुर्बल प्रतीत होता था। और वह समझता था कि व्यर्थ में हिन्दुस्तान से छेड़खानी नहीं करनी चाहिए। जूनागढ़ की बात सामने थी। वहाँ की घटना से उसे पाकिस्तान की प्रतिष्ठा कम हुई लगी थी।

जॉन लाहौर पहुँचा और गवर्नमेंट हाउस में कायदे आजम साहब का तार दिखा कर ठहर गया। गवर्नर बहादुर का पी.ए., साहब के सामने कागजात उपस्थित कर रहा था। गवर्नर ने पूछ लिया, "गवर्नर जनरल साहब के पहुँचने की खबर है?"

"हुजूर! वे तो कल ही आने वाले थे। अब उनका तार आया है कि वे दो दिन और पिंडी में ठहरेंगे। मतलब यह कि कल तक यहाँ आयेंगे। जिस वक्त हवाई जहाज पिंडी से चलेगा हमको इत्तला मिल जायेगी। हाँ, उनका बैरा और बैरे की बीवी आज कराची से यहाँ पहुँच गये हैं।"

खलीफा बैरा की बीवी की बात सुन मुस्कुराया और पूछने लगा, "कैसी है वह औरत?"

"अच्छी है। एक मामूली पोशाक में मलिका दिखाई देती है।"

"मतलब अच्छी नहीं है।"

"नहीं हुजूर! मेरा यह मतलब नहीं। जो अफवाह उसके मुताल्लिक मशहूर

---

1. निर्माण।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है वह उसके लायक ही है।''

''हाँ, इतने बड़े आदमी को अगर खुश कर सकती है तो कुछ तो खूबी उसमें होगी।''

अब मुस्कराने की बारी सेक्रेटरी महोदय की थी। इस पर खलीफा ने कहा, ''अच्छा मौका मिलने पर हम उसके दीदार हासिल करेंगे।''

''मैं उसे हाजिर करने की कोशिश करूँगा। किसी बहाने से उसको बुलाना पड़ेगा। नहीं तो गड़बड़ हो जायेगी।''

खलीफा किसी किस्म की ख्वाहिश अन्ना से नहीं रखता था। उसकी अपनी दो पत्नियाँ थीं और उनमें से एक तो अभी पन्द्रह–सोलह वर्ष की लड़की ही थी। इसके अतिरिक्त एक लड़की स्टेनो के काम पर नियुक्त थी। वह बातें करने में बहुत मीठी थी। खलीफा इस दिशा में सर्वथा संतुष्ट था। इस पर भी वह उस औरत की सूरत–शक्ल और उसके गुणों को जानने के लिए उत्सुक था। वह जिन्ना साहब के निर्वाचन की योग्यता परखना चाहता था।

उसी सायंकाल खलीफा का पी.ए. गवर्नर की स्टेनो जरीना बेगम और अन्ना को लेकर गवर्नर बहादुर के साथ चाय पीने के लिये आ पहुँचा।

गवर्नर इस चाय के समय जरीना बेगम की संगत को पसन्द किया करता था। पी.ए. तो कभी–कभी ही आता था। आज वह भी उत्सुक था अन्ना को देखने के लिये। उसने ही जरीना को कह कर अन्ना को चाय पर बुलवा लिया था। जरीना ने अन्ना का परिचय करा दिया, ''ये हैं मिसेज अन्ना फ्रांसिस, गवर्नर जनरल के बटलर की बीवी।''

''ओह!'' खलीफा ने उठ कर मिलाने के लिए हाथ आगे बढ़ाया तो अन्ना ने झुक कर सलाम कर दी। खलीफा साहब का हाथ बढ़ा ही रह गया। जरीना हँस पड़ी। इस पर अन्ना ने सिर ऊँचा कर कह दिया, ''हुजूर! हम खादिम इतनी इज्जत के काबिल नहीं। जरीना बी ने तो कहा था कि मुझे उनके साथ चाय लेनी है। मगर जब मैं यहाँ पहुँची तो आप के पी.ए. साहब आकर कहने लगे कि आप जरीना बेगम की इन्तजार कर रहे हैं। इस पर ये कहने लगीं कि आप चाय के लिए बुला रहे हैं, मैं भी आ सकती हूँ। मैं तो डर रही थी कि यह नावाजिब मुदाखलत है। इस पर भी आपकी मेहरबानी पर यकीन था। मगर इतनी इज्जत तो हम गरीबों को पचेगी नहीं।''

इतना कहते–कहते अन्ना ने खलीफा साहब के हाथ की तरफ देखा। अब हाथ पीछे हट चुका था। खलीफा साहब कुछ ऐसा अनुभव कर रहे थे कि इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
औरत ने गवर्नर से हाथ मिलाने की इज्जत को न मंजूर कर उसको अपनी पदवी की शान की याद दिलाई है। यह कुछ लज्जा महसूस कर रहा था, परन्तु पंजाब हाईकोर्ट में रह चुका जज इस कठिन परिस्थिति से निकलने का ढंग जानता था। उसने कह दिया "जरीना! जरा मिसेज फ्रांसिस को बताना कि इस वक्त मैं अपने ओहदे का तौक[1] उतार कर अपने दफ्तर में छोड़ आता हूँ।"

"हजरत!" उत्तर अन्ना ने ही दिया, "दुनिया भर की सरकारों में कोई भी गवर्नर ऐसा कर नहीं सकता।"

"कैसा नहीं कर सकता?"

"अपने ओहदे से एक भी लमहा[2] के लिए जुदह हो जाये। वह स्टेट का चौबीसों–घंटा अफसर–ए–आला होता है। और हजूर, चौबीस घंटे का मतलब है तेईस घंटे उनसठ मिनट साठ सैकेण्ड।"

"ओह! मिसेज फ्रांसिस! आप तो बहुत ही तरबीयत यात्फा औरत मालूम होती हैं। खैर, आप आयीं। आपसे तआरुफ हासिल कर मुझ को बड़ी खुशी हुई है।"

सब चाय की मेज पर बैठ गये। सब खाने और चाय पीने लगे थे। खलीफा साहब ने बात को जारी रखते हुए कहा, "आज पता चला है कि हमारे गवर्नर जनरल बहादुर औरतों के मुताल्लिक भी बहुत अच्छी परख रखते हैं। अभी तक तो उनकी, अपने मर्द साथियों की परख का ही इल्म था। औरतों की बाबत उनका इल्म कुछ कम मालूम नहीं हुआ।"

"आप उनसे कभी पहले भी मिले हैं।" अन्ना ने बात बदल कर पूछ लिया।

"हाँ; पब्लिक में तो उनके दीदार बीसियों बार हुए हैं। एक बार उनकी मेहमानदारी अपने घर पर करने का भी मौका मिला है। तब वे दो दिन और एक रात हमारे पास रहे थे। आपके मुताल्लिक तब भी सुना था।"

"क्या सुना था, हजूर?"

"देखो अन्ना! इस जगह, मेरा मतलब है इस चाय पर हजूर–वजूर मत करो। इससे तो मजा किरकिरा हो जायेगा। हाँ, यह सुना था कि साहब के एक बटलर हैं। वे ईसाई हैं और उनकी बीवी साहब के मुख चढ़ी हुई है।

"तब ही मैंने समझा था कि कोई बहुत ही खूबसूरत औरत होगी जो

---

1. चिह्न।
2. क्षण।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कायदे आजम साहब पर अपना असर रखती है। मगर आज पता चला है कि वह न सिर्फ खूबसूरत ही है बल्कि एक आला तरबीयत याफ्ता और समझदार औरत भी है।''

अन्ना ने मुस्करा कर कहा, ''आप मेरी तारीफ कर मुझको शर्मिंदा कर रहे हैं। मैं अपने को इस तारीफ के लायक नहीं समझती। मेरी खूबी, जिसके लिये गवर्नर जनरल बहादुर मुझ पर मेहरबानी रखते हैं, सिर्फ यह है कि मैं उनकी खिदमत दिलोजान से करती हूँ।''

इस पर खलीफा ने मुस्कुराते हुए कहा, ''हाँ। यह तो है ही। अक्सर औरतें दिलोजान से ही मर्दों की खिदमत करती हैं। मगर उनका दिल और जान कितने बड़े हैं यही तो देखने की बात है। ऐसा मालूम होता है कि आपकी जान तो खासी अच्छी है। साथ ही आपका दिलो–दिमाग भी बहुत बड़ा है। यही वजह है कि आपको इतने बड़े आदमी ने दूसरी हजारों–लाखों औरतों पर तरजीह दी है।''

''मैं जानती हूँ कि यह और किसी वजह से नहीं है। इसमें सिर्फ मेरे खाविन्द की खिदमत की खूबियाँ ही हैं और मैं उस खिदमत में खाविन्द की मदद करती रहती हूँ।''

''ओह! तो आपकी खिदमत भी आपके खाविन्द की मार्फत ही गवर्नर जनरल बहादुर को हासिल होती है! यह तो बहुत ही अच्छी बात है। मुझको यह जान कर बहुत ही खुशी हासिल हुई है। मगर आपके खाविन्द की खिदमत कुछ सियासियात में भी दखल रखती है क्या?''

''सियासत का मतलब मैं और मेरे खाविन्द समझते नहीं। हमको इनसान के सब काम जाती, मजहबी, कौमी और मुल्की एक ही किस्म के नजर आते हैं। इनको सियासत कहिये या कुछ और कहिये, कुछ फर्क नहीं पड़ता।''

''तो अगर मिस्टर फ्रांसिस एक चाय का प्याला बना गवर्नर जनरल बहादुर को पिलाते हैं तो यह मजहबी खिदमत ही मानती हैं आप और फिर किस मजहब की, ईसाई मजहब की या इस्लाम की?''

''अपने आका की दिलोजान से खिदमत करना जहाँ हम उनके मजहब की खिदमत मानते हैं वहाँ अपने मजहब की खिदमत भी समझते हैं। उनके मजहब की इस वास्ते कि अच्छी खाने–पीने की चीजें मालिक को कुव्वत बख्शेगा और वे अपने मजहब की खिदमत बखूबी कर सकेंगे। हम अपने मालिक को खुश कर अपने मजहब की खूबी उनके दिमाग पर नख्श कर सकेंगे। इससे दोनों के मजहबों की तरक्की होगी।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खलीफा मुहियुद्दीन और जरीना बेगम तो अन्ना के कहने से बहुत प्रभावित हुए, मगर पी.ए. साहब मिस्टर रजाक को यह सब बकवास समझ आयी। मिस्टर एम.ए. रजाक अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी के ग्रेजुएट थे। उनको यह बात समझ नहीं आयी कि दो मजहब जो योरोप और अफ्रीका में खुले संघर्ष में लीन हैं, भला कैसे एक ही बात से तरक्की कर सकते हैं। वे तो पढ़े थे कि ईसाइयत इस्लाम के सामने मात खा रही है।

इस कारण रजाक ने पूछ लिया, "भला आप इसके मुताल्लिक क्या समझती हैं कि पाकिस्तान में सिर्फ मुसलमान ही रह सकेंगे? इस मुल्क में अगर कोई गैर मजहब का आदमी रहेगा तो वह एक गैर मुल्की तसव्वर किया जायेगा।"

"मैं समझती हूँ कि यह बात ईसाइयों के लिये नहीं होगी। यह तो हिन्दुओं के लिये ही हो सकती है।"

"क्यों? ईसाइयों में क्या खूबी है?"

"यह मैं बता नहीं सकती।"

"बता नहीं सकतीं या बताना नहीं चाहतीं?"

"कुछ समझिये। हाँ, अगर गवर्नर जनरल बहादुर से आप पूछने की हिम्मत रखते हैं तो पूछ लीजिये और वे आपको इस राज के जानने के काबिल समझेंगे तो बता देंगे।"

अन्ना के इस कथन में एक तीव्र डंक था। गवर्नर बहादुर और उसके पी. ए. दोनों समझ रहे थे। अन्ना के कहने का यह अभिप्राय था कि कदाचित् गवर्नर जनरल बहादुर उनको इस काबिल भी नहीं समझते जितना एक बैरे की पत्नी को समझते हैं। दोनों, खलीफा साहब और उनके पी.ए. मिस्टर रजाक चुप कर गये। उनके मुख क्रोध और लज्जा से लाल हो गये। चाय पार्टी पर एक तनाव का वातावरण छा गया। इस समय हँसमुख जरीना ने तनाव कम करने के लिये कह दिया, "पूछ तो मैं सकती हूँ, मगर आन्टी अन्ना के सामने ही। बताइये आन्टी साहिबा! है मंजूर?"

"हाँ मंजूर है। मगर एक शर्त पर कि जो कुछ मैंने कहा है वह और उन्हीं अल्फाज में जो मैंने इस्तेमाल किये हैं, पूछा जाये। इसको नमक–मिर्च, मसाला न लगाया जाये।"

"यह तो होगा ही। मगर आंटी, कुछ मजाक करने की तो इजाजत हो सकती है न?"

"क्या मजाक?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यही कि अन्ना आंटी गवर्नर बहादुर की चौबीसों घंटे की खिदमत, खास तौर पर रात के वक्त की जाने वाली खिदमत, ईसाइयत की खिदमत भी समझती हैं क्या?"

"हाँ। और साथ यह भी कि कोई मुसलमान औरत वह इस्लाम की खिदमत समझ कर अदा नहीं कर सकी।"

"यह गवर्नर जनरल बहादुर ही बता सकते हैं। भला इसका मुझे क्या इल्म हो सकता है?"

"मगर आप यह तो पूछ सकती हैं कि वे उस खिदमत को जो अन्ना से लेते हैं किसी मुसलमान औरत से क्यों नहीं लेते?"

"मैं समझती हूँ कि मुसलमान औरतों को अपने खाविन्दों से फुरसत ही नहीं होती।"

"फुरसत तो हासिल की जाती है। वैसे तो किसी को किसी की खिदमत के लिए फुरसत मिल ही कहाँ सकती है! खाविन्द नहीं तो और बहुत हैं।"

खलीफा साहब इन दो औरतों में नोक–झोंक सुन अपना क्रोध छोड़ मजा लेने लगे थे। मिस्टर रजाक इसमें किसी किस्म का लुत्फ नहीं उठा रहे थे। उसको अन्ना का यह कहना कि गवर्नर जनरल उन सब को उसके बराबर भी लायक नहीं समझते, अभी भी चुभ रहा था।

खलीफा ने जब जरीना पर ताना कसा कि वह अपने खाविन्द के अतिरिक्त भी कुछ लोगों से व्यस्त रहती है तो उसे अपने और जरीना के सम्बन्धों की बात याद आ गयी थी। इससे वे खिलखिला कर हँस पड़े और बोले, "जरीना, मैं समझता हूँ कि मिसेज फ्रांसिस ने बदला ले लिया है। अब तुम दोनों फिर बराबर–बराबर हो। मैं समझता हूँ कि चाय ठंडी हो गयी है।"

खलीफा साहब ने घंटी बजाई तो बैरा भीतर आ गया और गरम चाय लाने का हुक्म दे दिया गया।

: 5 :

गवर्नर जनरल आये और रात भर आराम करने के उपरान्त प्रातः पहली बात उन्होंने अपने बैरा जॉन से यह पूछी, "दिल्ली से डिस्पैच आई है?"

"हाँ हजूर?"

"ले आओ।"

जब मिस्टर जिन्ना बिस्तर में बैठे चाय पी रहे थे, जॉन बाहर गया और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक बड़ा–सा लिफाफा ले आया। यह लिफाफा बहुत सुबह हवाई जहाज से आया था। दिल्ली से पाकिस्तानी हाई कमिश्नर का यह भेजा हुआ था।

जिन्ना साहब ने प्याला पलंग के समीप तिपाई पर रख दिया और उत्सुकता से लिफाफे की मुहर तोड़ दी। उसमें से एक लिफाफा जिस पर लाल लेबल 'अर्जेन्ट' और नीला लेबल 'पर्सनल' चिपकाया हुआ था, उठाया और खोल डाला।

उसमें एक पत्र अंग्रेजी में टाइप हुआ किया निकला। लिखा था, "24 अक्टूबर 1947। अभी तक कश्मीर सरहद से किसी किस्म की खबर नहीं आयी। दिल्ली में रंग–रेलियाँ मनाई जा रही हैं। एक तरफ महात्मा जी हर रोज शाम को बिरला हाउस में अपनी शान्ति और अहिंसा की पुकार लगा रहे हैं। और दूसरी ओर जवाहरलाल नेहरू रोज एक नया लेक्चर झाड़ देते हैं। कनाट प्लेस में लुट–पिट कर आयी पंजाबी औरतें नये फैशन के कपड़े पहिन अपनी खूबसूरती की छाप मशरिकी और जनूनी लोगों पर लगा रही हैं।

"इस सब से पाकिस्तान का फायदा हो रहा है। दिल्ली की मस्जिदों से पंजाबी धक्के दे–देकर निकाले जा रहे हैं और मुसलमान अब फिर दिल्ली की सड़कों पर दिखाई देने लगे हैं।"

जिन्ना साहब ने पत्र पढ़कर मुस्कराते हुए जॉन से कहा, "जॉन! सुनोगे? हमारे पड़ोस के राज्य के दारुल सल्तनत में क्या हो रहा है?"

"हाँ हुजूर! विलियम वहाँ रहता है। इस वास्ते मेरी वहाँ के हालात सुनने में ख्वाहिश रहती है।"

जिन्ना ने चिट्ठी पढ़ कर सुना दी।

"यह तो ठीक है हुजूर! कुछ तो फायदा हो ही रहा है पाकिस्तान को।"

"अगर वहाँ यही बात दो–तीन साल तक और रही तो पाकिस्तान इतना मजबूत हो जायेगा कि हिन्दुस्तान उसकी मेहर पर ही कायम रह सकेगा।"

"हमारी तो खुदा से यही दुआ रहती है कि हुजूर का इकबाल बना रहे। बाकी तो खुद–बखुद होता रहेगा।"

इस वक्त बाहर से घंटी बजी। "जॉन! देखो कौन है?" जिन्ना ने कहा।

जॉन कमरे के बाहर गया और तुरन्त ही लौट आया और बोला, "हुजूर, यहाँ के गवर्नर बहादुर हैं।"

"उनको कहो अगर यहाँ आने में ऐतराज न हो तो आ सकते हैं। मेरे साथ कोई हरम तो है नहीं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
जॉन गया और मुहियुद्दीन साहब को लेकर आ गया। खलीफा साहब ने आते ही कहा, "मैं यह अपना फर्ज समझता हूँ कि सुबह सबसे पहिले अपने गवर्नर जनरल बहादुर के दीदार करने का फख्र हासिल करूँ, और...।"

जिन्ना ने मुस्कराते हुए कह दिया, "परन्तु यह फख्र तो हमारे बटलर जॉन हासिल कर चुके हैं।"

"जनाब, यह जॉन और आप दो हैं क्या? इसको तो मैं आपके कमरे का फरनीचर ही समझता हूँ।"

"ओह! आपका यह अन्दाज ठीक ही है। इसलिये आपके फख्र में किसी किस्म की कमी नहीं आयी। हाँ और क्या?"

"मैं कुछ खबर देने आया हूँ। अगर यह जॉन एक मेज–कुर्सी की तरह खामोश और मोहतबिर है तो अर्ज करूँ?"

"हाँ–हाँ। इसको यही समझो। जॉन!" जिन्ना साहब ने कहा, "उस दीवार के साथ एक आलमारी की तरह खड़े हो जाओ।"

जॉन मुस्कराया और कमरे के वार्डरोब के साथ चुपचाप मगर सतर्क खड़ा हो गया। खलीफा समझता था कि जिन्ना साहब जॉन को अपना 'बौडी–गार्ड' भी मानते हैं। इस कारण वह कहने लगा, "मरी से खबर आयी है कि पाँच हजार के करीब कबायली एबोटाबाद से चलकर रियासत कश्मीर में घुस गये हैं।"

"तो इसमें अजीब बात क्या है?"

"अजीब तो नहीं। हाँ, खतरनाक जरूर है।"

"क्या खतरा है इसमें और किसको है?"

"खतरा पाकिस्तान को है। हिन्दुस्तान के साथ इल्हाक करने के लिये राजा मजबूर हो जायेगा। हिन्दुस्तान यह इल्हाक मान जायेगा और तब इस रियासत में घुस जाना पाकिस्तान का हिन्दुस्तान पर हमला समझा जायेगा। तब हिन्दुस्तान और पाकिस्तान में जंग छिड़ जायेगी। यह पाकिस्तान के हक में ठीक नहीं होगी।"

"इन सब बातों को अच्छी तरह सोच लिया गया है।"

"क्या मैं भी उस सोच के नतीजों को सुन सकता हूँ? हुजूर, मेरी भी जिम्मेदारी है। मैं इस सूबे का गवर्नर मुकर्रिर हूँ। जंग के वक्त इसकी और यहाँ के बाशिन्दों की हिफाजत की जिम्मेदारी मेरी है।"

"हम समझते हैं कि यह सब काम सैन्ट्रल गवर्नमेंट का है। आपको फिक्र नहीं करना चाहिए। इस पर भी मैं आपको अपने मन की सब गिनती–मिनती बता सकता हूँ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"देखिये खलीफा साहब! जब कश्मीर का बेवकूफ राजा आजाद कश्मीर के ख्वाब ले रहा था, मैं कश्मीर को ताकत से पाकिस्तान में शामिल करने की तजवीज बना चुका था। लार्ड माउन्टबेटन ने, जब वे वाइसराय–हिन्द थे, राजा को बताया था कि कश्मीर आजाद नहीं रह सकेगा। उसको किसी–न–किसी डोमिनियन के साथ इल्हाक कर लेना चाहिए। राजा ने बताया था कि वह हिन्दुस्तान के साथ इल्हाक नहीं कर सकता।

"राजा का कहना था कि वहाँ नेहरू प्राइम–मिनिस्टर है और वह अपने को, अपनी महारानी को तथा अपने लड़के को उसकी सल्तनत में महफूज नहीं मानता। इस पर वाइसराय का कहना था कि पाकिस्तान से इल्हाक कर लो। परन्तु राजा ने पूछ लिया कि उसकी और उसके रियासत के पाकिस्तान में सही–सलामत रहने की गारण्टी इंग्लैण्ड देगा क्या?

"इंगलैण्ड हिन्दुस्तान छोड़ रहा है। वह सब राजे–महाराजाओं से अपने एहदनामे वापिस ले रहा है। इस वास्ते वाइसराय ने कह दिया कि यह राजासाहब के सोचने की बात है कि वे किस तरह महफूज रह सकते हैं।

"इस पर भी राजा ने आजादी का रास्ता पकड़ा। उसका वजीर–ए–आजम रामचन्द्र काक आया था और बताता था कि अगर पाकिस्तान रियासत के साथ 'स्टैंड स्टिल'[1] का समझौता कर ले तो कश्मीर पाकिस्तान का दोस्त व मददगार बन जायेगा। यह हमारे बहुत फायदे की बात होगी।

"मैंने 'स्टैंड स्टिल' समझौता कर लिया था मगर मैं समझता था कि सियासियात में कोई भी वायदा या समझौता कुछ कीमत नहीं रखता। यह कबायलियों के पास चार–पाँच सौ जीपें, 'आरमर्ड कारें', मशीन गनें और फिर 'ग्रैनैड'[2] होंगे। यह तो एक पर्दा है हिन्दुस्तान को बेवकूफ बनाने के लिये।"

"मगर हुजूर! क्या हिन्दुस्तान बेवकूफ बना रहेगा?"

"मुझको मोतबिर जरिये से पता चला है कि नेहरू ने अपने साथी पटेल को कह दिया है कि वह राजा हरिसिंह को इस दुनिया से उठ गया देखना चाहता है। पटेल का कहना था कि रियासत के भारत के साथ इल्हाक हो जाने के बाद वह उठे तो ठीक हो सकता है। नहीं तो कश्मीर पाकिस्तान के हाथ में चला जायेगा।

"यह सुना है कि नेहरू ने यह कह दिया था कि भारत इतना बड़ा है कि

---

1. वर्तमान स्थिति पर।
2. हथगोले।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
अगर यह पहाड़ी इलाका इसमें न रहा तो कुछ नुकसान नहीं।''

''यह बात गलत मालूम होती है।'' खलीफा ने कह दिया।

''क्यों, इसमें क्या गलत बात है?''

''मैं नेहरू को मुल्क का इतना गद्दार नहीं समझता।''

''यह गद्दारी है या हुव्वल–वतनी है, यह सोचने के तरीके पर मुनहसिर है। सुना है नेहरू इसको भारत के लिये फायदेमन्द समझता है। उसका ख्याल है कि कश्मीर हिन्दुस्तान पर एक किस्म का बोझा होगा। अगर कश्मीर आजाद नहीं रह सकता तो यह पाकिस्तान के पास जाना ही चाहिए।''

खलीफा को यह सब बात अस्वाभाविक–सी प्रतीत हो रही थी। इसको वह किसी खुशामदी से बताई खबर समझ कर चुप कर रहा। अब उसने भारत की बात छोड़ कर पाकिस्तान की बात पर विचार करना ही ठीक समझ। उसने कहा, ''यह सब ठीक भी हो सकता है। मगर हुजूर! मेरा सवाल तो यह है कि अगर राजा ने हिन्दुस्तान से इल्हाक मंजूर कर लिया और हिन्दुस्तान ने पाकिस्तान पर हमला कर दिया तो फिर किस तरह इसकी हिफाजत होगी?''

''बात यह है कि मुझको शुबहा है कि राजा के रहते नेहरू कश्मीर का इल्हाक मंजूर नहीं करेगा। इस पर भी कश्मीर का नया वजीर–ए–आजम एक पंजाबी और 'आर्य–समाजी' बन गया है। मैं समझ नहीं सका कि यह सूझ किसने महाराज को दी है। काक ठीक था। उसको मैंने कश्मीर में एक बहुत बड़ी जागीर देने की पेशकश कर रखी थी। मेजर जनरल जनकसिंह वजीर बना था। उसकी भी मुझको फिक्र नहीं थी। वह फौज पर उम्मीद करता था और कश्मीर की फौज के मुसलमान तो राजा के लिये एक बूँद खून भी नहीं बहायेंगे। खलीफा साहब! शाम तक सुनियेगा कि मुजफ्फराबाद में लेफ्टिनेंट कर्नल नारायणसिंह का क्या हशर होता है। मैं कल शाम को वहाँ से चलने के वक्त यह खबर लेकर चला था कि कबायली गढ़ी पार कर मुजफ्फराबाद के दरवाजे पर पहुँच गये हैं। इस वक्त मुजफ्फराबाद ले लिया गया होगा या वहाँ घमासान जंग हो रही होगी।''

''मुझे क्या तैयारी करनी चाहिए?'' खलीफा को जिन्ना के आत्मविश्वास पर कुछ परेशानी अनुभव हो रही थी।

''कुछ नहीं, ईद आने वाली है। उसके जश्न की तैयारी करनी चाहिए। मैं समझता हूँ इस साल ईद का जश्न कश्मीर के फतह होने से दुगनी खुशी का मौका होगा।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गवर्नर जनरल बन जाने के बाद जिन्ना से खलीफा मुहियुद्दीन पहिली बार मिला था। इसके मस्तिष्क में हाई कोर्ट में जज रहने की स्मृति अभी थी। वह घटनाओं को एक दूसरी दृष्टि से भी देखता था। वह मुद्दई और मुद्दालय दोनों के दृष्टिकोण से विचार करने का अभ्यास रखता था। इस कारण उसने स्वभाववश कह दिया, "मैं समझता हूँ कि हमको मुस्तकबिल पर इतना ऐतबार नहीं करना चाहिए। हमने सर शाहनिवाज भुट्टो की बातों की सच्चाई पर हद से ज्यादा ऐतबार किया था। वे साहब जूनागढ़ से तार भेज रहे थे कि रियासत हमारे अंगूठे तले है और फिर एक दिन नवाब सर महावत खाँ रसाल खांजी और भुट्टो साहब कराची हवाई अड्डे से टेलीफोन करते सुने गये थे कि वे जूनागढ़ से जान बचा कर भाग आये हैं।"

जिन्ना साहब जूनागढ़ की याद दिलाने से परेशानी अनुभव करने लगे। इस पर भी एक योग्य वकील होने के नाते अपनी सफाई देने लगे। उन्होंने कहा, "जूनागढ़ में हमारा अनुमान गलत जरूर रहा है। मगर यह नवाब की बेवकूफी का नतीजा था। आखिर दम तक वे हमको ऐतबार दिलाते रहे थे कि हिन्दुस्तानी फौज उनकी रियासती और पाकिस्तानी वालन्टीयरों का मुकाबिला नहीं कर सकती।"

खलीफा दूसरों पर इल्जाम लगाने की बात सुन मुस्कराया, परन्तु तुरंत ही गम्भीर हो पूछने लगा, "नवाब साहब कुत्तों की पहचान रखते थे। उनको फौजी तैयारी के मुताल्लिक भला क्या इल्म हो सकता था! मगर हुजूर! यह भुट्टो साहब वहाँ क्या कर रहे थे?"

"वह भी फौजी तैयारी के मुताल्लिक कुछ नहीं जानता था। मगर खलीफा साहब, हम कश्मीर फतह कर अपनी जूनागढ़ की बदनामी को धो डालेंगे। आप तीन–चार दिन तक इन्तजार करें। सब ठीक हो जायेगा। मैं ईद के दिन श्रीनगर में नमाज पढ़ना चाहता हूँ। तब तक यहीं रहूँगा और यहाँ से ही हवाई जहाज से श्रीनगर जाऊँगा।"

खलीफा चिन्ताग्रस्त हो उठा और बोला, "मैं आपको यह याद दिलाने आया था कि नौ बजे दर्बार रखा हुआ है। लाहौर के रईस और अफसरान आप से मुलाकात करने आ रहे हैं।"

जिन्ना ने वक्त देखा। आठ बज रहे थे। उन्होंने कहा, "लाहौर में तो अभी से सर्दी हो रही है।"

खलीफा ने सलाम की और बाहर चला गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: 6 :

जब पंजाब के गवर्नर बहादुर जिन्ना साहब के कमरे से निकल गये तो जिन्ना साहब ने जॉन को कहा, "हाँ तो बताओ। अन्ना कैसी है? रात मैं बहुत थका हुआ था और बहुत देरी हो चुकी थी।"

"हुजूर! हम कराची में परेशानी महसूस कर रहे थे। अन्ना का ख्याल था कि आपको हमारे बिना बहुत तकलीफ हो रही होगी। इसलिये आपका तार मिलते ही हम चल पड़े। मगर आपको आने में देरी होती देख रावलपिंडी जाने की बात सोचने लगे थे। कल दिन भर हमको हवाई जहाज नहीं मिल सका। गवर्नर बहादुर के सेक्रेटरी साहब ने कह दिया कि दो दिन तक जहाज में जगह नहीं।"

"यह रजाक बहुत ही बद्दिमाग आदमी है। तुम्हारे लिये तो जगह बन सकती थी। खैर, मैं तो आने ही वाला था। देखा है यह खलीफा तुमको मेरे कमरे की मेज–कुर्सी की मानिन्द बेजान समझता है।"

"हुजूर! वे ठीक ही समझते हैं। इस कमरे से बाहर तो मेरी जबान ही नहीं रहती।"

"अच्छा देखो, हमें जल्दी तैयार होना है। तुम हमारे नाश्ते का बन्दोबस्त करो। मैं गुसल करने जा रहा हूँ। अन्ना को कह दो कि हमारी दरबारी अचकन और चूड़ीदार पायजामा तैयार कर दे।"

जब जिन्ना कपड़े पहन नाश्ता करने डाइनिंग हाल में पहुँचा तो खलीफा मुहियुद्दीन, उनका पी.ए., एम.ए. रजाक और उनकी स्टेनो जरीना वहाँ मौजूद थे। अन्ना जिन्ना साहब की कुर्सी के पीछे खड़ी थी। जॉन गवर्नर साहब के बैरों में खड़ा सबके लिये नाश्ता लगवा रहा था।

जब टोस्ट, अंडे, मक्खन और चाय ली जा रही थी तो एक चपरासी आया और पी.ए. रजाक साहब को एक लिफाफा दे कर चला गया। रजाक ने लिफाफा खोल पढ़ा और फिर खलीफा साहब के हाथ में दे दिया। खलीफा मुहियुद्दीन ने वह कागज पढ़कर जिन्ना साहब को दे दिया।

उस पर लिखा था, 'सीक्रेट वायरलेस मैसेज'। नीचे यह था–

'आज कश्मीर के वजीर–ए–आजम महाजन साहब पंडित नेहरू से मिलने आये हैं। उनके साथ शेख अब्दुल्ला भी हैं। यह ख्याल किया जा रहा है कि राजा साहब ने उनको रियासत के भारत के साथ इल्हाक का इन्तजाम करने के लिये भेजा है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिन्ना साहब ने पढ़ा और पूछ लिया, "इस मैसेज को भेजने वाला कौन है?"

खलीफा साहब ने कह दिया, "मैसेज तो पाकिस्तानी हाई कमिश्नर के दफ्तर से आता है। मगर खबर हमारे खुफिया पुलिस के लोग लाते हैं जो भारत के प्राइम–मिनिस्टर के घर में नौकर हैं।"

"इसके बाद कब खबर आयेगी?"

"जब कुछ बताने लायक होगा।"

"मगर यह मैसेज मुझे क्यों नहीं भेजा गया?"

"यह सब इन्तजाम पंजाब सरकार का है। हाईकमिश्नर का दफ्तर तो सिर्फ डाकिये का काम करता है।"

"यह बात तो गलत है।"

"तो आप हाईकमिश्नर को मना कर दीजिये। मैं इसको गलत नहीं समझता।"

जिन्ना साहब के माथे पर त्यौरी चढ़ गयी, परन्तु तुरन्त ही मुस्कराते हुए पूछने लगा, "तो नेहरू के घर में आदमी आपकी सरकार ने रखे हुए हैं।"

"जी!"

"किसलिये?"

"पंजाब की हिफाजत के लिये।"

"यह तो आप पाकिस्तान की 'फौरन पौलिसी में' दखलन्दाजी कर रहे हैं।"

"फौरन पौलिसी में नहीं हुजूर! यह तो सिर्फ अपने कान और आँखें खोल कर बैठने की बात है।"

"मैं चाहता हूँ कि इन कान और आँखों का फायदा मुझको भी मिलना चाहिए।"

"वह तो हमेशा हाजिर है। आज सुबह भी जब मैं गवर्नर जनरल बहादुर की खिदमत में हाजिर हुआ था तो अपने इन कानों से सुनी बात ही बताने वहाँ पहुँचा था।

"एक मैसेज और है। वह है भारत की आम खलकत के ख्याल की बात। खलकत समझती है कि कश्मीर भारत के साथ रहे। यह कल शाम की खबर थी। जब कश्मीर पर हमले की खबर दिल्ली पहुँची तो सिवाय दो आदमियों के और सब बारसूख लोग कश्मीर में भारत की फौजी कुमक भेजने की बात कहने लगे थे। कुछ लोग यह महसूस करते थे कि राजा ने रियासत का इल्हाक नहीं किया। मगर सब यह समझते हैं कि इल्हाक हो चाहे न हो,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कश्मीर हिन्दुस्तान का है। हिन्दुस्तान को ले लेना चाहिए।''

''हिन्दुस्तान का कैसे है?''

''जैसे जूनागढ़ था।''

''तो आप दोनों में फर्क नहीं समझते? एक में हिन्दू अक्सरीयत थी और दूसरे में मुसलमानों की अक्सरीयत है।''

''ये बातें तो दूसरा दर्जा पर हैं। असल बात यह है कि दोनों जगहों में हिन्दुओं के मजहबी मुतबर्रक इदारे[1] हैं। जूनागढ़ में उनके कृष्ण ने इस दुनियाबी जिस्म को छोड़ा था। वहाँ सोमनाथ का मन्दिर है जो कई बार गिराने के बाद भी फिर बनाया जाता रहा है। इधर कश्मीर में अमरनाथ की गुफा है, मार्कण्डेय ऋषि का मन्दिर है और शंकराचार्य हैं। इनके अलावा भी वहाँ दूसरे मजहबी इदारे हैं। भला हम मुसलमान कभी मक्का मदीना में ईसाई व यहूदियों की अक्सरीयत हो जाने पर मक्का मदीना को भूल सकते हैं।''

''तो आपका मतलब है कि हमको जूनागढ़ की तरह कश्मीर से भी लौट आना चाहिए।''

''नहीं जनाब! मेरा मतलब यह नहीं है। मेरा मतलब यह है कि हमें राजा को भारत से आजाद रहने में मदद देनी चाहिए थी और वहाँ की मुसलमान आबादी को राजा से बगावत करने के लिये इश्तयाक[2] दिलाना चाहिए था।''

''मैं समझता हूँ कि मुसलमान तो अब भी पाकिस्तान में शामिल होने को तैयार हैं। सिर्फ वे अपने को बेबस समझते हैं। मेरी जल्दी में भी एक वजह है। लार्ड माउन्टबेटन और पंडित नेहरू के दिल्ली में रहते हुए हम जो कुछ भी कर सकें ठीक है। पीछे तो पटेल और उनके साथी ही हैं। उनके रहते तो बहुत मुश्किल हो जायेगी।''

इस पर खलीफा साहब का मुख बन्द हो गया। नाश्ता खत्म हो चुका था। सब उठ खड़े हुए और गवर्नमेन्ट हाउस के दरबार हाल को चल पड़े।

अन्ना चुपचाप जिन्ना की कुर्सी के पीछे खड़ी थी। जब सब चले गये तो वह भी डाइनिंग हाल से निकली और अपने कमरे की ओर चल पड़ी। जॉन उसके साथ–साथ था।

जॉन नाश्ते के समय कुछ दूर था। इस कारण वह खलीफा और जिन्ना साहब में हुए वार्त्तालाप को सुन नहीं सका। उसने चलते हुए पूछ लिया,

---

1. धार्मिक पवित्र स्थान।
2. भडकाना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"अन्ना, साहब को यह खलीफा क्या कह रहा था?"

अन्ना ने सब बातचीत सुना दी। इस पर जॉन ने कहा, "यह खलीफा एक लायक आदमी मालूम होता है।"

इस समय वे अपने कमरे में जा पहुँचे। अन्ना अपने पति को वहाँ बैठा कर रसोईखाने में गयी और वहाँ से दो आदमियों के लिये अल्पाहार का सामान ले आयी। दोनों अपने कमरे में बैठकर अल्पाहार लेने लगे। अन्ना ने खाते हुए पिछली सायंकाल की चाय की सब घटना सुना दी। इस पर जॉन बोला, "तो यह पी.ए. रजाक का बच्चा मुझको तुम्हारा दलाल समझता है?"

"वह बेवकूफ है और कुछ नहीं जानता कि हमारे साहब से ताल्लुक कैसे हैं। छोड़ो इस बात को। खलीफा का कहना है कि पाकिस्तान और हिन्दुस्तान में जंग छिड़ने वाली है।" अन्ना का कहना था।

"यही मुझको समझ आया है।" जॉन ने चाय पीते हुए कहा।

"मगर अपने साहब तो पाकिस्तान की कामयाबी पर यकीन रखते हैं। वह कह रहे थे कि ईद हम श्रीनगर में मनायेंगे।"

अन्ना और जॉन अभी बातें ही कर रहे थे कि जॉन के नाम की एक चिट्ठी जो गवर्नर जनरल बहादुर के डिस्पैच के साथ कराची से आयी थी, उनको देने एक चपरासी आ गया। जॉन ने चिट्ठी खोली और पढ़ने लगा। ज्यों–ज्यों वह चिट्ठी पढ़ता गया, उसका मुख गम्भीर और पीला होता गया। अन्ना उसका मुख विवर्ण होता देख खाती–खाती रुक गयी और चिन्ता में अपने पति का मुख देखने लगी।

जॉन ने चिट्ठी पढ़कर अन्ना को दे दी। चिट्ठी लिखने वाला था मौलाना बशीर, पाकिस्तानी कैबिनेट का एक सदस्य। चिट्ठी में लिखा था–

"मैं कल रात अन्ना से मिलने के लिये, तुम्हारे क्वार्टर में पहुँचा तो वहाँ एक दूसरा फूल दिखाई दिया। मुझको अन्ना भूल गयी और मैं उस पर लपका, मगर उस फूल के कांटे चुभे तो पीछे हट गया। इस पर वह भाग कर अन्ना के सोने के कमरे में चली गयी और अन्दर से दरवाजा बन्द कर बैठी रही। मैं कुछ देर तक इन्तजार करता रहा। फिर बाहर आ मैंने कर्मदीन से पूछा तो उसने बताया कि वह एक ईसाई औरत है। यह आजकल जॉन साहब के घर में ठहरी हुई है।

"मैंने उसे पकड़ कर हाजिर करने के लिये कहा, तो वह इसका इनाम माँगने लगा। मजबूरन उसे कुछ देना पड़ा।

"मैं रात भर करीम और उस नाजनीन की राह देखता रहा, मगर कोई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं आया। आज सुबह मैं तुम्हारे घर पर पहुँचा तो तुम्हारे क्वार्टर के बाहर उस औरत की लाश पड़ी थी। पुलिस तहकीकात करने वहाँ पहुँची हुई थी। पुलिस की तहकीकात का यह नतीजा है कि उस औरत से यकेबाद दीगरे कई आदमियों ने बदफेली की है और वह इस फेल में मर गयी है। मगर पुलिस वाले इस सबको छिपा कर रखना चाहते हैं। गवर्नर जनरल की कोठी में यह वारदात तो दुनिया भर में बदनामी की वजह हो जायेगी। मगर मैंने अन्ना को यह खबर भेजनी मुनासिब समझी है।

"कर्मदीन का यह कहना है कि उसने उस औरत को पकड़ने के लिये कुछ आदमी भेजे थे। वे खिड़की में से फाँद कर भीतर गये तो उसको रात की पोशाक में सोया देख उससे बदफेली करने लगे। वह बिस्तर पर ही मर गयी थी।

"मैंने कर्मदीन को बहुत डाँटा तो वह मुझको आँखें दिखाने लगा। उसने कह दिया कि अगर मैंने गवर्नर जनरल साहब से उसकी शिकायत की तो वह मेरे सब राज खोल देगा। इस वास्ते मैं तो इस मुआमले में चुप रहूँगा। हाँ, अगर अन्ना मुनासिब समझे तो साहब से इसकी बाबत कह सकती है।"

अन्ना इस चिट्ठी को पढ़कर गम्भीर हो गयी। उसने कुछ नहीं कहा और चिट्ठी अपने बैग में रख ली।

जान ने सिर्फ इतना कहा, "जैसी उम्मीद करते थे, वैसा हो नहीं रहा। यह आजादी है क्या?"

"कल रजाक साहब ने कहा था कि गैर–मुसलमान पाकिस्तान में रह नहीं सकेंगे। जब मैंने कहा कि यह तो हिन्दुओं के मुताल्लिक ही हो सकता है ईसाइयों के लिये नहीं तो वह बोला, 'ईसाइयों के लिये क्यों नहीं? क्या खूबी है उनमें?'

"मतलब यह कि ये लोग मुसलमानों के अलावा सबसे नफरत करते हैं।"

जॉन इसका उत्तर नहीं दे सका।

: 7 :

मध्याह्न के समय गवर्नर जनरल बहादुर आराम करने लगे तो अन्ना उनके कमरे में जा पहुँची। जिन्ना साहब ने कहा, "अन्ना! आज मैं बहुत थका हुआ हूँ।"

"तो आपके सिर पर मालिश कर दूँ। सब थकावट दूर हो जायेगी?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह तजवीज तो ठीक है। मगर किस तेल से करोगी?"

"जो आप अक्सर इस्तेमाल किया करते हैं। मैं उसकी दो बोतल साथ ले आयी हूँ।"

"तो जाओ, ले आओ।"

जिन्ना साहब दरबार में दो घण्टा बोलते रहे थे। उसके बाद वे एक घण्टा भर पंजाब की वजारत से बातचीत करते रहे थे। खाना खाकर थकावट दूर करने के लिये सोने आये थे कि अन्ना आ पहुँची थी। अन्ना तेल ले कर आयी तो पलंग के समीप एक स्टूल खिसका कर उस पर बैठ गयी। उसने अपने बैग में से मौलाना की चिट्ठी निकाल साहब के हाथ में देते हुए कहा, "आप इसे पढ़ लीजिये। मैं तो यह दिखाने ही आयी थी।"

जिन्ना साहब पत्र पढ़ने लगे तो अन्ना ने एक तौलिया सिर के नीचे बिछा दिया और हाथ में तेल ले सिर पर लगा, धीरे–धीरे कोमल हाथ से थपथपाने लगी।

जिन्ना साहब ने आधा पत्र ही पढ़ा और उसे एक तरफ रखकर कह दिया, "इस सब वारदात का मुझको इल्म है। कराची की 'डिस्पैच' में इसका भी जिकर है।"

"हजरत! इस पर क्या हुक्म सादर होता है?"

"कुछ नहीं। मिसेज मनचन्दानी को किसी मुसलमान से शादी कर लेनी चाहिए थी।"

"मगर वह तो ईसाई थी।"

"ठीक है। मगर मुसलमान के लिये सब मजहब की औरतें हलाल हैं।"

"मगर एक ईसाई औरत के लिए सब मजहब के आदमी हलाल नहीं माने गये।"

"तो तुम मुझको हराम समझ कर मंजूर करती हो?"

"जी नहीं। आपकी बात दूसरी है।"

"मैं कुछ फर्क नहीं समझता।"

अन्ना चुप कर रही। इस पर भी उसके मन में एक प्रकार का प्रकाश होने लगा। इस प्रकाश को लाने में प्रथम कारण रजाक था। उसमें साहब का यह कहना सहायक हो गया कि वह मुसलमानों और अन्य मजहब वालों में अन्तर नहीं समझता।

अन्ना को गम्भीर देख जिन्ना साहब ने अपने कथन की सफाई दे दी। उन्होंने कहा, "देखो अन्ना डीयर! यह मैं जानता हूँ कि तुम लोग दूसरे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ईसाइयों की तरह नहीं हो और मैं अपने को भी आम मुसलमानों से मुखतलिफ समझता हूँ। मगर यह हुकूमत है। इसमें मेरे और जॉन व अन्ना के अलावा और बहुत लोग रहते हैं और मैं उन लोगों की ख्वाहिशात की मुखालिफत नहीं कर सकता। मुझे उनके मुताबिक चलना ही पड़ता है। इसलिए मैं कहता था कि पाकिस्तान में रहते हुए मनचन्दानी की बेवा को किसी मुसलमान से शादी कर लेनी चाहिए थी। मेरी हिफाजत की भी एक हद है। मैं उसके बाहर नहीं जा सकता।''

जिन्ना साहब ने तो अपनी सफाई दे दी, मगर अन्ना को इससे संतोष के स्थान पर क्रोध चढ़ आया, परन्तु आज वह डरी हुई थी। कमला मनचन्दानी की दुर्दशा का वह चित्र जो मौलाना बशीर के पत्र को सुन कर उसके मस्तिष्क में बना था, अति भयंकर था। वह अपने क्रोध को भीतर ही भीतर पी गयी।

वह चुपचाप साहब के सिर की मालिश करती रही। साहब को इससे सुख अनुभव हुआ और वे जम्हाई लेने लगे। उन्होंने पलंग पर करवट ली तो अन्ना उनको वहीं छोड़ कर चुपचाप कमरे से बाहर निकल गयी।

एक घण्टा उपरान्त खलीफा मुहियुद्दीन गवर्नर जनरल से मिलने आए। सोने के कमरे का दरवाजा बन्द देख वे झिझक रहे थे कि घण्टी बजायें अथवा न कि उनकी दृष्टि जॉन पर पड़ गयी। वह अपने कमरे में चाय ले जा रहा था। अन्ना वहाँ ही थी।

खलीफा ने जॉन को आवाज दे दी, ''जॉन!''

जॉन ने ट्रे वहीं एक तरफ रख दी और सामने हाजिर हो बोला, ''हुजूर।''

''जरा देखो। गवर्नर जनरल बहादुर जाग रहे हैं क्या?''

जॉन ने आराम से दरवाजा खोला और साहब को गौर से मौलाना बशीर की चिट्ठी पढ़ते देख सलाम कर सामने खड़ा हो गया। जिन्ना ने चिट्ठी खत्म की तो जान ने अर्ज कर दी, ''गवर्नर बहादुर मुलाकात के लिये बाहर खड़े हैं।''

''उनको ले आओ।''

खलीफा ने आते ही कहा, ''दिल्ली से एक और मैसेज आया है।''

''रेडियो से?''

''जी। भारत रेडियो से भी और अपने खुफिया जरिये से भी।''

''क्या नई बात हुई है?''

''भारत सरकार ने कश्मीर का इल्हाक मंजूर कर लिया है। बस इतनी ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
खबर है भारत रेडियो पर। मगर हमारे आदमियों ने कुछ खुलासा से बात बताई है। पंडित नेहरू इल्हाक मानते नहीं थे। परन्तु कश्मीर के वजीर–ए–आजम की चाल कामयाब हो गयी है। वे शेख अब्दुल्ला को अपना खास सलाहकार बना कर ले गये थे और शेख की बात से नेहरू ना नहीं कर सके। भारत की वजारत ने यह मंजूर कर लिया है कि कश्मीर का महाराजा इल्हाक के लिये तजवीज करे तो यह मंजूर कर ली जाये।"

"यह ठीक है क्या?"

"हाँ हुजूर!" खलीफा ने व्यंग्यात्मक भाव में कहा। इस पर गवर्नर जनरल ने खलीफा को दिल्ली अपने हाई–कमिश्नर को रेडियो द्वारा यह संदेश भेजने के लिये कहा–"आप रेडियो से यह इत्तला भेज दें कि गवर्नर जनरल पाकिस्तान हाई कमिश्नर को फौरन भारत के गवर्नर जनरल, लार्ड माउन्ट–बेटन से मिलने के लिये कहते हैं। हम कश्मीर का भारत से इल्हाक गैर–कानूनी मानते हैं। यह सोलह अगस्त के बाद हुआ है। लार्ड माउन्टबेटन को इसकी बाबत लन्दन से बात कर लेनी चाहिए।

"एक केबल लन्दन के हाई कमिशनर को भेजो। कहो, प्राइम मिनिस्टर एटली से तुरन्त मिल कर राजा के भारत से इल्हाक के खिलाफ प्रोटेस्ट कर दे। प्राइम मिनिस्टर को कहे कि इससे भारत और पाकिस्तान में लड़ाई छिड़ जाने की उम्मीद है।"

खलीफा यह आज्ञा लेकर कमरे से निकल गया।

"क्यों जॉन!" जिन्ना ने उसकी तरफ देख कर पूछ लिया। जॉन सुबह की भाँति दीवार के साथ खड़ा चुपचाप सुन रहा था। पलंग के समीप आ बोला, "हुजूर! भारत पर भी साथ हमला कर दिया जाये तो ठीक नहीं क्या?"

"नहीं, इतनी हमारी अभी ताकत नहीं हुई।"

"तो फिर कश्मीर से कबाइलियों को वापिस बुला लीजिये।"

"क्यों?"

"नहीं तो भारत पाकिस्तान पर हमला कर देगा।"

"नहीं करेगा। लार्ड माउन्टबेटन इसमें रुकावट डालेंगे। देखो मैं एक राज की बात बताता हूँ। जब भारत में स्वराज सरकार बनी थी तो कांग्रेस और मुस्लिम लीग ने यह साँझी ख्वाहिश जाहिर की थी कि जब तक दोनों सल्तनतों का कांस्टीच्यूशन नहीं बन जाता तब तक लार्ड–माउन्टबेटन दोनों सल्तनतों के गवर्नर जनरल हों। भारत ने तो अपनी बात पूरी कर दी है, मगर पाकिस्तान नहीं माना। मैं समझता हूँ कि पाकिस्तान बहुत छोटा मुल्क ही बन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
सका है। इसको बड़ा करने के लिये हमको साला तक दूसरे इलाके अपने में शामिल करने हैं। जूनागढ़ में हम कामयाब नहीं हुए। उसमें माउन्ट–बेटन और लन्दन हमारे हक में नहीं था। मगर कश्मीर के मुआमले में ये दोनों हमारी मदद करेंगे।

जॉन का दिमाग इस समय यह विचार कर रहा था कि ईसाई और अंग्रेज पाकिस्तान बनने में मददगार थे, परन्तु पाकिस्तान तो ईसाइयों की, और अगर मौका पड़ा, तो इंग्लिस्तान की भी मुखालिफत करने पर जुट जाएगा। अन्ना ने वह बात अपने पति को बतायी थी जो जिन्ना ने सोने से पहले उसे कही थी।

इस कारण वह कुछ कह नहीं सका। जिन्ना पुनः कहने लगे, "क्यों जॉन! अब भी समझते हो कि भारत पाकिस्तान पर हमला करेगा?"

"अगर उसे रत्ती भर भी अक्ल होगी तो जरूर करेगा। अभी न सही, मगर जल्दी ही।"

"ओह! तो तुम समझते हो कि भारत के हाकिमों को अक्ल है? अगर उनमें अक्ल होती तो लार्ड माउन्ट–बेटन को अपना गवर्नर जनरल न बनाते। वे डेढ़ सौ साल तक अग्रेजों के मातहत रह कर भी यह बात समझ नहीं सके कि इंग्लैण्ड हिन्दुओं का जानी दुश्मन है।"

"किस लिये हुजूर?"

"इसलिये कि अगर हिन्दुस्तान ताकतवर हो गया तो वह एशिया का ही नहीं बल्कि सारा–का–सारा ब्रिटिश सल्तनत हजम कर जायेगा।"

"और हुजूर! आप भी यही समझते हैं क्या?"

"मेरे समझने की बात नहीं। मैं तो इस्लाम और हिन्दुइजम की सात सौ साल तक जद्दो–जहद को जानता हूँ। इस्लाम हिन्दुइजम को सात सौ साल में भी हजम नहीं कर सका। तब के हालात से आज के हालात दूसरे हैं। यह हिन्दू कौम सिर्फ एशिया के लिये ही नहीं बल्कि योरुप के लिये भी मुसीबत हो जायेगी।"

"मगर मुसलमान तो एक इंसाफ पसन्द कौम है। इन पर तो दुनिया के सब मुल्क फिदा हो रहे हैं।" जॉन ने व्यंगात्मक भाव में बात कर दी।

"हाँ।" जिन्ना ने अभिमानपूर्वक कहा, "इस्लाम में ऊँच–नीच और छुआछूत नहीं। यहाँ सब बराबर हैं। एक भंगी की लड़की भी किसी नवाब के हरम में जाने की तौफीक रखती है। हमारा मजहब एक डिमोक्रेसी है।"

जॉन चुप रहा। वह अन्ना से सुन चुका था कि पाकिस्तान का गवर्नर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
जनरल भी एक मासूम लड़की की इज्जत और जॉन गुण्डों और शोदों से बचाने की तौफीक नहीं रखता। वह विचार कर रहा था कि यह अजीब डेमोक्रेसी है।"

"अच्छा देखो जॉन! मुझको आम जलसे में तकरीर करनी है। मैं जरा उसकी तैयारी करना चाहता हूँ। तुम अब जाओ।"

जॉन कमरे से निकलने से पहिले पूछने लगा, "चाय यहाँ आयेगी या बाहर सब के साथ?"

"मैं चाय का एक प्याला अभी यहाँ चाहता हूँ, जिससे जरा सुस्ती निकल जाये।"

रात सोने के समय जिन्ना अन्ना के मुताल्लिक पूछने लगा, "आज अन्ना रात के खाने के वक्त दिखाई नहीं दी।"

"हुजूर, उसकी तबीयत कुछ अलील है।"

"उससे कहो कि हम उसके तबीब बन सकते हैं। उसे जरा आ जाना चाहिए।"

"कह देता हूँ हुजूर। मगर उसको दर्द हो रहा है।"

"कहाँ?"

जॉन ने जवाब नहीं दिया। जिन्ना समझ गये कि कदाचित् वह मासिक धर्म से है। इससे वह चुपचाप करवट बदल कर पलंग पर लेट गये। जॉन गया ही था कि कमरे की घण्टी बजी। जिन्ना ने आवाज दे दी, "कम इन।"

वह समझा था कि अन्ना होगी। मगर यह जरीना थी। उसके हाथ में एक लिफाफा था।

"ओह जरीना बी! हाँ तो क्या बात है?"

"गवर्नर बहादुर ने यह लिफाफा भेजा है।"

"और वे कहाँ हैं?"

"अपने कमरे में चले गये हैं।"

जिन्ना ने लिफाफा खोल पढ़ा। लिखा था–"भारत रेडियो ने ऐलान किया है कि हिन्दुस्तानी फौजें हवाई जहाजों से श्रीनगर के लिये रवाना हो गयी हैं। पण्डित नेहरू ने ऐलान किया है कि हमलावरों को निकाल देने के बाद कश्मीर के लोगों की राय जानी जायेगी कि वे पाकिस्तान में जाना चाहते हैं या भारत में।"

"ओह!..." जिन्ना के मुख से अनायास ही यह शब्द निकल गया। उसने जरीना की तरफ देखा। वह मुस्करा रही थी, "तो तुम खुश हो?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आपको खुश देख कर।"

"और इस खबर से नहीं?"

"अभी–अभी गवर्नर साहब होम मैम्बर साहब से बातचीत कर रहे थे। दोनों इस बात पर मुत्फिक–उल–राय थे कि अब हमलावरों को वापिस बुला लेना चाहिए जिससे जल्द–अज–जल्द राय शुमारी हो सके।"

"कुछ जल्दी नहीं है। हमको श्रीनगर ले ही लेना चाहिए। मैं इस ईद की नमाज 'हजरत बल' में पढ़ने के लिये बेताब हूँ।"

"मगर जो खबर बारामूला से आयी है, उससे तो वहाँ के लोग हमारे हक में राय नहीं देंगे। वहाँ हमलावरों ने बहुत बदतमीजी की है। सरे–बाजार जबर जनाह किये हैं।"

"यह मामूली बातें हैं। मैं समझता हूँ कि हमारी आधी जीत हो गयी है। पूरी जीत तब होगी जब श्रीनगर के राजमहल पर पाकिस्तानी झंडा लहरायेगा और मैं खुद वहाँ बैठ कर रायशुमारी कराऊंगा। राजा की निगरानी में तो रायशुमारी हमारे हक में नहीं हो सकती।"

जरीना को गवर्नर जनरल बहादुर की सूझ–बूझ पर बहुत यकीन था। खलीफा साहब भी कह रहे थे कि उनकी लन्दन में तार का ही यह नतीजा हुआ है कि नेहरू रायशुमारी पर राजी हुआ है।

"जरीना! तुमको फुरसत हो तो यहाँ बैठ जाओ। मुझको खुशी के मारे नींद नहीं आ रही।"

"हुजूर! अन्ना कहाँ गयी है?"

"वह माहवारी फर्ज अदा कर रही है।"

"ओह! मगर हुजूर, मेरे खाविन्द मेरी इन्तजार कर रहे होंगे।"

"कुछ हर्ज नहीं। वे इन्तजार कर सकते हैं। इन्तजार का नतीजा बहुत मीठा निकल सकता है।"

: 8 :

इसी वक्त जॉन और अन्ना एक गम्भीर बातचीत कर रहे थे। जॉन बता रहा था, "अन्ना! बारहमूला में ईसाइयों के हस्पताल में पाकिस्तानी हमलावरों ने लूट मचा दी थी। वहाँ के गिरजाघर को नापाक कर दिया है। गिरजाघर में नर्सों और 'ननों' को ले जाकर उनसे बदफेली की गयी है। एक बड़े पैमाने पर कबायलियों ने औरतों को पकड़ अपने हरम में शामिल कर लिया है और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
उनके मर्दों को मौत के घाट उतार दिया है।''

''यह सब खबर कहाँ से सुनी है?'' अन्ना ने पूछ लिया।

''भारत रेडियो से सुनी है। वैसे भी गवर्नर के नौकर–चाकर कह रहे हैं और यहाँ के कुछ लोग तो लूट मार के लिये श्रीनगर जाने की तैयारी कर रहे हैं।''

''अगर आज से कुछ दिन पहले यह खबर सुनती तो शायद एतबार न करती। मगर आज गवर्नर जनरल की और कल रजाक साहब की बात सुन कर तो इस खबर की सच्चाई में शक नहीं रहा।''

''यह तो ठीक है मगर हम क्या कर सकते हैं?''

''हम हिन्दुस्तान जा सकते हैं। मैं समझती हूँ कि वहाँ हमारी जिन्दगी आराम से निकल सकेगी।''

''हिन्दू तो मुसलमानों से भी गये–गुजरे हैं।''

''अगर महात्मा गांधी के रहते वहाँ कत्लेआम तो नहीं हो सकते।''

''पंजाब में तो हुआ है।''

''मगर मुसलमानों ने भी तो कम जुल्म नहीं किये थे। इस पर भी भारत गैर–हिन्दुओं को अपने मुल्क में रखने का ख्वाहिशमन्द दिखाई देता है।''

''कुछ कह नहीं सकते। लोग कह रहे हैं कि कश्मीर में मुसलमानों के जुल्मो–सितम का हिन्दू बदला लेंगे।''

''मगर ईसाई तो वैसे ही मजलूम हैं जैसे हिन्दू हैं?''

''कश्मीर में तो हिन्दू, मुसलमान और ईसाई किसी में तमीज नहीं रही, ये कबायली तो बिल्कुल बहशी है।''

''और कराची के मुसलमान कम बहशी हैं? गवर्नमेंट हाउस में भी वह बात हो सकती है जो कमला के साथ हुई है तो बाहर बाजार–गलियों में क्या होता होगा, कौन बता सकता है?''

जॉन गम्भीर विचार में डूब गया। कुछ देर सोच कर अन्ना ने कहा, ''मैं तो पाकिस्तान छोड़ रही हूँ।''

''कैसे छोड़ जाओगी?''

''भारत के लिये 'ऑप्ट' करूँगी। मैं भारत की 'सिटिजन' बन जाऊँगी।''

''और नौकरी?''

''अब नौकरी नहीं करूँगी।''

''तो गुजर कैसे होगा?''

''कितना रुपया जमा है आपके पास?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"वैसे तो चालीस हजार से ऊपर है। मगर वह हिन्दुस्तान में जा नहीं सकेगा। कुछ तो बैक में है और कुछ सोने में है।"

"हम इसका स्मगल करने का यत्न करेंगे।"

"पाकिस्तान में स्मगल करते पकड़े गये तो मार डाले जाएँगे और हिन्दुस्तान में तो सोना जप्त हो जाएगा और हमको दो वर्ष की कैद हो सकती है।"

"यहाँ से हम गवर्नर जनरल की मदद से सोना ले जाएँगे और हिन्दुस्तान में हम डिक्लेयर कर देंगे। ड्यूटी लग जायेगी। वह हम दे देंगे।"

"तो कब?"

"मेरा तो अब चित्त नहीं करता कि इस नौकरी में रहूँ। मगर साहब छुट्टी नहीं देंगे और फिर सोना ले जा नहीं सकेंगे। मैं समझती हूँ कि मैं अपने माँ–बाप से मिलने के बहाने से बम्बई के लिये पासपोर्ट और विसा लेने की कोशिश करूँ। वहाँ जाते समय गवर्नर जनरल के नाम से एक या दो अटैची केस ले जाऊँ। उनकी तलाशी न होने दूँ। बम्बई जाकर सोना डिक्लेयर कर दूँ।"

"अन्ना, यह सब शेखचिल्लियों की बात है। कुछ नहीं हो सकेगा।"

"तो फिर? एक बात आप यकीन जानिये। मैं इस घर में नहीं रहूँगी।"

"किस घर में?"

"गवर्नर जनरल बहादुर की जाती–मुलाजमत में। मेरा मन उचाट हो गया है।"

"साहब से या पाकिस्तान से?"

"वैसे तो पाकिस्तान से, मगर जब साहब उसमें किसी की हिफाजत नहीं कर सकते तो उनके साथ रहने में क्या फायदा है?"

"अच्छा। कल छुट्टी माँगना। देखें, साहब क्या कहते हैं?"

"छुट्टी तो आपको भी लेनी पड़ेगी।"

"मैं समझता हूँ कि एक–एक कर ही छुट्टी लेनी चाहिए। दोनों के एकदम छुट्टी लेने से तो उनको शक हो सकता है।"

अगले दिन श्रीनगर के हवाई अड्डे के करीब घमासान लड़ाई की खबर आयी।

अब जिन्ना साहब को भी चिन्ता लगने लगी थी। सबसे बड़ी बात यह थी कि श्रीनगर में मुसलमानों ने हिन्दुओं की जायदाद और औरतें लूटनी शुरू नहीं की थीं। खलीफा मुहियुद्दीन और जिन्ना आज गवर्नर के कार्यालय में बैठे दिल्ली, रावलपिंडी और कराची के डिस्पेचेज को खोल–खोल उन पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विचार विमर्श कर रहे थे। पंजाब के गवर्नर कह रहे थे कि खबर है कि श्रीनगर में नेशनल कश्मीर कान्फ्रेन्स के खिदमतगार और राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के नौजवान शहर में अमनो–अमान रखने का काम कर रहे हैं।

"ये बुजदिल कश्मीरी मुसलमान, नजात पाने की भी ख्वाहिश नहीं करते।" जिन्ना साहब का कहना था।

खलीफा साहब रावलपिंडी से आये पत्र को पढ़ कर बता रहे थे, "वे मुसलमान जो पिछले साल राजा और रानी को गालियाँ देते थे, आज महाराज जिन्दाबाद के नारे लगा रहे हैं।"

"बिल्कुल गधे हैं। क्या वे हिन्दुओं के जेरे–असर हैं?"

"वे बारामूला में कबायलियों के जुल्मों की खबरें सुन कर डर गये हैं। वहाँ कबायलियों ने तो मुसलमान औरतों को भी नहीं छोड़ा और कश्मीरी सौदागरों को भी लूटा है।"

जिन्ना परेशानी अनुभव कर रहा था। इस पर खलीफा ने कह दिया, "कबायलियों को वापिस बुला लिया जाये।"

"यह अब मुश्किल है। उनके मुख में लहू लग गया है। वे अब वापिस नहीं आयेंगे।"

"पाकिस्तानी फौजी अफसर और गाड़ियाँ तथा जीपें तो वापिस हो ही सकती हैं। कबायली लुटेरे तो हिन्दुस्तानी फौज से वापिस कर दिये जाएँगे।"

"मगर खलीफा साहब! अफसर लोग वापिस नहीं आएँगे। उनको भी लूट का स्वाद पड़ गया है और कबायली भी कहने से नहीं लौटेंगे। साथ ही यदि ये लोग शिकस्त खाकर लौटे तो पाकिस्तान का 'मोरेल'[1] टूट जाएगा।

"तो फिर क्या करेंगे?"

"इनको फौजी कुमक भेजनी चाहिए।"

"मतलब यह कि जो पतला सा पर्दा था पाकिस्तान और कबायलियों में, वह भी हटा दिया जाये।"

"यह तो बना रहेगा। दुनिया कहेगी कि हमला करने वाला पाकिस्तान है। वह तो अब कहती होगी। मगर न तो हम अब मानते हैं और न ही तब मानेंगे।"

खलीफा मुस्करा कर जिन्ना साहब का मुख देखते रह गये। इस पर जिन्ना साहब ने समझा कि, उसकी योजना खलीफा को पसन्द आयी है।

---

1. साहस।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्होंने कहा, "तवारीख में हमेशा दो पहलू रहते हैं। दोनों को ठीक और गलत कहने वाले दुनिया में मौजूद रहते हैं। इसलिये हमको अपनी बात कहते जाना चाहिए। लोग जो चाहें करें।"

"और चाहे सबूत हमारे खिलाफ हों?"

"बिल्कुल। सबूत तो पैदा किये जा सकते हैं।"

कठिनाई यह थी कि जिन्ना साहब एक वकील मात्र ही थे। मगर खलीफा मुहियुद्दीन हाईकोर्ट का जज भी रह चुका था। इसलिये दोनों में विचार करने का ढंग भिन्न–भिन्न था। परन्तु जिन्ना बड़े लीडर थे और मुहियुद्दीन एक छोटा लीडर। इस कारण वह अभी चुप था। केवल जिन्ना की मूर्खता पर मुस्करा रहा था।

अब जिन्ना साहब ने कह दिया, "एक मैसेज (सन्देश) कामांडिंग आफिसर आर्मी हैड क्वार्टर को दे दो। लिख दो, गवर्नर जनरल चाहते हैं कि कबायलियों को कुमक भेजी जाये और दो दिन में श्रीनगर ले लेना चाहिए। गवर्नर जनरल वहाँ ईद मनाना चाहते हैं।"

संदेश भेज दिया गया। उसी दिन सायंकाल समाचार आया कि कबायली बारामूला से लूटा धन–दौलत लेकर वापिस हो रहे हैं, हर एक ने दो–दो, तीन–तीन औरतें पकड़ी हुई हैं। श्रीनगर के मोर्चे पर तो पाकिस्तानी फौज ही लड़ रही थी, मगर वह अकेली हिन्दुस्तानी दबाव को रोक नहीं सकी और अब वह पीछे हट रही है, दिन के समय लड़ाई हवाई अड्डे से दो सौ गज के फासले पर थी, अब मोर्चा हवाई अड्डे से दो मील बारामूला की तरफ है, मरी से जो फौजी मदद भेजी गयी थी, अभी तक उसके पहुँचने की खबर नहीं मिली।

सायंकाल गवर्नर जनरल और गवर्नर बहादुर दोनों का मुख उतरा हुआ था। मोर्चे से आखिरी खबर थी कि हमलावर पाँव सिर पर रखे बारामूला की तरफ भाग रहे हैं। रावलपिंडी की खबर थी कि मरी से कोहाला तक तो सड़क साफ होने से सैनिक सहायता वहाँ तक जा पहुँची है मगर आगे मार्ग साफ नहीं। कबायली अपनी लूट–मार का धन–दौलत और औरतें लिये हुए गाड़ियों से, छकड़ों से या पैदल ही आ रहे हैं। कोहाला का पुल जाम हो रहा है।

इसके अलावा दिल्ली का समाचार था कि पिछले चौबीस घंटे से हर दस मिनट में एक जहाज श्रीनगर में सैनिक और सैनिक सामग्री ले–लेकर पहुँच रहा है, इस समय तक श्रीनगर एक सैनिक कैम्प बन गया है, शेख अब्दुला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीनगर में हैं और नेशनल कान्फ्रेन्स के लोग सेना की सहायता कर रहे हैं।

दिल्ली रेडियो का यह भी समाचार था कि हिन्दुस्तान भर के लोग कश्मीर के भारत में विलय पर बहुत प्रसन्नता प्रकट कर रहे हैं।

रात जिन्ना साहब जब सोने के लिये अपने कमरे में पहुँचे तो जरीना वहाँ मौजूद थी। जिन्ना का मुख उतरा हुआ था। उसने जरीना को देखा तो पूछ लिया, "आज तुम्हारा खाविन्द तुम्हारा इन्तजार नहीं कर रहा क्या?"

"कर रहा है। मगर गवर्नर बहादुर ने कहा है कि आज आपकी दिलजोही की ज्यादा जरूरत है। इसलिये उन्होंने मुझको यहाँ भेज दिया है।"

"नहीं, आज मेरी तबीयत ठीक नहीं है। तुम जाओ। अपने खाविन्द की दिलजोही करो। उसको यकीन दिलाना कि हम तुम्हारी खिदमत को भूलेंगे नहीं।"

जरीना गम्भीर हो वहाँ से चली गयी। जॉन आया और साहब के कपड़े उतरवाने लगा। कपड़े उतारते हुए जिन्ना ने पूछ लिया, "अन्ना की तबीयत कैसी है?"

"हुजूर! वह अब ठीक है। अभी खिदमत के लिए हाजिर होने वाली है। वह गुसल के लिए गई हुई है।"

"हमारी तबीयत ठीक नहीं।"

"तो हुजूर! वह आपके सिर की मालिश कर देगी। आपको नींद आ जाएगी और सुबह तबीयत ठीक हो जाएगी।"

"हम समझते हैं कि सिर की मालिश की जरूरत नहीं...।"

इसी समय अन्ना भीतर आ गयी। उसने आते ही सलाम अर्ज की और कहा, "कल मैं हाजिर नहीं हो सकी।"

"कुछ हर्ज नहीं हुआ।"

"जरीना कैसी रही है हुजूर?"

जिन्ना परेशानी अनुभव कर रहा था। वह यह समझ गया था कि जरीना का रात उसके कमरे में सोना गवर्नमेन्ट हाउस में सब को पता चल गया है। उसने अन्ना को कुछ चिढ़ाने के लिये कह दिया, "वह बहुत मजेदार औरत है। रात भर हँसती और हँसाती रही है।"

"एक अर्ज करूँ हुजूर?"

"क्या?"

"उसको कराची अपने साथ ले चलिये।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"और तुम?"

"मैं अब बूढ़ी हो गयी हूँ। खिदमत करने के लायक नहीं रही।"

"मगर तुम कहाँ जाओगी?"

"अभी कुछ दिन के लिये तो अपने माँ–बाप से मिलने को जी कर रहा है। पीछे कराची में एक छोटा–सा होटल खोल कर गुजारा कर लूँगी।"

"तो एक ब्रोदल[1] खोल लोगी?"

"नहीं हुजूर! आप जैसे शरीफ आदमियों के रहने और आराम का बन्दोबस्त ही करूँगी। एक इस्लामी हुकूमत में तो ब्रोदल चल नहीं सकेगी।"

"क्यों? इस्लाम का इससे क्या ताल्लुक है?"

"जब घर में ही चार–चार बीवियाँ रखी जा सकेंगी तो फिर पब्लिक 'ब्रोदल' की जरूरत ही क्या रहेगी?"

"नहीं अन्ना! तुम नहीं जानतीं। यह चीज बन्द नहीं हो सकती। सब जवान आदमियों के लिये चार–चार औरतों का मुहैय्या करना एक निहायत ही मुश्किल बात है। इतनी औरतें आएँगी कहाँ से?"

"हुजूर! कश्मीर फतह हो रहा है। सुना है वहाँ औरतों की तादाद आदमियों से बहुत ज्यादा है और फिर लड़कों की तादाद कम भी की जा सकती है।"

"कैसे?"

"उनका गला घोंट कर। जंग के वक्त दुश्मन के मुल्क में मर्दों को भेज उनका कत्लेआम करा कर।"

जिन्ना गम्भीर हो गया। वह इन व्यंग्यों के डंक को अनुभव कर रहा था। न तो कश्मीर फतह हो रहा था, न ही हमला करने वाले वहाँ से लाने वाली औरतों को अपने मुल्क में बाँटेंगे। हाँ, यह हो रहा था कि वृद्ध और कुरूप स्त्रियों की तो हत्या कर दी जाती थी। जवान औरत जो पा लेता था, वह किसी दूसरे से बाँट कर इस्तेमाल करने के लिये राजी नहीं होता था।

जिन्ना ने बात बदल कर कहा, "आज मेरा सिर दर्द कर रहा है, मैं सोना चाहता हूँ।"

"सिर में तेल लगा दूँ?"

---

1. वेश्यागार।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नहीं। यह सिर दर्द तेल मलने से नहीं जाएगा।"

"तो हुजूर! मुझे छुट्टी कब तक मिल सकेगी?"

"कल बात करेंगे। इस वक्त मैं कुछ नहीं बता सकता।"

"हुजूर! माँ–बाप से मिलने को जी कर रहा है।"

"ठीक है। कल सोच कर बताऊँगा।"

: 9 :

अगले दिन गवर्नर जनरल साहब लाहौर में बीमार हो गये। उनको हल्का–हल्का ज्वर था। कुछ सर्दी लग जाने से जुकाम भी कष्ट देने लगा था।

उस दिन गवर्नर जनरल के सार्वजनिक कार्यक्रम रद्द कर दिये गये। सरकारी काम उनके सोने के कमरे में होने लगा। खलीफा, पंजाब के गवर्नर और कराची से आया गवर्नर जनरल का मिलिटरी अटैची उनके सोने के कमरे में आये। खलीफा साहब ने खबर बताई, "इस वक्त बारामूला पर लड़ाई हो रही है। कुछ पाकिस्तानी फौज वहाँ पहुँच गयी है और मजीद कुमक भेजी जा रही है। मगर भारत का फौजी दबाव बढ़ रहा है।"

मिलिटरी अटैची ने कहा, "पाकिस्तान और भारत के फौजी सुप्रीम कमाण्डर फील्ड मार्शल लार्ड आकलनेक ने कहा है कि वह बाजाप्ता पाकिस्तानी फौजों का कश्मीर में भेजा जाना पसन्द नहीं करते।"

"और तुम इतनी सी बात कहने के लिये कराची से यहाँ चले आये हो?"

"यह मामूली बात नहीं हुजूर! इंग्लैण्ड की मदद पाकिस्तान को नहीं रहेगी।"

"तो उसको कह दो कि वह मुझसे मिल ले।"

"हुजूर! वे कहते हैं कि वह पाकिस्तान और भारत दोनों मुल्कों की फौजों का सुप्रीम कमाण्डर है। भला यह कैसे हो सकता है कि उसके मातहत एक फौज उसी के मातहत दूसरी फौज से जंग करना शुरू कर दे।"

"तो उसे कहो कि मुझसे मिल ले, नहीं तो भारत की फौजों को वापिस बुला ले जिससे उसके मातहत दोनों फौजें आपस में न लड़ें।"

"हुजूर! मैंने उसे यह बात कही थी, मगर वह कहता है कि राजा ने रियासत का इल्हाक भारत से कर दिया है। इसलियें भारत को अपनी फौज वहाँ भेजने का हक हासिल है।"

"मगर इल्हाक मुकम्मिल नहीं हुआ। अगर हो जाता तो क्या नेहरू साहब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह कहते कि रायशुमारी के बाद ही रियासत के इल्हाक का फैसला होगा? इसलिये अभी भारत को हक हासिल नहीं हुआ कि वह फौजें कश्मीर में भेज सके।''

मिलिटरी अटैची चुप कर गया। इस बात का जवाब वह नहीं दे सका। इस पर जिन्ना ने कह दिया, ''लार्ड आकलनेक को यहाँ लाहौर भेज दो। मैं खुद उसको समझा दूँगा।

''देखो कुरेशी! मैं अभी कुछ दिन लाहौर रहूँगा। तुम कमाण्डर–इन–चीफ को कह दो कि पाकिस्तानी कुमक कश्मीर भेजी जाये और भारत की सेना को कश्मीर 'वैली' से निकाल कर बाहर किया जाये।''

बात समाप्त हो गई। 'मिलिटरी अटैची' चला गया तो जिन्ना ने खलीफा से कह दिया, ''यह मेरा बटलर जॉन और उसकी बीवी अन्ना बागी हो रहे हैं। मैं इनको छुट्टी दे रहा हूँ। मगर ये लोग लाहौर से जाने न पायें और अगर इनको कैद करने की जरूरत हो तो लाहौर किले के उन तहखानों में, जिनमें अंग्रेजी सरकार इन्कलाब पसन्दों को रखती थी, कैद कर दिया जाये।''

''मगर हुजूर! यह अन्ना तो बहुत ही नेक और ईमानदार औरत है।''

''नहीं खलीफा साहब! आप नहीं जानते। वह जरीना बेगम से हसद करने लगी है। मुझे और पाकिस्तान को लूट कर बम्बई भाग जाना चाहती है।''

खलीफा विस्मय कर रहा था। उसने पूछ लिया, ''ये लोग कब जा रहे हैं?''

''मैं उनको कल छुट्टी दूँगा। अब यह काम आपके करने का है। इनको लाहौर से नहीं जाने देना चाहिए। ये लोग बहुत सी राज की बातें जानते हैं।''

''हो जायेगा। आप फिक्र न करें।''

''मैं आज आराम करना चाहता हूँ और मेरी डाक यहीं आ जानी चाहिए।''

जिन्ना का पी.ए. खुर्शीद अहमद डाक लेकर आया। उस डाक में कश्मीर के मोर्चे पर की कुछ और कठिनाइयों का उल्लेख था। एक बात निर्विवाद थी कि पाकिस्तानी सेना पराजित हो पीछे हट रही थी। सड़क तंग थी। एक तरफ जेहलम नदी थी। दूसरी ओर ऊँचे–ऊँचे पर्वत थे और सड़क पर कुछ लोग ही लड़ सकते थे। लड़ाई में भारत का सैनिक पाकिस्तानी सैनिक से अधिक योग्य सिद्ध हो रहा था। भारत का सैनिक यह अनुभव करता था कि वह देश को हमलावरों से खाली करा रहा है और पाकिस्तानी सिपाही यह अनुभव कर रहा था कि इस युद्ध में उसको कुछ लूटने के लिये मिल नहीं रहा। मारे गये तो जीतने का उससे कुछ ताल्लुक नहीं रहेगा। जीवित भी रहा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
CC-0. Mumukshu Bhawan. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो जीतने पर तो वह उजड़े हुए बारामूला शहर में पहुँचेगा, जिसको लूट कर कबायली ले जा चुके हैं। साथ ही वह अपने मन में यह महसूस करता था कि यह युद्ध व्यर्थ में आरम्भ किया गया है।

जिन्ना एक सप्ताह तक बीमार रहा और इस काल में सुप्रीम कमाण्डर फील्ड मार्शल आकलनेक लाहौर आया और वह जिन्ना को समझाने में सफल हो गया कि वह पाकिस्तानी सेना कश्मीर से वापिस बुला ले।

जिन्ना का यह कहना था कि मुझको इंग्लैण्ड के हॉकिमों ने यह यकीन दिलाया था कि कश्मीर के पाकिस्तान में लिये जाने को वे पसन्द करेंगे।

फील्ड मार्शल का कहना था, "मगर यह मिलिटरी ऐक्शन में नहीं हो सकता। यदि पाकिस्तान डिप्लोमैटिक बातचीत से ऐसा कर सकता, तब इंग्लैण्ड आपत्ति न करता।"

इस पर जिन्ना ने नेहरू और माउन्टबेटन को, बातचीत करने के लिये लाहौर आने का निमन्त्रण दे दिया।

यह निमन्त्रण दिल्ली में 28 अक्टूबर को मिला। इस पर नेहरू और माउन्टबेटन लाहौर आने की तैयारी करने लगे।

जिस दिन फील्ड मार्शल आकलनेक लाहौर से दिल्ली वापिस लौटा, उसी सायंकाल जिन्ना ने अन्ना को बुलाकर पूछा, "अन्ना डीयर! तुम कब अपनी माँ से मिलने जाना चाहती हो?"

"अब हुजूर की खिदमत के लिये मुझसे ज्यादा लायक जरीना बेगम मिल गयी है। इसलिये जब भी मुझको छुट्टी मिल जाये मैं जाना चाहूँगी।"

"तुम कल जा सकती हो। यहीं से दिल्ली को हवाई जहाज में और वहाँ से तुम रेल से बम्बई जा सकोगी।"

"हुजूर, मैं ता–हयात आपकी शुक्रगुजार रहूँगी। मगर मेरा कुछ सामान है जो कराची में रखा हुआ है। वह मैं पाकिस्तान हाई कमिश्नर के सामान के तौर पर दिल्ली ले जाना चाहती हूँ।"

"क्यों उसमें क्या है?"

"कुछ हुजूर से दिये गये तोहफे हैं और कुछ जॉन से दिये हुए हैं। अगर वे सब सामान मैं अपना कह कर ले गयी तो भारत सरकार उसको जप्त भी कर सकती है।"

"ठीक है। ऐसा करो। तुम कल दिल्ली चली जाओ। वहाँ अपने बहनोई के पास ठहरना। जॉन को कराची के लिये हवाई जहाज में जगह मिल जायेगी। वह तुम्हारा सामान लेकर दिल्ली कमिश्नर के दफ्तर में पहुँच

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
जायेगा। वहाँ से जॉन वापिस भी आ सकता है और तुम्हारे साथ बम्बई की सैर के लिये भी जा सकता है।''

''ठीक है। हम आपके बहुत शुक्रगुजार रहेंगे।''

''कब तक लौटोगी?''

''जब तक आप जरीना से ऊब नहीं जायेंगे।''

''तो यह बात है। तुम उससे हसद करती हो?''

''यह कुदरती है। हुजूर! मगर मैं आपको यकीन दिलाती हूँ कि आपका 'मैसेज' मिलते ही मैं चली आऊँगी।''

अन्ना इस प्रबन्ध से बहुत खुश थी। उसने जब जान को छुट्टी की बात बताई तो वह भी बहुत खुश हुआ। इस पर भी वह विस्मय करता था कि सोना ले जाने का कठिन कार्य कैसे आसानी से हो रहा है।

रात भर अन्ना और जॉन दिल्ली में मिलने पर बम्बई जाने की योजना बनाते रहे।

दिल्ली के लिये सरकारी हवाई जहाज प्रातःकाल जाता था और कराची के लिये ग्यारह बजे। सरकारी मोटर गाड़ी से अन्ना हवाई अड्डे के लिये चली गयी, परन्तु उसको हवाई अड्डे पर ले जाने के स्थान पर लाहौर किले में ले जाकर बन्द कर दिया गया और जॉन ग्यारह बजे वाली गाड़ी से कराची के लिये रवाना हो गया। वह दो सिपाहियों के साथ भेजा गया था। मगर कराची पहुँचने से पहिले ही वह गाड़ी से लापता हो गया। उसके भाग जाने का समाचार गवर्नर जनरल से छिपा कर रखा गया और उसे ढूँढ़ने का यत्न होने लगा।

: 10 :

जिन्ना को दिल्ली हाई कमिश्नर के गुप्त संदेश से यह पता चला कि पाकिस्तान का निमन्त्रण लार्ड माउन्टबेटन के द्वारा भारत के प्रधानमन्त्री को मिला है और हमारी सूचना है कि नेहरू अपनी रजामन्दी गवर्नर जनरल माउन्टबेटन को दे आया है।

जिन्ना इस समाचार से प्रसन्न थे। उनका विचार था कि नेहरू को वे बेवकूफ बना सकेंगे।

मध्याह्न के समय सूचना आयी कि भारत के मन्त्रिमण्डल में नेहरू के लाहौर जाने के विषय में चर्चा हो रही है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सायंकाल को समाचार मिला कि सरदार पटेल, गवर्नर जनरल माउन्टबेटन और नेहरू, दोनों के पाकिस्तान जाने का विरोध कर रहे हैं और मन्त्रिमण्डल सरदार की बात को मुनासिब मानता है।

प्रातःकाल के समाचार से जिन्ना को जो उम्मीद बनी थी, वह रेत के महल की भाँति ढहती प्रतीत होने लगी। रात के समय समाचार मिला कि सरदार पटेल और नेहरू के भीतर मतभेद तीव्र हो रहा है और दोनों महात्मा गांधी के पास राय करने गये हैं, महात्मा गांधी के स्थान बिरला हाउस में क्या बातचीत हुई, यह अगले डिस्पैच में भेज रहे हैं, जो कल दस बजे तक पहुँच जाएगा।

जिन्ना का मुख उतर गया। वह अभी भी उत्सुकता से दिल्ली से आने वाली डाक की प्रतीक्षा कर रहा था। अगले दिन सुबह एक लम्बी चिट्ठी मिली।

चिट्ठी इस तरह थी–टेप–रिकार्ड पर की गुफ्तगू का अंग्रेजी में तर्जुमा करके भेज रहे हैं। टेप–रिकार्डर अलग से अगले दिन भेजा जायेगा। दोनों को हम एक साथ भेजने का खतरा सिर पर नहीं ले सके। हो सकता है कि यह गुफ्तगू तवारीखी माहीयत रखता हो।

गुफ्तगू का खुलासा इस तरह है–वजारत की मीटिंग के खत्म होते ही पंडित नेहरू गुस्से से भरे हुए लाल मुख के साथ बाहर निकले और अपनी मोटर गाड़ी में सवार हो महात्मा गांधी जी से मिलने विरला हाउस को चल दिये।

सरदार पटेल चाहते थे कि डॉ. अम्बेडकर और डॉ. मुखर्जी उनके साथ जाएँ, मगर डॉ. अम्बेडकर ने कह दिया कि मैं गांधी जी को इस मुआमले में सालस मानने के लिए तैयार नहीं।

पटेल का कहना था कि गांधी जी देश के नेता हैं। उनकी मदद से हमारे हाथ मजबूत होंगे।

डाक्टर साहब का साफ कहना था कि हमारे हाथ मजबूत नहीं होंगे। नेहरू जी के हाथ मजबूत होंगे। देखो सरदार, खफा न हो जाना। मैं अपने मन की बात बताता हूँ। गांधी जी तुमको बेवकूफ समझते हैं। यह आज से नहीं बल्कि 1935 से है।"

डॉ. मुखर्जी हँस पड़े, परन्तु सरदार पटेल का मुख गुस्से से लाल हो गया। वह बिना एक भी लफ्ज और कहे अपनी मोटर में सवार हो बिरला हाउस को चले गये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब नीचे की बातचीत टेप रिकार्डर पर से है। नेहरू जी के अल्फाज हैः "बापू, यह सरदार हमेशा गड़बड़ करता रहता है। मैं बहुत परेशानी महसूस कर रहा हूँ। अगर इसकी बात मानूँ तो यह हिन्दुस्तान की हुकूमत तो एक दिन भी नहीं चल सकती।"

"क्यों? क्या बात हुई है?" गांधी जी का सवाल था।

"पाकिस्तान से कश्मीर के मसले पर गुफ्तगू करने के लिए मुझे और गवर्नर जनरल को इनविटेशन आया है और सरदार अपने दो 'हैच मैनों'[1] के साथ विरोध कर रहा है।"

"और मौलाना आजाद क्या कहता है?"

"वह तो मेरे वहाँ जाने को पसन्द करते हैं।"

"और वजारत के दूसरे मेम्बरान?"

"सिवाय अम्बेडकर और मुखर्जी के कोई और बोला नहीं। वे समझते हैं कि हम कांग्रेस के लोग आपके नाम से काम करें और वे आपकी ताईद कर देंगे। इस वास्ते मैं आपके पास आया हूँ।"

"और सरदार को भी ले आते।"

"वे अभी आ रहे हैं। वे कोशिश कर रहे हैं कि अम्बेडकर और मुखर्जी भी जायें, मगर मैं उनके सामने बात नहीं करूँगा।"

"क्यों?"

"वे तो अपको नेता मानते नहीं।"

"वे ठीक कहते हैं। देखो जवाहर! मैं तुमको अपना लड़का मानता हूँ और वे यह जानते हैं। इसलिए उनका कहना ठीक है कि उनकी बात यहाँ नहीं मानी जा सकती।"

गांधी इससे आगे कह नहीं सके। इस वक्त सरदार पटेल आ पहुँचे। गांधी जी को सरदार ने हाथ जोड़ कर सलाम की और कह दिया, "नेहरू जी ने आज की बात बताई होगी?"

गांधी जी बोले, "हाँ। यह बताई है कि सरदार भारत सरकार के कामों में रुकावट डाल रहा है।"

"परन्तु महात्मा जी! भारत सरकार कौन है? मैं या पंडित जी? वजारत की अक्सरीयत मेरे साथ है। नेहरू जी उस अक्सरीयत को बदलने की कोशिश कर रहे हैं।"

---

1. पिट्ठुओं।

CC-0. Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"हाँ। वह समझता है कि देश की अक्सरीयत उसके साथ है। वजारत के साथ नहीं।"

"परन्तु देश के अखबार तो कश्मीर पर हमारी फौजी कार्रवाई को पसन्द कर रहे हैं।"

"मगर यह फौजी कार्रवाई की बात नहीं। यह तो अमन कायम करने की बात है। देश अमन चाहता है।"

"मुझको इस बात में शक है।"

"पर मैं जो कहता हूँ। सरदार से मैं यह पूछना चाहता हूँ कि जिन्ना से बातचीत करने में नुकसान क्या है?"

"जब तक हमलावार भारत के इलाके में हैं, बातचीत करनी फजूल है।"

"परन्तु कश्मीर तो एक बहसतलब इलाका है न?"

"मैं ऐसा नहीं समझता।"

"परन्तु भारत सरकार ने यह माना है कि कश्मीर का तो भारत में मेल लोगों की राय–जानने के बाद ही होगा।"

"यह पंडित जी का ख्याल है। वजारत इसकी मुखालिफत करता था। वजीरे आजम ने यह बात वजारत से पूछे बिना कर दी थी। वजारत नेहरू जी की इज्जत का ख्याल कर खामोश रहना ही मुनासिब समझती है।"

"मगर सरदार को यह पता होना चाहिए कि यदि मैं और नेहरू देश को समझायेंगे तो देश नेहरू की ताईद करेगा।"

"मगर बापू! आप यह क्यों करेंगे?"

"मैं इसमें देश का भला समझता हूँ।"

"परन्तु आपको तो सब बातों का इल्म है नहीं।"

"तो किसको है?"

"इस महकमा के सेक्रेटरी मिस्टर मैनन को।"

"तो उसको बुला लो।"

इस पर बी.पी. मैनन को बुलाया गया। वह आया तो महात्मा जी ने उससे पूछा, "आप क्या कहते हैं कि हिन्द के गवर्नर जनरल और प्रधानमन्त्री पाकिस्तान के हाकिमों से मिलने जायें अथवा न?"

मैनन ने कहा, "मैंने अपनी राय गवर्नर जनरल को बता दी है। मैं इनका वहाँ जाना पसन्द नहीं करता हूँ।"

इस पर महात्मा गांधी जी कुछ देर तक चुप रहे। फिर सिर उठा कर बोले, "मैं इस मुखालफत का सबब जान सकता हूँ क्या?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कबायली और पाकिस्तानी फौजी जब तक वापिस पाकिस्तान को चले नहीं जाते, किसी किस्म की बातचीत फायदेमन्द नहीं होगी।"

"मगर पाकिस्तान कश्मीर को अपना मानते हैं।"

"इसमें कोई तुक नहीं है।"

"तुक तो है। वहाँ मुसलमान तादाद में ज्यादा हैं।"

"मगर हम तो मुसलमान और हिन्दू में फरक नहीं करते। इस वास्ते यह दलील भारत के लिये ठीक नहीं। यदि मुसलमानों को मुसलमानी राज में रहना है तो फिर दिल्ली और भारत के अन्य मुसलमानों के बारे में क्या किया जायेगा? आप तो भारत के मुसलमानों को पाकिस्तान में जाने से मना कर रहे हैं न?"

"हाँ। मगर जहाँ वे ज्यादा तादाद में हैं, वह इलाका पाकिस्तान में जाना चाहिए।"

"यह किसने फैसला किया है?"

"श्री नेहरू और पटेल ने और पीछे कांग्रेस तथा देश ने माना है।" इस पर पटेल बोल उठा, "यह तो 'ऐक्ट आफ इंडिपैन्डेंस' पास होने के पहले था। अब तो 'ऐक्ट' की बात चलनी चाहिए।"

"और ऐक्ट क्या कहता है?" गांधी जी ने पूछ लिया।

मैनन ने उत्तर दिया, "ऐक्ट किसी रियायत के वली को यह हक देता है कि वह किसी भी डोमिनियन के साथ अपनी रियासत को मिला ले। महाराजा कश्मीर ने हिन्दुस्तान के साथ मेल मंजूर किया है।"

"मगर महाराज और जनता तो एक राय नहीं हैं। इसी वास्ते तो लोगों की राय जानने की बात है।"

"परन्तु तब तक क्या किया जाये?"

"इस के लिए बातचीत की जाए।"

"महात्मा जी! यह तो हिंसा के सामने झुक जाना होगा।"

इस पर गांधीजी फिर मौन हो गये। एकाएक गांधी जी ने यह फैसला दे दिया, "बातचीत होनी चाहिए और अमन की राह ढूँढ़नी चाहिए।"

मैनन ने पूछा, "यह आपकी 'इन्नर वायस'[1] है क्या? दिमाग तो इसको मानता नहीं।"

"हाँ।" गांधी जी ने कह दिया। और बात खत्म करने के लिए मैनन को

---

1. अन्तरात्मा की आवाज।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहा, "मैनन साहब को साथ जाना चाहिए और अमन कायम करने की कोशिश करनी चाहिए।"

मैनन ने कह दिया, "मगर श्री जवाहरलाल जी तो जा नहीं सकते।"

"क्यों?"

"इनको बुखार है। ये बीमार हैं और अधिक बीमार हो जाने का डर है। लाहौर में यहाँ से ज्यादा ठण्ड है।"

"सच?" गांधी जी का सवाल था।

गांधी जी ने जवाहरलाल के हाथ पर हाथ रख कर देखा। इस पर वे बोले, "मैनन, ठीक कह रहे हो। जवाहरलाल नहीं जा सकता।"

: 11 :

पाकिस्तानी हाई कमिश्नर से टेप पर यह रुचिकर बातचीत भेजी गयी। जिन्ना सुन कर गर्व करने लगा कि हमारा हाई कमिश्नर सत्य ही बहुत योग्य आदमी है।

लाहौर के गवर्नर ने लिखा था, हमने अपने भेदिये भारत के सब बड़े–बड़े आदमियों के पास रखे हुए हैं। गांधी जी और नेहरू के साथ तो लोग पाकेट टेप रिकार्डर जेब में लिए बैठे रहते हैं।

जिन्ना को नेहरू के न आ सकने का शौक था। वह जानता था कि गांधी और नेहरू से कोई भी काम निकाला जा सकता है। माउन्टबेटन तो किसी भी बात के लिए अपने को बाँधेगा नहीं। वह वहाँ तक ही जा सकेगा जहाँ तक विधान से वह जा सकता है। इस कारण नेहरू के न आ सकने पर वह प्रसन्न नहीं था।

इस पर भी इस विषय में वह कुछ कर नहीं सकता था। वह मन में विचार करता था कि भेंट नेहरू के राजी होने तक रोक दी जाए, परन्तु लार्ड माउन्टबेटन ने भेंट की तिथि निश्चय कर दी। दिल्ली से सूचना आई कि भारत गवर्नर जनरल, पाकिस्तान के गवर्नर जनरल से मिलने पहली नवम्बर को आ रहे हैं।

माउन्टबेटन लाहौर पहुँचा और उसी दिन वार्तालाप हो गया। जिन्ना साहब व लियाकत अली पाकिस्तान की ओर से थे, लार्ड माउन्टबेटन तथा लार्ड इजमे भारत की ओर से बात करने वाले थे। दोनों ओर के कुछ सचिव भी थे। इस वार्तालाप में तो केवल यह बात ही विवाद का विषय बनी रही

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि कश्मीर का भारत के साथ विलय अनियमित हुआ है अथवा नियमित?

जिन्ना साहब ने भारत के गवर्नर जनरल को कह दिया कि भारत ने अपना सैनिक दबाव डालकर महाराज से विलय करा लिया है।

माउन्टबेटन ने इस कथन का प्रतिवाद किया। उनका कहना था, "यह बात गलत है। महाराजा हरिसिंह तो पाकिस्तान के साथ विलय करने के लिये तैयार थे, परन्तु कबायलियों के आक्रमण के कारण और पाकिस्तान के उनको न रोक सकने के कारण महाराजा विवश हो गया कि वह भारत से सैनिक सहायता माँगें। भारत यह तब तक दे नहीं सका जब तक कश्मीर भारत का अंग नहीं बन गया।

अतः कश्मीर के विलय में दोष कबायलियों और एक सीमा तक पाकिस्तान का ही है। यदि किसी ने जबरदस्ती की है तो यह पाकिस्तान ने की है।

जिन्ना साहब का स्पष्टीकरण था कि पाकिस्तान वही कुछ कर रहा है जो वहाँ के लोग चाहते हैं।

"यह हम जनमत संग्रह से पता करेंगे।" माउन्टबेटन का कथन था। "मगर महाराजा, शेख अब्दुल्ला और हिन्द फौजों की मौजूदगी में जनमत झूठा होगा।"

"मगर लोगों के प्रतिनिधि शेख अब्दुल्ला भला इसका विरोध क्यों करेंगे?"

"वह एक बिका हुआ बेवकूफ नेता है।"

"तो," माउन्टबेटन ने कह दिया, "जनमत संग्रह संयुक्त राष्ट्र संघ की देख–रेख में हो सकेगा।"

जिन्ना ने कहा, "मैं भारत और पाकिस्तान के गवर्नर जनरलों की देख–रेख में राय–शुमारी को पसन्द करूँगा।"

यह बात भारत के गवर्नर जनरल और लार्ड इजमें नहीं माने।

यह बातचीत अधूरी ही छोड़नी पड़ी और यह निश्चय हुआ कि लियाकतअली दिल्ली आयें और इसी बात को और आगे चलाया जाये। जब माउन्टबेटन दिल्ली लौट गये तो जिन्ना साहब ने अपने सलाहकारों की एक बैठक लाहौर में बुला ली। इसमें कराची से भी लोग आये और कान्फ्रेन्स में सम्मिलित हुए।

जिन्ना ने पूर्ण परिस्थिति का विश्लेषण इस कान्फ्रेन्स में किया। उन्होंने कहा, "मुझे अंग्रेज मुदब्बरों ने यकीन दिलाया था कि अगर पंजाब का बकाया हिस्सा, मतलब यह कि मशरिकी पंजाब और कश्मीर पाकिस्तान में शामिल हो जाएँगे तो वे इसको बुरा नहीं मानेंगे मगर फील्ड मार्शल आकलनेक का यह कहना है कि यह हम डिप्लोमेसी से करें। लड़ कर नहीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मगर मैं समझता हूँ कि डिप्लोमेसी ताकत के सहारे ही चलती है। ताकत बंदूक, तलवार और तोपों में है। अगर मैंने यह कश्मीर में हमला न कराया होता तो भारत और इंग्लैंड की डिप्लोमेसी को हरकत न मिलती। सियासियात में यह कायदा है कि पहले तलवार उठाओ और जब मुकाबिले वाला दुश्मन तलवार से डर कर बातचीत के लिये कहे तो बातचीत करो।

"तलवार उठायी गयी है और मैं समझता हूँ कि तलावर नंगी रहनी चाहिए, जिससे बातचीत अपने हक में हो सके। मेरा मतलब है कि जंग चलती रहनी चाहिए और बातचीत होती रहनी चाहिए।"

इस पर मौलाना बशीर ने कह दिया, "मगर 'युअर ऑनर'! जंग में कामयाबी होती रहनी चाहिए। नहीं तो बातचीत दुश्मन के हक में हो जाएगी।"

"हाँ बशीर साहब! हम कामयाब हो रहे हैं। इकतीस अक्टूबर से गिलगित पर पाकिस्तानी झंडा फहराने लगा है। इस वक्त वहाँ हिन्दू बौद्धों का कत्लेआम हो रहा है। बारामूला की तरफ हम कुछ पीछे हटे हैं, मगर पीछे हटना जल्द ही रोका जायेगा।"

मौलाना ने कह दिया, "इसमें मेरी राय तो यह है कि जम्मू पर हमला कर दिया जाये।"

"कहाँ से?"

"सियालकोट से।"

"इसके लिये हमको भारत के इलाके से गुजरना पड़ेगा।"

"तो क्या हुआ?"

"होगा यह कि भारत भी पाकिस्तान में घुस आएगा और जंग पूरी सरहद पर फैल जायेगी। यह हमारे हक में नहीं होगा।"

"तो गिलगित के बाद किधर दबाव ज्यादा किया जायेगा?"

"हम राजोरी की तरफ पुंछ में घुसने और वहाँ से जम्मू तक पहुँचने की कोशिश करेंगे।"

जिन्ना के बाद पाकिस्तान सेना के कमाण्डर–इन–चीफ जनरल ग्रेसी ने कहा, "कश्मीर से बाहर जंग को ले जाना पाकिस्तान के हक में नहीं होगा। हमें कश्मीर में ही एक दूसरा मोर्चा खोल देना चाहिए। यह भी सुलह कर लेने के बहाने बनाते हुए। कहीं हिन्द फौज ने मगरिबी पाकिस्तान में भी जंग छेड़ दिया तो एक हफ्ते में पाकिस्तान का वह हिस्सा भारत के पास चला जायेगा। तब रायशुमारी की बात उस इलाके में भी होने लगेगी और कश्मीर लेते–लेते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ देना पड़ जाएगा।

"हिन्दुस्तान में दो बहुत जबरदस्त ताकतें मौजूद हैं। एक गांधी दूसरे पटेल। यह पाकिस्तान की खुश–किस्मती समझनी चाहिए कि ये दोनों ताकतें एक ही तरह नहीं सोचतीं। गांधी हमेशा नेहरू की बात मानते हैं। मगर यह हालात वहाँ हमेशा नहीं रह सकती। जिस दिन गांधी और पटेल एक ही ख्याल के हुए, यह सच जानो कि पाकिस्तान की खैर नहीं।

"मेरी राय है कि बारामूला की सड़क से उड़ी तक लौट आना चाहिए और उड़ी की ऊँचाइयों पर हम हिन्दुस्तान के बढ़ने को रोक सकेंगे।

"हिन्दुस्तान के गवर्नर जनरल ने कश्मीर में रायशुमारी की बात यू.एन. ओ. की देख–रेख में कराने का वायदा किया है। इसको मान लेना चाहिए। यू.एन.ओ. ब्रिटेन और अमरीका के अंगूठे के तले हैं। वहाँ हम अपने मकसद में कामयाब हो जाएँगे।"

आखिर यह फैसला हुआ कि लियाकत अली साहब दिल्ली जाएँ और वहाँ नेहरूजी को दुनिया के सामने यह कहने पर तैयार कर दें कि वे रायजनी करायेंगे।

इस फैसले से जो मुर्दनी छायी हुई थी, फिर जिन्दगी में बदल गयी। लाहौर और कराची में दो नवम्बर को जवाहरलाल नेहरू का रेडियो पर भाषण बहुत दिलचस्पी से सुना गया। पण्डित जवाहरलाल जी के इस भाषण को लार्ड माउण्टबेटन के लाहौर में किये प्रस्ताव का समर्थन माना गया। जवाहरलाल जी ने इसमें कहा–

"भारत ने जो कुछ कश्मीर में किया है उसको बहुत सोच–विचार कर, पूरी जिम्मेदारी से किया गया है।

"कश्मीर में यह जद्दो–जहद हम कश्मीर के लोगों की ओर से कर रहे हैं। कश्मीर के रहने वाले, जनता के नेता के अधीन, आक्रान्ताओं के विरुद्ध लड़ाई कर रहे हैं।"

इससे अगले वाक्य में नेहरू जी ने यह कह दिया, "मैं तैयार हूँ कि जब शान्ति स्थापित हो जाये और कानून से राज्य चलने लगे, तब जनता का मत किसी अन्तर्राष्ट्रीय, संयुक्त राष्ट्र संघ की–सी संस्था की देख–रेख में जाना जाएगा।"

जिन्ना साहब ने भी यह वाक्य सुना तो वे कुर्सी पर से कूद कर खड़े हो गये। अनायास ही उनके मुख से निकल गया, "हम जीत गये। लांग लिव लार्ड माउन्टबेटन।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस समय जिन्ना साहब पंजाब के गवर्नर और दो–चार घनिष्ठ साथियों के साथ रात का खाना ले रहे थे। जिन्ना साहब और मौलाना बशीर थे, जरीना थी, खलीफा मुहियुद्दीन था, जिन्ना साहब का पी.ए. खुर्शीद अहमद था और लियाकत अली तथा बेगम लियाकत अली थीं।''

सब लोगों ने नेहरूजी की घोषणा पर तालियाँ बजाईं। सब का यह ख्याल था कि यह पाकिस्तान की बहुत भारी फतह है।

जिन्ना साहब ने कह दिया, ''अब लियाकत अली साहब को दिल्ली जाना चाहिए और इस 'बैन उल अक्वामी' अक्लमन्द को इस बात पर राजी कर लेना चाहिए।''

लियाकत अली वहाँ बैठे हुओं में सबसे अधिक गम्भीर हो रहा था। जिन्ना साहब के इस कथन पर उसने कह दिया, ''गवर्नर जनरल साहब को इसी ऐलान के पहले फिकरे को भूल नहीं जाना चाहिए। यह राय–शुमारी की बात बिला शर्त नहीं है। सवाल तो यह है कि क्या हम वह पहली शर्त मानने के लिये तैयार हैं?''

इस सवाल पर तो सब गम्भीर होने लगे। लियाकत अली ने कहना जारी रखा–नेहरू का कहना है कि जब कश्मीर में अमनो–अमान क्रायम हो जाये तब कश्मीर कै लोगों की ख्वाहिश जानी जायेगी। यह कश्मीर कहाँ है? कश्मीर का मतलब है गिलगित और वह क्षेत्र भी जो हमारी फौजों ने अपने मातहत कर लिया है।''

''नहीं!'' जिन्ना का कहना था, ''यह नहीं होगा। मैं इसलिये खुश हूँ कि इन्टरनैशनल आसपिसेज[1] का लफ्ज इसके मुख से निकल गया है। पहले बिना कश्मीर के हदूद फैसला किये उससे इस फिकरे पर साफ–साफ बात हो जाये। लेकिन कश्मीर का वह इलाका जो हमारे पास आ गया है, उसकी बात नहीं होनी चाहिए। और दूसरे इलाके की बात भी इस तरह कर लेनी चाहिए कि वहाँ की 'नैचुरल' आबादी, जो 15 अगस्त के दिन थी, रद्दोबदल नहीं करने दी जायेगी।

''देखिये लियाकत साहब! मैंने एक हद तक फतह हासिल कर ली है। बकाया काम मैं आप पर सौंपता हूँ।''

इस पर पुनः खाने पर बैठे लोग तरो–ताजा हो हँसने तथा बातें करने लगे। अभी यह खुशियाँ मनाई ही जा रही थीं कि जिन्ना ने जरीना की तरफ

---

1. अन्तर्राष्ट्रीय देख–रेख।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
घूम कर कान में कहा, "आज रात तो तुमको फुरसत होगी?"

जरीना जिन्ना और खलीफा के बीच बैठी हुई थी। उसने मुस्करा कर कह दिया, "मैं हाजिर हो जाऊँगी।"

मौलाना बशीर दो दिन से अन्ना को ढूँढ़ रहा था। जिन्ना को जरीना के कान में बातें करते देख मौलाना ने पूछ लिया, "सदर साहब! अन्ना दिखाई नहीं दे रही।"

"वह बम्बई गयी है।"

"वहाँ क्या है?"

"उसके माँ–बाप हैं।"

बशीर चुप कर रहा, परन्तु वह मन में विचार कर रहा था कि बम्बई में रहते हुए तो उसको कभी अपने माँ–बाप की याद आयी नहीं थी। कराची रहते हुए भी उसने उनसे मिलने की इच्छा कभी जाहिर नहीं की थी। उसकी लाहौर में आते ही एकाएक माँ–बाप से मुहब्बत क्यों जाग पड़ी है? उसको समझ आया कि जरीना ही उसमें कारण हो सकती है। उसने जरीना के मुख पर देखा। वह उसमें और अन्ना में फर्क देख रहा था। अन्ना जरीना से अधिक समझदार और ठण्डे स्वभाव की थी। जरीना जवानी की मस्ती में कुछ उच्छृंखल लगती थी।

जिन्ना ने मौलाना बशीर की ओर देख कर पूछ लिया, "अन्ना को किस लिये याद कर रहे हो, मौलाना?"

"उससे कुछ उन्नस हो गयी है।"

"ओह!.." मगर शीघ्र ही अपने को काबू में कर बोले, "वह वहाँ से लौटने का वायदा कर गयी है।"

"मैं समझता हूँ कि वह नहीं आयेगी।"

"कराची में जाकर मैं उसको बुला लूँगा।"

अगले दिन मौलाना बशीर ने जिन्ना साहब से पूछ लिया, "क्या जॉन भी अन्ना के साथ ही गया है?"

"तुम्हारी इन काफिरों से बहुत मुहब्बत हो गयी है?"

"हाँ हुजूर! मेरा और जॉन का कारोबार साझा था।"

"भला क्या कारोबार करते थे तुम लोग?"

"हम कराची में हिन्दुओं के खाली मकानों पर कब्जा कर उनको मुसलमान रईसों के पास बेच देते थे।"

"तब तो बहुत रुपया कमाया होगा?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हाँ हुजूर! कुछ तो कमाया है। मगर वह है कहाँ?"

"वह तो कराची अपनी बीवी का सामान लेने गया है। दो–चार दिन में उसके वापिस आने की उम्मीद है।"

इसके दो दिन उपरान्त मौलाना बशीर ने जिन्ना से एकान्त में मिलकर कहा, "हजरत! रात मुझको एक ख्वाब आया है। ख्वाब में अन्ना मुझको कह रही थी कि वह आपसे मुहब्बत करती है। इस वास्ते मैं आपको मिल कर बता दूँ कि जरीना से मुहब्बत छोड़ दें वरना यह समझें कि मौत उसके सिर पर मँडरा रही है।

"मैंने उससे पूछा कि तुम बम्बई गयी थी?

"इस पर उसने बताया कि मैं लाहौर के किले में कैद कर दी गयी हूँ।

"मैंने पूछा, किसने बन्द किया है तुम्हें? उसका कहना था, गवर्नर जनरल बहादुर के हुक्म से लाहौर के गवर्नर साहब ने।

"मेरा अगला सवाल था कि यह जरीना बेगम की साजिश तो नहीं। क्या?"

"नहीं।" उसका जवाब था, "वह तो एक शरीफ औरत है।"

"मैं समझ रहा था कि यह ख्वाब है। इसलिये इस ख्वाब से जागने की कोशिश करने लगा। आखिर मेरी नींद खुली। उस वक्त एक जोर का खटाक हुआ। ऐसा मालूम हुआ कि किसी ने जोर से बेडरूम का दरवाजा बन्द किया है।

"मैं अब बिलकुल चौकन्ना हो बिस्तर में बैठ गया और दरवाजे की तरफ देखने लगा। कमरे में धीमी नीले रंग की रोशनी थी और कमरा खाली था।"

"मौलाना!" जिन्ना साहब ने कह दिया, "तुम उस बदकार औरत के लिये पागल हो रहे मालूम होते हो।"

मौलाना ने चिन्ता व्यक्त करते हुए कहा, "हो सकता है। मगर हजरत! दरवाजे की आवाज से तो कुछ ऐसा मासूम होता था कि मेरे कमरे में कोई था।

"मैंने उठ कर कमरे का दरवाजा लगा देखा। यह बाहर से बन्द था। बाहर उसमें ताला लगा हुआ था और गुसलखाने में भी कोई नहीं था। मैंने बेड के साथ लगी घण्टी के बटन को दबाया। इस पर चौकीदार आया और कमरे के दरवाजे के बाहर खड़े–खड़े कहने लगा, 'साहब! दरवाजे को तो ताला लगा है।'

"इसे तोड़ डालो।' मैंने कहा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"गवर्नमेन्ट हाउस के मुहाफिज को बुलाया गया। उसके पास 'मास्टर की' थी। दरवाजा खोला गया और दरवाजे की असल चाबी दरवाजे से कुछ दूर सीढ़ियों के पास पड़ी मिली है।

"जनाब! यह तो पागलपन के आसार मालूम नहीं होते।"

जिन्ना साहब इस सब वाकया से कुछ परेशान हो रहे थे। उनके माथे पर पसीने की बूंदें चमक रही थीं। इस पर भी उन्होंने कहा, "यह एक इत्तफाक की बात हो सकती है कि आपको ख्वाब भी आया हो और आपके कमरे में कोई चोर भी आया हो।"

"हाँ, यह हो सकता है। इस पर भी तहकीकात के लायक वकूआ है।"

जिन्ना साहब अपनी कुर्सी से उठ कर कमरे में इधर–उधर घूमने लगे। फिर एकाएक कुर्सी पर बैठ कर बोले, "यह ख्वाब ही हो सकता है। वह यहाँ से दिल्ली गयी है और मुझको पता चला है कि बम्बई की गाड़ी में चढ़ा दी गई थी। मैं यह समझा हूँ कि जरीना कुछ शोख है। जवान है। इसलिए तुम्हारे मन में मेरी सेहत के लिए ख्याल पैदा हुआ है और उसी ख्याल ने ख्वाब की सूरत इख्तयार कर ली मालूम होती है। मगर तुम लोगों को मेरे लिए फिक्र नहीं करनी चाहिए। मैं अपनी बाबत बहुत अच्छी तरह से जानता हूँ।"

इसके बाद कुछ देर तक इधर–उधर की बातें होती रहीं और जिन्ना के पी.ए. के आने पर बशीर वहाँ से चला आया।

: 12 :

जिन्ना ने कहने को तो कह दिया कि बशीर वगैरा को उनके विषय में चिन्ता नहीं करनी चाहिए, परन्तु वे इतना घबरा गये थे कि वह अपने पी.ए. खुर्शीद अहमद से भी बात नहीं कर सके। वह खुर्शीद के मुख से ही बात सुनते रहे। खुर्शीद कश्मीर की स्थिति का वर्णन कर रहा था। उसका कहना था–पाकिस्तानी फौजें लगातार पीछे हट रही हैं। गुलमर्ग खाली कर दिया गया है और लियाकत अली साहब रेडियो पर एक बयान देने की तैयारी कर रहे हैं। आज शाम को या कल शाम को वे बोलेंगे।"

सब बातें जिन्ना साहब ने चुपचाप सुनीं। जब खुर्शीद अहमद अपनी बात समाप्त कर चुका तो जिन्ना साहब ने कह दिया, "तुम जाओ और पंजाब के गवर्नर बहादुर को मेरा सलाम कहो।"

खुर्शीद ने झुक कर सलाम की और कमरे से बाहर निकल आया। यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
प्रातः के अल्पाहार का वक्त था। जब से अन्ना गयी थी, जरीना ने गवर्नर जनरल की खिदमत अपने सिर ले ली थी। वह एक बैरे से अल्पाहार का सामान उठवा कर ले आयी।

उसने बैरा के सामान मेज पर सजा कर जाते ही कहा, "जनाब! कराची से खबर आई है कि जान फ्रांसिस के क्वार्टर में ताला तोड़ कर चोरी कर ली गयी है। गवर्नमेन्ट हाउस में इस संगीन वारदात की जाँच–पड़ताल की जा रही है।"

"जॉन वहाँ पहुँच गया है या नहीं?"

"हुजूर, नहीं। वह तो रास्ते में ही लापता हो गया था।"

"ओह! तो यह चोरी उसी ने की है?"

"हो सकता है।"

"मगर जरीना! तुम तो अन्ना से मिली थीं। वह कैसी औरत है?"

"एक बेवकूफ़ काफिर ही कही जा सकती है।"

"मगर सुना है कि वह तो तुम्हारी तारीफ करती थी।"

"किससे सुना है हुजूर ने?"

"एक फरिश्ता अभी–अभी कान में यह कह गया है कि अन्ना के ख्याल में जरीना एक शरीफ औरत है।"

"शरीफ के मायने सब के लिए एक नहीं होते। शायद वह शराफत के मायने खुद नहीं जानती।"

जिन्ना साहब अंडों का पोरेज खाने लगे थे। वह जरीना की बात सुन रहे थे। जब जरीना चुप हो गयी तो जिन्ना ने उसके मुख पर देखा। जरीना अपनी प्लेट की तरफ देखती हुई मछली के टुकड़ों को छुरी से काट कर काँटे पर चढ़ा रही थी।

जिन्ना साहब कुछ कहने ही वाले थे कि कमरे में लगी घंटी बजी। जरीना उठी और बाहर देखने चली गई और एक ही क्षण बाद खलीफा मुहियुद्दीन के साथ भीतर लौट आयी। जिन्ना साहब ने कहा, "आइये खलीफा साहब!"

"जनाब ने याद फरमाया था।"

"बैठिये! नाश्ता किया है या नहीं?"

"कर चुका हूँ।"

"एक प्याला कॉफी लीजिए। जरीना! काफी बना दो।"

जरीना ने प्याला ले, खलीफा साहब के लिए कॉफी बनानी शुरू कर दी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
खलीफा ने एक कुर्सी पर बैठते हुए कहा, "हुजूर! एक फिक्र वाली खबर है। "अन्ना किले से भागने में कामयाब हो गई है।"

इस पर तो जिन्ना के हाथ से कांटा भूमि पर गिर गया। उसने अपने को सम्हाल कर कहा, "यह कैसे हो गया?"

"जाँच करा रहा हूँ। कल तक पता चल जाएगा। मालूम होता है कि किले के सिपाहियों में से कुछ इस साजिश में शामिल हैं।"

"वह तो है ही। मुझको कुछ शक हो रहा है कि इस गवर्नमेंट हाउस में भी कोई है जिस पर अन्ना का जादू चला हुआ है। पिछली रात वह इस कोठी के कमरों में घूमती रही है।"

"यह किसने खबर दी है?"

"और जॉन फ्रांसिस भी हवाई अड्डे से लापता हो गया है।"

"हवाई अड्डे से नहीं! वह कराची जेल से भाग गया है और उसी रात उसने खुद अपने क्वार्टर का ताला तोड़ कर सब सामान निकाल लिया है।"

"यह तो पाकिस्तान और खास तौर पर पंजाब के इन्तजाम के नाकिस होने का सबूत जाहिर करता है।"

"मैं इस सब के लिए शर्मिंदा हूँ। मगर उन ईसाइयों ने इंग्लैण्ड की सरकार से मदद ली मालूम होती है। यह पता चला है कि कराची का अंग्रेजी सफारत–खाना इस मुआमले में दिलचस्पी ले रहा है।"

"हम इस मुआमले में मजीद वाकफीयत हासिल करना चाहते हैं।"

"मैं इस मुआमले में पूरी कोशिश कर रहा हूँ।"

"और आज शाम को हम कराची लौट जाने का इरादा रखते हैं। हम जरीना को अपने साथ ले जा रहे हैं।"

"यह तो हुजूर! इस गरीब पर डाका डाल रहे हैं।"

"दो–दो बीवियों वाला गवर्नर पाकिस्तान में एक गरीब कहाता है। तो भला हमारे मुल्क में अमीर किसको कहते हैं?"

बात जरीना ने बदल दी, "मगर मैं हुजूर के साथ कराची अभी नहीं जा सकूँगी।"

"क्यों? क्या काम है यहाँ?"

"मेरे वालिद शरीफ आ रहे हैं।"

"कहाँ से आ रहे हैं?"

"हुजूर! हम कश्मीर के रहने वाले हैं। मेरे वालिद तनमर्ग रहते थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाकिस्तानी कबायलियों ने तनमर्ग पर कब्जा किया और वहाँ की सब औरतों को अपने ट्रकों में लाद कर अपने वतन भेज दिया है। उनमें मेरी माँ और फूफी भी हैं। मेरे वालिद शरीफ हुजूर के दर्बार में हाजिर हो उनको छुड़वाने की अर्जी करने वाले हैं।"

"ओह! वह कब तक आने वाले हैं?"

"वालिद की चिट्ठी रावलपिंडी से आई है। वहाँ वे रुपये की किल्लत की वजह से अटके हुए हैं। रात मैंने उनके लिए खर्च भेजा है और कल तक उनके यहाँ पहुँचने की उम्मीद कर रही हूँ। उनके आने पर ही मैं खिदमत में हाजिर हो सकूँगी।"

जिन्ना जानता था कि कबायलियों के हाथ से किसी औरत का छुड़ाना कितना मुश्किल है। साथ ही वह समझ रहा था कि अगर जरीना की माँ और फूफी बड़ी उमर की औरतें हुईं तब तो वे मारी जा चुकी होंगी। इस कारण वह विचार करने लगा था कि अगर जरीना की माँ का पता करना पड़ा तो क्या करेगा?

इस पर खलीफा ने जरीना से पूछ लिया, "तो जरीना! तुम पंजाब गवर्नर की नौकरी छोड़ रही हो?"

"तो पंजाब के गवर्नर मेरी माँ को छुड़ा सकते हैं क्या? अगर छुड़ा सकें तो मैं यहीं रह जाऊँगी।"

"और हमारी खिदमत का हलफ खत्म हो गया?"

"तो आप मेरी माँ को छुड़ा दीजिये।"

"देखो जरीना!" जिन्ना ने कहा, "हम कोशिश कर सकते हैं, मगर यकीन नहीं दिला सकते। अगर वे औरतें जिन्दा हुईं तो मैं उम्मीद करता हूँ कि वे कराची पहुँच जाएँगी।"

"इस पर भी मैं आज तो आपके साथ जा नहीं सकती। वालिद साहब के आ जाने पर, उनकी सब बात जान कर आपके सामने अर्जी करने आऊँगी।"

उसी सायंकाल लियाकत अली खाँ ने लाहौर रेडियो से कश्मीर के मुताल्लिक ऐलान किया। लियाकत अली ने कश्मीर का इतिहास, राजा गुलाब सिंह द्वारा अंग्रेजों से इसके लेने के समय से आरम्भ किया। उसने अमृतसर की सन् 1848 की संधि को एक अपवित्र और लज्जास्पद घटना बताया। लियाकत अली ने तब से कश्मीरियों की, डोगरों के जुल्मो–सितम सहने की कहानी सुनाई और कहा कि यह तो कश्मीरियों ने ही जालिम राजा के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
खिलाफ जिहाद की है; यह किसी बाहरी मुल्क ने हमला नहीं किया, भारत सरकार तो लड़खड़ाते शाही खानदान की इमदाद करने वहाँ पहुँच गयी है; वह कश्मीर की रियाया की मदद नहीं कर रही, कश्मीर का इल्हाक हिन्दुस्तान के साथ एक अजीम धोखा है जो बेबस और भोले–भाले कश्मीरियों के साथ खेला जा रहा है। इस भाषण से पाकिस्तान का जन–साधारण बहुत प्रसन्न हुआ। जब यह भाषण हो रहा था, खलीफा मुहियुद्दीन अपनी प्रिय टाइपिस्ट जरीना और दूसरी दो बेगमों के साथ बैठा खाना खा रहा था।

उस समय जिन्ना अपने पूरे स्टाफ के साथ कराची लौट चुका था और लाहौर के गवर्नमेन्ट हाउस में फिर शान्ति हो गयी थी। खलीफा ने तकरीर के बाद अपने ख्यालात जाहिर कर दिये–"क्यों जरीना? क्या कमाल की तकरीर की है लियाकत अली साहब ने!"

"हाँ हुजूर। अच्छी बकवास है!"

"क्या बकवास है?"

"पहली बात तो यह है कि राजा ने कश्मीर मोल लिया था। सिक्खों को 1846 की शिकस्त का तावान अंग्रेजों को एक करोड़ पचास लाख रुपया देना था और सिक्ख दरबार के पास पचास लाख से अधिक था नहीं। एक करोड़ रुपया डोगरा सरदार गुलाब सिंह को कश्मीर देकर लिया गया था और अंग्रेजों को दिया गया था। जब 1848 में अंग्रेजों ने पंजाब को अंग्रेजी राज्य में शामिल किया तो गुलाबसिंह ने कश्मीर देने से इनकार कर दिया। इस पर अंग्रेजों में और राजा गुलाबसिंह में अमृतसर में समझौता हुआ और उसका कश्मीर पर हक मान लिया गया।

"राजा ने तो कश्मीर को गैरों के हाथ जाने से बचाया था न कि उसे किसी गद्दारी का अंग्रेजों से इनाम मिला था।

"लियाकत अली साहब ने यह झूठ बोला है। फिर दूसरा झूठ यह है कि राजा की हुकूमत जालिमाना नहीं थी। जुल्म तो अब हो रहा है, जब पाकिस्तानी लोग वहाँ घुस गये हैं। राजा या राजा के खानदान के लोगों ने किसी कश्मीरी औरत से जबर–जनाह नहीं किया।"

"और तुम राजा के घर में रह आयी हो जो वहाँ की बात बता रही हो?"

"मगर हुजूर! मैं श्रीनगर कॉलेज में पढ़ी हूँ और जितनी इज्जत औरतों की वहाँ होते देखी है, उतनी तो कराची और लाहौर में भी नहीं देखी।"

"तो तुम हमारे यहाँ बे–इज्जत की जा रही महसूस करती हो?"

"जी नहीं! मैं अन्ना की बात सोच रही हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो तुम जानती हो वह कहाँ है?"

"जी नहीं! हाँ, दूसरी और तीसरी तारीख की रात को वह यकायक मेरे सोने के कमरे में आ गयी थी। कहाँ से और कैसे? मैं नहीं जानती।

"उसने बताया कि वह क्यों पकड़ कर लाहौर के किले में कैद को गयी है। मुझे उसकी हालत देख कर तरस आता है।"

"क्यों पकड़ी गयी थी वह?"

"वह कहती थी कि वह बम्बई अपने माँ–बाप से मिलने जाना चाहती थी। वह यह जानना चाहती थी कि हिन्दुस्तान में ईसाइयों से कैसा सलूक किया जा रहा है। पाकिस्तान में तो कराची के गवर्नमेन्ट हाउस में एक ईसाई औरत से दस–दस आदमियों ने जबर–जनाह किया था और वह औरत इसी फेल में मर गयी थी। यही बात बारामूला के गिरजाघर और अस्पताल में ईसाई 'नर्सों' और 'नन्ज' के साथ की गयी है।

"गवर्नर जनरल बहादुर को शक हो गया कि वह अंग्रेजी सफारत–खाने में शिकायत करने जा रही है। इसलिये उसको पकड़ कर बन्दी बना लिया गया था।"

"और वह छूटी कैसे थी?"

"यह उसने नहीं बताया। सिर्फ इतना कहा है कि जिस भले आदमी ने उसको छुड़ाया है, उसका नाम वह बता नहीं सकती। यह उसके साथ दगा होगा। मैंने पूछा भी नहीं।"

"मगर वह तुमसे मिलने क्यों आयी थी?"

"मुझको सलाम करने और मेरा शुक्रिया अदा करने।"

"तुमने उसकी कौन सी भलाई की थी जो वह अपनी जान को खतरे में डाल कर तुम्हारा शुक्रिया अदा करने यहाँ पहुँच गयी थी।"

"वह कहती थी कि वह गवर्नर जनरल बहादुर से जाती उन्नस रखती है और मैं उसकी जगह पर उनको सुख और आराम पहुँचा रही हूँ, इसलिये वह मेरा शुक्रिया अदा करना चाहती है। यही कहने वह आयी थी। मैंने उसको यहाँ इस कोठी में उसकी जान के खतरे की बात बतायी। इस पर वह सलाम कर दरवाजे से निकल गयी। मैं उसके पीछे भागी, मगर वह कमरे के बाहर बरामदे की बत्ती बुझा अंधेरे में कहीं गायब हो गयी।"

"मगर जरीना! वह आयी थी दो तारीख से पहिले और आज है चार तारीख। तीन दिन तक तुमने मुझको बताया क्यों नहीं?"

"इसलिये कि हुजूर उसको पकड़ते नहीं। शायद पकड़ने की कोशिश भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं करते और फजूल में उसके भागने से आपका ताल्लुक होने का शक हो जाता। आपके हक में यह अच्छा न होता।''

''मगर मैं अन्ना का पता करने की कोशिश तो कर रहा हूँ।''

''जी! यह मुझको आज ही पता चला है। आपने किले के मुहाफिज और दो सिपाहियों को नौकरी से निकाल दिया है। मगर हुजूर, मुझको यह भी बताया गया है कि इन निकाले गये अफसरों को आपने पाँच–पाँच सौ एकड़ नहरी जमीन इनाम में दी है।''

''मगर वह तो उनको हिन्दू काफिरों की तहे–तेग करने का इनाम है।''

''ठीक है। मुझे बताने वाले ने यह नहीं बताया था। मगर हुजूर! मैं तो आपकी खादिमा हूँ। मैं किसी को कुछ कहने वाली नहीं।''

''इस पर भी तुम कराची जा रही हो?'' खलीफा ने मुस्कराते हुए पूछ लिया।

''अपनी माँ और फूफी को छुड़ाने की कोशिश करना चाहती हूँ। इस कोशिश का कुछ नतीजा निकलते ही यहाँ चली आऊँगी। मैं समझती हूँ कि मुझे कराची की आबो–हवा मुआफिक नहीं बैठेगी।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वितीय परिच्छेद

देवप्रयाग के मार्ग पर व्यास चट्टी से दो फर्लांग पश्चिम की ओर एक छोटी सी पगडंडी चढ़ कर, दो–तीन एकड़ के लगभग सपाट भूमि पर एक वृद्ध साधु बाबा का आश्रम था। साधु वैरागी गरीबदास था। गरीबदास की आयु इस समय एक सौ दस वर्ष की थी। कमर सीधी और मुख पर ओज था। सिर के बाल तथा आँखों की बरौनियाँ सर्वथा श्वेत हो चुकी थीं। मुख और माथे पर झुर्रियाँ थीं। परन्तु शरीर में स्फूर्ति और चपलता विद्यमान थी।

सन् 1948 का मार्च मास था। स्वामी जी का अपना लड़का रत्नलाल भी यहीं आश्रम में रहता था। वह वानप्रस्थ आश्रम में प्रवेश कर चुका था। आश्रम में दो पहाड़ी, कल्याण और नारायण अपनी–अपनी पत्नियों के साथ रहते थे। ये आश्रम की फुलवारी और सागभाजी के छोटे से खेत की देखभाल करते थे और आश्रम के पशुओं तथा रहने वाले प्राणियों की सेवा भी करते थे।

एक स्त्री के दो बच्चे भी थे। वे वहीं आश्रम में रत्नलाल से पढ़ते थे। दूसरी स्त्री के लड़के सेना में भरती हो भारत की किसी छावनी में रहते थे और वर्ष में एक–आध बार अपने माता–पिता से मिलने आया करते थे। उनके अपने परिवार थे जो पहाड़ पर एक गाँव में थे।

कल्याण और नारायण की पत्नियाँ भी आश्रम का काम करती थीं। एक देवप्रयाग की सड़क पर नित्य आने वाली डाक–बस से डाक लेकर आया करती थी।

वह औरत लक्ष्मी इस दिन गयी तो डाक के साथ एक स्त्री और पुरुष को भी ले आयी। इस समय दिन के दस बज रहे थे। रत्न अपने स्वाध्याय से अवकाश पा एक पेड़ की छाया में खड़ा, डाक की प्रतीक्षा कर रहा था। पगडंडी से लक्ष्मी ऊपर पठार पर पहुँची तो उसके साथ एक स्त्री तथा एक पुरुष भी था। रत्नलाल उनकी ओर देख रहा था। पुरुष धोती–कुर्ता तथा पंडितों की सा पगड़ी पहिने हुए था। पाँव में चप्पल और हाथ में छड़ी थी। स्त्री साड़ी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
पहिने थी और उसकी माँग में सिंदूर भरा था। वह भी पाँव में चप्पल पहिने हुए थी।

जब तक वे लोग आश्रम में प्रवेश कर रत्नलाल से बीस गज के अन्तर तक नहीं पहुँच गये तब तक वह उनको पहिचान नहीं सका। इस पहिचानने में भी पुरुष के साथ मुस्कराते हुए आ रही स्त्री की ओर देखने ने बहुत सहायता की थी। पहिचानते ही रत्नलाल इनकी ओर हाथ जोड़ लपका–

"भापा शमशाद! और अम्मी! यह क्या भेष बना लिया है?"

शमशाद खिलखिला कर हँस पड़ा, "कहाँ हैं स्वामी जी! वहीं सब कुछ बताऊँगा।"

"पर भापा, तनिक आराम करो। कुछ नाश्ता इत्यादि तो करोगे न? कब से और कहाँ से चले हो?"

"रत्न!" बात औरत ने की, "तुम ठीक कहते हो। भूख तो खूब लगी है। बहुत सुबह हरिद्वार से चले थे। उस समय तो एक–एक प्याला चाय ही मिल सकी थी। बस वाला हमको नीचे पड़ाव पर उतार कर चल दिया। यह औरत बस वाले से डाक लेने खड़ी थी और स्वामी जी का नाम लेने पर यहाँ ले आयी है। यदि यह न मिलती तो मुसीबत हो जाती।"

"अच्छा अम्मी! आओ।"

रत्न उनको आश्रम में अतिथियों के लिये नियुक्त कमरे में ले गया और पूछने लगा, "स्नान इत्यादि करना हो तो पानी गरम कराया जा सकता है।"

"स्नान हम कर आये हैं।" शमशाद ने कह दिया।

"तो ठीक है।"

इस समय कल्याण वहाँ आ गया। रत्न ने उसको कहा, "कल्याण भैया! देखो मेहमान आये हैं। इनके लिए परौठे, मक्खन और ऊपर पीने का दूध।"

शमशाद ने बात–चीत में ही काट कर कह दिया, "नहीं। चाय लेंगे या कॉफी।"

"अच्छा कॉफी। क्यों अम्मी, तुम भी कॉफी लोगी क्या?"

"भैया! जो तुम्हारे भापा लेंगे वही तो ले सकती हूँ।"

अल्पाहार ले और संतुष्ट हो शमशाद और मुमताज रत्नलाल के साथ स्वामी जी के सामने जा उपस्थित हुए। दोनों स्वामी जी को दीप–शिखा की भाँति ओजस्वी और अचल देख स्तब्ध खड़े रह गये। मुमताज को पहिले ज्ञान हुआ और वह भूमि पर लेट कर साष्टाँग प्रणाम करने लगी। शमशाद भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
अपनी पत्नी को इस प्रकार प्रणाम करते देख भूमि पर घुटने टेक, भूमि पर सिर रख कर सिजदा करने लगा।

स्वामी गरीबदास हँस पड़े। हँसते हुए कहने लगे, "उठो बेटा मुमताज! इबादत खुदा की करो। वह ही सब से बड़ा और सब की कामनाएँ पूर्ण करने वाला है।"

शमशाद सीधा हो गया। मुमताज भी उठी और सामने चटाई पर बैठ कर बोली, "महाराज! इनकलाब हो गया है हिन्दुस्तान में।"

"हाँ! मैं सब जानता हूँ। रत्नलाल ने बताया है।"

"महाराज! इसने कुछ नहीं बताया होगा। यह बहुत कुछ जानता भी नहीं। यह कांग्रेस और मुस्लिम लीग दोनों का विरोधी है। इस वास्ते दोनों की भीतरी बातें यह जानता भी नहीं होगा। खुदा की मेहर से मैं मुस्लिम लीग की नेता और ये मियाँ मौलाना साहब के पी.ए. इतना कुछ जानते हैं कि उसको बताना हमारी ताकत से बाहर है।

"कुछ न पूछिये महाराज! वह सब कुछ याद कर तो कलेजा मुँह को आने लगता है। आप हैरान होंगे कि हमारा लड़का सादिक जो अलीगढ़ का तालबे इल्म है, कलकत्ता में डायरेक्ट ऐक्शन के दिन लूट–मार मचाता हुआ कांग्रेस के सदर के मकान पर जा पहुँचा और अपने बाप पर छुरे से वार कर बैठा। यह तो खुदा की मेहर समझिये कि वार ओछा पड़ा और इनका कन्धा ही छिल कर रह गया।

"जब वह भागने लगा तो बाप ने आवाज दे दी, 'सादिक' सादिक आवाज पहिचान लौट आया और अपने बाप के कंधे से रक्त बहता देख भौचक्का हो खड़ा रह गया।

"इन्होंने कहा, 'बेटा! अब इस घाव पर पट्टी भी तो बाँध जाओ। जो काम तुम अपने छुरे से नहीं कर सके, वह खून के ज्यादा बह जाने से न हो जाए।'

"सादिक ने बाप के जख्म पर पट्टी बाँधी। पट्टी बाँधते हुए वह बोला, 'हमको हुक्म था कि मौलाना को छोड़ कर शेष सब को खत्म कर देना है। मगर यहाँ आप क्या कर रहे थे?'

"बाप ने बताया कि वह मौलाना का पी.ए. है और उनके किसी काम से ही आज कलकत्ता में आया हुआ है।

"मैं तो डायरेक्ट ऐक्शन कमेटी की मैम्बर थी और मैं जानती हूँ कि कितनी लड़कियों से जबरजनाह किया गया था। कितनी मार डाली गई थीं और कितना धन–दौलत लूटा गया था। दो–हजार से ऊपर मकान जला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डाले गये थे और सड़कों पर लाशों के ढेर लग गए थे।

"जब गवर्नर ने पुलिस को पकड़–धकड़ करने पर जोर देना शुरू किया तो मुझको नोआखाली भेज दिया गया और महाराज! वहाँ जो कुछ हुआ वह तो बयान से बाहर है।

"हकीकत यह है कि मुझ में तबदीली वहाँ जा कर ही हुई है। एक लड़की जिससे पाँच आदमी जनाह कर चुके थे और छठा अपना मुख काला करने लगा था, तो उसकी नजर मुझ पर पड़ गयी। उसने कहा, 'अम्मी! मुझको बचाओ।'

'मैं कुछ नहीं कर सकती।' मेरे मुख से आदतन निकल गया।

"उसने रोते हुए कहा, 'तुम औरत हो क्या? देख नहीं रहीं कि ये क्या कर रहे हैं।'

"मैंने मुख मोड़ लिया। एक चीख की आवाज सुन फिर घूमी और देखा कि उस लड़की की आँखें ऊपर चढ़ गयी थीं।

"यह ऊँट की पीठ पर आखिरी तिनका था। इसके बाद कलकत्ता लौटने पर शबनम और उसके रिश्तेदारों का हाल सुना तो पागलों की तरह घर में बैठी–बैठी छटपटाने लगी। उसी पागलपन में घर का सब सामान तोड़ने–फोड़ने लगी।

"मैं कांग्रेस की नेता थी। पर मेरी खिदमात को बाला–ए–ताक रख कर एक खूबसूरत लौंडिया को मुझ पर तरजीह देकर उसे असेम्बली का टिकट दे दिया गया। तब मैं मुस्लिम लीग में शामिल हो गयी और वहाँ उनसे भी ज्यादा बेरहम और बदतमीज लोगों को देख पागल हो गयी। मेरे किसी पड़ोसी ने इन मियाँ जी को तार दे दिया और ये कलकत्ता आ गये।

"ये मुझको बम्बई ले गये और वहाँ तीन महीने के इलाज के बाद मेरी हालत ठीक हुई। शायद इनके मौलाना की खिदमत में न जाने ने मेरे दिल को ज्यादा तसकीन दी है।

"मेरे राजी हो जाने के बाद हमारे सामने यह सवाल आया था कि हम क्या करें? हम बाबू सदानारायण से राय करने गये, तो उनकी राय थी कि ये हजरत तो कराची चले जायें और मैं बम्बई में रह जाऊँ।

"उन्होंने यह बताया कि शबनम के वालिद के मन में कुछ है जिसका ऐतबार नहीं किया जा सकता और शबनम की माँ में कुछ है जिस पर ऐतबार किया जा सकता है।

"इस पर इन्होंने तफसील से सुनने और समझने की ख्वाहिश जाहिर की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो बाबू सदानारायण कहने लगे, 'भापा! तुम कितनी बार बेवफाई कर चुके हो?'

'इनका कहना था, 'एक बार भी नहीं।'

''बाबू सदानारायण ने कहा, 'तुमने नासिरा से बेवफाई की; तुमने राधा को मरवाने की कोशिश की, तुम कांग्रेस में शामिल हुए; फिर मुस्लिम लीग में गये और अन्त में फिर कांग्रेस में चले गये। बताओ, कहाँ हद है इस मन की चंचलता की?'

''इनका कहना था, 'यह तो मैं भी कर रही हूँ।'

''इस पर बाबू सदानारायण ने कहा, 'नहीं! बहुत अन्तर है तुम दोनों में। तुमने नासिरा को घर से निकाला, सरवर पर लट्टू होकर। तुमने नासिरा, को जो तब राधा बन गयी थी, इसलिये मरवाने की कोशिश की कि वह उदार मुसलमान है। तुमने उसको पुनः अपने घर में लाने की पेशकश[1] को नामंजूर किया, सिर्फ इसलिये कि तुम मुसलमान थे। तुमको अन्य सब औसाफ[2] से इस्लाम बेहतर समझ आया था। तुम कांग्रेस में शामिल हुए थे लीडरी के मोह में मगर जब तुमने देखा कि लीडरी के लिये कुर्बानी बहुत करनी पड़ती है तो तुमने कांग्रेस छोड़ मुस्लिम लीग में जाना मंजूर कर लिया। वहाँ ठेकेदारी में मदद मिलती थी। फिर उसी लीडरी के लिये तुम मौलाना के पी.ए. बन गये। मगर तुम 1942 में जेल नहीं गये। वही तपस्या जिससे डर कर 1922 में कांग्रेस छोड़ी थी, फिर सामने आयी, तो कर नहीं सके।

'अब स्वराज मिला है, मौलाना तालीमी वजीर बन गये हैं और तुम्हारे मुख से फिर लार टपकने लगी है।'

'और अम्मी की बात इससे बिल्कुल उलट है। अम्मी हमेशा एक औरत की तरह दर्दमन्द दिल रखती हैं। वे अपने मुल्क से मुहब्बत करती थीं। इसलिये कांग्रेस का काम करने लगीं। मगर कांग्रेस वालों ने इनसे दगा किया। ये समझीं कि इन दगाबाजों और नफसानी ख्वाहशात पर मुल्क को कुर्बान करने वालों से मुल्क की भलाई नहीं हो सकेगी। सुहरावर्दी और नाजमुद्दीन से यह मुल्क की रहबरी की उम्मीद करने लगी थीं। इनके दिल में रोशनी तो कलकत्ता के डायरैक्ट ऐक्शन से पहिले ही होने लगी थी। इसीलिये इसने अपनी लड़की और लड़की के रिश्तेदारों की हिफाजत के लिये बंदूकें और कारतूस दिये थे और मुस्लिम लीगियों के नाराज हो जाने पर भी रत्न वगैरा की मंदद करने से नहीं

---

1. प्रस्ताव।
2. गुण।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
डरी। सब से बड़ी बात यह थी कि यह औरतों पर जुल्म होता देख पागल हो गयीं। ऐसी औरत को तो मैं मुल्क में एक बहुत बड़ी पूँजी मानता हूँ। इसलिये अम्मी से कह रहा हूँ कि यहीं रह जाये तो देश का कुछ भला ही होगा।''

''ये मियाँ बाबू सदानारायण के समझाने पर मेरे साथ भारत में रह जाने पर राजी तो हो गये हैं मगर अभी भी इनके दिमाग में नयी दिल्ली की आलीशान इमारतों का सुख–आराम खलबली मचाता रहता है। मौलाना साहब इनको लिखते रहते हैं और ये वहाँ जाने के लिये बेताब रहते हैं।

''मैं इनको आपके पास लायी हूँ कि आप इनको समझावें कि अब तो अपनी आकबत सुधारने के लिये कुछ कर लें। कितनी जिन्दगी बाकी है और कितना कुछ करने को बकाया है, जरा इनको बता दें।''

स्वामी गरीबदास इस लम्बी बात को सुन मुस्कराता रहा था। मुमताज इस मुस्कराने से प्रोत्साहित हो कहती जा रही थी। जब उसने कहना खत्म किया तो स्वामीजी खिलखिला कर हँस पड़े। हँसते हुए वह बोले, ''देखो बेटी मुमताज! सदानारायण ने शमशाद मियाँ के स्वभाव का ठीक अनुमान लगाया है। यह स्थिर बुद्धि नहीं है। मैं इसको तब से जानता हूँ जब यह एम.ए. में पढ़ता था और जवाहरलाल का दोस्त था।

''बुद्धि की अस्थिरता में सबसे बड़ा कारण है कि इसका भोग और ऐश्वर्य में लीन हो हृत् चित्त अर्थात् भ्रमित मन वाला हो जाना। इसकी निश्चित बुद्धि नहीं है। हमारी गीता में लिखा है–

[1]भोगैश्वर्यप्रसक्तानां तयापहृतचेतसाम्।
व्यवसायात्मिका बुद्धिः समाधौ न विधीयते।।

''भला शमशाद को क्या मिलेगा वहाँ मौलाना की सेवा में जाने से?''

''भापा! ये बूढ़े मौलाना अब शहंशाह अकबर की तरह नई दिल्ली में मीना बाजार लगाते रहते हैं और उस चटनी के चखने का मौका मुझको भी मिल सकता है।''

''मौलाना तो बूढ़े हैं।'' स्वामी जी ने मुस्कराते हुए कहा, ''मगर तुम्हारी कितनी आयु है?''

''भापा! गिनती–मिनती तो मुझे याद नहीं। हाँ, मैं जवाहरलाल से चार साल बड़ा हूँ।''

---

1. भ. गी. 2–44

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जवाहरलाल का जन्म 1885 में हुआ था। इस हिसाब से तुमको सढ़सठ साल का होना चाहिए। अब यह चटनी–अचार छोड़ना चाहिए। शमशाद! अब अपनी बकाया जिन्दगी खुदा की इबादत में गुजारो। इससे आइन्दा ज्यादा सुख–आराम की उम्मीद कर सकते हो।"

"भापा! आपका फरमाना दुरुस्त है। मगर मेरे उस्ताद ने एक यह बात भी पढ़ाई थी, कि वन बर्ड इन हैण्ड इज बेटर दैन टू इन दी बुश।"[1]

गरीबदास हँस पड़े और बोले, "देख लो। कहीं गिनती–मिनती में भूल तो नहीं कर रहे? शमशाद! किसी लेखाकार से राय कर लो। कहीं ऐसा न हो कि गलतफहमी में वह एक भी हाथ में न रहे।"

"यही करने के लिए तो इनको आपके पास लायी हूँ।" मुमताज ने मुस्कराते हुए कह दिया, "ये अपना हिसाब मौलाना साहब से कराते रहते हैं। पिछले जनवरी मास में मौलाना बम्बई आये थे और ये हजरत मुझको भी वहाँ ले गये। मौलाना साहब ने जब इनसे पूछा कि उनके चिट्ठी लिखने पर ये दिल्ली क्यों नहीं आये तो मियाँ कहने लगे कि इनकी नकेल मेरे हाथ में है। मौलाना बहुत गौर से मेरे मुख पर देखने लगे। मैंने कह दिया, 'हजरत! ये गलत कहते हैं। असल वाकया यह है कि मेरी नकेल इनके हाथ में है। बात सिर्फ यह है कि यह मुझको दिल्ली ले जाना नहीं चाहते थे और मुझको छोड़ कर भी जाना नहीं चाहते थे।'

"मौलाना ने कहा, 'यह तो मैं देख रहा हूँ कि तुम बूढ़ी औरत को शमशाद खाँ क्यों छोड़ नहीं सकता।'

"इस पर ये बोल उठे, 'यह बूढ़ी नहीं है हजरत! इसके सीने में वह आग है जो उस लौंडियाँ शमा के सीने में भी नहीं।"

"इस पर मौलाना हँस पड़े। हँस कर बोले, "तो तुमने इसकी आग बुझाने का ठेका ले रखा है क्या?"

"इनका कहना था, 'आग बुझाने का तो नहीं मगर इस आग को तापने का तो फख छोड़ा नहीं जा सकता। यह बहुत ही मजेदार औरत है।'

"मौलाना ने कहा, 'बम्बई से नई दिल्ली ज्यादा खुशगवार जगह है। फिर हमारे वजीरे–आजम हैं वहाँ। औरतें उनको बहुत पसन्द करती हैं। इनको जरा उनके दीदार करा दो तो मुश्किल हल हो सकती है।'

"ये मेरी ओर देख कर कहने लगे, 'इस दावत को तो कबूल करना ही चाहिए।'

---

1. हाथ में का एक, पेड़ पर दो से अधिक होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैंने बात टालने के लिए कह दिया, कि यह बात गौरे–तलब है। मैं दिल्ली का सफर करने की कोशिश करूँगी।"

"तो तुम गयी थीं दिल्ली?" स्वामी जी ने पूछ लिया।

"नहीं महाराज! वहाँ जाने से पहिले मैंने अपना हिसाब आपसे करवाने के लिये इनको कह दिया और ये आ गये हैं।"

"अच्छा एक बात करो। तुम दोनों कुछ दिन यहाँ रहो। तुम्हारे सब पुराने अमालों की गिनती–मिनती में कुछ वक्त लगेगा।"

मुमताज तो उस आश्रम में रहने के लिए तुरंत तैयार हो गयी, मगर शमशाद को इस वीरान जगह में रहना कुछ अधिक पसन्द नहीं था। इस पर भी स्वामी जी के सामने वह इनकार नहीं कर सका।

: 2 :

उस दिन भोजनोपरान्त पेड़ के साये तले बैठे–बैठे मुमताज और शमशाद अपने भावी कार्यक्रम के विषय में विचार कर रहे थे। मुमताज का कहना था, "मैं तो इस जगह की तनहाई[1] पर फिदा हो रही हूँ। बम्बई और कलकत्ता की बेतहाशा भाग–दौड़ के बाद यह सुनसान–वीरान और बेहरकत फिजा बहुत भली लग रही है। मैं तो यही राय दूँगी कि बकाया जिन्दगी यहीं गुजार दी जाये तो ठीक है।"

"बेगम का ख्याल बहुत अच्छा है, मगर यह ख्याल कितने दिन तक रहेगा?"

"बताया तो है कि बकाया जिन्दगी के लिए।"

"मुझको यह नाकाबिले–अमल मालूम होता है।"

"मेरे लिये या आपके लिये?"

"मैं दोनों की बात कह रहा हूँ। देखो बेगम! इस मुल्क में बहुत जल्दी मुस्लिम लीग या कोई वैसी ही मजलिस बनेगी। यह हो नहीं सकता कि जहाँ चार करोड़ से ऊपर मुसलमान रहते हों, वहाँ उनकी कोई तनजीम न हो। साथ ही यह भी नामुमकिन है कि एक मुसलमानों की मजलिस हो और उसकी अपनी सियासियात, इस्लामी हुकूमत कायम करने वाली न हो।

"बेगम, तब इस तन्जीम में तुम शामिल हुए बिना नहीं रह सकोगी। यह

---

1. एकान्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम्हारी फितरत में है कि तुम आम खलकत की नजरों में आये बिना नहीं रह सकतीं।"

"और आप उस तन्जीम में शामिल होंगे जो मौलाना ठीक समझेंगे क्या?"

"नहीं। वे चाहेंगे कि मैं उसमें शामिल न होऊँ?"

"और मैं उसमें क्यों जाऊँगी?"

"इसलिये कि जो कुछ मैं करूँगा तुम उसके खिलाफ करोगी।"

"देखिये जनाब! इसी लिये तो मैं कह रही हूँ कि हम यहीं रह जाते हैं। न आप मेरे खिलाफ कुछ कर सकेंगे और न मैं आपके। जब यहाँ कुछ करने को ही नहीं तो मुखालिफत भी नहीं होगी।"

"मगर मुल्क में हलचल होते हुए तुम यहाँ बे हिस्सो–हरकत[1] बैठी नहीं रह सकोगी।"

"रह सकूँगी।"

"तुम नहीं रह सकोगी।"

"तजरबा कर देख लीजिये।"

"मैं जानता हूँ...।"

बातों–बातों में तेजी आ गयी थी और उनके ऊँचे–ऊँचे बोलने की आवाज सुन रत्नलाल अपने कमरे में से निकल आया। वह इनको इस प्रकार झगड़ा करते देख समीप आ बोला, "अम्मी! क्या बात है? वह देखो। पेड़ पर के पक्षी भी पंख फड़फड़ाने लगे हैं।"

रत्नलाल के इस कहने से दोनों चुप कर गये। फिर एकाएक हँसने लगे। शमशाद ने रत्नलाल को अपने समीप एक पत्थर पर बैठने का संकेत कर कह दिया, "मुआफ रखना भाई! यह हमारा किसी मसले पर सोचने का तरीका है। तुम लोग हाथ में कलम पकड़ते हो तो तुम्हारा दिमाग सोचने लगता है और हम ऊँचे–ऊँचे झगड़ा करते हैं तो हमारे दिमाग काम करने लगते हैं।"

इस पर तीनों हँसने लगे। रत्नलाल ने हँसते हुए पूछ लिया, "तो अभी तक किसी नतीजे पर पहुँचे हैं या नहीं?"

उत्तर मुमताज ने दिया, "मैं समझती हूँ कि पहुँच गये हैं।"

"किस नतीजे पर पहुँची हो बेगम!" शमशाद का प्रश्न था।

"यही कि हम कम से कम एक महीना तक यहाँ रहेंगे और अगर तब तक, आप के कहने के मुताबिक, भारत में मुस्लिम लीग न बनी तो एक महीना और

---

1. निश्चल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
रहेंगे। इसी तरह हर महीने के शुरू में देख लिया करेंगे कि मुसलमानों की कोई तन्जीम बनी है या नहीं।''

रत्नलाल ने मुस्कराते हुए पूछ लिया, ''अम्मी! जब बन जायेगी तो क्या करोगी?''

''तब ये और मैं फैसला करेंगे कि उस तनजीम में ये शामिल होंगे या मैं शामिल होऊंगी। एक उसमें शामिल हो जायेगा और दूसरा उसकी मुखालिफत करने लगेगा।''

रत्नलाल और फिर दोनों पति–पत्नी भी हँसने लगे। जब वे जी भर कर हँस चुके तो रत्नलाल ने पूछ लिया, ''पर अम्मी, यह मुस्लिम लीग के साथ ही करोगे या किसी दूसरे संगठन के साथ भी।''

''यह हमारी किस्मत में लिखा है कि हम दोनों दिन भर झगड़ा किया करेंगे और सिर्फ रात को ही सुलह से रह सकेंगे। इसलिये किसी भी मसले पर हम एक राय नहीं हो सकते।''

''पर अम्मी! यहाँ के सब प्राणी, मेरा मतलब है कि पशु–पक्षी भी, सुलह–सफाई से रहते हैं और झगड़ा होते देख उनको दुःख होगा।''

इस पर शमशाद ने कह दिया, ''मेरा भी यही कहना है कि हम यहाँ नहीं रह सकते।''

''और मैं तो यह कह रही हूँ कि हमारे झगड़े का मजमून होगा आगे बनने वाली भारत की मुस्लिम लीग।''

''अच्छा एक बात करो भापा! आप यहाँ दिन भर कुछ काम किया करो। अम्मी के लिये भी काम ढूँढ़ लिया जायेगा। तुम दोनों पृथक्–पृथक् रहोगे तो झगड़ा नहीं होगा। रात के समय तो आप सुलह से रह सकते ही हैं।''

''ठीक है!'' मुमताज ने इस योजना को स्वीकार करते हुए कह दिया, ''रत्न बेटा! इनको कुछ काम बताओ।''

''आओ भापा! स्वामी जी ने आप दोनों के लिये काम बताने को कहा है।''

शमशाद इसमें भी मुमताज की विजय समझता था। इस कारण उठने में हिचकिचाहट अनुभव कर रहा था। रत्न ने शमशाद को बाँह से पकड़ कर उठाया और फिर बातें करता हुआ उसे अपने कमरे की ओर ले गया। अब मुमताज पेड़ के नीचे अकेली बैठी रह गयी। वह मन में विचार कर रही थी कि देश में मुस्लिम लीग बनेगी तो क्या उसके द्वारा मुसलमान फिर भारत में गड़बड़ मचायेंगे? वह उन अत्याचारों का दृश्य स्मरण कर काँप उठी, जो उसने पिछले दो वर्ष में देश–विभाजन के समय देखे थे। उन अत्याचारों को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कराने वालों में वह स्वयं भी थी और उन रोमांचकारी हत्याओं की जिम्मेदारी में अपना भाग स्मरण कर हतप्रभ–सी रह गयी। वह मन ही मन कह रही थी कि नहीं, अब वह इसमें सम्मिलित नहीं होगी।

यहाँ एकान्त में बैठी हुई वह अपने पूर्ण जीवन का अवलोकन करने लगी थी। वह एक जुलाहे की लड़की थी। बम्बई की एक कपड़ा मिल में उसका पिता काम करता था। वह और उसकी बहिन गाँव में माँ के पास रहती थीं। उसकी माँ गाँव में अपनी दो युवा लड़कियों पर पड़ोसी युवकों की दृष्टि पड़ जाने से भयभीत हो गयी थी। वह उन्हें उनसे बचाने के लिये उनको पिता के संरक्षण में बम्बई ले आयी थी। वहाँ एक दिन मजीद और शमशाद का छोटा भाई उनको देखने आये और दोनों बहिनों का निकाह पढ़ा दिया गया।

तब से वह शमशाद के साथ थी। अपनी बहिन रमजान से उसका बचपन से झगड़ा रहता था और शादी के बाद भी झगड़ा ही रहा।

रमजान को मजीद पसंद नहीं था। मगर शादी से पहिले उनकी पसन्द। की बात तो उनसे पूछी नहीं गयी थी। यह तो जब दोनों 'कम्पीला हिल' वाले मकान में रहने लगीं, तो उनको पता चला कि उनके मुताल्लिक दोनों भाइयों ने 'टास' किया था। मुमताज ज्यादा खूबसूरत थी और टास जीतने वाले शमशाद ने उसको चुन लिया था। पीछे रमजान ने कोशिश की थी कि खाविन्द बदल लिये जायें, मगर खाविन्द नहीं माने। जब उनकी अम्मी आयी तो भाइयों में झगड़ा बढ़ गया। पत्नियों में तो पहिले ही बनती नहीं थी। इसके साथ शमशाद और अम्मी सुल्ताना में झगड़ा होने लगा। दोनों भाइयों में बँटवारा हुआ तो वह अपने पति के साथ कलकत्ता चली आयी। यहाँ शमशाद ठेकेदारी करने लगा। यह सरकारी और निजी लोगों के लिये लकड़ी का फर्नीचर बनवाता था।

यहाँ पहुँचते ही एक के बाद दूसरा और फिर तीसरा, रफीक, शबनम और सादिक तीन बच्चे हुए। रफीक और सादिक मुस्लिम लीग के प्रभाव में आ गये और शबनम आजाद ख्याल बनने लगी।

शमशाद सरकारी ठेकेदार होने से सरकार का वफादार हो रहा था। मगर मुमताज उसको कांग्रेस की तरफ खींच रही थी। 1921 के आन्दोलन में तो दोनों कांग्रेस में रहे, परन्तु पीछे बंगाल कौंसिल में मुसलमानों का जोर होने से शमशाद मुस्लिम लीग में चला गया। मुमताज कांग्रेस में काम करती रही। नमक सत्याग्रह में और फिर 1932 में भी वह पकड़ी गई थी, मगर 1936 के चुनावों में उसको कांग्रेस का टिकट देने के स्थान एक चिकने–चुपड़े मुख

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाली शमा को टिकट दे दिया गया। यह शमा ही शमशाद को मौलाना का पी.ए. बनवाने में कामयाब हो गयी।

उसने शमा को पराजित किया और फिर मुस्लिम लीग में चली गयी, परन्तु पीछे 1946–47 की घटनाओं को देखकर वह मुस्लिम लीग से भी उचाट हो गयी। शमशाद न तो कांग्रेस से उचाट हुआ था और न ही मौलाना साहब से। हकीकत यह थी कि शमा भी नयी दिल्ली के संसार में एक ऊँचे दर्जे की अफसर बन घूमा करती थी।

बम्बई में जब वह पागलपन से राजी हुई तो उसकी मौलाना से भेंट हुई थी। और मौलाना साहब ने उसके पति को राय दी थी कि वह इसको छोड़कर दिल्ली चला चले। मगर शमशाद अब अपनी आयु का विचार कर मुमताज को छोड़ना नहीं चाहता था। उसको डर लग रहा था कि कहीं आयु के अंतिम समय में वह अस्पताल में न मर जाये। उसको मुमताज मजबूत लाठी का सहारा मालूम हुई थी। इसलिए भी वह उसको साथ लेकर दिल्ली जाने की जिद करता रहा।

झगड़ा सदानारायण के सामने गया। वह अभी तक साधना आश्रम में इतिहास पर अन्वेषण कार्य कर रहा था। उसने अपना निर्णय बता दिया कि शमशाद तो दिल्ली चला जाये और अम्मी बम्बई में ही रह जाये। शमशाद को यह निर्णय पसन्द नहीं आया। वह मुमताज को लेकर दिल्ली की तैयारी करने लगा तो मुमताज उसको स्वामी जी के पास ले आयी।

बम्बई से चलते समय तो यही बात हुई थी कि स्वामी जी से मिल कर दिल्ली जायेंगे, परन्तु ज्यों–ज्यों हरिद्वार समीप आता गया, मुमताज ने यह कहना आरम्भ कर दिया कि भापा से राय भी करेंगे कि दिल्ली की आबोहवा उनके अनुकूल रहेगी अथवा नहीं।

यह बात तो आश्रम में आकर ही हुई थी कि आश्रम में ही रहा जाए। यद्यपि शमशाद मुमताज के बिना रहना कठिन समझता था, परन्तु दिल्ली का आकर्षण भी साधारण नहीं था। यही दोनों में झगड़े का कारण था।

मुमताज अभी अपने पूर्ण जीवन के कार्य और उस कार्य के कारणों पर अवलोकन ही कर रही थी कि लक्ष्मी अपने कमरे में से निकली और अपने सबसे छोटे बच्चे विष्णु को साथ लेकर आ गयी। वह मुमताज के सामने बैठ पूछने लगी, "यह पंडित जी तो बहुत ऊँचे–ऊँचे बोलते हैं?"

"कौन पडित जी?"

"आपके घर वाले।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"ओह! इनकी बात कर रही हो!" मुमताज को स्मरण हो आया कि वे वहाँ आने के समय हिन्दू पोशाक में आये थे। यह मुमताज का ही सुझाव था। मुमताज ने सुन रखा था कि मुसलमानों के इक्के–दुक्के कत्ल अभी भी उत्तरी भारत में होते रहते हैं। वह इसको उस पूर्ण काण्ड का जो 16 अगस्त, 1946 से आरम्भ हुआ था, स्वाभाविक परिणाम ही समझती थी, परन्तु इस परिणाम का शिकार होने से बचने के लिए उसने अपने पति को पंडितों की सी पोशाक पहिनवा दी थी और स्वयं ब्राह्मण औरतों की भाँति मस्तक पर बिन्दी और माँग में सिन्दूर भर साथ हो ली थी। अब लक्ष्मी के कहने पर उसको यह बहरूपियापन स्मरण हो आया। उसने आश्रम में अपने को निर्भय समझ कह दिया, "हम ब्राह्मण नहीं हैं। यह पोशाक तो स्वामी जी की संगत का फल है।"

लक्ष्मी ने मुस्कराते हुए पूछा, "तो आप कौन जात हैं?"

"मेरे पति कुरैशी हैं।"

"वे क्या होते हैं? खत्री हैं क्या?"

"कुरैशी हजरत मुहम्मद साहब की संतान की जाति है।"

"मुहम्मद साहब?" अब लक्ष्मी मुमताज को विस्मय से देखने लगी।

मुमताज को समझ आया कि उसने बता कर भूल की है। इस पर बात बनाने के लिए वह पूछने लगी, "क्यों? क्या देख रही हो मेरे मुख पर?"

"देख रही हूँ कि इतने बड़े आदमी की सन्तान भी हम साधारण लोगों जैसी ही है।"

"नहीं। इसमें हैरान होने की बात नहीं। इनसान तो दुनिया में सब एक जैसे ही होते हैं।"

"नहीं, हम एक जैसे नहीं हैं। हमारी जाति, मेरा मतलब है मानवों में तो घटिया से घटिया जन्तु के स्वभाव से लेकर देवताओं के स्वभाव तक वाले प्राणी मिलते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि परमात्मा ने मनुष्य में ही अपनी पूर्ण दृष्टि के नमूने घड़ दिए हैं।"

मुमताज समझी कि यह बात स्वामी जी ने ही बताई प्रतीत होती है। इस पर भी उसने अपनी बात को स्पष्ट करने के लिए कह दिया, "पर मैं तो शरीर की बात कह रही थी। तुम तो मेरा शरीर ही देख रही थीं न?"

"नहीं! मैं शरीर के अतिरिक्त कुछ और देख रही थी और उस पर ही विस्मय कर रही थी।"

"शरीर के अलावा तुम्हें क्या दिखाई देता है?"

"आपका अन्तःकरण।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"वह क्या होता है?"

"अन्तःकरण मन, बुद्धि और आत्मा का संयोग है। आत्मा तो निर्मल कांच की भाँति होती है और यदि इस पर मन और बुद्धि का रंग चढ़ा हुआ न हो तो यह पारदर्शक होने से सुगमता से देखी भी नहीं जा सकती। वास्तव में यह मन और बुद्धि का आत्मा पर रंग ही दिखाई देता है। जैसे हवा बर्तन के आकार की हो जाती है वैसे ही मन और बुद्धि आत्मा को रूप–रंग देते हैं।"

मुमताज ने मुस्कराते हुए पूछ लिया, "और एक कुरैशी की बीवी के अन्तःकरण का क्या रूप और रंग दिखाई दिया है?"

"कुछ देखा है जिसको समझा भी है, परन्तु उसके वर्णन करने के लिए शब्द नहीं मिल रहे। बात यह है कि मुझे स्वामी जी से पढ़ते हुए अभी कुछ ही महीने हुए हैं। इस कारण मैं अपने देखे का वर्णन नहीं कर सकती।"

मुमताज के लिए यह सब एक सर्वथा नवीन भाषा थी। स्वयं इस विषय पर कुछ भी अधिकार न रखने के कारण उसने बात बदल दी। उसने पूछ लिया, "तुम्हारा क्या नाम है बेटी?"

"मुझे लक्ष्मी कहते हैं। मुझे आश्रम में आये छः मास ही हुए हैं। मेरा घरवाला रसोई बनाता है और आश्रम की सफाई करता है। मैं खाना खिलाती हूँ और कपड़े धोती हूँ। हमसे पहिले यहाँ बहिन भगवती और उसका घरवाला रहते थे। भगवती और उसका घरवाला मेहमानों की सेवा और बगिया तथा फुलवारी की देखभाल का काम करते हैं।"

"तो यहाँ और मेहमान भी आते हैं?"

"एक तो सायंकाल स्वामी जी कथा करते हैं। उस समय आस–पास के दस–बीस लोग एक घंटा भर के लिए आते हैं। उनमें से कभी कोई यहाँ रह भी जाते हैं। वैसे दूर–दूर नगरों से भी लोग आते रहते हैं।"

"यहाँ खाने–पीने का सामान कहाँ से आता है?"

"देवप्रयाग से और वहाँ पर ऋषिकेश से। वह टट्टुओं पर अथवा बकरियों पर लाद कर लाया जाता है। अब यहाँ तक मोटर की सड़क बन गयी है और कभी–कभी मोटर ट्रक पर भी सामान आ जाता है। साग–भाजी तो हम यहीं पैदा कर लेते हैं। दो–तीन गऊएँ सदा दूध देती हैं और उनसे भी खाने–पीने में रस बना रहता है।"

"तुमको क्या वेतन मिलता है?"

"भोजन, वस्त्र और पति–पत्नी दोनों को पचास रुपया प्रति–मास।"

"यह बच्चा तुम्हारा है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हाँ। यह विष्णु है। इस समय तीसरे वर्ष में जा रहा है। इससे बड़ी एक लड़की है। नाम है पार्वती। इस समय छः वर्ष की है और उससे बड़ा एक लड़का साधु है। साधु और पार्वती महात्मा रत्न जी से पढ़ते हैं।"

मुमताज ने अपने और शमशाद के विषय में कह दिया, "हम अब कुछ दिन के लिए तो आपके मेहमान रहेंगे।"

"बस! कुछ दिन के लिए ही? मुझे तो ऐसा प्रतीत होता है कि आप यहाँ अपने अंतकाल तक रहेंगी।"

"तो मेरी कब्र के लिए यहाँ जगह निश्चय कर रखी है?"

"वह तो परमात्मा ने बनाई है। हम सब तो उसकी इच्छा के अनुसार ही काम करते हैं।"

"तो तुम्हारे परमात्मा ने यह तुमको बताया है?"

"यह बात स्वामी जी ने अभी–अभी बताई है कि आपके घर वाले तो यहाँ से चले जाएँगे, परन्तु आप यहीं रहेंगी।"

मुमताज स्वामी जी के भविष्य ज्ञान के विषय में जानती थी। स्वामी जी ने शबनम को कहा था कि उसके लड़का होगा और वह हो गया। वह लड़का जवाहरलाल से न हो कर किसी अन्य से हुआ था। अब अपने विषय में यह भविष्यवाणी सुन वह गम्भीर विचार में पड़ गई थी। उसने पूछ लिया, "क्या स्वामी जी ने यह भी कहा है कि मैं कब तक जियूंगी?"

"यह आप स्वयं पूछ लीजिएगा। कथा के उपरान्त सायंकाल हम आश्रम के लोग तथा वे जो रातभर के लिए यहाँ रह जाते हैं, उनसे बातचीत किया करते हैं और वे अपने अनुभव की बातें बताया करते हैं।"

"स्वामी जी ने मेरे विषय में और क्या कहा है?"

"कुछ विशेष नहीं। मैं उनके लिए धुले वस्त्र लेकर गयी थी तो वे कहने लगे, "लक्ष्मी! इस आश्रम में तुम्हारी एक साथिन रहने के लिये आयी है। रत्न इत्यादि उसको अम्मी कहते हैं।"

"मैंने पूछा, ये कब तक रहेंगी?"

"स्वामी जी ने कहा कि अपने जीवन के अन्त तक। इसके पति इसको छोड़ जायेंगे।"

"सच?" मुमताज ने विस्मय प्रकट करते हुए पूछ लिया।

"यह स्वामी जी ने कहा है।"

"मैं इस विषय में उनसे पूछना चाहती हूँ।"

"सायंकाल के समय पूछ सकती हैं। अभी तो मैं आयी थी जिससे आपके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
उदास चित्त को कुछ प्रफुल्लित करूँ।''

"तो यह भी स्वामी जी ने कहा है?''

"जी! उन्होंने कहा था कि आप भटक रही हैं, इस कारण मैं आपका दिल बहलाने का यत्न करूँ।''

"अच्छा! तो भला कैसे मेरा दिल बहलाओगी?''

"आप से एक अनादि, अनन्त और निरन्तर आश्चर्य में डालने वाले विषय पर बातें करके।''

"और वह क्या विषय है?''

"वह है कि मनुष्य और इतर प्राणी इस भूमण्डल पर कहाँ से और कैसे आ गये?''

"इस पर बातचीत करने से क्या फायदा होगा?''

"यदि इन बातों का ठीक ज्ञान हो जाये तो जहाँ हमें जाना है, वहाँ का भी ज्ञान हम पा जायेंगे।''

"कहाँ जाना है?''

"सब एक स्थान पर नहीं जा रहे। असल बात यह है कि हम सब एक स्थान पर जा भी नहीं सकते।''

"तो बहुत से स्थान हैं जहाँ जाया जा सकता है?''

"जी! विद्वानों का कहना है कि सात लोक हैं।''

"कहाँ–कहाँ हैं?''

"यहाँ पर भी हैं और अन्तरिक्ष में भी तथा नक्षत्रों पर भी हैं।''

"यहाँ की बात बताओ लक्ष्मी! वे सात लोक कौन–कौन से हैं?''

"एक लोक तो शरीरियों अर्थात् हाड़–चाम के जिस्मों में रहने वालों का है। इसको प्राणी लोक कहते हैं। ये पृथिवी के वायुमण्डल में ही रह सकते हैं।

"देवलोक यहाँ भी है और अन्य स्थानों पर भी हैं। परन्तु देवलोक में शरीर ऐसे नहीं होते जैसे हमारे होते हैं और जिनके लिये हवा–पानी, फल–फूल, मूल–कन्द, अनाज इत्यादि की आवश्यकता हो। इनको हम देख, सुन, सूँघ, चख अथवा स्पर्श नहीं कर सकते।

"पितृलोक है। इसमें शरीर तो नहीं रहता, परन्तु शरीर पाने की वासना रहती है। प्रायः प्राणी मर कर इसी लोक में जाते हैं। तदनन्तर अपनी–अपनी वासना के अनुसार पुनः प्राणीलोक में जन्म लेते हैं। प्राणीलोक से इनमें भिन्नता यह है कि इनका शरीर नहीं होता परन्तु शरीर के कार्य वासनाओं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से होते रहते हैं। अतः ये जीव वासनाओं से बँधे हुए होने के कारण इस पृथ्वी से दूर नहीं जा सकते।''

मुमताज के लिये यह सब नयी बात थी। उसने उकता कर कह दिया, 'लक्ष्मी! ये सब बातें न–काबिले यकीन हैं। अक्ल इनको मान नहीं सकती, और जो अक्ल को कबूल नहीं, वह मानना ठीक नहीं।''

''पर अम्मी! अक्ल तो सबकी बराबर नहीं होती। इस कारण सब की अक्ल बराबर–बराबर देख जान नहीं सकती। अक्ल दूरबीन की भाँति का यन्त्र है। बढ़िया दूरबीन से तो चाँद और सितारों की गति देखी जा सकती है, और घटिया दूरबीन आधे मील की वस्तु भी नहीं देख सकती।''

''तो चाँद–तारों पर देखने वाली दूरबीन किसके पास है?''

''चाँद–तारों से मेरा मतलब लोक–परलोक देखने से था। पृथ्वी का चाँद और सूर्य से फासला लम्बाई में है। लोक–परलोक का प्राणीलोक से फासला तीसरी विमिति[1] में है। इसको गहराई की विमिति कहना चाहिए।''

मुमताज भौचक्की हो लक्ष्मी का मुख देखती रह गयी। उसके मुख से लक्ष्मी ने समझा कि अम्मी कुछ नहीं समझी। इस कारण उसने कह दिया, ''देखो अम्मी! एक तालाब है। इस तालाब की लम्बाई–चौड़ाई तो होती है। परन्तु एक इसकी गहराई भी होती है। इसको अंग्रेजी में ''थर्ड डाइमेन्शन'' कहते हैं। पितृलोक और देवलोक यहाँ से वैसे ही दूर नहीं, जैसे तालाब की भिन्न–भिन्न गहराइयों पर पड़ी वस्तुएँ लम्बाई–चौड़ाई के विचार से एक ही स्थान पर होती हैं।

''पितृलोक और देवलोक यहीं हैं, परन्तु उनको देखने के लिए इस तीसरी विमिति में देखने वाली दूरबीन चाहिए।''

मुमताज ने यह कह दिया, ''इतना तो मैं समझ गयी हूँ, परन्तु मैं वह दूरबीन प्राप्त करना चाहती हूँ जिससे मैं इस विमिति में दूर तक देख सकूँ।''

''यह तुम स्वामी जी से पूछ लेना। वे कहा करते हैं कि प्रत्येक मनुष्य की अक्ल इस प्रकार देखने की शक्ति प्राप्त कर सकती है। इसका परिमार्जित करना पड़ता है। इसमें समय लगता है।''

---

1. Dimension

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: 3 :

मुमताज, शमशाद, रत्न, नारायण, कल्याण, उनकी पत्नियाँ और कल्याण के बच्चे रात्रि का भोजन ले रहे थे। इस समम स्वामी जी कथा करने के उपरान्त इनके साथ बैठकर दूध पीते थे। कभी कोई कथा सुनने के लिये आया व्यक्ति रात को आश्रम में ही रहने का विचार रखता–तो वह भी उनके साथ ही भोजन इत्यादि लेता था।

आज कथा में बीस के लगभग बाहरी लोग थे। प्रायः देवप्रयाग के आस–पास रहने वाले साधु–संन्यासी ही यहाँ आया करते थे। इस दिन इनमें से कोई भी वहाँ ठहरा नहीं था। सब चले गये थे।

आश्रमवासी सब शमशाद और मुमताज के विषय में जानने के लिये उत्सुक थे। स्वामीजी ने शमशाद का केवल इतना परिचय दे दिया, "मियाँ शमशाद कुरैशी रत्नलाल के बड़े भाई जवाहरलाल का सहपाठी, मित्र और श्वसुर है। मेरा इससे परिचय उस समय से है जब यह कभी जवाहलाल के साथ कालेज में पढ़ता था। इसको आज छियालीस वर्ष हो चुके हैं।"

मुमताज के मस्तिष्क में स्वामीजी की भविष्यवाणी चक्कर काट रही थी कि उसका पति छोड़ कर चला जायेगा। इस कारण औपचारिक परिचय के उपरान्त उसने ही पूछा, "महाराज! लक्ष्मी कह रही थी कि शबनम के वालिद मुझको छोड़ कर चले जाएँगे। यह आपने हमसे हँसी की है क्या?"

"बेटी मुमताज। यह हँसी का विषय नहीं। यह दुःखद् वस्तु–स्थिति है।"

दुःखद् का शब्द सुन कर मुमताज का मुख उतर गया। वह समझी कि स्वामीजी उसके पति की मृत्यु की बात कह रहे हैं। इस पर उसने धीमी आवाज में पूछ लिया, "तो क्या मुझको एक बेवा की जिन्दगी बसर करनी पड़ेगी?"

"वह भी कुछ काल के लिये बँधी ही है। शमशाद तुमसे अठारह वर्ष के लगभग बड़ा है। इसके अतिरिक्त यह दुर्बलात्मा है और इसका आत्मा मानव शरीर में चिरकाल तक रह नहीं सकेगा। परन्तु मैं तो इसके आश्रम से जाने की बात कह रहा हूँ। यह पाकिस्तान में अपनी देह छोड़ेगा और तुम यहाँ रत्न की अम्मी बन इस आश्रम में रहती हुई प्राण त्याग करोगी।"

शमशाद स्वामीजी के कथन को कड़वे घूँट की भाँति ग्रहण कर रहा था। स्वामीजी का कथन समाप्त होते ही वह पूछने लगा, "परन्तु भापा! यह आपकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पेशीन–गोई है या मेरी पहिली बीवी नासिरा की तरह मुमताज को भी मेरे खिलाफ करने की साजिश है।''

स्वामी गरीबदास मुस्कराते हुए कहने लगे, ''यदि साजिश होती तो लुकाव–छिपाव से होती। शमशाद, यह मैं सब कुछ ऐसे देख रहा हूँ जैसे तुम मेरे सामने बैठे हो।

''देखो शमशाद, मैंने यह कहा है। अब तुम यह बात जान कर मुझको गलत सिद्ध कर सकते हो। तुम इसको छोड़ कर मत जाना। कर सको तो करो। मुझको तुम दोनों को यहाँ रख बहुत खुशी होगी।''

''मैं तो यह चाहूँगा कि इसको यहाँ रखने के स्थान दिल्ली ले जाऊँ और आपके इस तरह के जहरीले ख्यालात से इसको बचा लूँ।''

''पर ये ख्यालात जहरीले हैं क्या?'' मुमताज ने अपने पति से पूछ लिया।

''बिलकुल!''

''मैं इनकी परीक्षा करना चाहती हूँ।''

''मैंने कर ली है और मैं तुमको मार्ग में चलते हुए बताऊँगा। चलो उठो, यहाँ से...।''

वह कुछ आगे कह नहीं सका। उसको क्रोध चढ़ आया था। वह उठ खड़ा हुआ, परन्तु मुमताज बैठी रही। उसने कह दिया, ''आप बैठिये तो। मैंने अभी बहुत कुछ इनसे पूछना है।''

''क्या पूछना है?''

''आप बैठ जायें तो पूछ सकूँगी।''

शमशाद बैठ तो गया, परन्तु अभी भी क्रोध से उसके नथुने फूले हुए थे। मुमताज ने पहिले अपने पति से ही कहा, ''यदि आप चलना ही चाहते हैं तो कल चलेंगे। इस वक्त देवप्रयाग में रहना पड़ेगा। क्योंकि नीचे जाने के लिये सवारी मिलनी मुश्किल है।''

''और रात को तुम फिर मुझसे सुलह कर लोगी।''

''और इस समय मेरी आपसे लड़ाई है क्या?''

''वह तो दिन के वक्त हमेशा रहती है।''

सब हँसने लगे। इस हँसने से शमशाद की भी हँसी निकल गयी और झगड़ा होते–होते टल गया।

रत्न ने कह दिया, ''भैया! आपके लिये तो सदा रात–ही–रात रहे तो ठीक है। अम्मी से झगड़े का मौका ही नहीं रहेगा।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुमताज ने बात बदल कर कहा, "महाराज! लक्ष्मी कह रही थी कि सात लोक हैं। उनमें से प्राणी–लोक और पितृ–लोक तो सिर्फ इस कुर्रा हवाई[1] में ही हैं और शेष पाँच लोक इसके बाहर और भीतर भी हैं।"

"हाँ! तो फिर?"

"मैं उनको देखना चाहती हूँ।"

"इसके लिये अपने अन्तःकरण को निर्मल कर लो। अन्तःकरण में मन और बुद्धि आत्मा को गँदला करते रहते हैं। इनको निर्मल करने से आत्मा देखने लगती है और वह परमात्मा की श्रेणी का पदार्थ होने से बहुत दूर तक देख सकती है।"

"ये मन और बुद्धि कहाँ हैं और इनको किस प्रकार निर्मल किया जा सकती है?"

"ये प्रत्येक मनुष्य के भीतर हैं। मन शुद्ध होता है, सत्संग, हरि–कथा, कीर्तन और चिन्तन से। बुद्धि शुद्ध होती सत्य ज्ञान से।

"सत्संग तो यहाँ प्राप्त हो सकता है। यह आश्रम है, जहाँ प्रायः भले लोग आते रहते हैं और विचार–विनिमय करते रहते हैं। यहाँ आने वाले साधु–सन्त महात्माओं में से कुछ तो मुझसे भी अधिक शुद्ध संस्कारों वाले होते हैं। उनकी संगत भी प्राप्त होती रहती है। हरिकथा यहाँ नित्य ही होती है। चिन्तन के लिये भी यहाँ बहुत एकान्त है। मैं तुमको मार्ग दिखाऊँगा और फिर तुम चिन्तन के मार्ग पर चल पड़ोगी।

"जहाँ तक सत्य ज्ञान का सम्बन्ध है, रत्नजी ने एक अच्छा–खासा पुस्तकालय स्थापित कर रखा है। उससे लाभ उठा सकोगी। इसके अतिरिक्त रत्नजी प्रातःकाल भगवद्गीता पढ़ाते हैं। यहाँ कुछ लोग पढ़ने आते भी हैं। उसके पढ़ने से इस दिशा में भी बहुत दूर तक जा सकोगी।"

शमशाद यह सुन मन–ही–मन कुढ़ रहा था। वह समझ रहा था कि स्वामीजी उसकी पत्नी के मार्ग में प्रलोभन बिखेर रहे हैं। स्वामीजी के कथन में बल होता था और इस कारण वह मन–ही–मन क्षुब्ध हो रहा था। अब स्वामीजी के कथन को निस्सार प्रकट करने के लिये उसने पूछ लिया, "परन्तु भापा! क्या ऐटम बम का ज्ञान भी गीता में है?"

"है तो। उसमें यह तो लिखा मिल जायेगा कि ऐटम बम क्या है और कहाँ

---

1. वायु–मण्डल।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से बनता है? हाँ कैसे बनता है और इसको कैसे प्रयोग किया जाता है, उसमें नहीं लिखा।"

"क्यों नहीं लिखा? कैसे पता चले कि गीता के लिखने वाले को इसका ज्ञान भी था अथवा नहीं?"

स्वामीजी ने मुस्कराते हुए कहा, "ज्ञान तो था। तभी तो गीता के रचयिता महर्षि व्यास ने इसका उल्लेख किया है। हाँ इसके बनाने तथा इसके प्रयोग का ढंग नहीं लिखा। कारण यह कि महाभारत और गीता पार्थिव[1] विज्ञान की पुस्तकें नहीं हैं।"

"परन्तु इसमें ऐटम बम का नाम भी है क्या?"

"हाँ, ब्रह्मास्त्र और उसी के एक–दूसरे रूप सुदर्शन चक्र का उल्लेख तो आया है। ऐटम बम शब्द तो वहाँ है नहीं। कारण यह कि यह अंग्रेजी भाषा का शब्द है। अतः संस्कृत भाषा की पुस्तकों में हो ही नहीं सकता।"

"इनके बारे में क्या लिखा है?" शमशाद का अगला प्रश्न था।

स्वामीजी ने कहा, "व्यासजी ने सुदर्शन चक्र के विषय में इस प्रकार लिखा है–

[2]ततोऽम्बराच्चिन्तितमात्रमागतं
महाप्रभं चक्रममित्रतापनम्।
विभावसोस्तुल्यमकुण्ठमण्डलं
सुदर्शनं संयति भीमदर्शनम्।।
तदागतं ज्वलितहुताशनप्रभं
भयंकरं करिकरबाहुरच्युतः।
मुमोच वै प्रबलवदुग्रवेगवान्
महाप्रभं परनगरावदारणम्।।

"भगवान् विष्णु के विचार करने पर कि सुदर्शन–चक्र की आवश्यकता पड़ेगी, यह लाया गया। यह चक्र सूर्य के समान जाज्वल्यमान था। वह मण्डलाकार चक्र था। अति गतिशील था। नाम से सुदर्शन परन्तु वह काम से शत्रु के लिये अति भय का रूप था। इस चक्र में शत्रुओं के बड़े–बड़े नगरों को एकदम विध्वंस करने की शक्ति थी।"

"परन्तु यह कैसे चलाया गया? और फिर इसके चलाने पर क्या प्रभाव हुआ?"

---

1. Physics,
2. महा भा. आदि. 19–21, 22।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह तो नहीं लिखा कि यह कैसे बनाया गया था और किस प्रकार चलाया गया था। इतना लिखा है कि–

[1]तदन्तकज्वलनसमानवर्चसं
पुनः पुनर्न्यपतत वेगवत्तदा।

"अर्थ यह है कि प्रलय की अग्नि के समान वह ज्वलन्त हो उठा और बार–बार असुरों पर आक्रमण करने लगा।

"असुरों ने भी अपने विमानों पर चढ़ कर पत्थर, मिट्टी और पर्वतों के पर्वत जलती अग्नि पर डाल कर उसे बुझाने का यत्न किया, परन्तु सुदर्शन चक्र में से इतना ताप निकल रहा था कि–

[2]महाद्रयः परिगलिताग्रसानवः
परस्परं द्रुतमभिहत्य सस्वनाः।।

उस महान् अग्नि में वे शिलाखण्ड गल कर बह गये।"

"पर भापा!" शमशाद ने इससे सन्तुष्ट न होते हुए कहा, "यह सब ख्याली पुलाओ भी तो हो सकता है।"

"हो सकता है। इस पर भी यह ऐसी कल्पना है जो आज सत्य ही प्रतीत हो रही है।"

"लेकिन हमारे प्रधानमन्त्री ऐटम बम बनाने की ताकत को तो पैदा करना चाहेंगे, परन्तु उसका इस्तेमाल करना पसन्द नहीं करेंगे।"

"यदि यह कर सकें तो बहुत अच्छा है। ये बनाने चाहिए। जहाँ तक इनके प्रयोग का प्रश्न है, यह रखने वाला तब ही करता है जब दुष्ट लोग इसका प्रयोग करने पर विवश कर देते हैं। उस अवस्था में तो इसके प्रयोग में न कोई आपत्ति होगी, न ही किसी प्रकार का पाप होगा।"

अल्पाहार समाप्त हुए चिरकाल हो चुका था और सायंकाल का अँधेरा होने लगा था। स्वामीजी उठे तो अन्य लोग भी उठ खड़े हुए। स्वामी जी ने अपनी कुटिया में जाने से पूर्व कह दिया, "शमशाद, कल जाने से पूर्व मिल कर जाना।"

शमशाद अपने क्रोध में उठ कर जाने की बात को स्मरण कर हँस पड़ा।

---

1. महा भा. आदि. 19–23।
2. वही, 19–26।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसने कहा, "भापा! कल प्रातःकाल विचार कर बताऊँगा कि कब जाना होगा?"

इस पर तो सब हँसने लगे। मुमताज ने कह दिया, "मैं रात को इनका चित्त शान्त करने का यत्न करूँगी।"

स्वामीजी मुस्कराते हुए कुटिया के भीतर चले गये।

: 4 :

रात को पति–पत्नी में बहुत लम्बा और गम्भीर वार्तालाप हुआ। बात मुमताज ने चलायी। उसने कह दिया, "मेरा यहाँ से जाने को चित्त नहीं करता।"

"क्यों? यहाँ क्या है?"

"जहाँ लक्ष्मी जैसी कम पढ़ी–लिखी लड़की छः मास में इतना कुछ जान और समझ गयी है, वहाँ मेरे जैसी पढ़ी–लिखी और अनुभव प्राप्त औरत क्या नहीं समझ सकती, ख्याल कर सकते हैं! स्वामीजी के कलकत्ता में दर्शन हुए थे और इन्होंने जो पेशीनगोई की थी वह बिलकुल ठीक उतरी थी। इन्होंने शबनम के लड़का होने की बात की थी। वह हो गया। इन्होंने मेरे मुताल्लिक कहा था कि जब यहाँ स्वराज होगा, पाकिस्तान बनेगा तब मैं अपना बुर्का फाड़ कर फेंक दूँगी। यह बिलकुल ठीक ही हुआ है। मैंने न सिर्फ बुर्का फाड़ डाला है, बल्कि माथे पर हिन्दुआना बिन्दी और माँग में सिन्दूर भी भर लिया है।

"बताइये! कितनी दूरन्देशी और दूरबीनी है स्वामीजी में! और इन्होंने कहा है कि आप पाकिस्तान में जाकर रहेंगे और वहाँ ही आपका यह जिस्म छूटेगा। मैं तो पाकिस्तान में जाना चाहती नहीं।"

"न सही। पर तुम मेरे साथ हिन्दुस्तान में तो रह सकती हो।"

"और यह आश्रम हिन्दुस्तान में नहीं है क्या?"

"हिन्दुस्तान में तो है मगर हिन्दुस्तान तो बहुत बड़ा है।"

"सारा देखा–भाला है। उससे उकता कर ही तो इस तनहाई में आकर रहना चाहती हूँ।"

"मुझको तनहाई पसन्द नहीं। मुझको डर लग रहा है कि यहाँ रहते हुए तुम्हारा और मेरा साथ छूटेगा।"

"वह तो बकौल स्वामीजी के छूटने ही वाला है।"

"स्वामीजी, स्वामीजी, स्वामीजी, मैं यह सुनता–सुनता उकता गया हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो ऐसा करिये। आप चले जाइये। शमा भी तो आपके लिये बेताब हो रही है। मुझको छोड़िये और जाइये।"

"यह क्या हो गया है मुमताज! अब तुम रात के वक्त भी लड़ने लगी हो।"

"आप मानते जो नहीं। पहिले रात के समय मेरी बात मान जाया करते थे। आज मानते ही नहीं।"

"तुम भी तो मेरी बात मान जाया करती थीं।"

"वह तो आज भी मान रही हूँ। मैं आपकी बीवी बन कर ही यहाँ रहूँगी।"

"मैं चला जाऊँगा तब भी?"

"हाँ, तब भी! मगर आप जाएँगे ही क्यों? अपनी वफादार बीवी को छोड़ कर क्यों जाएँगे?"

"मैं जरा स्वराज के जमाने की लहरें लेना चाहता हूँ।"

"तो फिर जाइये। कितने दिन में लौट आयेंगे?"

"यह तो वहाँ जाकर ही बता सकूँगा।"

"तो कब जा रहे हैं?"

"कल ही।"

"जाइये।"

"तो जाऊँ?"

"हाँ! मैं आपको उसी तरह जाने के लिये कह रही हूँ जैसे अंग्रेजी राज्य में मौलाना के साथ जाकर रहने के लिये कहा करती थी।"

"तब मेरा उनके साथ जा कर रहने का एक मकसद था।"

"यही न कि शमा वैसा चाहती थी।"

शमशाद कुछ विचार कर बोला, "हाँ बेगम! एक हद तक यह बात ठीक है। उसने ही मुझे यह बात सुझाई थी। और इस्लाम की भलाई के लिए मेरा मौलाना साहब के साथ रहना ठीक भी था।"

"भला आपने क्या भलाई की थी उस समय इस्लाम की, उनके साथ रह कर?"

"जब मौलाना साहब कांग्रेस के सदर बनाये गये तो यह मुनासिब समझा गया कि कोई काबिल, पढ़ा लिखा, मगर कट्टर मुसलमान उनका पी.ए. बने। शमा मौलाना साहब से बहुत हेल–मेल रखती थी और मुस्लिम–लीग ने उसकी मार्फत ही मेरा नाम आगे कर दिया। वह मेरी महबूबा थी। इसलिए उसने मुझे ही उनके पास रखा दिया। मैं मौलाना साहब से कुछ भी तनख्वाह नहीं लेता था। मैं उनको कहा करता था कि मुझे तनख्वाह की जरूरत नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। हकीकत यह थी कि मुझको एक गैबी सिम्मत से वजीफा मिलता था।"

"कहाँ से?"

"मुझको तो शमा ही हर तीसरे महीने दो हजार रुपया दे देती थी और मैं शाह–आना जिन्दगी बसर करता था।"

"यह जरूर निजाम साहब की तरफ से होगा।"

"हो सकता है!"

मुमताज ने कह दिया, "मुझे मालूम है कि मौलाना साहब को भी उन्हीं की तरफ से सालाना इमदाद मिला करती थी।"

"सच?"

"हाँ, और एक बार मुझको कहा गया था कि मैं 'वॉयस ऑफ इंडिया' को भी रिश्वत पेश करूँ। मैं रत्न जी के पास यह पेशकश ले कर गयी थी और रत्न जी ने उसमें से एक पाई भी लेने से इनकार कर दिया था।"

"कितनी रकम लेकर गई थीं?"

"पाँच करोड़ रुपये का लंदन बैंक का चैक था।"

"और क्या काम करना था रत्न ने?"

"वे कांग्रेस के खिलाफ तो लिखते ही थे। मगर यह कहा गया था कि वे मुस्लिम–लीग का नजरिया भी अपने अखबार में पेश किया करें।

"उन दिनों जनाब सावरकर साहब ने यह कबूल किया था कि हिन्दू और मुसलमान दो कौमें इस मुल्क में रहती हैं। इससे जिन्ना साहब के दिमाग में यह ख्याल पैदा हुआ था कि रत्न जी भी हिन्दू ख्याल रखते हैं तो वे भी यही मानते होंगे। इस बात पर जोर देने से मुसलमानों के लिए पाकिस्तान की तजवीज को तकबीयत[1] मिलती थी। मगर रत्न जी ने मुसलमानों के हाथ में बिकना मंजूर नहीं किया। उनका कहना था कि ये दो फिरके जरूर हैं। इनमें मजहबी और मजलिसी असूलों में इख्तलाफ भी है। मगर सियासी तौर पर तो सब हिन्दुस्तानी हैं और बराबर का हिन्दुस्तानी बन कर सबको रहना होगा। जो नहीं रहेगा उसके लिये तीन रास्ते हैं। एक तो मुल्क छोड़ा जाना, दूसरा जेलखाना और तीसरा तहेतेग हो जाना।"

"बहुत खतरनाक आदमी है यह रत्न। मैं तो इसको एक शरीफ इनसान मानता था।"

---

1. समर्थन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"शरीफ तो है। मगर इसकी शराफत मौलाना साहब की शराफत से मुस्तलिफ किस्म की है।"

एकाएक शमशाद ने कह दिया, "मैं तो दिल्ली जा रहा हूँ।"

"तो क्या अब भी वजीफा मिलेगा?"

"क्यों नहीं मिलेगा?"

"तो यह बात है!"

"देखो बेगम! अब हालत पतली हो चुकी है। सादिक तो इस समय कराची में हैं। और वह बूढ़े बाप की कुछ भी मदद नहीं कर सकता। रफीक को तो तुम जानती हो, सत्रह अगस्त 1946 को मारा गया था। कारोबार जो कुछ था, वह तुम्हारी बीमारी की वजह से तबाह हो गया है। खाने–पीने को कुछ तो चाहिए।"

अगले दिन शमशाद स्वामी जी से मिलने गया। उसने खद्दर का चूड़ीदार पायजामा, अचकन और गांधी टोपी पहिनी हुई थी। हाथ में एक चमड़े का ब्रीफकेस लिए था। देखने पर मालूम होता था, कोई बहुत बड़ा कांग्रेसी नेता है। उसने स्वामी जी की कुटिया के बाहर पहुँच आवाज दे दी, "भापा जी! मैं जा रहा हूँ।"

भीतर से आवाज आयी, "भीतर आ जाओ। बाहर खड़े क्या शोर मचा रहे हो?"

शमशाद कुटिया में गया तो स्वामी जी अकेले बैठे थे। जब शमशाद बैठ गया तो स्वामी जी ने कहा, "अभी प्रातः का अल्पाहार तैयार हो रहा है। वह ले कर जाना।"

"सुना है बस देवप्रयाग से साढ़े दस बजे आती है। सो वहाँ पर पहुँच कर कुछ खा–पी लूँगा।"

"देखो! मैं कल्याण को भेज देता हूँ। वह तुम्हारे और मुमताज के लिये टिकट खरीद तुम्हारा सामान उसमें रखवा देगा और तुम्हारी वहाँ प्रतीक्षा करेगा।"

"मगर भापा! मुमताज तो नहीं जा रही।"

"तो उसको भी ले जाओ न?"

"आप हुक्म देंगे तो वह चली जायेगी। मेरे कहने से तो तैयार नहीं हुई।"

"पर मैं उसको आज्ञा नहीं दे सकता। मैं समझता हूँ कि रात तुमने उससे मुहब्बत जाहिर नहीं की, जो वह तुम्हारे कशिश में नहीं आई।"

"बहुत की है भापा! मगर इस आश्रम में रहते हुए आपकी कशिश मेरी

CC-0. Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कशिश से जबरदस्त साबित हुई है। मैं तो नासिरा की तरह उससे भी हाथ धोकर जा रहा हूँ।"

"मगर तुम भी यहीं क्यों नहीं रह जाते?"

"मुझको डर है कि मैं भी आपकी कशिश में न आ जाऊँ?"

"अगर यह हो सकता तो कुछ तुम्हारा भला ही होता। देखो शमशाद! मेरी सहानुभूति तुमसे पहले जवाहरलाल की वजह से पैदा हुई थी। फिर राधा की वजह से और आखिर में शबनम के साथ तुम्हारे ताल्लुक की वजह से बनी थी। अब मुमताज एक कड़ी बन रही है मगर तुमने किसी का भी कहा नहीं माना और नतीजा यह हुआ है कि सब तुमसे पृथक् होते रहे हैं। यह एक दुर्भाग्य की ही बात है।

"अच्छा देखो! एक बात समझ लो। पाकिस्तान में न जाना। वहाँ तुम्हारे लिए कुछ भी भलाई दिखाई नहीं देती।"

"मेरा वहाँ जाने का कोई ख्याल नहीं और मैंने मुमताज से वायदा किया है कि मैं वहाँ नहीं जाऊँगा।"

"तो अपने वचन पर कायम रहना और देखो, अगर कोई मुसीबत पड़ गयी तो यहाँ चले आना। यहाँ तुमको सुरक्षित रखने का यत्न किया जायेगा।"

शमशाद का सूटकेस उठा कर कल्याण नीचे चला गया। शमशाद अल्पाहार के लिए ठहर गया।

अल्पाहार के समय मुमताज ने बताया, "स्वामी जी! ये कुछ दिन दिल्ली की सैर के लिए जा रहे हैं।"

"हाँ! इन्होंने बताया है। यद्यपि मैं इससे प्रसन्न नहीं। इस पर भी कोई किसी को बलपूर्वक यहाँ रख नहीं सकता। मैं मन से चाहता था कि तुम भी इसके साथ जातीं तो ठीक था।"

"नहीं स्वामी जी! मैं गई तो फिर ये यहाँ लौट कर नहीं आयेंगे। मैं समझती हूँ कि मेरे यहाँ रहने से ये वापिस आ जायेंगे।"

स्वामी जी चुप रहे और बात समाप्त हो गई। अल्पाहार ले शमशाद आश्रम से निकला तो मुमताज उसके साथ–साथ बाहर आ गई। शमशाद ने विस्मय में देखा तो वह कहने लगी, "मैं आपको बस तक छोड़ने चल रही हूँ।"

"और दिल्ली तक क्यों नहीं?"

"इतना समय नहीं। जिन्दगी छोटी–सी रह गई है और मंजिल लम्बी है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"ओह! एक रात भर में ही हजरत ईसा की तरह पैराबल[1] कहने लगी हो।"

"हाँ!"

दोनों आश्रम से निकल गये। पहाड़ से उतर सड़क पर पहुँच देव–प्रयाग की ओर चल पड़े। यह रास्ता ऋषिकेश से पैदल आने वालों के लिए बना था और गंगा के बाएँ तट पर था। देव–प्रयाग पर दो नदियाँ मिल कर गंगा बनती हैं। एक भागीरथी और दूसरी अलखनन्दा। भागीरथी दाहिने बाजू से आती है और अलखनन्दा बायें बाजू से। अलखनन्दा पर झूले की भाँति पुल बना था। वहाँ पहुँच शमशाद और मुमताज खड़े हो गए। दोनों वहाँ खड़े नदियों के संगम का दृश्य देख मुग्ध हो रहे थे।

मुमताज ने पुनः पति को ठहरने की प्रेरणा देने के लिए कह दिया, "देखिए, कितना सुन्दर नजारा है!"

"हाँ! किसी बहुत ही काबिल आर्टिस्ट ने बनाया मालूम होता है।"

"वह खुदावन्द ताला ही हो सकता है।"

"है तो! मगर इस जगह काफिरों ने कब्जा कर रखा है। वह देखो, लोग क्या कर रहे हैं?" शमशाद ने संगम पर बने घाट की ओर संकेत कर दिया।

मुमताज ने देखा, लोग स्नान कर रहे थे। कुछ सूर्याभिमुख खड़े अंजलि भर–भर जल सूर्य की ओर डाल रहे थे। उसने कहा, "तो ये काफिर हैं क्या?"

"हाँ! खुदा की जगह पर सूरज को ठंडा कर रहे हैं।"

मुमताज ने मुस्कराते हुए कहा, "तो खुदा को ठंडा करना चाहिए? यही मतलब है आपका?"

इस पर तो शमशाद भी हँस पड़ा। मुमताज भी अपने व्यंग्य पर हँसने लगी थी। शमशाद ने कहा, "तुम ठीक कहती हो। कहीं ये चौंतीस–पैंतीस करोड़ खुदा को ठंडा करने पर उतारू हो गये तो गजब हो जायेगा।"

"पर वह देखो! कल्याण हाथ के संकेत से हमको बुला रहा है। शायद बस चलने का वक्त हो रहा है।"

कल्याण को देख दोनों लम्बे–लम्बे डग उठाते हुए बस के अड्डे की तरफ चल पड़े। कल्याण गंगा के दाहिनी ओर खड़ा था। इनको अलकनन्दा पार कर देव–प्रयाग में से होते हुए भागीरथी पार करनी थी। तब बस का अड्डा, जो नदी के पार आधे फर्लांग पर दिखाई देता था, आना था।

---

1. कहावत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: 5 :

शमशाद दिल्ली पहुँचा तो दिल्ली स्टेशन के प्लेटफार्म पर खड़ा हो विचार करने लगा कि कहाँ जाये? शमा के घर का पता वह जानता नहीं था। इस कारण वह भारत सरकार के शिक्षा मन्त्री के बंगले पर जाने का विचार कर कुली के सिर पर सूटकेस रखवा कर, स्टेशन से बाहर निकल आया। बाहर आया और टैक्सी पर सवार हो पूछता–पूछता मौलाना साहब के बंगले पर जा पहुँचा। पहिले जब वह उनका पी.ए. हुआ करता था, मौलाना साहब जन्तर–मन्तर रोड पर कांग्रेस कार्यालय के ऊपर एक कमरे में ठहरा करते थे और वहीं उनके बगल में एक छोटी सी कोठरी में वह उनका पी.ए. बन रहा करता था। अब वह मौलाना साहब की विशाल कोठी और उसके बाहर लॉन में रंग–बिरंगे फूलों की क्यारियाँ देख चकित रह गया। मौलाना साहब गुसल के लिये गये हुए थे और चपरासी, बैरे तथा खानसामे इत्यादि सब के सब अपरिचित थे। कोठी के द्वार पर उसको रोक लिया गया। चपरासी ने पूछा, "किनसे काम है?"

"महकमा तालीम के वजीर से।"

"मिलने के लिये इजाजत है?"

"मैं मिलने नहीं आया। मैं मेहमान हूँ। उनके घर ठहरने आया हूँ।"

"क्या रिश्ता है आपका उनके साथ?"

"यह मौलाना साहब से पूछ लेना। मेरा नाम शमशाद खाँ कुरैशी है। इत्तला कर दो।"

इस पर चपरासी ने खद्दर पहिने इस पाँच फुट आठ इंच ऊँचे हृष्ट–पुष्ट बुजुर्गवार को ध्यान से देखा और उसको भीतर जाने दिया। शमशाद सब नये चेहरों को देख मन ही मन सोच रहा था, 'खुदा की कुदरत है। ये मियाँ इस ऊरूज पर पहुँच गये हैं।' वह अपने विषय में विचार कर रहा था कि उसकी तो बस छूट गयी है। इसमें वह मुमताज को ही कारण मानता था। अगर वह मौलाना साहब के निमन्त्रण को जो उसे बम्बई में मिला था, मान जाता तो इस वक्त वह लोगों को भीतर आने की स्वीकृति देने वाला होता। अब ये बैरे और चपरासी उसको संदेह की दृष्टि से ऐसे देख रहे हैं जैसे वह बम्ब फेंक शिक्षा मंत्री का काम तमाम करने आया है।

उसने एक कागज की चिट पर नाम लिख कर चपरासी को दिया था, और चपरासी ने दूसरे चपरासी के हाथ वह चिट भीतर भेज दी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस समय एक नाटे कद का, दाढ़ी रखे हुए खद्दर–पोश मियाँ आया और सिर से पाँव तक शमशाद को देखकर पूछने लगा, "तो आप हैं शमशाद खाँ?"

"जी!"

"नाम तो सुना था मगर दीदार आज हासिल हुए हैं। आइये, भीतर तशरीफ लाइये।"

उस अधेड़ आयु के, शरई मूंछें और दादी रखे आदमी ने क्लीन शेव्ड शमशाद को अपने पीछे आने का संकेत कर चपरासी को कहा, "खाँ साहब का बिस्तर मेहमान–खाने में पहुँचा दो।"

एक डनलप गद्दे की कुर्सी पर बैठा कर उस नाटे कद के आदमी ने कहा, "मुझको यहाँ के लोग अब्दुल रशीद साब्री के नाम से याद करते हैं। मैं मौलाना साहब का गैर–सरकारी पी.ए. हूँ।"

"ओह! पी.ए. भी दो किस्म के हो गये हैं।"

"हाँ! मैं मौलाना साहब को खानगी कामों में 'असिस्ट' करता हूँ और सरकारी कामों में मदद करने वाले एक और हैं। वे ग्यारह बजे यहाँ आते हैं और वजीर साहब को पार्लियामेंट में ले जाते हैं। वहाँ उनकी मदद वे करते हैं।"

"मौलाना साहब से किस वक्त मुलाकात हो सकेगी?"

"शाम के वक्त।"

शमशाद इससे कुछ परेशानी अनुभव करने लगा। उसने बात बदल कर पूछा, "कुछ नाश्ता वगैरा मिलेगा क्या?"

"हाँ–हाँ! आप तब तक के लिये मेहमान–खाने में चले जाइये। वहाँ आराम करिये। आपकी सब जरूरियात वहाँ पूरी हो जाएँगी।"

मौलाना से मिलने से पहिले एक पैंतीस–चालीस साल की औरत शमशाद से मिलने आयी। यह शमा थी।

"ओह। शमा बी।" शमशाद ने उसे देखा तो कुर्सी से उठ खड़े हो कहा। "बैठिये हजरत! कहाँ गायब हो गये थे आप?"

"शमा जी! बीवी बीमार हो गयी थी। उसके ठीक होते–होते एक साल से ज्यादा अर्सा लग गया था। अब उसकी तबीयत ठीक है और उसे एक महफूज जगह पर छोड़ कर आ रहा हूँ।"

"क्या बीमारी थी उसको?"

"वह नोआखाली में थी। जब वहाँ फसाद हो रहे थे, उसने वहाँ कुछ ऐसा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखा, जिससे उसके दिमाग पर बहुत बुरा असर हुआ था।''

''बहुत कमजोर दिल मालूम होती है।''

''हाँ।''

''मैं कबायलियों के हमले के वक्त बारामूला में थी।''

''लाहौल–बिला। तो बच कैसे आयीं तुम? किसी कबायली की नजर नहीं पड़ी तुम पर?''

''मेरे पास कायदे आजम साहब, मेरा मतलब है कि पाकिस्तान के गवर्नर जनरल साहब का परवाना राहदारी था, और मेरे साथ पाकिस्तानी फौजी संरक्षक थे।''

''मगर यह कैसे हो गया? फिर तुम यहाँ क्या कर रही हो और कैसे इस कोठी में आ गयी हो?''

''मैं भारत सरकार की तरफ से कश्मीर के हालात देखने गयी थी और पाकिस्तानी सरकार से मैं यहाँ हिन्दुस्तान के वाकयात पर जासूसी करने के लिये मुकर्रिर हूँ।''

अब शमशाद ने कुछ धीमी आवाज में कहा, ''जरा धीरे–धीरे बोलो शमा! तुमको मौत से डर नहीं लगता?''

''लगता है। मगर यहाँ साब्री साहब सब जानते हैं और उनको यकीन है कि मैं कोई बात ऐसी नहीं कर सकती जो इस्लाम को नुकसान पहुँचाने वाली हो।''

''मगर भारत की बहबूदी से ही तो भारत में इस्लाम महफूज रह सकता है।''

''भारत की हिफाजत की जिम्मेदारी पंडित नेहरू पर है। और हम सब उनकी हिफाजत की जी जान से कोशिश करते रहते हैं। नेहरू जी रहेंगे तो भारत रहेगा और भारत रहेगा तो साढ़े चार करोड़ मुसलमान पचास साल में तीस करोड़ हो जाएँगे। उस वक्त तक भारत की आबादी साठ करोड़ से कम ही रहेगी। और तब भारत और पाक एक होकर फिर हिन्दुस्तान हो सकेगा।''

शमशाद ने पूछ लिया, ''नेहरू जी इस वक्त उनसठ साल की उमर के हैं। तो क्या वे पचास साल तक जिन्दा रहेंगे?''

''इसकी न तो जरूरत है और न ही यह मुमकिन है। हम पंडित जी का कोई जाँनशीन पैदा कर रहे हैं।''

''कैसे पैदा कर रहे हैं?''

''कोई हिन्दू माँ के पेट से पैदा हुआ, पाकिस्तान के साथ हमदर्दी रखने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाला, हिन्दू दीन–ईमान से नफरत रखने वाला और ला–मजहब शख्स प्रधानमन्त्री बनने के लायक तैयार किया जा रहा है।''

''भला कौन होगा जो इन सब औसाफ[1] में नेहरू जी के बराबर हो जाएगा?''

''देखिये, तालीम, जिसका ढाँचा बनाया जा रहा है, ला–मजहब पैदा करने के लिये ही है। हिन्दू औरतें बहुत बच्चे पैदा कर रही हैं और वे सब इस तालीम की चक्की में से पिस कर निकलेंगे। वे सब बे–दीन व बे–ईमान होंगे और उनमें से कोई तो प्रधानमन्त्री बनने के लायक निकल ही आयेगा।''

शमशाद ने बात बदल दी, ''मैं दिल्ली में कुछ काम करने और अमीर बनने के लिये आया हूँ। मेरा भी जी करता है कि मैं आलीशान कोठियों में रहूँ और जिन्दगी खत्म होने से पहिले इसका लुत्फ ले लूँ।''

''यह हो सकता है। मगर फिर बीवी को माली–खूलिया[2] हो गया तो क्या करोगे?''

''अब मैं उसको ऐसे हाथों में छोड़ कर आया हूँ कि वह पागल नहीं हो सकती और मैं समझता हूँ कि अगर हुई तो मार डाली जायेगी।''

''किसी बहुत बड़े जालिम के हाथ में छोड़ आये हो उसे?''

''नहीं शमा! एक बहुत बड़े हमदर्द और रहम–दिल के हाथ में छोड़कर आया हूँ। मगर वह मरने को कपड़े बदलने की तरह समझता है और जब उसको यकीन हो गया कि मुमताज का यह जिस्म पुराने कपड़े की तरह घिस कर फटने लगा है तो वह उस पर रहम कर उसको मार डालेगा।''

''ओह!'' शमा के कँपकँपी हुई और बोली, ''खुदा ऐसे रहम–दिलों से बचाये।''

शमशाद ने फिर बात बदली। उसने कहा, ''तुम कहाँ रहती हो?''

''मैंने शादी कर ली है।''

''किससे?''

''वही तालीम के वजीर के गैर–सरकारी पी.ए. मियाँ साब्री साहब के साथ।''

''यह क्या फितूर सवार हुआ है तुम्हारे दिमाग में?''

''यह कोई नया फितूर नहीं। फितूर है सारी दुनिया को दारा–उल इस्लाम

---

1. गुण।
2. पागलपन।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बनाना। यह शादी तो उसी प्लान की कामयाबी के लिये एक कोशिश है।"

"मैं समझा नहीं। मेरी जान! इस शादी से...।"

शमा ने बात बीच में ही काट कर कहा, "जी नहीं! अब 'मेरी जान' वगैरा के लकब[1] रहने दीजिये। मेरे खाबिन्द कम से कम पब्लिक में अपनी बीबी को ऐसा कहा जाना पसन्द नहीं करते।"

"मैं महकमा खारिजा[2] में एक अफसर हूँ और सात सौ रुपया वेतन पाती हूँ। मियाँ साब्री पाँच सौ रुपया मौलाना से पाते हैं। इस बंगले में एक मकान उनको मिला है और मैं उनके साथ रहती हूँ।"

"शमा, तुमने मुझको बहुत मायूस कर दिया है। मैं तो तुम्हारे साथ रहने के ख्वाब लेता हुआ यहाँ आया था।"

"कभी–कभी तो अब भी हम मिल सकेंगे। मगर साब्री साहब से खबरदार रहना चाहिए। वे हसद बहुत करते हैं।"

"और तुमको पर्दे में नहीं रखते?"

"यह मेरी नौकरी में मुमकिन नहीं और फिर मैं भी पसन्द नहीं करती। शादी की कुछ शर्तों में एक यह भी है कि मैं पर्दा नहीं करूँगी। इस पर साब्री साहब को सब्र करना पड़ा है।"

"अच्छा यह बताओ, मौलाना साहब से मेरी सिफारिश कर दोगी, जिससे इस जिन्दगी का कुछ लुत्फ हासिल कर सकूँ।"

"मौलाना साहब से कह दूँगी। मगर इनके महकमा में न तो रहना ठीक होगा, न ही यह मुमकिन है।"

"तो फिर?"

"मिनिस्ट्री फॉर फॉरेन अफेयर्ज' में काम मिल जायेगा। मौलाना साहब से एक 'चिट' मिल गयी तो समझो काम बन गया।"

"और तब तक मैं इस जगह में पड़ा रहूँगा क्या?"

"यहाँ बहुत देर तक पड़े रहने की जरूरत नहीं पड़ेगी। आपके लिये कहीं दूसरी जगह रहने का इन्तजाम हो जायेगा।"

: 6 :

---

1. विशेषण।
2. विदेश विभाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह सब इन्तजाम हो गया। मिस्टर शमशाद खाँ कुरैशी को नियुक्ति भारत के कराची में हाई कमिश्नर के साथ 'कलचरल अटैची' के रूप में कर दी गयी। शिक्षा–विभाग के मन्त्री महोदय की सिफारिश और सुन्दर पत्नी रखने के कारण नियुक्ति हो गयी। जब शमशाद नौकरी पर नियुक्ति का परवाना लेकर शिक्षा मन्त्री के अतिथि गृह में आया तो शमा वहाँ बैठी मिली और आते ही उसने पूछ लिया, "वल्ला! यह आपने क्या कर दिया है? आपने मन्त्री से कहा है कि आपकी पत्नी तीस वर्ष की जवान और खूबसूरत है।"

"तुमको कैसे पता चल गया है?"

"उनके पी.ए. मि. दीक्षित मुझसे बता रहे थे।"

"तो यह बात है? देखो शमा डीयर! जब मेरी काबलियत पूछी गयी तो मैंने बताया एम.ए. हिस्टरी में हूँ। और मौलाना साहब का पी.ए. रहा हूँ जब वे कांग्रेस के प्रधान थे।

"इस पर उन्होंने पूछा शादी–शुदा हो? मेरे मुख से निकल गया, 'हाँ।'

"वे पूछने लगे, 'बीवी काम पर साथ जायेगी क्या?'

"शमा, मैं समझ गया, कहीं विदेश में भेजा जा रहा है। इस लोभ में मैंने कह दिया, जायेगी।'

'क्या उमर है उसकी?' उन्होंने पूछ लिया।

"मैंने ख्याल किया था कि जहाँ भेजा जाऊँगा, वहाँ भाड़े की लड़की पकड़ लूँगा। मैंने कह दिया, 'यही कोई तीस–इकतीस साल की होगी।'

"इस पर वे कहने लगे, अगर वह खूबसूरत है तो नौकरी फौरन मिल सकती है।'

"इस पर मैं परेशानी अनुभव करने लगा। मगर मैंने यह सोचा कि इस मामूली सी बात के लिये एक शान की नौकरी कहीं हाथ से न निकल जाये। इस वास्ते मैंने कह दिया, 'वह दूज के चाँद की तरह पुर–कशिश है।'

"अब हुक्म हो गया कि उसकी तस्वीर हाजिर करूँ। मेरे पाँव तले से मिट्टी निकल गयी। मगर अपनी किस्मत पर भरोसा कर कह दिया, 'वह कलकत्ता में है और दो–चार दिन में उसका फोटोग्राफ हाजिर कर सकता हूँ।'

"शमा, यह पाँच–छः दिन की बात है। मैं इंडिया गेट के बाहर बैंच पर बैठा इस उलझन का हल सोचने लगा। इस पर तुम्हारा कहना याद आ गया। तुमने कहा था कि हिन्दू औरतें बहुत बच्चे पैदा कर रही हैं। वे सब सरकारी तालीम की चक्की में पिस कर बे–दीन और बे–ईमान बन रही हैं। इसलिये मैंने समझा कि इन बे–दीन और बे–ईमानों के शहर से कोई लड़की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुत बड़ा दुनियावी लालच देकर ले आनी चाहिए।

"बस, यह ख्याल आते ही मैं दिल्ली यूनिवर्सिटी की तरफ चल पड़ा। दिन भर वहाँ सड़क पर टहलता रहा। मगर न तो दूज के चाँद की तरह कोई पुर–कशिश दिखाई दी और न ही कोई तीस–इकतीस साल के बीच की उमर की। शाम के वक्त लाचार–मायूस शहर को लौट रहा था कि चाँद बस में बैठा मिल गया। मैं उसके साथ ही बैठा था कि मुझको वह पसन्द आ गयी। मगर एक तो वह हिन्दू नहीं थी और दूसरे उससे वाकफियत बनाने की तरकीब सूझ नहीं रही थी।

"मैंने बस का टिकट लिया था कश्मीरी दरवाजे का, लेकिन वह न तो वहाँ उतर रही थी और न ही उससे वाकफियत पैदा करने की कोई सूरत ही बनी थी। कोई रूमाल, पैंसिल या कोई चीज गिर पड़ती तो मैं उठा कर उसको देते हुए वाकफियत हासिल करने की कोशिश करता, मगर उसके पास अपने बैग के अलावा कुछ था ही नहीं।

"कश्मीरी दरवाजे पर कण्डक्टर ने कह दिया, 'जनाब! टिकट खत्म हो गया है, उतरिये!'

"मैंने कह दिया, 'आगे का दे दो।'

'कहाँ का?'

"मैं जवाब सोचने के लिये लड़की के मुख पर देखने लगा। कण्डक्टर ने कहा, 'हाँ! तो साहब, कहाँ जाएँगे?'

"मैंने लड़की की तरफ देखते हुए कहा, 'किसी सिनेमा के पास तक का।'

"बस चल पड़ी थी। कण्डक्टर ने कह दिया, एक सिनेमा तो पीछे छूट गया है और एक...।'

"उत्तर लड़की ने दे दिया, 'इनको कनाट सरकस का टिकट दे दीजिये।' उसने मेरी तरफ हमदर्दी से देखते हुए पूछ लिया, 'परदेसी मालूम होते हैं।'

"मैंने अपना सितारा बुलन्द समझ कह दिया, 'जी, आज ही कलकत्ता से आया हूँ। नौकरी लगी तो जरा तफरीह के लिये निकल पड़ा।'

'तो ठीक है! रीगल में 'थ्री सिस्टर्ज' लगी है। वह देखियेगा।'

"मैंने कण्डक्टर को चार आने दिये तो उसने टिकट काटकर मुझको दे दिया। टिकट तीन आने का मिलता है, यह मैं जानता था और कण्डक्टर ने मुझे परदेसी जान और टिकट को बिना देखे जेब में रखते देख बाकी एक आना देने की तकलीफ गवारा नहीं की। मुझको फुर्सत नहीं थी। मैं औरत से वाकफियत बढ़ाना चाहता था। मैंने पूछ लिया, 'तो आपने वह तस्वीर देखी है?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'जी नहीं!'

'तो कैसे कहती हैं आप कि मुझको यह तस्वीर देखनी चाहिए।'

'मैं कई दिन से इसी की शोहरत सुन रही थी। आज देखने जा रही हूँ।'

'जहे किस्मत!' मैंने मन में कहा और उससे बोला, 'तब तो ठीक है। आप मेरी रहनुमाई करेंगी।'

"उसने मेरे मुख और लिबास को देखा। वह यही समझी होगी कि मैं उसके बाप का भी बाप दिखाई देता हूँ। इसी से वह कहने लगी, 'ठीक है। यह बस उस सिनेमा हाल के नजदीक ही खड़ी होती है।'

"मैं खुदा का शुक्र कर रहा था कि दिन भर के भटकते मुसाफिर को राह दिखाई दी है। बस में बैठे हुए मैंने उसको और कुछ नहीं कहा। मुझे डर लग रहा था कहीं यह चिड़िया डर कर उड़ न जाए। वह भी चुप रही। सिंधिया हाउस स्टैंड पर हम उतरे तो उसने मुझे अपने साथ आने को कहा।

"वह मुझको सिनेमा हाल और टिकट खिड़की पर ले गई। मैंने बाक्स के टिकट लेने के लिए रुपये निकाले तो वह बोल पड़ी, 'दो लीजिएगा।'

"इस पर तो मेरा दिल धक–धक करने लगा। मुझे अपना सितारा चढ़ता दिखाई दिया था।

"मैंने साढ़े छः रुपये के दो टिकट खरीदे तो वह बिना अपना बैग खोलने का बहाना करते हुए पूछने लगी, 'कितने खर्च हुए हैं?'

"कुछ नहीं। रहने दीजिए।' मैंने भीतर जाने की सीढ़ियों पर चढ़ते हुए कहा। वह मुस्कराकर मेरी ओर देखते हुए बोली, 'थैंक यू।'

"मैं समझ गया कि उस पर जाल मैं नहीं बिछा रहा, बल्कि वह मुझे मोटी मछली समझ फाँसने की कोशिश कर रही है। मगर मैं भी तो एक खूबसूरत बीवी की सख्त जरूरत में था और देखना चाहता था कि इस औरत से मेरा काम पूरा हो सकता है या नहीं।

"अपनी सीटों पर बैठते हुए मैंने पूछ लिया, 'क्या नाम है आपका?'

'मरियम।'

'तो आप ईसाइन हैं।"

'वह मुस्कराकर बोली, 'हाँ, मेरी माँ ईसाई हैं। मैं ऐंग्लो–इण्डियन हूँ। और बस किसी भी मजहब से मेरी वाकफियत नहीं।"

'आपकी...।' मैं कहता–कहता रुक गया। मैं शादी की बाबत पूछना चाहता था, मगर डर रहा था कि कहीं शादी–शुदा हुई तो मेरे सब मनसूबे रेत के महल की तरह गिर जायेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मेरे सवाल के मुकम्मल होने की राह देखती हुई वह मेरे मुख पर देखने लगी। मैंने अपने सवाल को बदल दिया और पूछ लिया, 'आपकी माँ का इस्म–शरीफ? कहाँ रहती हैं वे?'

"वे बेवा हैं। उनके खाविन्द जंगे–जर्मन में मारे गये थे। उनको सरकारी पैंशन मिलती थी। स्वराज्य हो जाने से पैंशन इंग्लैण्ड से आती है।"

'और आप क्या करती हैं?'

"वह मुस्कराई और चुप कर रही। इस समय तस्वीर शुरू हो गई थी और हमारी बातचीत बन्द हो गई।

"इन्टरवल में मैं उसे साथ के रेस्तराँ में ले गया और वहाँ उसे कोल्ड ड्रिन्क लेने का आग्रह करने लगा। इस समय मैंने उसको बताया, 'मेरी आज ही नौकरी लगी है। मुझे फॉरेन जाना है।'

"मैं सारी बात एकदम नहीं बता सका। मैं फूँक–फूँक कर कदम रखना चाहता था। इतना कह कर मैं उसका मुख देखने लगा। वह चुपचाप ड्रिंक लेती रही।

"इसके बाद हम तस्वीर खत्म होने तक किसी किस्म की बात नहीं कर सके। वह चुपचाप तस्वीर देखती रही। मैं उसकी ओर से किसी किस्म का पुर–उम्मीद इल्फाज कहे जाने की इन्तजार में था।

"तस्वीर खत्म हुई। मैं अपने को किसी तरह भी अपने मकसद के नजदीक हुआ नहीं समझता था। इस पर भी उसे अपनी उम्मीदों का आखिरी सहारा समझ मैं उसे डिन्नर लेने का निमन्त्रण देने लगा। उसने हिचकिचाते हुए कहा, 'आपका पहले ही बहुत कुछ खर्च करा चुकी हूँ।'

"मैंने कहा, 'छोड़िए मिस मरियम! मेरे पास रुपयों की कमी नहीं है। आइये।' मैं उसे गेलॉर्ड में ले गया। इससे वह बहुत खुश हुई।

"बैरा को आर्डर देकर मैंने कह दिया, 'मैं हैरान हूँ कि आप जैसी खूबसूरत लड़की की अभी तक शादी नहीं हुई?'

"कैसे जाना है आपने?' उसने पूछा। मैंने बताया कि जब मैंने 'मिस' कहा तो उसने मेरे कहने की इस्लाह नहीं की। उसका कहना था, कि कई नौजवान शादी की पेशकश कर चुके हैं मगर मैं अपनी आजादी की बहुत कद्र करती हूँ।

"मैंने पूछा, 'किस किस्म की आजादी चाहती हैं आप? मैं तो समझता हूँ शादी करने से औरत की आजादी में इजाफा ही होता है?'

"उसका कहना था, 'हाँ, अगर कोई बूढ़ा खाविन्द मिल जाये तो?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं फिर समझने लगा था कि वह मछली को पकड़ने में कामयाब हो रही है। बैरा खाना लगा रहा था। इसलिए बातचीत का सिलसिला टूट गया।

"खाते हुए वह अपनी सोसायटी की बातें करने लगी। उसने बताया कि एंग्लो–इण्डियन सोसायटी के सब बड़े–बड़े लोग इंग्लैण्ड और कुछ पाकिस्तान में चले गए हैं। इसलिए मुनासिब शादी में दिक्कत महसूस हो रही है। मैंने पूछा–

"और आप अपनी माँ को लेकर इंग्लैण्ड क्यों नहीं चली गयीं?'

"वहाँ मिलने वाली पैंशन गुजारे के लिए नाकाफी हो जाती। साथ ही माँ हिन्दुस्तानी लड़की हैं। वे इस मुल्क को अपना मदर–लैण्ड मानती हैं।'

"ओह! मगर क्या हिन्दुस्तान में कोई बूढ़ा ऐसा नहीं मिला जिसको आप शादी करने लायक समझ आई हों?' मैंने बात को आगे चलाने के लिए कह दिया। वह मेरी बातचीत से जरूर समझ गई होगी कि मैं तजवीज करने वाला हूँ। इससे उसने बिना जवाब दिये खाना जारी रखा।

"मुझे खाने में लुत्फ नहीं आ रहा था। मैं उससे किसी ऐसे फैसले पर पहुँचना चाहता था जिससे मेरी नौकरी की शर्त पूरी हो सके। इसलिए खाने का ख्याल छोड़कर अपनी बात को चला दिया। मैने कहा, 'मैं अपने दिल में कुछ हलचल महसूस करने लगा हूँ। अगर मेरे बुढ़ापे का ख्याल न हो तो मेरी तजवीज पर गौर करो। मुझे एक औफिशियल वाइफ की सख्त जरूरत है।'

'औफिशल वाइफ क्या होती है?'

"इस पर मैंने उसे अपनी जरूरत बता दी। उस वक्त मैंने अपना नाम और काम नहीं बताया। सिर्फ यह बताया कि मेरी बीवी को मेरे साथ इण्डिया से बाहर जाना होगा।

"वह मुस्कुराती हुई कुछ देर तक मेरे मुख पर देखती रही। शायद मेरे कहने का मतलब समझने की कोशिश में थी। फिर वह खाने लगी। मैं जो कुछ बताना चाहता था, बता चुका था और उसके जवाब का इन्तजार कर रहा था।

"खाना तकरीबन खत्म हो चुका था। उसने मेरी तजवीज का जवाब एक लफ्ज में दिया, 'जामिन?'

"मैंने कह दिया, 'जन्टलमैन्ज वर्ड।'

"इस पर उसने कह दिया, 'मेरी माँ के सामने बात कर लीजिए।'

"अगले दिन मैं उसकी माँ से मिला। पहिले तो लड़की हमारी बातचीत के वक्त बैठी रही। फिर बीच में वह उठकर चली गयी। उसके जाने के बाद माँ ने कहा, 'मैं उसको आपकी तजवीज मानने पर राजी कर सकती हूँ। मगर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक शर्त है कि वह अपनी आजाद जिन्दगी बसर करेगी। अगर कुछ भी रुकावट आपकी तरफ से हुई तो आपको छोड़ जायेगी और इस पर अगर आपने किसी किस्म का दावा जाहिर किया तो वह सब राज खोल देगी।'

"मरता क्या न करता? मैंने मंजूर कर लिया। अब मैंने उसका एक फोटोग्राफ उसके दस्तखतों सहित दीक्षित साहब के पास भेज दिया है और एक–दो–दिन तक चिट्ठी की इन्तजार कर रहा हूँ।"

"मियाँ शमशाद, बहुत गहरे पानी में तैर रहे हो!" शमा ने चिन्ता प्रकट करते हुए कहा।

"देखो शमा! तुम चुप रहना। मैं एक मकसद से कराची जा रहा हूँ और वह मकसद तुम्हें पसन्द होना चाहिए।"

"मुझसे दीक्षित साहब पूछते थे कि शमशाद खाँ को मैं जानती हूँ क्या? मैंने कह दिया, 'ये साहब मौलाना के जाने–पहिचाने हैं। मुझको इनके मुताल्लिक कुछ ज्यादा पता नहीं।'

"इस पर उन्होंने कहा कि इनकी बीवी बहुत छोटी उमर की मालूम होती है। मैंने कह दिया, 'मुसलमानों में यह हैरानी की बात नहीं।' मैंने तो बात छिपा रखी है मगर पता लगने पर बहुत बुरा हो सकता है।"

"देखा जायेगा।" शमशाद का कहना था।

: 7 :

मौलाना साहब रात का खाना मियाँ साब्री और उसकी बीवी शमा के साथ लिया करते थे। उस वक्त मौलाना साहब अपने मंत्रिमंडल के अनुभव बताया करते थे। एक दिन वे अपनी विवशता प्रकट कर रहे थे। वे कह रहे थे, "मैं तो वजारत में इस वास्ते शामिल हुआ था कि मुल्क की सियासियात से हिन्दू पंडितों के असर जाया कर दूँ, मगर वजारत में एक जबरदस्त शक्सीयत मेरी कुछ भी चलने नहीं देती।"

"क्या हुआ है आज?" शमा ने पूछ लिया।

"हमारे होम मिनिस्टर साहब बम्बई गये थे और वहाँ सोमनाथ के मन्दिर की ताजा तामीर के लिये चन्दा इकट्ठा करते रहे हैं। सुना है ट्रस्ट रजिस्टर कराने की पेशकश कर आये हैं।"

"यह उन्होंने शख्सी तौर पर किया है या सरकारी तौर पर?" शमा ने पूछ लिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"एक वजीर की शख्सी और सरकारी हैसियत में फर्क नहीं हो सकता।"

"तो इस मसला को कैबिनेट में उठाइये।"

"उठाया है। मगर मेरी सुनवाई नहीं हुई। होम मिनिस्टर साहब कहने लगे कि यह उनका शख्सी काम है। मैंने अपने मन की बात कही तो वे बोल उठे, 'मौलाना साहब! आप नमाज पढ़ना छोड़ रहे हैं क्या?'

"नहीं तो!' मैंने कहा। इस पर वे बोले, 'तो आप एक हिन्दू वजीर को पूजा–पाठ करने से मना न करिये?'

'मगर आप तो मन्दिर बनवा रहे हैं।' मैंने कहा।"

'आपके भाई–बन्धुओं ने तुड़वा दिया था न! इसलिये उसको बनवाना जरूरी हो गया है।"

'तो आप किसी दूसरे मन्दिर में पूजा–पाठ नहीं कर सकते?'

'इसमें ज्यादा अच्छी तरह ध्यान लग सकता है। इस मन्दिर की एक तवारीख है और वह खुदा की तरफ ध्यान लगाने में मदद करती है।'

'मैंने हँसते हुए कहा, "खुदा में ध्यान लगता है या खुदा की खलकत से नफरत की तरफ 'तवज्जो' जाती है?'

'कौन खुदा की खलकत?'

'जिन्होंने मन्दिर को तोड़ा था।'

'वह खुदा के बन्दे नहीं हो सकते। वे जरूर शैतान की उम्मत होंगे। और शैतानों से नफरत खुदा की परस्तिश ही होती है।'

"अब बताओ शमा! मैं इसका क्या जवाव देता?"

इस पर साब्री साहब ने कह दिया, "मैं समझता हूँ कि आप अपने ओहदे का जायज इस्तेमाल नहीं कर रहे।"

"कर तो रहा हूँ। देखो साब्री, मैं हिन्दुओं का मत खोखला करके रख दूँगा। इसी वास्ते मैंने यूनेस्को की मदद से एक कान्फ्रैन्स बुलवाई थी, और उसमें इनके मत की सबसे पुरानी किताब ऋग्वेद को हजरत ईसा से सिर्फ डेढ़ हजार साल पहले की करार दिलवाया है।"

"तो इससे इनका मत खोखला कैसे हो गया?"

"यह इस तरह कि ये हिन्दू समझते हैं कि उनकी तहजीब सब से पुरानी है और वह खास खुदा के मुँह से निकली है। इस तवारीख के इतनी पीछे हो जाने से मिस्र और यूनान की तहजीब इससे बहुत पुरानी साबित हो सकेगी। इससे यह भी मालूम होता है कि 'आर्यन' लोग मिस्र वगैरा मुल्कों से यहाँ आये हैं और वहाँ की तहजीब की बिगड़ी हुई सूरत ही ऋग्वेद में लिखी है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मिस्र की तहजीब खत्म हो चुकी है और यह हिन्दू तहजीब भी खत्म हो जाएगी।"

"हजूर! आपका कहना दुरुस्त है।" साब्री ने कह दिया, "मगर कोई दूसरा जायेगा और वह एक दूसरी कान्फ्रेन्स बुला कर दूसरी बात का फैसला करा देगा। मेरा कहना यह है कि इन कान्फ्रेन्सों से कुछ नहीं बनेगा। असल बात यह है कि कान्फ्रेन्सों में आने वालों के दिमाग ही बदल दिये जाएँ। खुदा ने आपको महकमा तालीम का सदर बनाया है तो आपको तालीम को ही ऐसी सिम्त में ले जाना चाहिए कि किसी का भी हिन्दू धर्म पर एतकाद ही न रहे। 'न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी'।"

"भाई साब्री! कर तो रहा हूँ। अभी–अभी मैंने एक सर्क्यूलर जारी कराया है कि स्कूलों में सिवाय गांधी और जवाहरलाल के और किसी की तस्वीर न लगाई जाये। न ही स्कूलों की 'प्रेयर' (प्रार्थना) वगैरा में किसी देवी–देवता का नाम लिया जाये।"

"एक बात और करिये। हिन्दुस्तान की तवारीख लिखाने के लिये कुछ मुसलमानों को तैयार किया जाये।"

"हाँ, यह बात ठीक है। मगर मैं यह भी ख्याल करता हूँ कि अगर हिन्दू तवारीख–दान ही हमारा मतलब पूरा कर दें, तो ज्यादा अच्छा होगा।

"देखो साब्री! एक बात और है। यह आर्य–समाजी बहुत खतरनाक आदमी हैं। ये डंके की चोट कहते फिरते हैं कि अंग्रेज तवारीख–दान झूठे हैं, मुतअस्सिब हैं और बेवकूफ हैं। इनका इलाज कुछ सूझ नहीं रहा।"

"इलाज तो अंग्रेज बता गये हैं। उन्होंने पहले सब तालीमी दर्सगाहों को यूनिवर्सिटी के मातहत किया था। इसके लिये उन्होंने यूनिवर्सिटी के सर्टीफिकेट को ही मानना मंजूर किया। फिर यूनिवर्सिटियों की तालीम पर अँगूठा रखने के लिए इनके वाइस–चान्सलरों पर अपना दबाव रखा। और उनकी मार्फत पढ़ाई की किताबों पर सरकारी मुहर लगायी।

"एक बात बहुत जरूरी है। वह है हिन्दुओं की जबान संस्कृत और हिन्दी। अंग्रेजों ने इनकी इज्जत को मिटाने के लिये इसको भटियारों और भिखमंगे साधुओं की जबान बना रखा था। इसकी पदवी ऊँची नहीं होने देनी चाहिए। हिन्दी और संस्कृत के प्रोफेसरों की तनख्वाह अंग्रेजी और साइंस पढ़ों से कम रखनी चाहिए। नतीजा यह होगा कि कोई जहीन तालबे–इल्म इसको पढ़ेगा ही नहीं।"

"सब ठीक होगा साब्री! तुम इतमीनान रखो। खुदा जवाहरलाल की उमर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दराज रखे और हिन्दुओं की अक्ल पर पर्दा डाले रखे। मैं समझता हूँ कि जो बात मुगल और पठान सात सौ साल में नहीं कर सके हम पचास साल बिना कुश्तो–खून के कर सकेंगे। मेरा मतलब है हिन्दुस्तान दारा–उल–इस्लाम बन जायेगा।

"देखो, एक राज की बात बताता हूँ। पंडित जी ने एक दिन कहा था कि मुझको किसी गैर मुल्क में सफीर बना कर भेजा जा सकता है। मैंने उनकी इस पेशकश को रद्द कर दिया। मैंने साफ कह दिया, 'मैं सरकार में रहूँगा तो तालीमी वजीर बन कर ही रहूँगा। न तो मुझमें देश–विदेश में घूमने की हिम्मत है, न ही वह काम मेरे मन का है।'

"मैंने यह भी कह दिया कि सरकार में वजीर बना रहना मेरा हक है। साथ ही मेरी मुल्क के लिये खिदमात मुझको वजीर बनाये जाने के काबिल बनाती हैं।

"इस पर पंडित जी ने वायदा किया है कि जब तक उनका बस चलेगा, मैं तालीमी वजीर बना रहूँगा।"

"मगर हजरत! कहीं उनकी राय आपसे न मिली तब तो बहुत मुश्किल हो जायेगी।"

"ऐसा नहीं होगा। मुझको नेहरू खानदान के साथ काम करते हुए तीस–बत्तीस साल हो चुके हैं और मैं समझता हूँ कि इस खानदान के लोग मुझसे हमेशा मुत्तफिक–उल–राय[1] रहे हैं। इसमें वजह यह है कि इनके खानदान की तरबीयत मुसलमानी ही रही है।

"मगर साब्री! शमशाद की कराची से शिकायत आयी है। आजी पंडित जी बता रहे थे कि सफीर साहब का कहना है कि वह काम–धन्धा तो कुछ करता नहीं और औरतों के पीछे दिन–रात घूमा करता है या शराब पी कर पड़ा रहता है।"

साब्री ने शमा की तरफ देख कर मुस्करा दिया। शमा ने कह दिया, "वह भी मजबूर है। उसकी उम्र पैंसठ साल से ऊपर है और उसकी बीवी तीस साल की। वह वहाँ दूसरों से मेल–मुलाकात रखती है तो शमशाद अपना गम–गलत करने के लिये शराब पीता रहता है।

"उसकी यह सफाई तुम अपने मन से दे रही हो या उसके मन की बात को जानती हो?"

---

1. सहमत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मेरी उसकी बीवी से खतो–किताबत होती रहती है। उसने एक खत में लिखा था कि वह अपने मियाँ को तलाक दे नहीं सकती। दूसरे मेरी वजह से ही उनकी नौकरी है। और उसमें से वे मेरे आराम व असायश के लिये खूब खर्च करते हैं। मैं अपने को उनके ऐहसान में दबी पाती हूँ।"

"मैं हैरान हूँ," मौलाना साहब ने कह दिया, "कि यह शादी हुई कैसे? एक पढ़ी–लिखी जवान लड़की भला इस बूढ़े खूसठ के साथ फँस कैसे गयी?"

"मैंने उससे इस सब का राज पूछा था। उसने जवाब में खुलासा हाल लिखा था। मरियम एक ऐंग्लो इण्डियन की लड़की है। उसका बाप जंग में मारा गया था। स्वराज के बाद उसकी माँ की इंग्लैंड से पेन्शन आती है। मगर वह अपनी लड़की के साथ में हिन्दुस्तान में रही। शमशाद ने उसे कुछ सब्जबाग दिखाये तो वह उसकी बीवी बन कराची जाने को राजी हो गयी है।

"एक बात पता चली है। वह रुपये–पैसे से सुखी है। सिरफ खाविन्द के बुढ़ापे से ही तकलीफ में है।

"यहाँ काम–धन्धा करती नहीं थी और आवारा जिन्दगी बसर करती थी। एक दिन सिनेमा जाती हुई शमशाद को फाँसती–फाँसती खुद उसके फंदे में फँस गयी है।"

"बहुत अफसोसनाक वाकया है।" मौलाना साहब का कहना था।

इस पर साब्री ने कह दिया, "वह हमारा काम बखूबी कर रहा है। वह फॉरेन डिपार्टमेंट में इस्लामी नजरिया पेश करने की कोशिश करता रहता है।"

"तो यह शीरीं क्या करती है?"

"यह जितना इससे हो सकता है, करती है। मगर इससे हुक्मराँ खुश नहीं। साथ ही वह महकमा बड़ा है और यह सब जगह पर तो हाजिर नहीं रह सकती।"

"इसे चाहिए कि दीक्षित से दोस्ती पैदा करे।"

"वह काइयाँ है। दोस्त तो है, मगर राज की बात करता ही नहीं। शीरीं कश्मीर के मुताल्लिक तो अपनी बात बताती रहती है। मगर दुनिया कश्मीर से बहुत बड़ी है। मसलन हैदराबाद की बात है। हम उसके मुताल्लिक पूरी–पूरी वाकफियत हासिल करना चाहते हैं।"

"हैदराबाद के निजाम साहब अगर डटे रहें तो वह एक खुद मुखत्यार हुकूमत बन जायेगी।"

"मगर ऐसा मुल्क जिसका समुद्री किनारा नहीं, क्या कीमत रखता है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"ऐसे और भी बहुत से मुल्क हैं। निजाम के जाती सलाहकार सर वाल्टर मौकरन से, जब वह आया था, तो मेरी बातचीत हुई थी और उसमें मैंने उससे कहा था कि निजाम साहब को आहिस्ता–आहिस्ता चलना चाहिए। वह कहने लगा कि हजरत के दिमाग में हिन्दुस्तान में एक दूसरी आजाद इस्लामी हुकूमत कायम करने की खब्त सवार है। निजाम साहब ने सन् 1947 के जून के महीने में ही यह ऐलान कर दिया था कि हैदराबाद एक आजाद मुल्क होगा।

"मैंने उसको कहा था कि इस कहने से तो बात और भी बिगड़ गयी है। उसे अपनी हालत को मजबूत करने के लिये वक्त हासिल करना चाहिए। मेरे इस कहने पर निजाम से 'स्टैंड स्टिल्ल' का करार हुआ था। इससे वक्त मिला है। उसको इस वक्त का फायदा उठाने के लिये वहाँ की रियाया से मेल–मुलाकात और रौरियात पैदा करनी चाहिए थी। अगर वह ऐसा कर सकता तो मैं समझता हूँ कि रियासत के हिन्दू हिन्दुस्तान की जम्हूरियत से निजाम की हुकूमत को तरजीह देते और वक्त पाकर वहाँ तबलीग को जोर दिया जाता। वहाँ बाहर के मुसलमानों को आकर बसने दिया जाता। और वक्त पाकर इस 'स्टैंड–स्टिल' करार को खुदमुख्तारी में बदला जा सकता था।"

"मगर जनाब! यह पटेल साहब तो वहाँ के हिन्दुओं को भड़का रहे हैं और सुना है कि सरदार इस 'स्टैंड–स्टिल' करार को मानते ही नहीं।"

"सरदार की बात को मैं जानता हूँ, मगर चलती तो जवाहरलाल की है। जब तक 'स्टैंड–स्टिल' करार रहेगा, यह हैदराबाद का मसला नेहरूजी के महकमे का मसला रहेगा और होम–डिपार्टमेंट इसमें दखल नहीं दे सकेगा।"

"मगर हैदराबाद की फाइल तो इस महकमे में नहीं है।"

"यह हमारी कैबिनेट का अन्दरूनी मुआमला है। निजाम साहब को नेहरू से बातचीत करनी चाहिए। उसे चाहिए था कि वहाँ के हिन्दुओं को खुश करते और बातचीत नेहरूजी से करते। मगर वह तो वहाँ रजाकारों को एक फौज बनाने में मदद देने लगा है। चाहिए यह था कि पाकिस्तान और हिन्दुस्तान के मुल्ला–मौलानाओं को तबलीग के काम में लगा देता।"

"बात यह है कि मुसलमान, चाहे वह मुल्ला–मौलाना हो, चाहे सिपाही या दुकानदार, सब–के–सब इस्लाम के लिये लड़ना–मरना सवाब समझते हैं। मुल्ला लोग ही तो हैं जो इन रजाकारों की हलचल के बानी हैं।"

"देखो शमा! बेसब्री में नुकसान के सिवा और कुछ नहीं हो सकता।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खाना समाप्त हुए देर हो चुकी थी। मौलाना साहब जल्दी सो जाने में विश्वास रखते थे। इसीलिये उनका रात का खाना आठ बजे तक समाप्त हो जाया करता था और वे जल्दी बिस्तर में चले जाया करते थे।

: 8 :

शमा रात में मौलाना साहब की कोठी में ही रहती थी और अब्दुल रशीद साब्री प्रायः इम्पीरियल होटल में चले आया करते थे। वहाँ उनकी किसी–न–किसी काम के आदमी से भेंट हो जाया करती थी। ये अक्सर 'शेरी' की आधी बोतल सामने रख घूँट–घूँट पिया करते थे और जब कोई मिलने वाला आता तो उससे सियासी वाकयात पर विचार होता रहता था।

यह बात 31 मार्च, 1948 की है। साब्री होटल के रिसेप्शन हाल में बैठा ही था कि एक सुन्दर युवती भड़कीला पहिरावा पहिने तथा शृंगार किये आयी। जब वह साब्री की मेज के पास से गुजरने लगी तो साब्री को देख ऐसे अटक गयी मानो वह उसकी दृष्टि में अभी–अभी पड़ा है। साब्री उसे न देखता हुआ अपने गिलास में शराब डाल रहा था। उस औरत ने ही पहले आवाज दी, "ओह! मिस्टर साब्री! 'वट आर यू डूईंग हीयर'?"[1]

साब्री ने चौंक कर सिर उठाया और फिर हाथ से बोतल अपने सामने रख कर, उस औरत से हाथ मिलाते हुए बोला, "ओह मिसेज रिजवी! आइये बैठिये। कहाँ से आ रही हैं और कहाँ भागी जा रही हैं?"

"आयी हूँ हैदराबाद से और जा रही हूँ पेट भरने। भूख लगी है।"

"तो यहीं तशरीफ रखिये न। मैं आपके लिये खाने का आर्डर दे देता हूँ।"

"मगर आप तो खा चुके मालूम होते हैं।" मिसेज रिजवी ने बोतल की तरफ देखते हुए कह दिया।

"हाँ। कुछ तो घर से खा कर आया हूँ। मैंने शादी कर ली है। और मेरी वह औरत निहायत ही पाक–साफ और पार्सा[2] है। इसलिये भले इन्सान की तरह घर के खाने की कमी पूरी करने के लिये यहाँ आ जाया करता हूँ। यह तो 'एपिटाइजर'[3] के तौर पर लेता हूँ।"

---

1. मिस्टर साब्री यहां क्या कर रहे हो?
2. परहेजगार।
3. भूख लगाने वाली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तब तो ठीक है।"

बैरा आया तो साब्री ने सामने बैठी औरत के लिये भी 'डिनर' का आर्डर दे दिया।

बैरा साब्री के लिये 'ग्रिल्डचिकन'[1] और सैण्डविचिज लाया था। और अब वह मिसेज रिजवी के लिये भी खाना लेने चला गया।

"हाँ, तो दिल्ली में कैसे आना हुआ है?"

अब रिजवी ने आवाज धीमी कर कह दिया, "कराची से हैदराबाद गयी थी और वहाँ से दिल्ली भेज दी गयी हूँ। मुझको पाकिस्तानी सफारतखाने से हुक्म हुआ है कि आपसे इस होटल में मिलूँ।"

"ओह! तो मेरी फिराक में घूम रही थीं।"

"हाँ! स्टैंड स्टिल ऐग्रीमेन्ट में रद्दोबदल होने वाला है। इसकी तजवीज तो सबसे पहिले लायक अली साहब ने ही की थी। मगर हैदराबाद की उम्मीदों के खिलाफ यह करार सुधरने की बजाय हैदराबाद के खिलाफ ही जा रहा है।"

"डीयर अजरा! यह लायक अली की गलती नहीं थी क्या? इसे यूँ कहो कि बिना ताकत पैदा किये जो कुछ मिला था, उसको भी जुए पर लगा दिया गया था।"

"पाकिस्तान में भी यही कहा जा रहा है।"

"एक बात और अजरा! हम हिन्दुस्तान में ताकत के मायने यह समझते हैं कि मुल्क की खलकत को अपने मुआफिक किया जाये। तवारीख यही सबक सिखाती है। मुगलों में अकबर और शाहजहाँ ने इस पॉलिसी पर अमल किया था और उन्होंने हिन्दुओं को अपनी तरफ खींचकर मुगलिया सल्तनत को मजबूत किया था। मगर औरंगजेब और फर्रुखसीयर ने हिन्दुओं को नाराज कर सल्तनत की जड़ों में तेल दिया था।"

"यह तो ठीक है हजरत! मगर जब लोग बगावत करने पर अमादा हो जाएँ तो फिर उनसे दोस्ती कैसे हो सकती है?"

"दोस्ती की बात तो मैंने कही नहीं। यहाँ तो डिप्लोमेसी की बात हो रही है। निजाम साहब ने आजादी मिलने से पहिले ही अपना इरादा जाहिर कर दिया था कि हैदराबाद को आजाद मुल्क बना लेंगे। इसका ऐलान करने की क्या जरूरत थी? यह बात तो जब हिन्दुस्तान या पाकिस्तान पूछता तो

---

1. भुना मुर्ग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनको चिट्ठी में लिख कर देनी चाहिए थी। इस सब अर्सा में हिन्दुओं में से कुछ लोग हिन्दुओं को निजाम–शाही के फायदे बताने पर तैनात कर देने थे। हिन्दुओं को आरजी तौर पर मजहबी आजादी देने का वायदा कर देना था। जब हिन्दू खुश हो जाते तो वे ही अपने मुल्क की बहबूदी हिन्दुस्तान से आजाद रहने में कह कर अड़ जाते।"

"हैदराबाद को यह पॉलिसी गलत मालूम हुई है। सिर्फ वहाँ के कांग्रेसी ही हैं जो मुसलमानों से हमदर्दी रखते हैं और वे नेहरूजी के मातहत रहना पसन्द करते हैं।"

"कितने हैं कांग्रेसी वहाँ?"

"कांग्रेस कमेटी में कई हजार हैं?"

"और रियासत में हिन्दू कितने हैं?"

"पचासी फीसदी से ज्यादा।"

"मतलब यह कि कांग्रेसी आटे में नमक भी नहीं। तो क्या दूसरे हिन्दुओं में कोई नहीं मिला जो निजाम साहब की हुकूमत की तारीफ कर सके?"

"देखो रिजवी! उन हिन्दुओं को अपनी तरफ करने की जगह यह रजाकारों की हलचलें तो हिन्दुओं को निजाम के खिलाफ करने वाली हैं।"

"निजाम ने कुछ हिन्दू तो इकट्ठे किये हैं जो मद्रास की सरहद पर काम कर रहे हैं।"

"और वे वहाँ गाँवों के बनियों को और हिन्दू रईसों को लूट रहे हैं। ये कम्युनिस्ट है। अगर उन पर भरोसा किया गया तो एक दिन वे निजाम को जेल में डाल कर हथौड़े और हँसिया वाला झण्डा फहरा देंगे।"

इसी समय बैरा खाना ले आया। दोनों खाने लगे। अजरा ने खाते हुए कहा, "मुझको पण्डित नेहरू से पृथक् में मिलने के लिये भेजा गया है।"

"तो मिल लो।"

"इसी मुलाकत के वास्ते आप से मदद लेने मुझे आपके पास भेजा गया है।"

"किसने भेजा है?"

"पाकिस्तान हाई कमिश्नर ने।"

"भला मैं इसमें क्या कर सकता हूँ?"

"मौलाना से कह कर मेरी मुलाकात का इन्तजाम करा सकते हैं।"

"इसके लिये पाकिस्तान क्या देना मंजूर करता है?"

"पाकिस्तान तो कुछ नहीं देगा। हाँ, निजाम साहब कुछ देंगे ही।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इस तरह नहीं। पहले रकम तय हो जाये और तब वह रकम मेरी जेब में होनी चाहिए।"

"आप अपनी रकम बताइये।"

"सिर्फ मुलाकात का इन्तजाम कराने के लिये एक हजार रुपया।"

"और मौलाना साहब क्या लेंगे?"

"कुछ नहीं। वे इसको दीन–ए–इस्लाम का काम समझते हैं और वे इसके लिये एक पाई लेना भी हराम समझेगे।"

"और आप इसको क्या समझते हैं?"

"एक खुदगर्ज, खुदसर, बेवकूफ वालिये मुल्क का काम।"

"एक ही लहजे में इतनी गालियाँ।"

"नहीं अजरा! यह गालियाँ नहीं हैं। ये एक मुसलमान हाकिम के औसाफ की साफ बयानी है।"

"अच्छी बात है। इन्तजाम कराइये। एक हजार मिल जायेगा।"

"क्या तारीफ बयान करूँ हुजूर–ऐ–बाला की?"

"मौलाना साहब मुझको नहीं जानते। इसलिये उनको यह रिजवी और अजरा का नाम बताने की जरूरत नहीं। उनसे कहियेगा कि कौशल्या देसाई अहमदाबाद की एक बहुत ही धनी जमींदार की लड़की हैं।"

"ऊँ हूँ।" साब्री ने सिर हिलाते हुए कह दिया– "जमींदार का लफ्ज सुनते ही पंडित जी इनकार कर देंगे।"

"तो फिर आप बताइये कि क्या नाम और वाकफियत देनी चाहिए।"

"एक अमीर इण्डस्ट्रियलिस्ट[1] की लड़की।"

"अच्छा यही सही।"

इसके बाद सवाल हुआ, "कौशल्या रानी रात कहाँ रहने वाली हैं?"

"आपकी तो शादी हो चुकी है न?" अजरा ने मुस्करा कर पूछा।

"मगर वह तुम्हारे मुकाबिले उम्र और हुस्न में कुछ नहीं।"

"मैं आज एक दूसरी जगह पर ठहरने की बात कह आयी हूँ।"

जब दोनों उठे और होटल के बाहर निकले तो रात के साढ़े दस बज चुके थे। दोनों के खाने का तथा साब्री साहब की शराब का दाम मिसेज रिजबी ने दिया था।

साब्री को मिसेज रिजवी की मुलाकात भारत के प्रधानमन्त्री से कराने में

---

1. उद्योगपति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारी यत्न करना पड़ा। मौलाना साहब राजी नहीं हो रहे थे। मौलाना साहब का कहना था, "देखो साब्री! हमारी पौलिसी यह है कि जब तक तबलीग वगैरा के तरीकों से मुसलमानों की तादाद हिन्दुओं से ज्यादा या बराबर नहीं हो जाती तब तक हिन्दुओं में से अपने मुआफिक अफसरों से 'तावान' हासिल किया जाये। यह निजाम एक बहुत बड़ी गलती कर रहा है। 'स्टैंड–स्टिल' करार मंजूर कराने में मुझे और पंडित जी को बहुत कोशिश करनी पड़ी थी। 'वजारत' में सरदार के हमख्यालों की तादाद बहुत ज्यादा है। वे इस करार को नहीं चाहते थे। उनका कहना था कि जैसा इन्तजाम दूसरी रियासतों से हुआ है, वैसा ही हैदराबाद से हो।"

साब्री ने बात बीच में ही काट कर कह दिया, "मगर हुजूर! हैदराबाद की हालत तो दूसरों से मुख्तलिफ है न?"

"जो कुछ फर्क निजाम और दूसरी रियासतों में सरकार अंग्रेजी ने माना था वह निजाम की अपने हम–मजहबों और हम–वतनों से गद्दारी की वजह से था। दूसरे, मसलन मैसूर और मरहटे तो अंग्रेजों से लड़े थे। मगर हैदराबाद हमेशा अंग्रेजों की तरफ रहा था। इस किस्म की तवारीख से तो आज का आजाद मुल्क निजाम को वह तरजीह नहीं दे सकता जो अंग्रेजों ने किसी वक्त दी थी।

"ये सब दलीलें सरदार पटेल हम सबके सामने देता है और हमारा मुँह बन्द हो जाता है। इसके अलावा निजाम ने अपनी रियासत में हिन्दुओं की तादाद को कम करने की कोशिश नहीं की।

"साब्री! अब यह उस करार को तोड़ना चाहता है जिसको मैंने कराया था। इस अर्सा में उसको अपनी रियाया से ऐसा सलूक करना चाहिए था कि जिससे वे आजाद भारत से हैदराबाद को अच्छा समझने लगती।

"एक यह लायक अली है जो उसको औरंगजेब का जांनशीन बनाना चाहता है। और मैं कहता हूँ कि औरंगजेब ने मुगलिया सल्तनत को जड़ से उखाड़ फेंका था। और यह निजाम उसमानियाँ खानदान और मुल्क की जड़ों में तेल दे रहा है। मेरी हमदर्दी उससे नहीं है।"

साब्री के मन में एक हजार रुपये का लालच समा रहा था। उसने दलील करनी शुरू कर दी। वह वकील रह चुका था और अपनी जिन्दगी में हमेशा दुर्बल मुकदमे लेकर उनको जीतने की कोशिश करने में विख्यात था। उसने मिसेज रिजवी के असफल मुकदमे की वकालत आरम्भ कर दी। उसने कहा, "हजरत! एक बात आप हमेशा भूल जाया करते हैं। मकसद इस्लाम की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहबूदी और तरक्की है। इसके लिये एक से ज्यादा तरीके हैं। हमारा तरीका एक है। पाकिस्तानी मुसलमानों ने दूसरा तरीका ठीक समझा है। हम तबलीग पर जोर देते हैं। वे कत्लो–खून का तरीका ठीक समझते हैं। खुदा किसको मंजूर करता है, हम कैसे बता सकते हैं? हमको अपने तरीके पर काम करते रहना चाहिए और दूसरों को उनकी राह पर चलते देना चाहिए।

"यह औरत एक मुख्तलिफ तरीका लेकर आयी है। वह अपने हुस्न और जलाल का इस्तेमाल करना चाहती है। हम कौन हैं जो इस तरीके को गलत कहें! इस तरीके से भी क्या इस्लाम की तरक्की नहीं हुई?

"मेरी इल्तजाह है कि उसको अपना तरीका इस्तेमाल करने की इजाजत देनी चाहिए।"

"इजाजत का सवाल कैसे पैदा हो गया? तुम तो उसकी मदद की बात कह रहे हो?"

"इस मुआमले में इजाजत ही मदद है। आप उसकी वजीरे–आजम से मुलाकात का इन्तजाम कर दें। बस यही वह चाहती है। आपको उसके तरीकों की ताईद नहीं करनी।"

"भला मैं कैसे ताईद कर सकता हूँ! एक साठ साल की उमर का बूढ़ा मर्द एक हसीन और जवान औरत की ताईद कैसे कर सकता है।"

इस पर साब्री ने मुस्कराते हुए कहा, "नहीं जी! मेरा यह मतलब नहीं। मेरे कहने का मतलब यह है कि निजाम के मुताल्लिक आपने कुछ नहीं कहना।"

इस पर शमा बोल उठी, "मालूम होता है कि ये मियाँ उसके हुस्न और जलाल की रिश्वत ले चुके हैं?"

"लाहौल बिला! बेगम! मैं उतना ही वफादार खाबिन्द हूँ जितनी कि मेरी शमा अपने खाविन्द की वफादार बीवी है।"

इस पर तोनों हँसने लगे।

इस हँसने ने बात बना दी और साब्री साहब की जेब में एक हजार रुपये के रिजर्व बैंक आफ इंडिया के नोट आ गये।

: 9 :

हैदराबाद से स्टैंड–स्टिल करार का मतलब यह था कि जो संबंध हैदराबाद के अंग्रेजों के साथ थे, वही भारत सरकार से रहेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंग्रेजों के काल में सरकार का रियासत के भीतरी विषयों में भी दखल था। सिकन्दराबाद में अंग्रेजी सेना रहती थी। वहाँ उसके पास एक बहुत बड़ा अस्त्र–शस्त्रागार था। वहाँ अंग्रेजी रेजिडेन्ट होता था जो निजाम को इन्तजाम में राय दिया करता था। इसमें से भारत सरकार ने यह रियायत दे दी थी कि वहाँ से सेना हटा ली जायेगी। रेजिडेंट रहेगा मगर वह रियासत में भारत के हितों की देखरेख करेगा। वह रियासत के सामान्य प्रबन्ध में हस्तक्षेप नहीं करेगा, परन्तु इस करार में यह बात स्पष्ट लिख दी गयी थी कि रियासत के बाहरी मआमलों में रियासत भारत सरकार से राय किये बिना कुछ नहीं कर सकेगी। निजाम ने इस शर्त को तोड़ा था। निजाम ने पाकिस्तान को बीस करोड़ रुपये का ऋण दिया और अपने राजदूत दूसरे मुल्कों में भेजने आरम्भ कर दिये। यह बीस करोड़ रुपया भारत के नाम हुंडियों में था। इससे भारत सरकार ने हैदराबाद राज्य को ऐसे कामों से मना करने का यत्न किया। इस पर हैदराबाद का एक आयोग बातचीत करने के लिए नई दिल्ली में आया। जब बातचीत चल रही थी, भारत का प्रधानमन्त्री उस करार की पाबंदी पर बल दे रहा था।

इस स्थिति में मिसेज रिजवी की भेंट प्रधानमन्त्री से हुई और उस भेंट के एक सप्ताह उपरान्त लार्ड माउन्टबेटन की बातों का रंग बदल गया। सरदार पटेल और मन्त्रिमण्डल के दूसरे लोग इस बात को अनुभव करने लगे थे।

लायक अली ने जब यह आश्वासन दिलाया कि बीस करोड़ रुपये की हुंडियाँ जो पाकिस्तान को ऋण के रूप में दी गयी हैं, तुड़वाई नहीं जायेंगी, तो भारत के गवर्नर प्रसन्न हो गये। वे कहने लगे कि भारत का यह पक्का निश्चय है कि 'स्टैंड–स्टिल्ल' करार लागू रहेगा और लायक अली छोटी–छोटी बातों को पूरी कर दें जिससे दोनों मुल्कों में सम्बन्ध सुखद हो जायें।

एक बात और हुई। मन्त्रिमण्डल में प्रधानमन्त्री ने यह कह दिया कि अगर हैदराबाद के साथ किसी प्रकार की सख्ती की गयी तो हमें कश्मीर के सम्बन्ध में पाकिस्तान की बातें माननी पड़ेंगी।

"यह क्यों?" सरदार पटेल का प्रश्न था।

"कश्मीर में मुसलमानों की संख्या अधिक है और हैदराबाद में हिन्दुओं की। कश्मीर में हिन्दू राजा है और हैदराबाद में मुसलमान। दोनों रियासतें समान स्थिति में हैं। सन् 1946 में कश्मीर में मुसलमानों ने बलवे किये थे और यहाँ हिन्दू बलवे कर रहे हैं।"

 CC-0. Jn Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हिन्दु? क्या रजाकार हिन्दू हो गये हैं?" डॉ. मुखर्जी ने पूछ लिया।

"नहीं। मेरा मतलब तेलंगाना के कम्युनिस्टों से है।"

"प्रधानमन्त्री की वाकफियत के लिए मैं यह कह दूँ तो ज्यादा ठीक होगा कि ये तेलगाना के कम्युनिस्ट वालिये रियासत का विरोध नहीं कर रहे। बल्कि वे तो जनता को लूट–पीट रहे हैं।" मुखर्जी ने समझाने का यत्न किया, "ये भारत के क्षेत्रों में भी डाके डाल रहे हैं।"

"मैं गाँव के बनिये और वालिये रियासत में फर्क नहीं समझता। दोनों बुर्जुआ हैं। दोनों किसानों का खून चूस रहे हैं।"

"मगर पण्डित जी! बनिया भारत का पक्ष ले रहा है और निजाम पाकिस्तान का पक्ष ले रहा है।"

इस पर सरदार ने बात का सूत्र पुनः अपने हाथ में लेते हुए कहा, "हमने यह फैसला किया है कि भारत में राज्य सेक्युलर होगा। यह हिन्दू और मुसलमान में भेद–भाव नहीं करता। न ही यह कम्युनिस्टों और गैर–कम्युनिस्टों में फर्क समझता है।"

प्रधानमन्त्री ने बात बीच में ही रोक कर कह दिया, "कम्युनिस्टों की बात दूसरी है। उनका कोई मजहबी फिरका नहीं है।"

"कम्युनिस्ट भी तो एक मजहब ही है। इसका आविष्कार करने वाले ने इसको इज्म का नाम दिया है और इसमें भी आत्म–अभ्युदय का एक तरीका ही है। ठीक जैसा इस्लाम और ईसाइयत में है।"

इस पर प्रधानमन्त्री हँसकर बोल पड़े, "भला किस खुदा को ये कम्युनिस्ट मानते हैं?"

"शैतान को। मेरा मतलब है दुनियावी कामनाओं को। इनका यही खुदा है। मैं उनको ठीक अथवा गलत नहीं कहता। मेरा तो सिर्फ इतना ही कहना है कि कुछ लोग हैं जो इनके मजहब को नहीं मानते और ये उनको लूट रहे हैं।"

"मगर डाक्टर साहब ने कहा है कि वे निजाम की मदद करते हैं। तो वे उनके मजहब के पैरौ हैं क्या?"

उत्तर सरदार ने ही दिया। "दोनों मजहब एक जैसे ही हैं। मेरा मतलब है इस्लाम और कम्युनिज्म। फर्क सिर्फ इतना है कि जहाँ इस्लाम शराब, हूरें और लजीज खाने जन्नत में मिलने की बात कहता है वहाँ कम्युनिस्ट मुल्कों में ये सब कुछ कम्युनिस्ट नेताओं को मिलने का वचन है। यह इस्लाम से ज्यादा खतरनाक है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"देखिये, मैं कह रहा था कि हमारे लिये सब बराबर हैं। इसलिये हमको हिन्दू, मुसलमान और राजा अथवा प्रजा के विषय में विचार करने की आवश्यकता नहीं। हमारा दृष्टिकोण तो यह हो कि सब रियासतें जो भारत के साथ लगती हैं अथवा जो भारत में आना चाहती हैं, हम अपने साथ ले लेंगे। भले ही उनमें मुसलमान ज्यादा हों या हिन्दू ज्यादा हों।"

"तो दोनों के मसले एक जैसे हैं?"

"बिलकुल!"

"तो दोनों को होम डिपार्टमैण्ट की फाइल पर ले जाना चाहिए।"

"क्या हर्ज है इसमें?"

"और कश्मीर में जो सेना गयी हुई है?"

"वह कल से पुलिस घोषित कर दी जायेगी।"

"मगर सैनिक गृहमन्त्री के अधीन रहना नहीं चाहेंगे।"

"तो गृहमन्त्री नये सैनिक भरती कर लेगा। उनसे यह शर्त कर लेगा कि वे पुलिस में हैं। सेना में नहीं हैं।

"मैं कश्मीर में विदेश मन्त्रालय का प्रबन्ध रखना चाहता हूँ।"

"और मैं हैदराबाद को गृहमन्त्री के अधीन रखना चाहता हूँ।"

"मगर उस रियासत ने अभी भारत से विलय स्वीकार नहीं किया।"

"मेरा तो यह कहना है कि हैदराबाद अंग्रेजी काल में वाइसराय–हिन्द के अधीन था और वाइसराय के सब अधिकार भारत सरकार को मिल चुके हैं। इसलिये हैदराबाद सरकार माने चाहे न माने, वह भारत सरकार के अधीन है और उसका भारत के साथ विलय निश्चित है।"

"तब ठीक है। गृहमन्त्रालय हैदराबाद से फैसला करे और विदेश मन्त्रालय कश्मीर से।"

इस पर डॉ. मुखर्जी बोल उठे, "भारत का यह बँटवारा हम पसन्द नहीं करते। हम दोनों पर पूरे मन्त्रिमण्डल का दखल समझते हैं।"

"मन्त्रिमण्डल के अधीन तो है ही। फिर भी मैं यह चाहता हूँ कि मन्त्रिमण्डल की इच्छा गृहमन्त्री और विदेश मन्त्री द्वारा ही व्यक्त हो।" यह गृहमन्त्री का कहना था।

इस पर प्रधानमन्त्री कहने लगे, "मन्त्रिमण्डल सामान्य नीति का निश्चय कर सकता है। परन्तु मैं कश्मीर के विषय में किसी दूसरे का हस्तक्षेप पसन्द नहीं करूँगा।

"यह मेरे मान–अपमान और मेरे सिद्धान्तों का प्रश्न है। मैं इस विषय पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
प्रधानमन्त्री पद से त्यागपत्र भी दे सकता हूँ और फिर पार्टी में पूर्ण समर्थन प्राप्त करने का यत्न करूँगा।''

इस धमकी ने बात समाप्त कर दी।

मन्त्रिमण्डल का यह वार्तालाप शिक्षा मन्त्री ने रात खाने पर अपने प्रिय जाती सेक्रेटरी को सुनाया तो साब्री ने पूछ लिया, ''तो इस धमकी का उत्तर किसी ने नहीं दिया?''

''भाई! इसका उत्तर किसके पास हो सकता है? आज पण्डित नेहरू की जनता में इज्जत इतनी है कि सारी–की–सारी वजारत मिल कर भी उनको चुनाव में हरा नहीं सकती।''

''यह तो बहुत अच्छी बात है, मगर नेहरू साहब ने हैदराबाद का मसला सरदार के हाथ में देकर सब घोटाला कर दिया है।''

''बात यह है कि आज तक तो इस मसले पर नेहरूजी और पटेल एक राय थे, मगर कुछ दिन से दोनों में फर्क दिखाई देने लगा था। मुझको यह समझ आया है कि यह फर्क उस औरत कौशल्या के पण्डित जी से मिलने के बाद पैदा हुआ है। बात तो सरदार पटेल की थी। वे अड़ गये और वजारत की कसीर राय उसके साथ थी। इस वास्ते प्रधानमन्त्री को झुकना पड़ा था। वे समझने लगे थे कि हैदराबाद के साथ कहीं कश्मीर का मसला भी उनके हाथ से न निकल जाये। इसलिये उनको यह धमकी देनी पड़ी। सरदार इस चुनौती को मन्जूर नहीं कर सका।''

इस पर शमा ने कह दिया, ''तो नेहरूजी ने कश्मीर को भारत में मिलने से बचा लिया है।''

इस पर मौलना हँसकर कहने लगे, ''हाँ! शमा के कहने में सच्चाई तो है। नेहरूजी ने कश्मीर के भारत से इल्हाक को अभी तक रोक रखा है। मगर मेरा तो यही कहना है कि मुसलमान में बेकार जबरदस्ती और जल्दबाजी कर ऐसे हालात पैदा कर रहे हैं कि कश्मीर भारत से अलहदा रह नहीं सकेगा। पाकिस्तान और शेख की जार्र[1] कार्रवाइयों से भारत इतना भड़क उठेगा कि फिर नेहरू साहब भी इसके इल्हाक को रोक नहीं सकेंगे।''

इस पर साब्री ने पूछ लिया, ''मगर जनाब! एक बात हमको समझ नहीं आ रही। ये नेहरूजी कश्मीर के मुकम्मिल इल्हाक को रोक क्यों रहे हैं? जंग के मौका पर तो जबरदस्ती भी चल सकती थी। बावजूद इसके इन्होंने कह

---

1. आक्रामक।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
दिया है कि जंग के बाद राय–आम से यह फैसला होगा फि कश्मीर का क्या हो?"

मौलाना गम्भीर हो गये। कुछ देर तक मुख का ग्रास चबाते हुए चुपचाप बैठे रहे। फिर कहने लगे, "मैं उनके दिल की बात तो जानता नहीं, मगर जो कुछ वे मुँह से कहते हैं उसका मतलब है कि इस जम्हूरियत के जमाने में कुछ भी बात लोगों की राय के बिना करना गलत होगा। मगर यह दलील इसलिये ठीक नहीं मालूम होती क्योंकि पाकिस्तान बिना राय आम के मंजूर कर लिया गया था। जून में कांग्रेस कमेटी के इजलास में भी कसीर राय यह थी कि देश का बँटवारा न हो। यह तो गांधी जी ने अपने रसूख से और मिन्नत–समाज से नेताओं की इज्जत बचाने की कोशिश कर दी और पाकिस्तान वजूद में आ गया। अब कश्मीर के हिन्दुस्तान में शामिल करने के वक्त राय–आम का झगड़ा तो समझ में न आने वाली बात मालूम होती है।

"मगर मेरा कयास है कि पण्डितजी कश्मीर को स्विट्जरलैण्ड की तरह आजाद मुल्क देखने की ख्वाहिश रखते मालूम होते हैं। शेख अब्दुल्ला भी यही चाहता मालूम होता है। इसको ये दोनों लीडर एकदम तो कह नहीं सकते। हाँ, वे इसके लिये जमीन तैयार कर रहे हैं।"

"क्या इस किस्म का कोई इशारा मिला है?"

"यह मेरा अन्दाज है। इस पर भी यह बे–बुनियादी नहीं।"

"क्या यह मुल्क के साथ गद्दारी नहीं है?"

"इसका नाम गद्दारी तब ही हो सकता है जब ये अमल में लायी जाये या मुख से बोली जाये। अभी तक ऐसा हुआ नहीं। यह मेरा कयास है और मेरा कहना है कि यह इन दोनों के दिमाग में हो सकता है।"

: 10 :

साब्री नित्य की भाँति इम्पीरियल में दो घूँट शराब पीने गया तो वहाँ एक बिलकुल नया पक्षी मिल गया। बैरा मेज पर शराब की बोतल तथा गिलास रखकर सामने खड़ा रहा। जब वह वहाँ से हटा नहीं तो साब्री ने उसकी ओर प्रश्नभरी दृष्टि से देखा। इस पर बैरे ने एक कदम आगे होकर कुछ झुक कर धीमी आवाज में पूछा, "आप साब्री साहब हैं?"

साब्री ने हैरानी से बैरे के मुख पर देखा। उसको कुछ यह समझ आया कि उसने इस बैरे को पहिले कहीं देखा है। यद्यपि वह स्मरण नहीं कर सका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कि कहाँ देखा है। इस पर भी उसको यह तो याद था कि वह भी कोई पाकिस्तानी जासूस है जो इस होटल में ठहरने वाले मेहमानों पर जासूसी करता है। इस विचार के आते ही उसने कहा, "यह तो ठीक है कि मैं साब्री हूँ मगर किस लिये पूछ रहे हो?"

"आप मुझको पहिचानते नहीं क्या?"

"तुमको देखा तो है, मगर याद नहीं आ रहा कि कहाँ देखा है?"

"मैं जॉन हूँ। कायदेआजम साहब का बटलर।"

साब्री को स्मरण हो आया और उसने मुसकराते हुए कहा, "ठीक है, तुमको बम्बई में उनके आगे–पीछे घूमते देखा है। मगर यहाँ क्या कर रहे हो?"

"मुझको नौकरी से निकाल दिया गया है।"

"क्या खराबी की थी वहाँ तुमने?"

"अपनी जानकारी में कुछ खराबी नहीं की। यह तो गवर्नर जनरल बहादुर की खिदमत में आयी एक जवान औरत के चुगली खाने का नतीजा मालूम होता है।"

"खैर! ये तो खानगी बातें हैं। यहाँ क्या कर रहे हो?"

"इस होटल में नौकरी मिल गयी है।"

"तो अब खुश हो?"

"हाँ! जब तक वहाँ मालिक खुश थे बहुत आजादी और मजा रहा, मगर उस औरत ने न जाने क्या जादू चलाया कि मुझे कराची में कैद करने का हुक्म सादर कर दिया गया।"

"तो यहाँ कैसे आ गये?"

"चलती रेलगाड़ी से कूद कर भाग आया हूँ।"

"ओह! मरे नहीं?"

"यह तो आप देख ही रहे हैं कि सही–सलामत हूँ। कुछ घुटनों और कुहनियों पर रगड़ें लगी थीं।"

"मेरी राय मानो इस होटल की नौकरी छोड़ दो। यहाँ पाकिस्तानी जासूसों का जाल बिछा है।"

"मुझको सब मालूम है। मैं उन सब को जानता हूँ जो यहाँ हैं। आपकी बाबत भी उनसे ही जान सका हूँ। मैं उनकी मदद करता रहता हूँ। इसलिए वे मुझे मोतबर शख्स समझते हैं।"

"तो भाई ठीक है। मगर मुझे खबरदार रहना। मैं तो भारत सरकार की नौकरी में हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जी! आपके मुताल्लिक सब कुछ जान चुका हूँ। सिर्फ आप से मेरी बम्बई की जान–पहिचान को ये दूसरे लोग नहीं जानते। मैं कई दिन से आप को देख रहा हूँ। कुछ ऐसा इत्तफाक होता रहा है कि आपकी खिदमत करने का मौका पहले नहीं मिला मैं यह कहना चाहता था कि मैं भी आपकी कुछ खिदमत कर ही सकता हूँ।"

"अच्छा! तो करो।"

"मिसेज रिजवी अभी दिल्ली में ही हैं और आपसे मिलने के लिए कह रही थीं।"

साब्री ने हैरानी जाहिर करते हुए कहा, "वह कहाँ है और तुमको कब मिली थी?"

"वह कुछ दिन तक इस होटल में ठहरी थीं और तब मेरी उनसे बाकिफीयत हो गयी थी। वह चाहती थीं कि मैं होटल की नौकरी छोड़ कर तालीमी वजीर साहब का बटलर बन जाऊँ और इसमें आप मेरी मदद कर सकेंगे।"

"मगर वह यह क्यों चाहती थी?"

"उसका कुछ मतलब रहा होगा। वह उसने अभी बताया नहीं।"

"तो तुम नौकरी करने को तैयार हो?"

"हाँ हुजूर! अगर कुछ तरक्की भी हो जाये तो जहे किस्मत।"

"यहाँ क्या पाते हो?"

"तनख्वाह तो कुछ ज्यादा नहीं। पचपन रुपये मिलते हैं, मगर टिप–मनी के दो सौ रुपये माहवारी के करीब बन जाते हैं।"

"और इससे गुजर हो जाता है?"

"बात यह है कि किसी रईस के घर नौकरी मिल जाये तो खाने को अच्छा मिल सकता है। तनख्वाह भले ही कुछ कम बैठे।"

"भाई! इतना कुछ तो नहीं मिल सकता। इस पर भी तुम्हारे लिए कोशिश कर दूँगा। एक सौ रुपया महीना, वर्दी और खाना मालिक का बचा हुआ।"

"मंजूर है।"

"साथ ही कानों से बहरों और आँखों से अन्धों की तरह काम करना होगा।"

"यह करने की तो आदत है।"

"हाँ! अगर तुम चाहो तो पाकिस्तान वापिस भेजे जा सकते हो?"

"मुझको लाहौर से खबर मिली है कि मेरी बीवी अन्ना भी लाहौर किले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
में बन्द कर दी गयी थी, मगर वह भी किसी तरह भागने में कामयाब हो गई है। उसका अभी तक पता नहीं चला। वह भी भाग कर भारत में आई होगी और किसी न किसी दिन दिल्ली आयेगी। उससे मिलने की उम्मीद में यहाँ पड़ा हूँ।"

"मालूम होता है कि तुम दोनों मियाँ–बीवी ने कोई बहुत बड़ा जुल्म किया है जो एक नेक और रहमदिल हाकिम तुम्हारे पीछे हाथ धोकर पड़ गया है। कहो तो तुम्हारी सिफारिश कर सकता हूँ।"

"कर दीजिए। मगर मैं अपनी बीवी की खोज में हूँ।"

"उसके मुताल्लिक इश्तिहार कर दो। जहाँ होगी, आ आवेगी।"

"यह ख्याल पहिले भी किसी ने सुझाया है, मगर मैं आम लोगों की नजर में नहीं आना चाहता।"

"अच्छा। मुझको इसी वक्त मिला करो।"

"और मिसेज रिजवी से आप कब और कहाँ मिल सकेंगे?"

"उसको कह दो कि कल यहीं मिल ले।"

"कह दूँगा।"

साब्री को समझ आया कि यह जॉन झूठ बोल रहा है कि वह पाकिस्तान से भाग कर आया है। जरूर वह किसी बड़े काम के लिए यहाँ बैठा है।

वह सोचता था कि वह मौलाना की नौकरी क्यों चाहता है? एक बात उसको समझ में आ रही थी कि मिसेज रिजवी से जॉन का गहरा सम्बन्ध है। उससे मिलने पर पता चल सकेगा।

अब्दुल रशीद साब्री अगले दिन होटल में आया, मगर न तो जॉन के दर्शन हुए, न ही मिसेज रिजवी के। समाचार पत्रों में कुछ इस किस्म की बातें मशहूर हो रही थीं कि जिन्ना साहब बीमार हैं और सेहत सुधारने के लिये कोहमरी गये हुए हैं। साब्री स्वयं भी इस बात की चिन्ता में था। वह इस विषय में सत्य बात जानने की इच्छा रखता था। उस दिन वह उठ कर जाने लगा तो पाकिस्तानी हाई कमिश्नर का एक भेदिया दिखाई दिया। वह जाता–जाता रुक गया और उसके पास खाली कुर्सी पर बैठ 'गुड ईवनिंग' कह कर पूछने लगा, "जिन्ना साहब के बारे में अखबारों में एक खबर छपी है। उसमें कितनी सच्चाई हो सकती है?"

"मैं जिन्ना साहब का 'मेडिकल अटैन्डैन्ट' नहीं हूँ।"

साब्री ने मुस्कराते हुए कहा, "साहब! मैं यह जानता हूँ, मगर मैं यह भी जानता हूँ कि आप पाकिस्तानी हाई कमिश्नर के गहरे दोस्तों में हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"शट–अप।" उसने कहा।

साब्री एकदम उठ कर चला आया। वह समझ नहीं सका कि यह आदमी क्यों नाराज हो गया है। साब्री परेशानी अनुभव करता हुआ होटल के हाल से निकल दरवाजे पर पहुँचा था कि उसे मिसेज रिजबी मोटर से उतरती दिखाई दी। वह द्वार के एक तरफ खड़ा हो गया। वह उससे बात करना चाहता था, मगर उसके साथ एक औरत थी और रिजवी उसके साथ होटल में चली गयी। उसने साब्री को खड़े देखा परन्तु उसने यह प्रकट किया मानो वह साब्री को नहीं जानती।

साब्री इस नयी परिस्थिति से और भी विस्मय में पड़ गया। वहाँ खड़े एक बावर्दी चौकीदार से पूछने लगा, "यह औरत कौन थी?"

"एक तो होटल में ठहरी हुई है और दूसरी यहाँ आती–जाती तो है, मगर मैं जानता नहीं।"

"देखो, उस गाड़ी वाले से पता करो तो एक रुपया इनाम पा जाओगे।"

उस दरबान ने सिर हिला कर कह दिया, "आप जरा भीतर चले जाइये, पता करने की कोशिश करता हूँ।"

साब्री वापिस हाल की तरफ चल पड़ा। इतने में वह औरत जो रिजवी के साथ थी, वापिस आती हुई दिखाई दी। साब्री बाहर लौट आया। दरबान अभी मोटर वाले से पूछने भी नहीं गया था कि वह औरत लपक कर खड़ी मोटरों की तरफ चली गयी।

अगले दिन साब्री ने शमा को उस औरत की रूप–रेखा बता कर पूछा कि वह कौन हो सकती है। शमा ने कुछ विचार कर बताया, "जहाँ तक मैं समझती हूँ कि यह नक्श मिसेज जोशी का है। लम्बी–पतली, गोरी और कटे बाल। मालूम वही होती है।"

"यह क्या है?"

"कुछ नहीं! दिल्ली की एक सोशलिस्ट नेता थी और अब कांग्रेस में आ गयी है। मंत्रियों से बहुत मेल–जोल रखती है। मगर यह, कम से कम हमारे दफ्तर में कुछ नहीं।"

इस पर भी साब्री को मिसेज रिजवी से भेंट करने और जॉन के विषय में जानने की इच्छा बनी रही। उसको पाकिस्तानी हाई कमिश्नर के एक विशेष आदमी से 'शट–अप' का आशीर्वाद सुन बहुत हैरानी हुई थी।

एक बात से साब्री को संतोष हुआ। वह यह कि मिसेज रिजवी अभी इम्पीरियल होटल में ही है। वह उस रात के उपरान्त कितनी ही रातों तक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
होटल में जाता रहा, मगर न तो उसको जॉन के दर्शन हुए और न ही मिसेज रिजवी के। उसने एक दिन होटल के कार्यालय में बैठे क्लर्क से मिसेज रिजवी का नाम लेकर पता किया तो उसने रजिस्टर देख कर बताया, इस नाम की कोई औरत हमारे यहाँ कई दिन से नहीं ठहरी। साब्री ने समझ लिया कि रिजवी अपना नाम बदल कर यहाँ ठहरी होगी।

साब्री को मौलाना साहब की नौकरी में रहते हुए बहुत मान–प्रतिष्ठा मिलती थी। वह शिक्षा मंत्री के पर्सनल असिस्टेन्ट होने के नाते सब से मिल सकता था। इस सुविधा के कारण वह प्रधानमंत्री से ले कर स्कूल–कालेजों के मास्टरों तक से भी मिलता रहता था। उसके अपने नाम के कार्ड, जिन पर उसकी पदवी छपी थी, उसके पास सदा रहते थे।

एक दिन शिक्षा मन्त्री ने अपनी एक प्राइवेट चिट्ठी पंडित जवाहर लाल जी को भेजनी थी। शिक्षा मन्त्री चाहते थे कि चिट्ठी किसी और के हाथ में न पड़े। वह चिट्ठी उन्होंने अपने हाथ से उर्दू में लिखी थी। इस चिट्ठी में लिखी बात साब्री को भी पता नहीं थी।

बहुत सुबह मौलाना साहब ने वह पत्र साब्री को देते हुए कहा, "देखो साब्री! यह चिट्ठी बिल्कुल खुफिया है। इसको पंडित जी के अपने हाथ में ही देनी है। यह कहीं गुम न हो जाये।"

साब्री तीन मूर्ति वाले प्रधानमन्त्री के भवन में जा पहुँचा। उसके अपने नाम का कार्ड उसके लिये कोठी के अंतिम प्रवेश द्वार तक पहुँचने में परवाना राहदारी साबित हुआ। यों तो वह पहिले भी कई बार कोठी पर आया था, मगर अकेले आने के बहुत कम अवसर होते थे। प्रधानमन्त्री के पी.ए. ने कार्ड लिया और भीतर चला गया। और दस मिनट की प्रतीक्षा पर वह साब्री को पंडित जी के पास ले गया।

पंडित जी प्रातः का अल्पाहार ले रहे थे। खाने के कमरे में वे अकेले थे और उनके पीछे जॉन हाथ मैं खाली प्लेट लिये खड़ा था। चपरासी साब्री को कमरे में दाखिल कर स्वयं बाहर ही रह गया।

साब्री के सामने खड़े हो हाथ जोड़ प्रणाम करने पर पंडित जी प्रश्न भरी दृष्टि से उसकी तरफ देखने लगे। साब्री ने अपने पोर्ट–मैन्ट्यू में से मौलाना साहब का पत्र निकाल कर दे दिया। पत्र पर लाल स्याही से लिखा था 'सीक्रेट'। पंडित जी ने यह लाल स्याही से लिखा पढ़ा तो पत्र को अपनी कुर्ती की जेब में रख लिया और कह दिया, "मौलाना साहब को हमारा सलाम कहना।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
इसका मतलब था कि साब्री जा सकता है। साब्री ने एक बार जॉन की तरफ प्रश्न भरी दृष्टि से देखा, मगर जॉन दूसरी तरफ देखने लगा था मानो वह उसको जानता तक नहीं।

साब्री विवश, बिना एक भी शब्द कहे वहाँ से चला आया। वह विस्मय करता था कि यह जॉन कैसे वहाँ पहुँच गया है। वह यह जानने के लिये भी बहुत उत्सुक था कि मौलाना साहब ने चिट्ठी में क्या लिखा है।

अपनी कोठी में लौट उसने शमा को जहाँ जॉन की बात बताई, वहाँ मौलाना के पत्र के विषय में भी बताया और कहा कि पता करना चाहिए कि चिट्ठी में क्या लिखा है।

उस समय तक मौलाना अपने कार्यालय में चले गये थे।

: 11 :

यह बताना कठिन है कि भारत के नेताओं के मन में क्या बात थी जो उन्होंने लार्ड–माउन्टबेटन को स्वराज्य काल में भी भारत का गवर्नर जनरल बना रहने दिया और पाकिस्तान तथा भारत की सेनाओं का सुप्रीम कमाण्डर एक अँग्रेज फील्ड मार्शल आकलनैक को रहने दिया। यह केवल राजनयिक बात भी हो सकती थी, परन्तु इन दोनों महानुभावों का इतने मार्मिक स्थानों कै उत्तरदायित्व को स्वीकार करने में तो कारण स्पष्ट था। वे दोनों नव–निर्मित देशों में अग्रेजी सरकार की नीति चलाना चाहते थे।

अंग्रेज की नीति स्पष्ट थी। वे पाकिस्तान को एक सुदृढ़ राज्य बना कर, और उसे भारत का विरोधी रख कर, भारत पर इंग्लैण्ड का बनाये रखना चाहते थे।

फील्ड मार्शल आकलनैक का अन्त तक यह प्रकट करना कि कश्मीर पर आक्रमण पाकिस्तानी नियमित सेना का नहीं वरन् फ्रन्टियर के कबायलियों का है, पंडित नेहरू को धोखे में रखने में सफल हुआ था। और उस भ्रम का ही परिणाम था कि कश्मीर के विषय में भारत के प्रधानमन्त्री भूल पर भूल करते रहे थे। पंडित जी चिरकाल तक यह नहीं समझ सके कि पाकिस्तानी सेना की स्वीकृति और सहायता के बिना न तो कबायली भारत में प्रवेश पा सकते थे और न ही उनके पास मोटर ट्रक तथा सब प्रकार के आधुनिक शस्त्र–अस्त्र हो सकते थे। यह भ्रम जहाँ पंडित जी को अपनी अल्पज्ञता के कारण था, वहाँ फील्ड–मार्शल की भ्रमोत्पादक बातों के कारण भी था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब पाकिस्तान ने यह कहना आरम्भ किया कि कश्मीर पाकिस्तान को मिलना चाहिए, क्योंकि वहाँ मुसलमानों की संख्या अधिक है, तब कबायलियों के साथ पाकिस्तानी सेना के सहयोग की बात खुल गयी और आकलनैक साहब को इंग्लैण्ड लौट जाना पड़ा। वे इंग्लैण्ड का कार्य भली–भाँति निभा नहीं सके थे। फील्ड मार्शल के कार्य में बाधा पड़ी थी मुख्य रूप में भारतीय सेना के शौर्य और राष्ट्र भावना के कारण। किंचित् मात्र स्वीकृति मिलते ही सेना श्रीनगर हवाई जहाज के अड्डे पर जा झपटी। भारतीय हवाबाजों ने भी दिन–रात एक कर श्रीनगर के हवाई अड्डे पर ऐसे उतरना आरम्भ कर दिया जैसे भूमि पर माँस का टुकड़ा पड़ा देख आकाश में की चीले उस पर मँडराने लगती हैं और माँस पर झपटने लगती हैं। प्रति दस मिनट में एक जहाज सैनिकों और सैनिक सामान से लदा वहाँ पहुँचने लगा था।

इसके अतिरिक्त सैनिकों ने जब कबायलियों को पछाड़ा तो उनके छोड़े शस्त्रास्त्रों ने यह प्रकट करना आरम्भ कर दिया कि इस आक्रमण में पाकिस्तानी सेना का स्पष्ट हाथ था। फील्ड मार्शल को भारत से चला जाना पड़ा।

लार्ड माउन्टबेटन भी भारत को दुर्बल और पाकिस्तान को सबल बनाने में यत्नशील थे। सबसे पहिले 'रैड–क्लिफ सीमा कमीशन की रिपोर्ट' की तैयारी के उपरान्त उसमें परिवर्तन कराया गया। प्रथम संस्करण में कलकत्ता और लाहौर दोनों भारत की सीमा में थे। इससे पाकिस्तान को दुर्बल होता देख, लार्ड माउन्टबेटन के संकेत पर रैड–क्लिफ कमीशन की रिपोर्ट के दूसरे संस्करण में, लाहौर पाकिस्तान में लिखा गया। तदुपरान्त कश्मीर आक्रमण के पूर्व कश्मीर के राजा ने भारत से शस्त्रास्त्र और पेट्रोल माँगा तो भारत सरकार ने शस्त्रास्त्र देने स्वीकार कर भी किसी अज्ञात कारण से नहीं भेजे। पंडित नेहरू जी ने अपनी सेना भेजने के समय रेडियो पर बोलते हुए यह माना था कि कश्मीर के राजा ने भारत सरकार से शस्त्रास्त्र माँगे थे, परन्तु वे नहीं भेजे गये। इसमें स्पष्ट रूप में भारत के गवर्नर जनरल और प्रधानमन्त्री का हाथ प्रतीत होता था। पीछे जब प्रधानमन्त्री ने कश्मीर का भारत से विलय स्वीकार किया तो लार्ड माउन्टबेटन के कहने पर प्लैबिसाइट की शर्त लगा दी गई। यह कहा जाता है कि जब मन्त्रिमण्डल ने विलय की पुष्टि की थी, तब यह प्लैबिसाइट की बात नहीं थी। यह बात तो पीछे नेहरू जी ने रेडियो पर बोलते हुए ही बताई थी।

लार्ड माउन्टबेटन ने तो, कश्मीर में लड़ाई आरम्भ होने के कुछ ही दिन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पीछे पाकिस्तान से युद्धबन्दी और संयुक्त राष्ट्र संघ में बात ले जाने का प्रस्ताव कर दिया था।

यदि गवर्नर जनरल बहादुर और फील्ड मार्शल महोदय का बस चलता तो कश्मीर–वादी पाकिस्तान को 1947 में ही मिल जाती।

यदि यह नहीं मिली तो इसमें जिन्ना साहब की हठधर्मी ही थी। वे उस समय न तो प्लैबिसाइट चाहते थे और न ही युद्ध बन्द कर संयुक्त राष्ट्र संघ में जाना। जिन्ना साहब को पाकिस्तानी सेना के विजयी होने का पूर्ण विश्वास था। वह राजा हरिसिंह के श्रीनगर में रहते हुए तथा हिन्दुस्तानी सेनाओं की वहाँ उपस्थिति में मतदान में कश्मीर पाकिस्तान के हक में होने पर विश्वास नहीं रखते थे।

यदि सत्य दृष्टि का अवलम्बन कर वे माउन्टबेटन का प्रस्ताव मान जाते तो लार्ड माउन्टबेटन अपने भारत में पड़े रहने का फल प्राप्त कर लेते। कश्मीर का कम से कम कश्मीर–वादी सहित गिलगित, मुजफ्फराबाद, पुंछ, राजौड़ी, सब पाकिस्तान के अधिकार में चला जाता। जिन्ना नहीं माने और वीर भारतीय सेना पाकिस्तानी सेना को पछाड़ती चली गई। वही बात जो माउन्टबेटन पाकिस्तान को प्रथम नवम्बर 1947 को मनाना चाहते थे, वह पाकिस्तान ने विवश होकर प्रथम जनवरी 1949 को मान ली। परन्तु इस एक वर्ष और दो मास के काल ने अंग्रेजी षड्यन्त्र को विफल कर दिया।

दूसरी ओर हैदराबाद में भी अपनी योजना विफल होती देख लार्ड माउन्टबेटन इंग्लैण्ड लौट गये।

हैदराबाद में भारत के साथ 'स्टैंड–स्टिल' करार मौलाना और माउन्टबेटन के विपुल यत्न से हुआ था। पंडित नेहरू तो केवल कठपुतली थे। सरदार इस करार को पसन्द नहीं करते थे, परन्तु घटनाओं से विवश हो मान रहे थे। यदि यह ऐग्रीमेन्ट रहता और निजाम, भारत के गवर्नर जनरल की नीति को समझ उस पर आचरण करता तो आज हैदराबाद भारत के मध्य में एक स्वतन्त्र राज्य बन सकता था। निजाम ने माउन्टबेटन पर विश्वास करने के स्थान पाकिस्तान के जिन्ना साहब पर विश्वास करना उचित समझा। जिन्ना साहब की सिफारिश पर लायक अली हैदराबाद के वजीरे आजम नियुक्त किये गये। उन्होंने अपनी इच्छा से हैदराबाद की वजारत बनाई। उसमें एक हिन्दू श्री जे. बी. जोशी भी थे। यह वजारत रियासत के रजाकारों की सहायक हो गई।

यथार्थ बात यह थी कि सन् 1946 और 1947 के एक वर्ष में मुसलमानों ने कलकत्ता, नोआखाली, बिहार, यूपी, बम्बई, अहमदाबाद, दिल्ली और व्यापक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूप में पंजाब में कत्ल, लूट–पाट, अग्नि काण्ड और स्त्रियों के अपहरण सम्पन्न कर तथा कांग्रेसी हिन्दुओं को डरा कर पाकिस्तान बनाया था। इस कारण, इसी प्रकार हैदराबाद को भी वे पाकिस्तान में सम्मिलित करने की अथवा हैदराबाद को स्वतन्त्र देश बना लेने की आशा करते थे। वे एक बात भूल रहे थे कि उस समय उनके बलवे इत्यादि के सफल होने में सबसे बड़ा कारण अंग्रेजी सरकार थी। लार्ड माउन्टबेटन यह जानते थे। कदाचित् उनको यह विदित था कि इन अत्याचारों की हिन्दुओं की ओर से प्रतिक्रिया होने में अंग्रेज अधिकारी कितने बाधक थे। अंग्रेज कांग्रेस को डराते रहते थे कि हिन्दुओं के प्रतिकार से गृहयुद्ध छिड़ जायगा। और नेता लोग अनुभवहीनता तथा मानसिक दुर्बलता के कारण युद्ध से डर जाते थे। वे यह नहीं समझ सके कि गृह–युद्ध तो हो रहा था। यह एक पक्ष की ओर से युद्ध ही था। परन्तु जिन्होंने कभी मानवरक्त के दर्शन नहीं किये थे, वे भयभीत हो रहे थे।

मुसलमान भारत की कांग्रेसी सरकार से यही आशा करते थे। लार्ड माउन्टबेटन ने अंग्रेजी काल के अंग्रेज अफसरों की नीति का अवलम्बन कर 'स्टैंड स्टिल' ऐग्रीमेन्ट कराया था। परन्तु कश्मीर की भाँति हैदराबाद के विषय में भी मुसलमानों ने जिन्ना के नेतृत्व में अंग्रेज की बात नहीं मानी और निराश हो लार्ड माउन्टबेटन, भारत में अपनी नीति को प्रभावहीन होता देख गद्दी छोड़ इंग्लैण्ड लौट गये।

इसके उपरान्त घटनाएँ तीव्र गति से चलने लगीं। लायक अली के मंत्रिमंडल के एकमात्र हिन्दू सदस्य ने त्यागपत्र दे दिया। उसने त्यागपत्र में लिखा –

परभनी और नान्देय जिलों में आतंक का राज्य व्याप्त हो गया है। लोहा में मैंने विनाश का वह दृश्य देखा है कि मेरी आँखों से आँसू टपकने लगे थे। ब्राह्मण मारे गये थे और उनकी आँखें निकाल ली गयी थीं। बड़ी भारी संख्या में मकान जला दिये गये थे। और स्त्रियों से बलात्कार किया गया था। यह देख मुझको अति दुख हुआ था...

इसी प्रकार की सूचनाएँ भारत सरकार को मिली थीं और इसी के संबंध में मौलाना साहब ने भारत के प्रधानमंत्री को एक पत्र लिखा था।

पत्र की बात तो सर्वथा गुप्त रही। यहाँ तक कि उनके प्रिय असिस्टैंट तथा उसकी पत्नी को भी पता नहीं चली। परन्तु इसकी बात निकली एक अन्य ढंग से।

साब्री ने पत्र की बात जानने के लिये शमा से कहा। शमा ने रात खाने

In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के उपरान्त मौलाना साहब के पलंग के पास बैठ, पत्र की ओर संकेत किया तो मौलाना ने गम्भीर हो कह दिया, "शमा! कुछ बातें दाँतों में होती हैं मगर होठों को पता नहीं होनी चाहिए। दाँत पिच जाते हैं मगर होंठ आसानी से खुल जाते हैं।"

इससे आगे बात चल नहीं सकी। साब्री ने भी सब्र कर लिया, मगर दुर्गन्ध छिपी नहीं रह सकती। छिपाने से बदबू बढ़ती है और उसका कुछ अंश फूटकर निकल ही पड़ता है।

अगले दिन साब्रो कनाट प्लेस में शमा के साथ अपने लिये तथा मौलाना साहब के लिये खरीद–फरोख्त कर रहा था कि उसकी दृष्टि जॉन पर चली गयी। उसके साथ एक औरत थी। औरत अधेड़ आयु की और गंदमी रंग की, परन्तु बहुत तीखी रूप–रेखा वाली थी। वह जॉन से दो इंच ऊँची थी और चलते समय जॉन की मालकिन मालूम होती थी। यह अन्ना थी। ऐम्पायर स्टोर से सामान ले, पैकेट में बँधवा, दाम दे, साब्री और शमा दुकान से बाहर निकल रहे थे कि जॉन और अन्ना दुकान में प्रवेश करते दिखाई दिये। साब्री उसका मार्ग रोक कर खड़ा हो गया और बोला–"क्यों बे जॉन! उस दिन तो आसानी से पहिचान गये थे और अब तुम हमारी तरफ देखते भी नहीं।"

जॉन ने ऐसे बहाना किया, मानो उसने साब्री को देखा ही नहीं था। वह चौंकते हुए बोला, "ओह! साब्री साहब!

"मुआफ रखें साहब! मेरी नजर कमजोर पड़ गयी है। आपको मैं फिर मिल नहीं सका। मेरी नौकरी एक बहुत अच्छी जगह पर लग गयी है।"

साब्री उसको दुकान से बाहर बरामदे में ले आया और बोला, "मैंने देखा है। प्रधानमन्त्री की खिदमत में चले गये हो। मगर गजब तो यह है कि तुम्हारी नजर पंडित जी की प्लेट पर रखी साग–भाजी तो देख सकती थी, मगर सवा पाँच फुट ऊँचे साब्री को नहीं देख सकी।"

इस पर जॉन हँसने लगा।

साब्री ने कहा, "खैर, कोई बात नहीं! मेरी नजर तो ठीक है। मैं तुमको देख और पहिचान सकता हूँ। बताओ कब और कहाँ मिल सकोगे?"

"बाद दोपहर दो से तीन बजे तक फुर्सत होती है। कहें तो वजीर–ए–तालीम के बंगले पर हाजिर हो जाऊँ।"

"कल आ सकोगे?"

"आ जाऊँगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह साथ कौन है?"

"मेरी बीवी अन्ना फ्रांसिस है।"

"यह तो किसी रियासत की मलिका मालूम होती है।"

जॉन ने मुस्कराते हुए शमा की ओर देखकर पूछ लिया, "और वह क्या मालूम होती है?"

दोनों औरतें वहीं दुकान के भीतर ही रह गयी थीं। वे भी आपस में औपचारिक बातें करने लगी थीं।

साब्री ने शमा को अन्ना के पास खड़े देख कह दिया, "वह उस मलिका की एक अदना खादिमा दिखाई देती है।"

दोनों हँसने लगे। जॉन समझ गया कि साब्री उसकी बीवी के हाव–भाव से प्रभावित हुआ है। वह जानता था कि अन्ना ने इसी हाव–भाव से जिन्ना जैसे सफल लीडर को वश में किया हुआ था।

इसके उपरान्त दोनों ने हाथ मिलाया और अपने–अपने काम में लग गये।

: 12 :

जॉन से भेंट होने से पहले एक घटना के विषय में चर्चा होने लगी थी। साब्री और शमा कनाट प्लेस में खरीदकर, जब कोठी में पहुँचे तो मौलाना गम्भीर और अकेले अपनी बैठक में बैठे थे। शमा ने चपरासी से पूछा, "क्या बात है, आज मिलने वाला कोई नहीं?"

"मिनिस्टर साहब ने मुलाकातें रद्द कर दी हैं। उनके सरकारी सेक्रेटरी ने यह बताया है कि मिनिस्टर साहब की तबीयत ठीक नहीं। वे तनहाई चाहते हैं।"

इस सूचना से शमा और साब्री विचार करने लगे कि वे भी मौलाना साहब से मिलने जायें अथवा नहीं। उनका विचार था कि मौलाना साहब के किसी बहुत ही प्रिय का देहान्त हो गया है।

शमा का कहना था कि उनको जरूर मिलने के लिये जाना चाहिए। उनको मौलाना साहब को सब्र और इस्तिकबाल रखने की सलाह देनी चाहिए। यह काम वे ही कर सकते हैं। वे दोनों अपने को मौलाना साहब की निजी खिदमत में समझते थे।

साब्री को शक हो रहा था कि मौलाना साहब की कोई जाती वजह नहीं, जिससे वे गमगीन हैं। यह कोई सियासी वजह ही हो सकती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
तुरन्त उसके मन में दो ख्याल आये कि या तो पाकिस्तान से जंग विस्तार पा गया है अथवा हैदराबाद पर भारत ने हमला बोल दिया है। इस पर भी पहले उसने शमा को भेज मौलाना साहब के इस प्रकार तनहा बैठने की वजह जानने की कोशिश करनी चाही। उसने शमा से कहा, "अच्छा शमा! तुम जाओ और उनके दिमाग को आराम पहुँचाने की कोशिश करो। गम के वक्त औरत की मौजूदगी एक मर्द की वनिस्बत ज्यादा कारगर हो सकती है।"

शमा मुख्य कोठी को चल पड़ी और साब्री अपने क्वार्टर को चला गया। एक घंटा के उपरान्त शमा लौटी और बताने लगी, "मौलाना साहब बहुत गमगीन हैं। मगर उन्होंने वजह नहीं बताई। मेरी एक घंटा की सोहबत भी उनके दिल पर बैठी बर्फ को पिघला नहीं सकी। मैं जब आने लगी तो वे कहने लगे कि साब्री को भेज दो।

"मतलब यह कि अब आप इस राज को जानने की कोशिश करें और फिर उसका इलाज भी तजवीज कर दें। मैं तो अपने सब हथियार चला आयी हूँ और नाकामयाब होकर लौट आयी हूँ।"

साब्री उठा और मौलाना साहब के सोने के कमरे में जा पहुँचा। मौलाना साहब बिस्तर में आँखें मूँदे पड़े थे। वैसे कमरा एयर–कंडीशण्ड और ठंडा था। यद्यपि बाहर काफी गरमी थी।

साब्री ने सलाम अर्ज की और पलंग के समीप एक कुर्सी लेकर बैठ गया। बात साब्री ने ही शुरू की, "हुजूर, दुश्मनों की तबीयत अलील क्यों हो रही है?"

मौलाना साहब ने आँखें खोलीं और उनके मुख से निकल गया, "सब चौपट हो गया है।"

"क्या हुआ है हुजूर?"

"अभी तक प्रधानमन्त्री हैदराबाद में किसी किस्म की भी कार्रवाई के खिलाफ थे। वह कहते रहते थे कि अगर हैदराबाद में किसी भी किस्म की कार्रवाई भारत ने की तो सारे मुल्क की लम्बाई–चौड़ाई में हिन्दू–मुसलमान फसाद छिड़ जायेगा। वे यह भी कहते रहते थे कि रजाकारों के जुल्मों की कहानियाँ बे–बुनियाद हैं। उनको हमेशा हिन्दू, खासतौर पर मरहठे, मुसलमानों को तंग करने वाले नजर आते थे। मगर आज सिकन्दराबाद के एक गिरजाघर पर रजाकारों के हमले की खबर सरदार ने बताई है और अपने कथन के सबूत में गिरजाघर के बड़े पादड़ी की चिट्ठी पढ़ कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
सुनाई। उस चिट्ठी में लिखा है कि गिरजाघर को लूट लिया गया। वहाँ रहने वाली साधुनियों[1] से सबके सामने बदफेली की गयी और गिरजाघर को आग लगा दी गयी। पादड़ी ने दो औरतों को, जो वहाँ की साधुनियों में से थीं और जिनके साथ बदफेली की गयी थी, दिल्ली भेज दिया है। वे रोमन कैथोलिक गिरजा में ठहरी हैं।

"प्रधानमन्त्री इस खबर को सुन कर जोश में आकर बोल उठे कि रियासत को दुनिया के नक्शे से मिटा देना चाहिए। इस पर मन्त्रिमण्डल ने यह फैसला कर दिया है कि हैदराबाद पर पुलिस ऐक्शन किया जाए।"

"तो?"

"इसकी तारीख भी मुकर्रिर ही गयी है?"

"कौन सी?"

"यह सरकारी राज है।"

साब्री चुप रहा। वह इस तारीख को जानने के लिये अपनी बेसब्री जाहिर करना नहीं चाहता था।

मौलाना ने आगे कहना जारी रखा, "मेरी जिन्दगी का मकसद बे–सब्र मुसलमान मलियामेट कर रहे हैं। देखो साब्री! सन् 1915 में जब इंग्लैण्ड ने टर्की पर हमला किया था, मैंने अपने अखबार में लिखा था कि मुसलमानों का अंग्रेजों के साथ रहने से कुछ फायदा नहीं होगा। उनको अंग्रेजों के दुश्मन हिन्दुस्तान के इन्किलाब पसन्दों में शामिल हो जाना चाहिए। उसी वक्त मेरी पंडित जी के वालिद पंडित मोतीलाल जी से मुलाकात हो गयी। उन्होंने मेरे अखबार में मेरे मजमून पढ़े थे। वे उसके मुताल्लिक बताने लगे, 'अगर मुसलमान इन्किलाब पसन्दों में शामिल हुए तो मुसलमान दुहरी मार में आ जायेंगे। एक तरफ अंग्रेज उनको सफहए–हस्ती मिटाने की कोशिश करेंगे और दूसरी तरफ गीता के भक्त इन्किलाब–पसन्द उनको खा जायेंगे। इस वास्ते उनके लिये सिर्फ एक ही रास्ता है और वह है कांग्रेस के नरम दल में शामिल हो जाना। इससे वे अंग्रेजों की मुखालिफत कर सकेंगे और हिन्दुओं के भी दोस्त रह सकेंगे।'

"मुझको उनकी तजवीज पसन्द आयी और मैंने अपने कुछ साथियों से राय की। इनमें मौलाना मजरुल हक और मिस्टर जिन्ना भी थे। इनकी और मेरी भी यह राय थी कि सरकार की पेशकश कि मुसलमानों को अलहदा

---

1. Nuns.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
नुमायन्दगी दी जाये, नामन्जूर कर हिन्दुओं के साथ शामिल हो कर हिन्दुस्तान के लिये खुद–मुख्तार हुकूमत हासिल की जाये। इस हुकूमत में मुसलमान एक बहुत बड़ी ताकत होंगे। हमारा ख्याल था कि हिन्दू जात–पात के कारण आपस में बँटे हुए हैं और मुसलमान सब एक होकर हिन्दुओं पर हुकूमत करेंगे। और तब हम दुनिया की इस्लामी ताकत में भारी इजाफा कर सकेंगे।

"मगर मुसलमानों ने अलहदा नुमायन्दगी पर इसरार किया और पंडित मोतीलाल जी के कहने पर हिन्दू मान गये। इलाहाबाद में हुई इस मतलब की सब–कमेटी में मजरुलहक ने मुखालिफत की, मगर कुछ मुसलमानों के इसरार पर कांग्रेसी मान गये और मेरी तजवीज कि मुसलमानी हुकूमत हिन्दुस्तान में कायम हो, नाकामयाब हुई। इस अलहदगी के बीज ने पाकिस्तान का पौधा लगाया और अब हिन्दुस्तान का एक छोटा–सा हिस्सा ही दारा–उल–इस्लाम बन सका। यह ठीक है कि भारत में हिन्दुओं का जोर नहीं बन सका। इसमें पंडित नेहरू तथा उनके कुछ साथी ही वजह हैं। मगर जो कुछ पाकिस्तान के और हिन्दुस्तान के मुसलमान कर रहे हैं, वह तो भारत को हिन्दुओं की गोद में डाले बिना नहीं रहेगा।

"मैंने शिमला में जिन्ना को अपने मन की बात वाजा कर बताई थी। मैंने कहा था कि तुम्हारे तरीके से एक छोटा सा मुल्क पाकिस्तान बन जायेगा, मगर मेरी तजबीज पर अमल करोगे तो सारा हिन्दुस्तान पाकिस्तान बन सकेगा।

"जिन्ना का कहना था कि हम 'जम्पिंग ग्राउण्ड' चाहते हैं। यह पाकिस्तान बनेगा। एक बार हम अपनी हुकूमत कायम कर सके तो फिर हम इतनी ताकत पैदा करेंगे कि भारत फतह किया जा सकेगा।

"यह बात गलत थी। यह नामुमकिन है। और मेरा डर ठीक साबित होने जा रहा है। कश्मीर में पाकिस्तान को मुँह की खानी पड़ी है। वह अब गिलगित और मुजफ्फराबाद की ऊँचाइयों पर धकेल दिया गया है। अभी तक नेहरू, सरदार और उसके साथियों को पाकिस्तान पर हमला कर लाहौर और कराची लेने से रोके हुए हैं। भारत में इतनी ताकत है कि वे यह कर सकते हैं, मगर नेहरू की आम खलकत में शोहरत का मुकाबिला सरदार वगैरा नहीं कर सकते और पाकिस्तान बचा आ रहा है। अभी तक हैदराबाद की हिफाजत भी लार्ड माउन्टबेटन और नेहरू कर रहे थे। माउन्टबेटन तो निराश हो इंग्लैण्ड चला गया है और नेहरू को रजाकारों के ईसाइयों पर जुल्म ने बदजन कर दिया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं समझ रहा हूँ कि अब हैदराबाद तो गया और ऐसी कोई कार्रवाई पाकिस्तान ने कहीं दूसरी जगह कर दी तो नेहरू सरदार को लाहौर व कराची पर हमला करने से भी रोक नहीं सकेगा।

"पंडित नेहरू मुसलमानों और ईसाइयों के लिए अपने दिल में दर्द रखता है। हिन्दुओं के लिये वही दर्द उसके दिल में नहीं है। मगर पाकिस्तानी इस बात को न समझते हुए नेहरू साहब को नाराज कर देते हैं। मैं समझता हूँ कि अब भारत हिन्द मुल्क बन जायेगा और हैदराबाद का जाना इस तरफ एक बहुत बड़ा कदम होगा।"

"मगर हुजूर!" साब्री ने मौलाना के हौसला को बुलन्द करने के लिए कह दिया, "अगर भारत ने पाकिस्तान में अपनी फौजें भेजीं तो अंग्रेज उसकी मदद नहीं करेंगे क्या?"

"अंग्रेज में दम होता तो वह भारत और पाकिस्तान को छोड़ता ही नहीं। अंग्रेज का दम एक तो पिछले जंग ने निकाल रखा है, और दूसरे अमरीका और रूस उसको अब किसी भी गैर–मुल्क में अपनी फौज भेजने नहीं देंगे।"

"तब तो इस्लाम को हिन्दुस्तान में ही जहाज खड़ा करना पड़ेगा।"

"करके देख लो। पिछले दो सालों में जो कुछ मुसलमानों ने हिन्दुओं के साथ किया है उसका बदला मुसलमानों से हिन्दू ले लेंगे। मुझको डर है कि दो महीने में भारत के साढ़े चार करोड़ मुसलमान दो करोड़ से भी कम रह जायेंगे। इसके लिए हिन्दू खलकत ही तकलीफ उठायेगी। सरकार को एक गोली भी नहीं चलानी पड़ेगी।"

"और नेहरू जी इसमें कुछ नहीं करेंगे? बिहार में तो उन्होंने इन काफिरों को मजा चखा दिया था।"

"ठीक है, मगर अब मुश्किल मालूम होता है। एक तो हिन्दू खबरदार हो गये हैं। अगर वे महात्मा जैसी पाक और साफ हस्ती को खत्म कर सकते हैं तो नेहरू किस बाग की मूली है। साथ ही फौजी अफसर सरदार के ख्याल के हो रहे हैं। वे कह रहे हैं कि गिलगित और मुजफ्फराबाद की ऊँचाइयों पर लड़ने की बजाय पंजाब और सिंध के मैदानों में लड़ना आसान है। नेहरू ने अब कुछ भी मुसलमानों की हिमायत की तो फौज बागी हो जायेगी।"

"तो कोई उम्मीद नहीं?"

"अभी तो सिर्फ यह बात हो सकती है कि हैदराबाद अपनी ताकत से हिन्दुस्तानी फौज का मुकाबला करे। अगर वह एक महीना तक मुकाबला कर सका तो फिर यू.एन.ओ. इस मुआमले में दखल दे सकता है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"निजाम साहब ने 'सिक्यूरिटी कौंसिल' को लिखा तो है।"

"हाँ। मगर जब तक सिक्यूरिटी कौंसिल कुछ करेगी, तब तक तो हैदराबाद खत्म हो जायेगा। फिर एक हो चुकी बात को लौटाने की हिम्मत सिक्यूरिटी कौंसिल में भी नहीं होगी।

इस समय रात के खाने का वक्त हो गया था। मगर मौलाना साहब का दिल अभी भी बैठ रहा था और उन्होंने खाना लेने से इन्कार दिया।

साब्री के घर पर खाने का इन्तजार नहीं था। उसने शमा को यह राय दी कि आज वह भी उसके साथ होटल चले और वहाँ ही खाना ले लिया जाये।

"मैं आपके लिये यहीं कुछ न कछ तैयार कर देती हूँ।"

"नहीं। मुझको आज जरूर इम्पीरियल में चलना चाहिए।"

"कुछ काम है वहाँ?"

"अगर वहाँ कोई पाकिस्तानी मिल गया तो कुछ कमाई का मौका मिल सकेगा।"

शमा तैयार हो गयी। साब्री का सितारा ऊँचा था। इम्पीरियल के रिसैप्शन हाल में जाते ही पाकिस्तानी हाई कमिश्नर का कल्चरल अटैची मिल गया। साब्री ने चुपचाप उसके पास खाली कुर्सी लगवा ली और शमा के साथ वहाँ बैठते हुए बोला, "मुआफ करें। मैं आपसे ही यहाँ मिलने के लिये आया था। इजाजत हो तो यहाँ ही अपने लिये खाना मंगवा लूँ।"

"हाँ–हाँ। मगर मेरे दाम भी आपको ही देने पड़ेंगे।"

"दे दूँगा। मगर मेरी एक बात का दाम आपको देना होगा।"

"हाँ! अगर बात काबिले ऐतबार हुई तो।"

"मैंने आज तक कभी कोई बे–ऐतबारी की बात कही है क्या? बताइये, कौन–सी मेरी बात गलत साबित हुई है?"

"हाँ तो बताओ कौन–सी बात है?"

"पहिले दाम का फैसला हो जाये।"

"मगर आज तो दाम दिया नहीं जा सकेगा।"

"क्यों? क्या बात है? पाकिस्तान का खजाना खाली हो गया है क्या?"

"नहीं! खजाना तो खाली नहीं हुआ मगर..."

"मगर क्या?"

"एक राज की बात है।"

"मैं भी एक राज की बात बताने आया हूँ।"

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो दोनों अपनी–अपनी बात बता देते हैं और लेना–देना बराबर–बराबर।"

"देखिये नून साहब! मैं तो किसी ओहदे पर हूँ नहीं, जिस पर आपकी राज की बात का फायदा उठा सकूँ। मगर आप उठा लेंगे। इसलिये मुझको आप बताइये या न बताइये। मगर मेरे बताने का तो दाम है।"

"क्या दाम है?"

"एक हजार रुपया।"

"बहुत मुश्किल है।"

"क्या बात है साहब! पहिले तो कभी ऐसा नहीं हुआ।"

"बात यह है कि पाकिस्तान के गवर्नर जनरल साहब की तबीयत बहुत बिगड़ गयी है और कोई नहीं जानता कि वे कब चल दें। उनके फौत होने पर हम भी नहीं जानते कि हमारी क्या पोजीशन हो जायेगी।"

"इस हालत में तो और भी जरूरी है कि मेरे राज को कराची भेज दें। कहीं यह न हो कि पाकिस्तान में नयी हुकूमत कायम होने से पहिले ही हैदराबाद को दुनिया के नक्शे से मिटा दिया जाये।"

"सच?"

"मैं इसी के मुताल्लिक बताने के लिये किसी रसूखदार आदमी की तलाश में था। बताइये, है दम मेरे राज को खरीदने का?"

"बताइये! दाम मिल जायेगा।"

"हजरत, जो बात आपने बताई है उससे तो मैं दाम पहिले माँग लूँ तो ज्यादा मौजूँ होगा।"

"मगर इतना रुपया तो यहाँ लेकर आया नहीं।"

"तो मैं आपके साथ जहाँ कहें चल सकता हूँ।"

"यह खाने के बाद ही हो सकेगा।"

"ठीक है।"

तीनों के लिये खाना आया तो खाने लगे। खाना खाते हुए साब्री उन वाकयात को जो वह जान सका था एक निश्चित सूचना का रूप दे रहा था। वह मन में विचार कर रहा था कि वह किस प्रकार यह कह दे कि सामने बैठे अधिकारी को एक हजार देना दुखे नहीं। उसने विचार किया कि वह अपनी सूचना इन शब्दों में कहेगा कि भारत की वजारत ने एक राय हो यह फैसला किया है कि दो–तीन दिन के अन्दर ही हैदराबाद पर 'पुलिस ऐक्शन' ले लिया जाये।

वह यह भी विचार करता था कि यदि निश्चित तिथि पूछी गयी तो वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कह देगा कि आज दस तारीख है और दो–तीन दिन का मतलब है तेरह से पहिले। इतनी आजादी, तो सेना को दी गयी है कि वे ठीक वक्त और जगह का फैसला खुद करे।

इस प्रकार अपनी सूचना को बताने योग्य शब्दों में बाँध कर वह स्वस्थ–चित्त खाना खाता रहा।

खाना समाप्त हुआ और खाने का दाम साब्री ने दिया। बिल पचास रुपये बना था। पाँच रुपये टिप दी गयी थी। इस बिल की भरपूरी साब्री के करने से पाकिस्तानी अधिकारी प्रसन्न था। तीनों इम्पीरियल से बाहर निकले तो सड़क के किनारे पहुँच वे टैक्सी पकड़ने लगे। साब्री ने कह दिया, "देखिये साहब! मैं आपके साथ पाकिस्तानी सफारतखाने तक नहीं जाऊँगा। मैं तो विंड्सर प्लेस में इसी टैक्सी में बैठा आपका इन्तजार करूँगा। आधा घण्टा भर इन्तजार करूँगा और अगर आप इतने वक्त में रुपया नहीं ला सके तो मैं अपने घर लौट जाऊँगा।"

"और मैं?"

"आप एक दूसरी टैक्सी पकड़ लें और उसमें जायें।"

"मैं तो टैक्सी का भाड़ा भी आपसे दिलवाना चाहता था।"

"वह तो उस रुपये में से ही दूँगा जो आप लायेंगे।"

विवश दो टैक्सियाँ ली गयीं और दोनों विंड्सर प्लेस को चल पड़ीं। एक टैक्सी विंड्सर प्लेस के एक अँधेरे कोने में ठहर गयी और दूसरी फिरोजशाह रोड की तरफ चल दी।

: 13 :

दिल्ली में सब अमनो–अमान था। सरदार पटेल के बंगले पर कुछ चहल–पहल थी और लोग काना–फूसी करते देखे जाते थे। दिन के समय मन्त्रिमण्डल के दो सदस्य कई बार आते–जाते दिखाई दिये थे। ये थे डाक्टर श्यामाप्रसाद मुखर्जी और डॉ. अम्बेडकर। एक अन्य सदस्य भी आये थे परन्तु वे तो औपचारिक बात कर ही चले गये। सायंकाल इन दोनों डाक्टरों को लेकर सरदार अपने बंगले के स्टडी रूम में गये और वहाँ द्वार बन्द कर उन्होंने बताया, "मुझको समाचार मिला है कि हैदराबाद में कुछ हलचल दिखाई देने लगी है। ऐसा प्रतीत होता है कि हमारी तरफ से बहुत सावधानी रखने पर भी तेरह तारीख का रहस्य निकल गया है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डॉ. मुखर्जी का कहना था, "सेनाध्यक्ष को कह दिया जाये कि यदि वह तैयार है तो आक्रमण समय से पहिले भी आरम्भ किया जा सकता है। शोलापुर से हैदराबाद नगर एक सौ अस्सी मील है और यदि वे इस सड़क का बहुत सा भाग बिना विरोध के ले सके तो बहुत लाभकारी होगा।"

"मैंने उसको कह दिया है कि समय के विषय में वह स्वतन्त्र है। यह निर्णय दस तारीख को लिया गया था। तीन दिन मैंने देश के मुसलमानों की सुरक्षा का प्रबन्ध करने में व्यय किये हैं।"

"मैं तो चाहता था कि भारत में बसे मुसलमान कुछ खराबी कर दें तो हिन्दू जनता इनको ऐसा सबक सिखाये कि ये सदियों तक न भूल सकें।"

"नहीं! इतनी दूर तक जाने की आवश्यकता नहीं। इस पर भी उन तमाम क्षेत्रों में जहाँ मुसलमान अधिक संख्या में रहते हैं, मैंने उचित पुलिस और बंदूकचियों का प्रबन्ध कर दिया है।"

इस पर डॉ. अम्बेडकर ने कह दिया, "सरदारजी! ये तीन दिन भी आपने व्यर्थ गँवाये हैं। इन मुसलमानों में साहस नहीं रहा कि वे वैसा बलवा कर सकें जैसा 1946–47 में किया था। दिल्ली और पटियाला में जो कुछ इनके साथ हुआ है, वह ये इतनी जल्दी भूल नहीं सकते। उस वक्त आप यदि गांधीजी को कुछ दिन के लिये दिल्ली से बाहर रख सकते तो पूर्ण हिन्दुस्तान मुसलमानों से खाली हो जाता।"

"उस वक्त की बात छोड़ो डाक्टर! राजनीति में सब बातें अपने अधीन नहीं होतीं। मनुष्यों और जातियों के अदृश्य उनको बहुत ऊँच–नीच दिखाते रहते हैं। सफलता का रहस्य यह है कि मनुष्य उन सब ऊँच–नीच में समबुद्धि बना रहे।

"देखो! मैं समझता हूँ कि यदि आक्रमण हमारे अपने निश्चय से कुछ घण्टे पहिले ही आरम्भ हो आये तो ठीक होगा।"

"ठीक है। अब इसमें देरी करने की आवश्यकता नहीं।"

"मुझको बताया गया है कि उस दिन नेहरू जी ने आक्रमण की स्वीकृति सिकन्दराबाद में 'नन्स' पर बलात्कार से उद्विग्न होकर दे दी थी, परन्तु इसका अब उनको पश्चात्ताप लग रहा है।"

"अच्छा क्यों?" अम्बेडकर ने पूछ लिया।

"उनकी क्यों का उत्तर तो दिया नहीं जा सकता। एक बात सम्भव है कि नेहरू जी अभी तक भी मुसलमानों को मजलूम और हिन्दुओं को मूर्ख और जालिम समझते हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अम्बेडकर हँस पड़ा, परन्तु डॉ. मुखर्जी ने इस पर कह दिया, "मैं समझता हूँ कि नेहरू जी ठीक ही समझ रहे हैं। हिन्दू महामूर्ख हैं। यदि उनको कुछ भी बुद्धि होती तो हिन्दू, हिन्दुस्तान और हिन्दी के इस घोर विरोधी को अपना नेता न मानते।"

"मगर डाक्टर साहब! नेहरू जी को नेता गांधी जी ने बनाया था। वे 1925 से लेकर यत्र–तत्र नेहरू जी को अधिमान दे रहे थे और अपने अंत काल तक वे देश के सब छोटे–बड़े कार्यकर्ताओं से नेहरू जी को अधिक बुद्धिमान, देशभक्त और देश के लिये त्याग–तपस्या करने वाला मानते रहे हैं। उनका मानना पक्षपात की सीमा तक पहुँच गया समझ में आता है। परन्तु मैंने कहा है न कि भाग्य बहुत प्रबल है। उसका विरोध सुगम नहीं।"

"ठीक है! मगर गांधी जी भी तो साधारण हिन्दू ही थे। जो भूल कोई भी हिन्दू करता था, वही तो गांधी जी भी कर गये।"

"और आप क्या हैं? डॉ. अम्बेडकर ने मुस्कराते हुए पूछ लिया।

"भाई डाक्टर! मैं तो माँ काली का प्रसाद हूँ और उसका भक्त हूँ। जो कुछ उसने देश और धर्म के विरोधियों के साथ किया था, वह मैं भी करने वाला हूँ।"

"धीरे–धीरे मेरा विचार है कि आप लोग आज जल्दी ही रात का भोजन कर सो जाइये, जिससे प्रातः उठ कर टेलीफोन पर बधाई आपको मिल सके।"

इसका यह मतलब था कि गोष्ठी समाप्त हुई। दोनों डाक्टर उठे और बाहर चले आये। उनकी मोटरगाड़ियाँ खड़ी थीं। दोनों सवार हो अपने–अपने ठहरने के स्थान को चले गये।

परन्तु रात वे सो नहीं सके। रात के ग्यारह बजे डॉ. मुखर्जी की नींद टेलीफोन की घंटी बजने पर खुली। टेलीफोन करने वाले सरदार पटेल थे। "हाँ! क्या खबर है?" डॉ. मुखर्जी ने पूछ लिया।

"प्रधानमन्त्री का टेलीफोन आया है कि 'औपरेशन पोलो' रोक दिया जाय।"

डॉ. मुखर्जी ने चिन्ता व्यक्त करते हुए कहा, "क्यों? किस लिये?"

"उनका कहना है कि उनको एक विश्वस्त स्रोत से खबर मिली है कि यदि हैदराबाद पर आक्रमण किया गया तो उसके दो घण्टा पीछे नई दिल्ली पर हवाई हमला हो जायेगा।"

"तो फिर क्या होगा?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नई दिल्ली की आलीशान इमारतें मलियामेट हो जायेंगी।"

डॉ. मुखर्जी हँसने लगे। हँस कर उन्होंने पूछा–"और फिर आपने क्या उत्तर दिया है?"

"मैंने कह दिया है कि सेना तो दस बजे ही चल पड़ी है। इस समय वे अपने मार्ग पर दस–पन्द्रह मील हैदराबाद की तरफ जा पहुँची होगी। इस पर प्रधान–मन्त्री कहने लगे, यह तो मन्त्रिमण्डल के निर्णय के विरुद्ध हो गया है। मैंने बताया है कि मुझ को ऐसे किसी निर्णय का ज्ञान नहीं कि औपरेशन के लिये कोई समय निश्चित हुआ था। केवल इतनी बात हुई थी कि तेरह और चौदह सितम्बर की दरमियानी रात को पुलिस कार्रवाई की जायेगी। इस पर भी मैंने यह कह दिया था कि ठीक–ठीक समय हमको सेना के अधिकारियों पर छोड़ देना चाहिए। और इस पर किसी ने आपत्ति नहीं की थी।

"इस पर प्रधानमन्त्री कहने लगे कि इसी समय एक आपत्कालीन मन्त्रिमण्डल की बैठक बुला ली जाये।

"मैंने कह दिया है कि वे बुला सकते हैं। मैंने अपने न आ सकने की विवशता प्रकट की। मैंने कह दिया कि डाक्टर ने मुझे रात भाग–दौड़ करने से मना किया हुआ है। इस पर उन्होंने क्रोध में टेलीफोन बन्द कर दिया।"

डॉ. मुखर्जी ने कह दिया, "सरदार जी! आप आराम करिये। मेरा मन कहता है कि नई दिल्ली को कुछ भी होने वाला नहीं। एक कश्मीरी पंडित को किसी मुल्ला–मौलाना ने डरा दिया मालूम होता है।"

"हमारे आज के 'औपरेशन' का ज्ञान तो केवल मौलाना को ही है।"

"मगर प्रधानमन्त्री के यहाँ तो कई हैं और क्या जाने यह भयानक दृश्य वहाँ के ही किसी मौलाना ने खींच कर प्रधानमन्त्री जी को दिखा दिया हो।"

"अब तो बात आरम्भ हो गयी है। मुझको जनरल चौधरी ने यह आश्वासन दिया है कि तीन सप्ताह में यह मुहिम पूरी हो जायेगी।"

"और मैं समझता हूँ कि...।"

इसी समय टेलीफोन ऑपरेटर ने बीच में कह दिया जरा बन्द करिये। कोई होम मिनिस्टर से बात करना चाहता है।"

डाक्टर ने टेलीफोन बन्द कर दिया और उत्सुकता से प्रतीक्षा करने लगा कि यह कौन है जिसने उनकी बातचीत को बन्द कराने का साहस किया है।

दस मिनट में ही पुनः सरदार का फोन आया, "डाक्टर साहब, क्षमा करें। आपकी नींद खराब की जा रही है। टेलीफोन हमारे शिक्षा मंत्री साहब का आया था। वे कह रहे थे कि अभी–अभी हैदराबाद से टेलीफोन आया है कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लायक अली कल आने वाले हैं और वह निजाम साहब से नई तजवीजें ले कर आ रहे हैं।"

"तो?"

"उनके इस वक्त टेलीफोन करने का प्रयोजन यह था कि 'औपरेशन–पोलो' तेरह के स्थान पन्द्रह के लिये रोक दिया जाये।"

"अब प्रधानमन्त्री के भय का स्रोत पता चल गया है। जब मौलाना साहब ने डराने–धमकाने से काम बनते नहीं देखा तो अब सुलह के लिये बातचीत कर दी है।"

"मेरा भी यही ख्याल है, मगर मैंने शिक्षा मन्त्री को भी कह दिया है कि तीर हाथ से निकल चुका है। अब वापिस नहीं आ सकता। यदि इस समय सेना को निर्धारित काम से रोका गया तो सेना में विद्रोह भी हो सकता है।

"इस बात ने शिक्षा मन्त्री का मुख बन्द कर दिया है।"

"आप आराम करिये। मेरा अनुमान है कि यह मुहिम एक सप्ताह में ही समाप्त हो सकेगी।"

अगले दिन सुबह प्रायः सब मन्त्री–गण सरदार पटेल साहब के बंगले पर एकत्रित हो रहे थे। प्रधानमन्त्री और शिक्षा मन्त्री उनमें नहीं थे। सब सेना की प्रगति का समाचार सुनने के लिये उत्सुक थे। शोलापुर और विजयवाड़ा से प्रति दस–दस मिनट के उपरान्त समाचार आ रहे थे।

जब यह समाचार आया कि लफ्टिनेन्ट टी.टी. मूर (T. T. Moore) एक जीप में नालादुर्ग की पुल की ओर जाता पकड़ा गया है, और उस जीप में पुलों को उड़ाने के लिये डिनामाइट भरा हुआ था, तब रात को टेलीफोन में योजना बदलने का रहस्य पता चल गया।

ड्राइंग रूम में बैठे हुए सरदार अपने साथियों को बता रहे थे– "मुझको यह बात कल ही पता चल गयी थी कि हैदराबाद में हमारे आक्रमण का समाचार पहुँच गया था। वहाँ के अधिकारी समय प्राप्त करने के लिये यत्न कर रहे हैं।"

अम्बेडकर ने पूछ लिया, "तो आपके आदमी उस कैम्प में भी उपस्थित हैं?"

"वे तो हैं ही। सेना के अपने लोग भी वहाँ गये हुए थे। इनके अतिरिक्त कल एक मेरे निजी मित्र वहाँ से हवाई जहाज के द्वारा आये थे। उन्होंने यह बताया है कि समाचार दिल्ली से ही वहाँ गया था। यह समाचार दस तारीख की रात को वहाँ पहुँचा था। और अगले दिन बहुत प्रातः ही लायक अली के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
घर पर हैदराबाद के मन्त्रिमण्डल की बैठक हुई थी। उसमें हैदराबाद सेना के कमांडिंग आफिसर भी उपस्थित थे। पूरी बात जो वहाँ हुई, उसका तो ज्ञान नहीं, परन्तु वहाँ से सब लोग निजाम साहब के महल पर पहुँचे और आधा घंटा वहाँ ठहर, लोग चले गये और उसी समय से हैदराबाद में सरकारी सेना और रजाकारों में गुटबन्दी होने लगी थी।

"लायक अली को बहुत आशा थी कि मौलाना साहब और नेहरू जी के हस्तक्षेप से आक्रमण रोका जा सकेगा। वे भारत के शिक्षा मन्त्री से निरन्तर फोन पर वार्तालाप कर रहे थे। शिक्षा मन्त्री पहिले तो सर्वथा निराश थे, परन्तु पीछे जब यह बताया गया कि निजाम साहब रियासत के पूर्ण विलय के लिये तैयार हो गये हैं और वे केवल रियासत के राज–प्रमुख बने रहना चाहते हैं तो शिक्षा मन्त्री ने आश्वासन दिलाया कि आक्रमण रोका जा सकेगा।

हैदराबाद से आये आदमी का यह कहना है कि लायक अली ने यह कहा था कि निजाम साहब अमरीका पर बहुत भरोसा करते थे। उन्होंने अमरीका के प्रधान को मध्यस्थ बन फैसला करा देने के लिये कहा था, परन्तु इस भीड़ के समय अमरीका के प्रधान ने भी इनकार कर दिया है। इससे वे अब भारत में रियासत का विलय स्वीकार कर रहे हैं।

"शिक्षा मन्त्री ने पूछा था कि निजाम साहब की, संयुक्त राष्ट्र संघ की सुरक्षा परिषद में प्रार्थना का क्या होगा? इसके विषय में लायक अली ने बताया कि यद्यपि इंग्लैण्ड इस प्रार्थना को वापिस लेने की राय नहीं दे रहा। इस पर भी विलय हो जाने पर वह प्रार्थना वापिस कर ली जायेगी। इस पर शिक्षा मन्त्री ने कहा, कि वे प्रस्ताव लेकर आ जायें। निजाम साहब से विलय की स्वीकृति भी लेते आयें। लायक अली ने कहा है कि वह चौदह की सायंकाल से पहिले नहीं आ सकता।

"यह समाचार उस आदमी से कल मध्याह्न के समय मुझको मिला था और मैंने सेना से सम्पर्क बना कर पूछा था कि वे निश्चित समय से पहिले 'औपरेशन' आरम्भ कर सकते हैं अथवा नहीं? वे विजयवाड़ा से सम्पर्क बना पता करते रहे और रात आठ बजे तक सेना की ओर से समय दो घण्टे पहिले करने का समाचार आया, तो मैंने तुरन्त स्वीकृति दे दी।

"अब स्थिति यह है कि रात भर हमारी सेनाएँ सड़क पर बढ़ती रहीं। सेना का एक भाग शोलापुर से हैदराबाद को चला जा रहा है और दूसरा विजयवाड़ा से बढ़ रहा है। विजयवाड़ा की ओर रजाकारों ने अधिक ऊधम मचाया हुआ था। उन्होंने मार्ग रोकने का यत्न भी किया है, परन्तु हमारी सेना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
के आगे वे रुक नहीं सके। रजाकारों के साथ रियासती सेना भी सामने आयी थी, परन्तु हमारी दोनों सेनाएँ धीरे–धीरे आगे बढ़ रही हैं। नवीनतम समाचार यह है कि शोलापुर से चली सेना तो शोलापुर से साठ मील के अन्तर पर पहुँच गयी है और विजयवाड़ा वाली पैंतालीस मील जा चुकी है। अब दिन के समय विरोध की आशा की जा रही है।"

इस प्रगति से सब प्रसन्न थे। जब मन्त्रीगण उठकर जाने लगे तो डॉ. अम्बेडकर सरदार पटेल के पास आए और पूछने लगे, "मगर मैं विस्मय कर रहा हूँ कि आपको सूचना देने वाला मित्र, वहाँ की इतनी प्राइवेट बातें कैसे जान सका है। वह है कौन?"

"तो आप उससे मिलेंगे? एक बहुत ही विद्वान व्यक्ति है और यदि आप उसका विश्वास प्राप्त कर सकें तो वह आपको कुछ और बातें भी बता सकता है, जो हैदराबाद की नहीं वरन् यहाँ हमारी राजधानी की हैं।"

"तो मिला दीजिये। ऐसे आदमी से तो परिचय अवश्य प्राप्त करना चाहिए।"

"तो ठहरिये। ये सब लोग चले जायें तो आपसे उसका परिचय करा दूँगा।"

: 14 :

"मैं आपसे आपकी इन सब जानकारी का स्रोत जानना चाहता हूँ।" डॉ. अम्बेडकर का प्रश्न था।

सामने बैठे व्यक्ति ने हँसते हुए कह दिया, "जिससे उसे जेल में बन्द करा सकें।"

"तो आप मुझको इतना दुष्ट मानते हैं?"

"दुष्ट नहीं। हाँ, एक चतुर राजनीतिज्ञ, जिसके पूर्वग्रह उसकी बुद्धि को कुण्ठित कर रहे हैं।"

"ओह!"

डॉ. अम्बेडकर ओजस्वी और विश्वास सहित बात करने वाले एक अर्ध–वृद्ध व्यक्ति को अपने सामने बैठे अपने विषय में इस प्रकार कहते सुन आश्चर्य में पड़ गये। फिर उसके विषय में अधिक जानने के लिये पूछने लगे, "और आप क्या अपने पूर्वग्रहों से मुक्त हैं?"

"मनुष्य अपने पूर्वग्रहों से प्रभावित तो होता है, परन्तु मैं उनसे ग्रसित नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
हूँ। मैं उनकी समय–समय पर परीक्षा करता रहता हूँ। इस परीक्षा करने वाले 'ऐपरेटस'[1] को भी समय–समय पर निर्मल और तीखा करता रहता हूँ।''

''मगर आपका मेरे विषय में यह कहना कि पूर्व ग्रहों से मेरी बुद्धि कुण्ठित है यही प्रकट करता है कि आप पूर्व ग्रहों से ग्रसित हैं।''

''आप बहुत व्यस्त व्यक्ति हैं अन्यथा मैं आपको विश्वास दिला देता कि मैंने जो कुछ कहा है वह ठीक है।''

''व्यस्त तो हूँ परन्तु सदानारायण जी! अपने विषय में कुछ अधिक जानने के लिये भी उत्सुक हूँ। मेरे मुख पर आज तक किसी ने नहीं कहा कि मैं 'प्रेजुडिसेज' से बँधा हुआ हूँ और मेरी बुद्धि काम नहीं करती। महात्मा गांधी जी ने भी मुझे इतना कहने का साहस नहीं किया था। आप खुलकर बात करिये मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मैं आपकी सम्मति के लिये आपको दण्डित नहीं मानता।''

''मैं अपने लिये चिन्तित नहीं। मैं तो उनके लिये चिन्तित था जिनके द्वारा मुझको यह सब सूचना मिल रही है।''

''देखिये डाक्टर साहब! मैं इतिहास का विद्यार्थी हूँ। इतिहास लिखने वाला जब अपने काल के विषय में लिखता है तो बहुत–सी बातें सुनी–सुनाई भी लिख देता है। इसमें ही वह भूल कर जाता है। इसी कारण मैं अपनी बातों को अधिक से अधिक सत्य–सत्य लिखने के लिये स्वयं भाग–दौड़ कर रहा हूँ।

''जब कश्मीर में युद्ध आरम्भ हुआ था तो मैं कश्मीर में जा पहुँचा था और वहाँ के मुख्य–मुख्य व्यक्तियों से सम्पर्क स्थापित करने के लिये मैंने पर्याप्त धन व्यय किया था। वहाँ क्या हुआ और क्यों हुआ, इस विषय में मैंने बहुत जानकारी प्राप्त की है।''

''अब हैदराबाद का झगड़ा आरम्भ हुआ तो मैं वहाँ जा पहुँचा। अपनी खोज में कल मुझको कुछ बातों का पता चला था और उनकी सूचना भारत के गृहमन्त्री को देना अपना कर्तव्य मान मैं यहाँ चला आया हूँ। सरदार साहब से मेरी एक बार सन् 1936 में भेंट हुई थी और तब मैंने इनकी बहुत कड़ी आलोचना की थी। इस थोड़े से परिचय के भरोसे मैं यहाँ इनसे बात करने चला आया। परमात्मा का धन्यवाद है कि मेरी तब की आलोचना से इनके मन में मैल नहीं आया था। और जब मैंने इनको वहाँ की अपनी जानकारी बतायी

---

1. यंत्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
तो ये उसके आधार पर कार्य करने चल पड़े थे। अब इनको विश्वास हो गया प्रतीत होता है कि मेरी सूचना सत्य थी और मैं सत्य हृदय से भारत की सेवा में लगा हुआ हूँ।"

डाक्टर साहब ने हँस कर कहा–"तो आज आप मेरी कड़ी आलोचना करने वाले प्रतीत होते हैं। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मेरे मन में भी आपके प्रति मैल नहीं आयेगी।"

"धन्यवाद! परन्तु मैं अपनी जानकारी के विषय में बताने से पहले आपको अपना संक्षिप्त परिचय दे देना चाहता हूँ। मैं पंजाब में लाहौर का रहने वाला था और सन् 1916 से बम्बई में रह रहा हूँ। मैंने इतिहास में एम.ए. की डिग्री प्राप्त की थी और पीछे का पूर्ण जीवन ऐतिहासिक खोज में ही लगाया है।

"बम्बई में मैं साधना आश्रम में रहता हूँ और वहाँ पर ही एक अच्छे–खासे पुस्तकालय में बैठ अपना पठन तथा लेखन कार्य करता रहता हूँ।

जब से कलकत्ता में 'डायरेक्ट ऐक्शन' हुआ है मैंने प्राचीन युग के इतिहास की खोज को छोड़ वर्तमान युग के विषय में लिखना आरम्भ कर दिया है। कलकत्ता के 'डायरेक्ट ऐक्शन' में मेरे बहुत से प्रिय जन मारे गये थे और उस संस्था की, जो मेरे अनुसंधान में मेरी प्रत्येक प्रकार की सहायता करती रही है, भारी हानि हुई थी। इसने मुझको अपने पुस्तकालय को छोड़ देश के वर्तमान में विचरने पर बाध्य कर दिया है।

"एक बात तो निश्चित है कि मिस्टर जिन्ना विशेष रूप में, और प्रायः मुसलमान सामान्य रूप में, गांधी और सामान्य हिन्दू से अधिक राजनीति को समझता था। उनके कलकत्ता तथा उसके उपरान्त देश के अन्य भागों में गृह युद्ध छेड़ देने को मैं एक उचित राजनीतिक कार्य मानता हूँ। वे हिन्दुओं से अधिक यथार्थवादी थे।

"गांधी जी तो न इस लोक का ज्ञान रखते थे और न ही परलोक का। वे बुद्धि तो रखते थे, परन्तु उनकी बुद्धि भी कुण्ठित ही थी। पूर्व ग्रहों के कारण तो नहीं, वरन अपने पूर्व जन्म से प्राप्त स्वभाव के कारण।

"यह तो ठीक ही हुआ है कि वे इस समय देश में उपस्थित नहीं। यदि होते तो कदाचित् लार्ड माउन्टबेटन को भारत से जाने की आवश्यकता नहीं रहती। वे उनकी इच्छा पूर्ण करने के लिये अपने जीवन की बाजी लगा देते और यह भी सम्भव था कि आपकी हैदराबाद में बढ़ रही सेना के मार्ग में लेट जाते और कहते कि हैदराबाद पर आक्रमण उनको कुचल कर जाने से ही हो सकेगा। ऐसी अवस्था में गृहमन्त्री के लिये अन्य कुछ उपाय ही न रह जाता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और सेना वापिस कर ली जाती।

"एक और भी सम्भावना थी कि यदि गांधीजी इस समय यहाँ उपस्थित होते तो प्रधानमन्त्री, मन्त्रिमण्डल के निर्णय को कि तेरह तारीख को हैदराबाद पर पुलिस ऐक्शन किया जाये, बदलवाने के लिये गांधीजी की सहायता प्राप्त कर लेते। स्वराज्य काल के दो महीनों के भीतर ही दो बार उन्होंने उनकी सहायता माँगी और दोनों ही बार गांधीजी ने प्रधानमन्त्री की सम्मति का पोषण किया था और मन्त्रिमण्डल के निर्णय को रद्द कराया था। एक बार तो पचपन करोड़ रुपया पाकिस्तान को दिलवाने के लिये और दूसरी बार उससे पूर्व जिन्ना साहब का लाहौर में निमन्त्रण स्वीकार करने के लिये।

"यदि इन दोनों समय में गांधीजी प्रधानमन्त्री की बात न मनवाते और मन्त्रिमण्डल की बात रद्द न करवाते तो क्या होता, यह कहना कठिन है। यह कहना एक इतिहास लेखक का काम भी नहीं, परन्तु ऐसी बातों का, जैसी गांधीजी ने करवाई हैं, इतिहास के साथ घना सम्बन्ध है और उनका प्रभाव इतिहास का विषय है।

"डाक्टर साहब! मैं अपने साधनों से आप सरीखे, राजनीतिक मंच पर खेलने वालों के कामों का देश की अवस्था पर प्रभाव देखने का यत्न करता रहता हूँ। इसी यत्न में मैं हैदराबाद गया था। वहाँ मैं कई दिन तक इधर-उधर भटकता रहा। परन्तु किसी स्रोत को पकड़ नहीं सका था, जहाँ से मुझको अन्तरंग सूचना मिल सकती। अकस्मात मेरा सम्पर्क एक ऐसी औरत से हुआ जो एक मुसलमान टेलीफोन ऑपरेटर से अपहरण की गयी थी। वह जन्म से हिन्दू और एक उच्च परिवार की लड़की थी। मुहम्मद अमीन टेलीफोन ऑपरेटर ने उसका अपहरण किया और फिर उससे विवाह कर लिया था। मैं उसको पुनः हिन्दू धर्म में आ जाने की प्रेरणा देने के लिये उसके भाई की ओर से नियुक्त किया गया तो मुझको उस औरत को प्रेरणा देते हुए यह समझ आया कि वह लड़की देश से प्रेम करती है। और उसने हिन्दू धर्म से अधिक देश के नाम पर मेरी सहायता करनी स्वीकार कर ली।

"उसने स्वयं ही मुझको बताया कि उसका पति हैदराबाद में टेलीफोन ऑपरेटर है और स्टेट के प्राइवेट टेलीफोन पर उसकी नियुक्ति है। वह उसको राज्य के रहस्य की बातें बताता रहता है।

"मैंने इस सूचना पर उसको एक इतिहास लेखक की सहायता करने के लिये उसके देश-प्रेम को प्रेरणा दी, तो वह राजी हो गयी। वह मुझे निजाम और उसके वजीरों में होने वाली अनेक बातें बताया करती थी। उनमें कुछ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
ही मतलब की होती थीं। प्रायः बातें फूहड़ होती थीं।

"उसने एक दिन बताया कि निजाम साहब ने कम्युनिस्टों पर से प्रतिबन्ध उठाने की आज्ञा दे दी है। निजाम यह नहीं चाहता था। मगर लायक अली साहब ने जो–जो युक्तियाँ दीं, वह सब उसने मुझे बतायीं। लायक अली का यह कहना था कि अगर कम्युनिस्टों ने इस्लामी राज्य अथवा निजाम के खिलाफ कुछ भी हरकत करनी चाही तो रजाकारों को उनके मुकाबिले में खड़ा कर दिया जायेगा और इस प्रकार एक पत्थर से दो पक्षी मारे जा सकेंगे।

"निजाम साहब इस आश्वासन को मान गये और कम्युनिस्टों को पचास राइफलें और पाँच सहस्र कारतूस देने स्वीकर कर लिये।

"कल मैं उसके भाई के साथ उससे मिलने गया तो उसने लायक अली के दिल्ली के किसी वरिष्ठ अधिकारी से हुई यह बात बता दी। साथ ही मैं यह देख रहा था कि हैदराबाद में युद्ध की तैयारियाँ हो रही हैं। कल हैदराबाद की सड़कों पर रजाकार निकले तो उनके साथ रियासती सिपाही भी थे। अर्थात् दोनों का मेल हो गया था।

"इस सब सूचना और जानकारी को लेकर मैं दस बजे हवाई जहाज से यहाँ चला आया और सरदार साहब से मिलने के लिये इनकी कोठी पर पहुँच गया। ये मुझको पहिचान गये और फिर मैंने इनको अपने आने का उद्देश्य बताया तो इन्होंने मुझको अपने यहाँ मेहमानरवाने में ही रख लिया है।"

"परन्तु मैं आपकी जानकारी दिल्ली के विषय में भी सुनना चाहता हूँ।" डॉ. अम्बेडकर बोले।

"इस जानकारी को बताने के लिये मुझे अपने उस संस्थान से पूछना पड़ेगा जो इसमें धन व्यय कर रहा है।"

"वह संस्थान कौन है?"

"मैंने बताया है न कि मैं साधना आश्रम जुहू में काम करता हूँ। उनको मेरे निर्वाह लायक मुझे देते हुए बत्तीस वर्ष होने जा रहे हैं। केवल इतना ही नहीं। वे हिन्दू धर्म की रक्षा के लिये कई करोड़ रुपया व्यय कर चुके हैं। कलकत्ता में जो 16 अगस्त को इस संस्थान की हानि हुई थी, उसकी कीमत लगभग पचास–साठ लाख रुपया थी। इस हानि में सीधा हाथ तो वहाँ के मुसलमानों का था, परन्तु दिशा–दर्शन कांग्रेसियों ने किया था।"

"मैंने साधना आश्रम के विषय में सुना है। उसके प्रधान श्री देसाई जी को सामान्य रूप से जानता हूँ। वे भी मुझे यही कहते थे कि मैं एक अति विद्वान्

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यक्ति हूँ, परन्तु मेरी वृद्धि पर 'प्रेजुडिसेज' का पर्दा है।"

"यही मत मेरे पिताजी का आपके विषय में था। वे अब राजनीति से पृथक् हो चुके हैं। उन्होंने सन् 1817 में संन्यास लिया था और इस समय संसार से तटस्थ होकर रह रहे हैं।"

"क्या नाम है उनका?"

"इस समय का नाम स्वामी गरीबदास है।"

"समय मिलने पर उनसे मिलूँगा। परन्तु मैं यह नहीं जान सका कि मेरे कौन से 'प्रेजुडिसेज' हैं जिनका पर्दा मेरी बुद्धि पर पड़ा है।"

"देखिये! आप एक ऊँची पदवी पर पहुँचे हुए हैं और इस समय देश का एक अति आवश्यक कार्य कर रहे हैं। मेरा अभिप्राय है कि आप संविधान बनाने में अपनी योग्यता और ज्ञान का योगदान कर रहे हैं, परन्तु आपकी मति यदि शुद्ध नहीं है तो आप देश का कल्याण करने के स्थान पर अकल्याण ही कर सकेंगे।"

"यही तो पूछ रहा हूँ कि मेरी मति में क्या खराबी दिखाई देती है आपको?"

"भला आप देश किसको समझते हैं?" सदानारायण ने पूछना आरम्भ कर दिया।"

"जो हिमालय से लेकर बंगाल की खाड़ी में कन्याकुमारी तक फैला हुआ है। इधर कच्छ से लेकर बर्मा की सीमा तक है। भला यह कोई प्रश्न है?"

सदानारायण ने मुस्कराते हुए कहा, "जी नहीं यह तो छोटा–बड़ा होता रहता है। कई बार वर्तमान से भी छोटा हो चुका है। यह देश नहीं है। यह तो देश का ढाँचा मात्र है। वास्तव में भारत देश, जिसको कभी हिन्दुस्तान, उससे पहिले भारतवर्ष और उससे भी पहिले आर्यावर्त कहते थे, यहाँ के रहने वाले वैदिक संस्कृति के अनुयायी हैं।"

"भाई खूब! भला आर्यावर्त की क्या सीमा थी। मनुस्मृति पढ़ी है अथवा नहीं?"

"जी पढ़ी है। इसी कारण मैंने यह निवेदन किया है कि यह ढाँचा छोटा–बड़ा होता रहता है। साथ ही यह भी बताया है कि इस ढाँचे में आत्मा है वैदिक संस्कृति की। यदि इस देश की रक्षा और उन्नति का भार आपने लिया है तो वैदिक संस्कृति की रक्षा और उन्नति करनी होगी।

"कभी यह भी हुआ है कि देश राजनीतिक विचार से खण्ड–खण्ड हुआ है, परन्तु देश की सीमा सदा उन लोगों के रहने से निश्चय हुई है जो यहाँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की प्राचीन वैदिक संस्कृति के अनुयायी रहे हैं। जब इस संस्कृति के लोग राक्षसों के आक्रान्त व्यवहार से सिकुड़ कर गंगा–यमुना के बीच के क्षेत्र में आ गये तो आर्यावर्त की वह सीमा हो गयी जो मनुस्मृति में लिखी गयी थी। उसमें आर्यावर्त के इसी ढाँचे के विषय में ही लिखा है, परन्तु आर्यावर्त का दिग्दर्शन तो वाल्मीकीय रामायण में मिलता है। उसमें स्पष्ट वर्णन किया है कि राक्षस समुदाय भी किसी समय ईश्वर–भक्त और ज्ञान–विज्ञान का ज्ञाता था। केवल राग से पराभूत हो उन्होंने अपने राज्य को बढ़ाया और आर्यावर्त के ढाँचे को छोटा कर दिया था। राम ने वैदिक विचार के लोगों का राक्षस–राज्य से उद्धार कराया था।"

"और कौन थे वे लोग?"

"दण्डकारण्य के ऋषि, सुग्रीव आदि वानर, शबरी इत्यादि तपस्विनियाँ और सुग्रीव इत्यादि राक्षस। राक्षस राज्य में ये लोग तो केवल नेता थे। इनके अनुयायी भी एक बहुत बड़ी संख्या में थे, परन्तु संगठित नहीं थे। राम ने इनको संगठित कर पुनः आर्यावर्त की सीमा श्रीलंका तक फैला दी थी।"

"परन्तु अन्य इतिहासज्ञ यह बात इस प्रकार तो नहीं लिखते।"

"वे इतिहास पढ़े हैं अंग्रेजों के चरणों में बैठकर और उन द्वारा निर्माण किये पूर्वग्रहों से ग्रसित आप यह समझ रहे हैं कि हिन्दुस्तान में कोई आदिवासी थे। वे मध्य एशिया से आये आर्यों द्वारा दास बना लिये गये और आप उन दासों की सन्तान हैं। यही आपके पूर्वग्रह हैं।"

"नहीं भाई! मेरे पूर्वग्रह तो पुराणों को पढ़ कर बने हैं?"

"वे भी अंग्रेजी पढ़े–लिखों से अनूदित हैं।"

"नहीं, मैं संस्कृत भी पढ़ा हूँ।"

"तो ठीक है। आप किसी भी एक स्थल पर यह लिखा दिखा दें कि आर्य कहीं बाहर से आये थे। वहाँ तो यह लिखा है कि आर्य मनु की सन्तान थे और मनु से ही सब मानव समाज बना है। आप भी तो मानव समाज के ही घटक हैं। तो भला आप और आर्य मेरा अभिप्राय है सूर्यवंशी और चन्द्रवंशी एक ही पिता की सन्तान हैं।"

"तो फिर ये नाग, निषाद, भील, गोंड कहाँ से बन गये?"

"ये आर्यों का–सा संयत जीवन चला नहीं सके। अतः आर्य समाज में रह नहीं सके। इन्होंने जंगलों और देहातों का आश्रय ले लिया। ये समाज से बाहर होने के कारण पृथक् हो गये।"

"परन्तु ये आर्य कहे जाने वाले हिन्दू उनसे घृणा जो करते हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"घृणा अकारण भी हो सकती है और कारणवश भी। यह हिन्दू समाज के नेताओं का कार्य है कि इस घृणा अथवा इनसे उत्पन्न प्रेम को किसी आधार पर टिका कर रखें। पिछले एक सहस्र वर्ष से हिन्दू समाज पराधीन था। इस पराधीनता में युक्तियुक्त व्यवहार रख नहीं सका। अब यह स्वाधीन हुआ है, परन्तु आप उसे स्वतन्त्रता से विचार नहीं करने देते।"

"हम तो यह करने जा रहे हैं कि जो कोई देश के किसी भी नागरिक से घृणा का व्यवहार करेगा वह दंड का भागी होगा।"

"इसमें आप सफल नहीं होंगे। होगा यह कि जो पहिले घृणा किये जाते थे, वे स्वयं उनसे घृणा करने लगें जो उनसे घृणा करते थे और इसकी प्रतिक्रिया यह होगी कि पूर्व में घृणा करने वाले इनसे और भी अधिक घृणा करने लगेंगे।

"डाक्टर साहब! भला घृणा कोई स्वतन्त्र व्यवहार है क्या? यह तो मन की अवस्था है। व्यवहार को आप दंड से दबा देंगे, परन्तु मन की अवस्था को आप कानून से बदल सकेंगे, क्या?"

"आप इस मन की अवस्था को बदलने के लिये दंड का विधान करेंगे तो यह मन की अवस्था कानून के विरुद्ध विद्रोह करेगी। इससे आप देश में फूट का बीजारोपण करेंगे।"

डाक्टर ने घड़ी में समय देखा और कह दिया, "आप से फिर मिलूँगा, मुझको गृहमन्त्री के समर्थन के लिये मन्त्रिमण्डल की बैठक में पहुँचना है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तृतीय परिच्छेद

: 1 :

अन्ना को लाहौर के किले में कैद करने की आज्ञा जब कायदे आजम साहब ने खलीफा मुहीयुद्दीन साहब को बतायी तो वह विचार करने लगा था कि यह किस लिये हुआ है। उसको कुछ ऐसे समझ आया कि जरीना ने अन्ना से हसद करनी आरम्भ कर दी है। जरीना ने खलीफा साहब को कहा था, "गवर्नर जनरल साहब मुझको कराची चलने के लिये कह रहे हैं।" इस बात से खलीफा के मन का सन्देह और भी पक्का हो गया था। इस पर उसने मुस्कुराते हुए पूछ लिया, "गवर्नर जनरल कह रहे हैं या तुम खुद कोशिश कर रही हो?"

अन्ना को लाहौर के किले में भेजने के दूसरे दिन खलीफा साहब ने लाहौर किले के मुहाफिज को बुला कर अन्ना को रात के वक्त चोरी–चोरी गवर्नमेन्ट हाउस में हाजिर करने का हुक्म दे दिया। साथ ही यह कह दिया, मुमकिन है मुझको मजबूर हो कर अन्ना के किले से बाहर हो जाने की वजह से तुमको सजा देनी पड़े। इसलिये मैं तुमको उस सजा के एवज में लायलपुर में हिन्दुओं से खाली की हुई जमीन के पाँच मुरके दे दूँगा।"

मुहाफिज ने कहा, "मगर इस काम में मुझको एक जमादार की मदद भी लेनी पड़ेगी। कुछ उसकी भी परवरिश हो जाये।"

"ठीक है। उसके लिये भी मुनासिब इन्तजाम कर दिया जायेगा।"

अभी जिन्ना साहब लाहौर में ही थे कि अन्ना को एक बुर्के में छिपा कर खलीफा साहब के सोने के कमरे में हाजिर कर दिया गया। यह एक मामूली बात थी। गवर्नमेन्ट हाउस में इसकी ओर किसी ने ध्यान भी नहीं दिया। अन्ना को लाने वाले के चले जाने के बाद खलीफा ने अन्ना से कहा, "देखो अन्ना! जिस दिन तुमसे पहिली मुलाकात हुई थी उसी दिन मैं तुम्हारी गुफ्तगू से बहुत मुतास्सिर हुआ था। गवर्नर जनरल के हुक्म से मुझे तुम्हें कैद करना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पड़ा था। मगर मुझे इसका बहुत अफसोस है। गवर्नर जनरल बहादुर का ख्याल था कि तुम पाकिस्तान में ईसाइयों के साथ हो रहे जुल्म के मुताल्लिक दिल्ली के अंग्रेजी सफारत खाने में शिकायत करने वाली हो। मुझको उनके इस किस्म की बात का यकीन नहीं आया। मैं यह तुमसे जानना चाहता हूँ कि क्या तुम यह साजिश करने वाली थीं।"

"थी तो नहीं। मैं इस किस्म की बात करने का कुछ भी ख्याल नहीं रखती थी। मगर उनकी इस हरकत से मैं समझ रही हूँ कि ब्रिटिश कमिश्नर की मार्फत यहाँ रहने वाले ईसाइयों की हिफाजत का कुछ इन्तजाम होना चाहिए।"

"देखो अन्ना! सब ईसाइयों की बात छोड़ो। तुमको अपने मुताल्लिक सोचना चाहिए। अगर तुम ईमान की कसम खाकर यह वायदा करो कि तुम पाकिस्तान की किसी किस्म की भी शिकायत किसी के भी सामने नहीं करोगी तो मैं तुमको इसी वक्त आजाद कराने का ख्याल कर रहा हूँ।"

"अगर आप कहते हैं तो मैं कसम खाकर कहती हूँ कि अब किसी से भी अपने और अपने हम–मजहबों के साथ सलूक की बात नहीं कहूँगी।"

"तो अब तुम आजाद हो। हम तुमको कोठी से बाहर तक पहुँचाने का इन्तजाम कर देंगे।"

"मगर क्या मैं अमनो–अमान से पाकिस्तान में रह सकूँगी?"

इस सवाल पर खलीफा गम्भीर विचार में लीन हो गया। कुछ विचार कर उसने कहा, "मैं कर तो बहुत कुछ सकता हूँ मगर इस सब मुआमले में मैं खुद को लिपटाना नहीं चाहता और बाहर के बहुत आदमियों को मैं इस काम में शामिल करना नहीं चाहता। हाँ, वही आदमी जो तुमको यहाँ लाया है वह अभी बाहर इन्तजार कर रहा है। तुम उसकी बीवी बन पाकिस्तान से हिन्दुस्तान में जा सकती हो। वहाँ जाकर वह कहीं तुमको छोड़ देगा।

"बहुत–बहुत शुक्रिया है। मैं यहाँ पर दो आदमियों से मिलना चाहती हूँ। एक कराची से आये मौलाना बशीर हैं। दूसरे जरीना से। क्या यह मुमकिन है?"

"तुम उनसे मिल कर अपनी जान का खतरा ले रही हो।"

"हाँ, कुछ खतरा तो है। इस पर भी मेरी आइन्दा जिन्दगी का बहुत बड़ा ताल्लुक बशीर साहब से है। उससे मैं जानना चाहती हूँ कि हमारा रुपया जो उनके पास जमा है मुझको कब और कहाँ देंगे। मेरी जिन्दगी भर की कमाई उनके पास रखी है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"और जरीना से क्यों मिलना चाहती हो?"

"मैं चाहती हूँ कि वह गवर्नर जनरल बहादुर को छोड़ दे। वरना वह उनकी मौत का वायस हो जायेगी।"

"मगर वह तुम्हारी बात मानेगी क्या?"

"मैं अपना फर्ज अदा करना चाहती हूँ।"

"एक बात है। मैं तुम्हें उन दोनों के कमरे दिखा देता हूँ लेकिन इस सब में मेरा ताल्लुक नहीं बताना। साथ ही रात तुमको इसी कमरे में गुजारनी पड़ेगी। अलख सुबह ही तुमको यहाँ से निकाल सकूँगा। अभी तक तो लोग यह समझते हैं कि मेरी कोई माशूकी मेरे कमरे में लायी गई है। इसलिए इतनी जल्दी उसको यहाँ से भिजवा दूँगा तो सब शक करने लगेंगे कि तुम माशूका नहीं थीं और किसी दूसरे काम से आयी थीं।"

खलीफा मुस्कराता हुआ अन्ना को मुख पर देखता रहा। अन्ना खामोश रही। इस पर खलीफा पलंग पर से उठा और उसने अपने कमरे का द्वार खोल कर कहा, "आओ। मैं तुमको उन दोनों के कमरे दिखा देता हूँ और अगर वे अपने कमरे में होंगे, तो मिल कर मेरे कमरे में ही लौट आना।"

अन्ना बशीर साहब से मिली और उनसे उसने अपने सोने और रुपये के मुताल्लिक पूछा, बशीर ने बता दिया कि वह अगले दिन कराची लौट रहा है और अगर जॉन उसके पास आया तो वह सब उसको दे देगा।

अन्ना को अभी तक पता नहीं था कि जॉन भी पकड़ लिया गया है। उसने अपने कैद होने की बात बता कर कह दिया, "मैं यहाँ से भाग जाने की कोशिश कर रही हूँ। यहाँ तक तो पहुँच गयी हूँ और पाकिस्तान से बाहर जाने की कोशिश कर रही हूँ। अगर जॉन मिले तो उसको बताना कि वह मुझे बम्बई में मिलने की कोशिश करे।"

बशीर कैद से भागी हुई को सामने खड़ा देख डर गया। उसने कहा, "मैं सब कुछ कर दूँगा, मगर तुम जल्दी यहाँ से चली जाओ। मैं तुम्हारी हिफाजत नहीं कर सकूँगा।"

अन्ना मुस्कुराई और कमरे से बाहर हो गयी। जाते हुए वह द्वार बन्द कर द्वार में लगी चाबी को घुमा अपने साथ ले गयी और वह चाबी कुछ दूर जा अंधेरे में फेंक जरीना के कमरे में जा पहुँची।

जरीना गहरी नींद सो रही थी। वह गवर्नर जनरल साहब के कमरे से देरी से आयी थी और सो गयी थी। अन्ना ने उसे जगाया तो वह भौचक्की हो उसका मुँह देखती रह गयी। अन्ना ने उसके पलंग पर बैठ कर अपनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कहानी सुना दी। इस पर तो जरीना डरी। मगर अन्ना ने उसको गवर्नर बहादुर की अपने पर की हुई मेहरबानी का जिकर किया तो उसने इतमिनान से पूछ लिया, "तो यहाँ किस लिए आई हो?"

"यह कहने कि कराची मत जाना।"

"क्यों?"

"गवर्नर जनरल बहादुर ने जो बेवफाई मुझसे की है उसकी रोशनी में मैं समझती हूँ कि वे तुमको मरवा डालेंगे।"

जरीना को कँपकँपी हुई मगर उसने अपने को काबू में कर कह दिया, "मगर तुमको यहाँ बहुत देर तक नहीं ठहरना चाहिए। बताओ किधर जा रही हो?"

"अभी तो गवर्नर बहादुर के कमरे में जा रही हूँ। वहाँ से वे कहीं बाहर कर देंगे।"

"तो जल्दी करो। देखो, मैं तुमको बताती हूँ कि मैं अभी कराची जा रही हूँ। मेरी माँ और फूफी कबायलियों की हिरासत में हैं और उनको छुड़ाने के लिए कोशिश करना चाहती हूँ। उनके छूट जाने के बाद मैं तुम्हारी बात पर गौर करूँगी।

अन्ना कमरे से निकल गयी। अगले दिन जरीना और मौलाना बशीर साहब ने जिन्ना साहब से अन्ना के मुताल्लिक अपने–अपने ढंग से बात बता दी।

अन्ना जब खलीफा साहब के कमरे में पहुँची तो उस वक्त रात के दो बज रहे थे। वह वहाँ दो घंटा ही रह सकी। चार बजे खलीफा साहब ने उसी आदमी के साथ अन्ना को कोठी से बाहर जाने का इन्तजाम कर दिया और दोनों के हिन्दुस्तान जाने के लिए पासपोर्ट का इन्तजाम भी हो गया।

अन्ना को लाने वाला अख्तर हुसैन किले के मुहाफिज का एक मौतबिर मुलाजिम था। दो दिन तक लाहौर में छिपे–छिपे रह कर अख्तर हुसैन अन्ना को अपनी बीवी के रूप में दिल्ली ले गया। वहाँ उसको एक सौ रुपये गवर्नर की तरफ से देकर यह पाकिस्तान लौट गया।

अन्ना अब सोचने लगी थी कि कहाँ जाये। कुदरती तौर पर उसको बम्बई में रहने वाले अपने माँ–बाप की याद आयी। उसका जीजा लाहौर पाकिस्तानी कमिश्नर के दफ्तर में नौकर था। मगर वह अपने को पाकिस्तानी सरकार से दूर रखना चाहती थी। वह बम्बई का टिकट लेकर वहाँ से चल पड़ी।

बम्बई में अन्ना के माता–पिता की अवस्था अच्छी नहीं थी। वे एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुसलमान खोजा के घर में काम करते थे। पिता खाना बनाता था और माता खोजे–सौदागर की तीन पत्नियों के कपड़े इत्यादि धोने का काम करती थी। पाकिस्तान बनने के समय वह अपना पूर्ण कारोबार बम्बई से लंदन ले गया। हिन्दुस्तान में वह किसी मुसलमान का सुखी रह सकना सम्भव नहीं समझता था। और पाकिस्तान को वह अभी एक बच्चा समझ वहाँ कारोबार करने में असुविधा समझता था।

वह अन्ना के माता–पिता को साथ नहीं ले जा सका। इस कारण अन्ना की माँ 'मेरी' और पिता 'पॉल' बम्बई के एक चाल में बहुत ही निर्धनावस्था में रह रहे थे। किसी अच्छे परिवार में उनको नौकरी मिल नहीं रही थी।

अन्ना पहुँची तो उन्होंने उसकी कथा सुनी और कह दिया, "हमारे पास तुम्हारे पेट भरने के लिए कुछ नहीं। तुम शीघ्रातिशीघ्र कोई नौकरी ढूँढ़ लो, अन्यथा हमको भी कष्ट दोगी और अपने को भी।"

अन्ना नौकरी ढूँढ़ने लगी। वास्तव में वह जॉन के आने की प्रतीक्षा में थी। उसका विचार था कि यदि वह घर पर रखा और मौलाना बशीर के पास रखा धन पाकिस्तान से बाहर ला सका तो वह न सिर्फ अपनी हालत सुधार सकेगी प्रत्युत अपने माता–पिता की सहायता भी कर सकेगी।

इस पर भी सौ रुपये में से बचे रुपये द्रुत गति से समाप्त हो रहे थे और यह न जानती हुई कि जॉन कब तक आने में सफल हो सकेगा वह कहीं नौकरी पाने की चिन्ता में थी।

एक बात उसने मन में ठान ली थी कि किसी मुसलमान के घर में नौकरी नहीं करेगी, परन्तु हिन्दू, गुजराती, मरहठे उसका ईसाई होना सुन उसे नौकर रखते नहीं थे।

: 2 :

नौकरी की खोज में एक दिन वह जुहू साधना आश्रम में पहुँच गई। एक साफ–सुथरा और सुन्दर मन्दिर और बगीचा देख पहिले तो वह घबराई, फिर उसने यह विचार कर अन्दर प्रवेश किया कि तनिक धर्मात्मा हिन्दुओं के दया–धर्म की भी परीक्षा कर लें। उसने मन्दिर से एक प्रौढ़ावस्था के व्यक्ति को आश्रम के कोने में बने मकान की ओर जाते देखा तो वह उसका मार्ग रोक, हाथ जोड़, प्रणाम कर कहने लगी, "मैं एक बात कहना चाहती हूँ।"

"हाँ, कहिये!"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्ना साफ–सुथरे परन्तु सादे और सफेद परिधान में थी। इस पर भी वह अति सुन्दर रूप–रेखा के कारण आकर्षक थी।

अन्ना ने कहा, "यहाँ खड़े–खड़े ही?"

"नहीं! आइये। वह मेरा घर है।"

यह सदानारायण था। घर में उसकी पत्नी सुचेता ही थी। उसके दोनों लड़के विदेश गये हुए थे। एक अमरीका में काम करता था और एक कनाडा में मौन्ट्रील के हस्पताल में डाक्टरी करता था। उसकी लड़की का विवाह एक बंगाली वकील से जो पटना में प्रैक्टिस करता था, हो चुका था और वह ससुराल में थी। सदानारायण अपने पुस्तकालय के साथ लगे हुए आश्रम में ही रहता था। कुछ दिन के लिये कश्मीर श्रीनगर में गया हुआ था और पिछले दिन ही वहाँ से लौटा था।

जब भी सदानारायण बम्बई में होता था तो नित्य सायंकाल की कथा वह किया करता था।

यह सोमवार का दिन था और सदानारायण आश्रम के पुस्तकालय में प्रातः सात बजे से ग्यारह बजे तक पठन तथा लेखन कार्य कर लौट रहा था। इसी समय अन्ना उसको मिल गयी।

अन्ना और कुछ भी कहे बिना सदानारायण के साथ चल पड़ी। सदानारायण घर पहुँचा तो सुचेता अपने कमरे में बैठी तानपुरा लिये अपना संगीत का अभ्यास कर रही थी। ये दोनों ड्राइंग रूम में पहुँचे तो वहाँ भी सुचेता के तानालाप की आवाज आ रही थी।

सुचेता गा रही थीः–

भक्तन की टेर सुनो, गिरधारी!

अन्ना मधुर और स्थिर आवाज में यह गाया जाता सुन एक क्षण के लिये कमरे के द्वार पर अटकी और फिर उस द्वार की तरफ देखने लगी जिधर से आवाज आ रही थी। सदानारायण ने कह दिया, "आइये! यह मेरी पत्नी है।"

अन्ना भीतर आ गयी। सदानारायण ने उसे कोच पर बैठने के लिए कहते हुए पूछ लिया, "यदि इस गाने से किसी प्रकार का आपकी बात में विघ्न पड़ता हो तो द्वार बन्द कर देता हूँ।"

"नहीं! इनको गाने दीजिये और यदि आपको आपत्ति न हो तो बात कुछ देर बाद भी हो सकती है।"

इस पर सदानारायण को विस्मय तो हुआ। पर उसने केवल यह पूछा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आप कहाँ से आ रही हैं?"

"कराची से! और लाहौर के मार्ग से।" अनायास ही अन्ना के मुख से निकल गया। वह बताना नहीं चाहती थी परन्तु यह स्वीकारोक्ति बुद्धि से विचार कर नहीं की गयी थी, सदानारायण के ओज से प्रभावित वह झूठ कह नहीं सकी।

एक बार तो वह मन में डरी कि इससे अभीष्ट की सिद्धि में बाधा होगी परन्तु अब बात मुख से निकल गयी थी, इस कारण वह इसकी प्रतिक्रिया सामने खड़े व्यक्ति के मुख पर देखने लगी।

सदानारायण ने अपने प्रश्न का अभिप्राय बताया, "यहाँ बम्बई में आप कहाँ ठहरी हैं?"

"वर्ली के एक चाल में अपने माता–पिता के पास ठहरी हूँ। वहाँ से आज प्रातः की चली हुई अभी–अभी यहाँ पहुँची थी।"

"तब तो आप थक गयी होंगी। आप तनिक आराम करिये। आपने भोजन भी नहीं किया होगा। सो यहीं करियेगा। मेरी पत्नी मेरे आने का समाचार पाते ही अपना संगीत का अभ्यास छोड़ यहाँ आ जायेगी।"

सदानारायण अन्ना को वहीं सोफे पर बैठा छोड़ उस कमरे में चला गया जहाँ से संगीत की ध्वनि आ रही थी।

सदानारायण के जाते ही संगीत बंद हो गया और उसके एक मिनट उपरान्त सुचेता आयी और हाथ जोड़, नमस्कार कर अन्ना के समीप बैठ गयी।

"तो आप कराची से आयी हैं?" सुचेता ने आते ही यह प्रश्न कर दिया।

"जी!" अब अन्ना सतर्क थी। उसने निश्चय कर लिया था कि वह आवश्यकता से अधिक नहीं बतायेगी।

"आप सिंधी तो प्रतीत होती नहीं। आप के माता–पिता भी यहाँ किसी मिल में काम करते हैं न? तो आप वहाँ क्या करती थीं?"

अन्ना ने कहा, "मेरे माता–पिता किसी मिल में काम नहीं करते। वे बेकार हैं और इस चाल में रहने के लिये सस्ता कमरा मिल गया है। इसलिए वे वहाँ रहते हैं।

"हम ईसाई हैं। मैं पाकिस्तान में एक बहुत बड़े पाकिस्तानी की नौकरी में वहाँ गयी थी, परन्तु वहाँ हिन्दुओं की भाँति ईसाइयों पर भी जुल्म होने लगे हैं। इस कारण मैं वहाँ से भाग आयी हूँ परन्तु मेरे पति पाकिस्तान में ही रह गये हैं। मैं नहीं जानती कि वे कहाँ हैं?"

इस समय सदानारायण भी वहाँ आ गया और बैठते ही उसने सुचेता से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कह दिया, "मैंने भोजन लगाने के लिये कह दिया है। यह बहिन जी भी साथ ही खायेंगी।"

अब अन्ना ने कह दिया, "भोजन मैं कर तो सकती हूँ, परन्तु मेरे आने का अभिप्राय जान लीजिये तब ही निमन्त्रण दीजियेगा।"

"तो यहीं मेरी पत्नी के सामने बतायेंगी अथवा पृथक् में?"

"यहाँ भी बता सकती हूँ। बात यह है कि मैं बेकार हूँ। मेरे पास संचित धन समाप्त हो रहा है। अब एक–आध दिन के खाने भर का दाम जेब में है। मैं कहीं नौकरी पाने की खोज में यहाँ आयी हूँ। बताइये आप इसमें मेरी सहायता कर सकेंगे क्या?"

"क्या काम कर सकती हैं आप?"

"मकान की सफाई से लेकर खाना बनाने तक।"

"देखो बहिन! मेरे घर में तो कुछ काम है नहीं। हम पति–पत्नी दो प्राणी हैं और खाना बनाने तथा और सब प्रकार की सेवा के लिये दो प्राणी यहाँ काम करते हैं। वे भी पति–पत्नी हैं। इस पर भी आप उस मन्दिर में काम कर सकती हैं। वहाँ काम करने का प्रतिकार रोटी, कपड़ा और रहने का स्थान मिल जायेगा। यदि आप चाहें तो वहाँ काम कर सकती हैं। जब आपके पतिदेव मिल जाएँगे, तब पुनः विचार कर लीजियेगा।"

"और काम क्या करना पड़ेगा?"

"कुछ निश्चित नहीं। जो भी काम करने योग्य समझ आवे कर सकती हैं।"

"परन्तु मैं ईसाई हूँ। उस मन्दिर में क्या कर सकूँगी?"

"क्या नाम है आपका?"

"अन्ना फ्रांसिस। मेरे पति का नाम है जॉन फ्रांसिस।"

"देखिये! मन्दिर में तो ईसाई अथवा मुसलमान, हिन्दू अथवा पारसी की पंक्तियाँ नहीं होतीं। वहाँ तो एक परमात्मा है और शेष सब मनुष्य ही हैं।"

"और आप मनुष्यों–मनुष्यों में भेद–भाव नहीं करते क्या?"

"परमात्मा मनुष्यों में दो श्रेणियाँ मानते हैं। एक दैवी स्वभाव वाले और दूसरे आसुरी स्वभाव वाले।"

"इसका क्या मतलब है?"

"मतलब है 'गुड इन्टैन्शण्ड' और 'इविल इन्टैन्शण्ड।"

"और मुझको आप क्या समझते हैं?"

"यदि मैंने अपने घर में नौकर रखना होता तो अवश्य पहिले परीक्षार्थ कुछ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
दिन के लिये ही रखता, परन्तु परमात्मा के घर में परमात्मा ही देखने वाला है और वह स्वयं देख लेगा।"

"वह कैसे देख लेगा?"

"वह सब के मन में हाजिर–नाजिर है। सब के मन की बात उसको मालूम रहती है।"

"परन्तु रखने वाले तो आप हैं।"

"नहीं अन्ना बहिन! मैं परमात्मा का एक तुच्छ अनुचर हूँ। मैं न तो उसके और उसके बन्दे के भीतर बाधा बन सकता हूँ और न ही दोनों में किसी की भी सिफारिश करने वाला हो सकता हूँ।"

"तो परमात्मा की भी सिफारिश की जाती है?"

"सब धर्म–प्रचारक अपने–अपने परमात्मा की श्रोतागणों के सामने सिफारिश ही करते हैं। परन्तु अन्ना देवी! मेरा परमात्मा किसी के सामने सिफारिश नहीं करता। वह स्वयं उसके मन में प्रेरणा कर लेता है।

"मैं उसके सामने किसी की भी सिफारिश नहीं करता। प्रत्येक व्यक्ति के अपने कर्म ही उसकी सिफारिश अथवा निन्दा करते हैं।"

इस समय रसोइया भगवती द्वार पर खड़ा हो आवाज देने लगा, "पण्डितजी, भोजन तैयार है।"

इस पर सदानारायण ने कह दिया, "आओ! अब तो बात हो गयी और चलाऊ काम मिल गया है। अब तो भोजन कर सकती हैं।"

अन्ना अभी भी उठी नहीं। उसने पूछ लिया, "मन्दिर का पुजारी कौन है?"

"वह मैं ही हूँ।"

"तो आप अपने नौकर के साथ खाना खायेंगे?"

"मैंने बताया है न कि मैं आपको नौकर रख नहीं सकता। मन्दिर में नौकर और मालिक कोई नहीं। हम सब वहाँ काम करते हैं। पुजारी से लेकर वहां के भंगी तक और वहाँ लाखों रुपये से लेकर एक पैसा तक देने वाले सबके–सब एक बराबर होते हैं।"

अन्ना को भूख लगी थी। वह प्रातः दो बिस्कुट और चाय का एक प्याला पीकर ही घर से निकली थी। इस कारण वह उठी और चुपचाप सुचेता के साथ उनके खाने के कमरे में पहुँच गयी। वहाँ एक वृद्ध स्त्री बैठी थी। सुचेता ने उसका परिचय करा दिया, "ये हैं मेरी सास। मेरे श्वसुर का देहान्त हुआ तो हम इन्हें यहीं ले आये हैं?"

"कहाँ से ले आये हैं?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"वे हरिद्वार के समीप एक आश्रम में रहते थे। इन्होंने सन्यास ले लिया हुआ था। श्वसुरजी का देहान्त होने के उपरान्त हम वहाँ गये और आग्रह कर इनको यहाँ ले आये हैं।"

ये तीनों भी बैठ गये और बातचीत माताजी से होने लगी। यह सुमित्रा थी। इस समय उसकी आयु अठासी वर्ष की थी। वह वृद्ध तो बहुत हो गयी थी परन्तु उसकी कमर अभी भी सीधी थी और आँखों की ज्योति बनी थी। सुमित्रा ने इस नयी आयी स्त्री की ओर देखा और पूछ लिया, "क्या नाम है बेटी?"

अन्ना ने अपना नाम बताया और खाना आरम्भ हो गया। भगवती और उसकी पत्नी गायत्री खाने वालों के पीछे खड़े हो खाने के लिये सामान देने लगे।

अन्ना ने देखा कि उसके ईसाई होने और निर्धन होने से इनके व्यवहार में अन्तर नहीं पड़ा। वह यह भी देख रही थी कि वह वृद्धा भी उससे किसी प्रकार का परहेज नहीं कर रही। उसने इस विषय में और जानकारी प्राप्त करने के लिये कह दिया, "परन्तु माताजी! प्रायः हिन्दू दूसरे धर्म वालों से छुआछूत करते हैं।"

"बेटी! तुम जैसी साफ–सुथरी तो किसी दूसरे धर्म की हो सकती ही नहीं। सफाई से रहना ही तो धर्म का लक्षण है।"

"मैं ईसाई हूँ।"

सुमित्रा ने सदानारायण की ओर देख कर कह दिया, "सदा! जरा इसको समझाना कि ईसाई किसको कहते हैं?"

सदानारायण ने खाते–खाते रुक कर कहा, "अन्ना बहिन! धर्म तो मनुष्य मात्र का एक ही है। सच बोलना, धैर्य रखना, संयम से रहना, चोरी न करना, शरीर, मन और बुद्धि को साफ–सुथरा रखना। ये धर्म के लक्षण हैं। यह तो मनुष्य मात्र में समान हैं। इसीलिये माता कह रही हैं कि तुम जैसी साफ–सुथरी रहने वाली तो अपने धर्म की ही प्रतीत होती है।

"ईसाई, मुसलमान इत्यादि को हम धर्म नहीं, मजहब मानते हैं। मजहब का मतलब है मनुष्य के परम सुख अर्थात् मोक्ष को प्राप्त करने का मार्ग। यद्यपि सुख एक ही है, परन्तु इस तक पहुँचने के मार्ग भिन्न–भिन्न बताये हैं।

"छुआछूत तो धर्म सम्बन्धी व्यवहार है। हम छुआछूत का व्यवहार गंदे लोगों से करते हैं। साफ–सुथरा रहने वालों से नहीं।"

अन्ना मन में विस्मय कर रही थी। वह एक बात तो समझ गयी थी कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह मन्दिर का पुजारी अन्य हिन्दू मन्दिरों के पुजारियों की भाँति नहीं। एक तो इसने एक विधर्मी को मन्दिर में काम करने की स्वीकृति दे दी है और उसको भोजन के साथ कपड़ा भी दिया है। दूसरे, वह स्वयं भी उसके साथ बैठकर भोजन कर रहा है और सबसे बड़ी बात इसने यह कह दी है कि वह स्वयं मन्दिर में जाकर देख ले कि क्या काम वहाँ पर करने योग्य है।

: 3 :

भोजन के उपरान्त सदानारायण ने पूछा, "अब क्या विचार है?"

"मन्दिर में कुछ और काम करने वाले भी हैं?"

"तीन व्यक्ति और हैं! एक तो झाड़ू–बुहारी देने वाला है। दूसरे दो पाचक हैं। माली भी है, परन्तु वह पृथक् है। कारण यह कि वह मन्दिर में भोजन नहीं करता। उसका अपना पृथक् मकान है। वहाँ वह अपने परिवार सहित रहता है।"

"वहाँ कोई स्त्री भी है?"

"हाँ, पाचक दोनों ही स्त्रियाँ हैं। उनके साथ आप रह सकेंगी।"

"क्या मैं अपने माता–पिता के साथ नहीं रह सकती?"

"उस अवस्था में आप मन्दिर की कर्मचारी नहीं मानी जाएँगी। इस पर भी भोजन तो मिलेगा, परन्तु वस्त्र और निवास स्थान नहीं मिल सकेगा! केवल भोजन के लिये नित्य इतनी दूर आना असुविधाजनक होगा।"

"यदि मैं परीक्षा के लिये कुछ दिन यहाँ रह जाऊँ तो यह ठीक होगा अथवा नहीं।"

"यह तो ठीक ही है। मनुष्य का पूर्ण जीवन ही परीक्षाओं की एक अटूट कड़ी है। यह स्थान अनुकूल न होने पर आप जब भी चाहे छोड़ कर जा सकेंगी।"

"बीच–बीच में मैं अपने माता–पिता से मिलने जा सकती हूँ अथवा नहीं?"

"हाँ। परन्तु रात को यहीं सोना होगा।"

"यदि आप से बताये रहन–सहन का पालन न हुआ तो क्या होगा?"

मन्दिर के चौकीदार रिपोर्ट करेंगे और तब मैं निश्चय करूँगा। अधिक–से–अधिक दण्ड यहाँ से निकाल दिया जाना हो सकता है।"

अन्ना को यह प्रबन्ध सर्वथा युक्ति–युक्त समझ आया। उसने कह दिया,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आज से ही यहीं काम करूँगी।"

"तो मैं आपको सोहनी बहिन के लिये परिचय–पत्र दे देता हूँ। सोहनी बहिन रसोईघर के साथ वाले कमरे में मिलेंगी। वह पत्र आप उसे दिखाइयेगा तो वह आपके रहने का प्रबन्ध कर देगी।"

अन्ना सदानारायण से परिचय–पत्र लेकर मन्दिर के रसोईघर और फिर सोहनी के निवास स्थान पर पहुँच गयी।

सोहनी अपनी साथिन के साथ भोजन कर रही थी। वह एक अन्य स्त्री सत्यभामा के साथ मन्दिर की भोजन व्यवस्था और मन्दिर की सफाई देखती थी।

सोहनी के साथ काम करने वाली युवती सत्यभामा विधवा थी। वह एक मरहठा परिवार की स्त्री थी जो बाल्यकाल में ही विधवा हो गयी थी। बम्बई में आकर पढ़ी और फिर थियेटर में नौकरी करने लगी। वहाँ के जीवन से उचाट होकर इस आश्रम में आ गयी थी। पिछले पाँच वर्ष से वहाँ वह रह रही थी। सोहनी ने इस नवागन्तुक को आते देखा तो प्रश्न भरी दृष्टि से उसकी ओर देखने लगी। अन्ना ने वह पत्र दिखाया तो सोहनी ने पढ़कर कहा– "अच्छा बहिन! बैठ जाओ। भोजन किया है क्या?"

"जी! अभी पुजारीजी के यहाँ से कर आयी हूँ।"

"अच्छी बात है। बैठो। हम भोजन कर लें। फिर मैं तुम्हें मंदिर के सारे काम बता दूँगी। उनमें से जो–जो तुम्हें पसन्द होंगे, कर दिया करना। केवल इतना ध्यान रखना कि उस काम के छोड़ते समय मुझको बता देना। तब वह काम तो मैं कर लिया करूँगी अथवा किसी अन्य से करवा लिया करूँगी।"

"तो आप काम बतायेंगी?"

"मैं तो सब काम तुमको बता दूँगी। उनमें से जो काम तुम्हें पसन्द हो, कर दिया करना।"

"और कोई काम पसन्द न हुआ तो?"

"तो मत करना। इस पर भी यहाँ खाने, पीने तथा रहने की स्वीकृति है। भोजन–वस्त्र इत्यादि मिलेगा।"

"मैं कहाँ रहूँगी?"

"हमारे इस कमरे के पीछे कई कमरे हैं। एक तुम ले लो। इस इमारत में टट्टी, गुसलखाना साथ ही है। वही प्रयोग कर सकेंगी। भोजन, चाय इत्यादि हम इकट्ठी लेती हैं।"

अन्ना ने कमरा देखा। कमरा साफ–सुथरा था। उसमें एक तख्तपोश, एक

In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छोटी–सी मेज, एक कुर्सी और दीवार के साथ एक दर्पण लगा था और बस। यद्यपि अन्ना जिन्ना साहब की सेवा में रहते हुए बहुत सुख–सुविधा में थी, परन्तु पिछले एक मास से अपने माता–पिता के साथ मजदूरों के चाल में रहते हुए अनुभव कर रही थी कि, वह नर्क–कुण्ड से निकल कर स्वर्ग कुण्ड में आ गयी है। उसने स्थान पसन्द किया और कमरे पर अधिकार कर लिया। तदुपरान्त वह सोहनी के साथ काम देखने गयी। सोहनी ने कई काम बताये। मन्दिर का फर्श धोना, कथा को कमरे में कथावाचक के लिये आसन और चौकी लगाना, साप्ताहिक सत्संग में श्रोतागणों के लिये दरी इत्यादि बिछाना, मंदिर में सुगन्धित पदार्थ का जलाना तथा मन्दिर के बाहर मन्दिर में आने वालों के जूतों की देखभाल इत्यादि। साथ ही घर में भी सफाई इत्यादि से लेकर भोजन बनाना और भोजन कराना तथा बर्तन साफ करना ये सब काम थे।

सोहनी ने काम बता कर कह दिया, "अन्ना बहिन! तुम पहिले कोई एक काम अपने लिये चुन लो। पीछे धीरे–धीरे अपनी रुचि अनुसार काम क्षेत्र बढ़ा लेना।"

"तो मैं आज से मन्दिर के भीतर का काम करूँगी।"

"तो ठीक है! एक–दो दिन तक सौदामिनी तुम्हारे साथ काम करेगी। आज–कल वह ही यह काम करती है। जब तुम भली–भाँति करने लगोगी तो फिर वह इस काम को तुम्हारे लिये छोड़ स्वयं कोई दूसरा काम अपने जिम्मे ले लेगी।"

अन्ना के मन में एक विचार आया। उसने पूछ लिया, "इस मन्दिर में किस देवता की मूर्ति स्थापित है?"

"सर्वशक्तिमान्, सर्व व्यापक, सर्वज्ञ, अजन्मा, अमर परमात्मा की।"

"यहाँ तो कोई मूर्ति दिखाई नहीं देती।"

"इसलिए कि दृष्टि अभी तुममें है नहीं। जब होगी तो वह दिखाई देने लगेगी।"

"वह दृष्टि कहाँ से आयेगी?"

"यदि नित्य होने वाली कथा ध्यान देकर सुना करोगी तो वह दृष्टि आ जायेगी।"

"तो बहिन जी! वह आपको दिखाई देता है?"

"हाँ।"

अन्ना गम्भीर हो गयी और सोहनी का मुख देखती रह गयी। सोहनी ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
केवल यह कहा, "अन्ना बहिन! तुम समझ जाओगी। इसमें समय लगेगा।"

अब अन्ना नित्य सदानारायण की कथा सुनने लगी। उसके मन में प्रकाश होने लगा। यह ईसाइयों के गिरजाघर से एक सर्वथा पृथक बात थी। वहाँ सब कुछ श्रद्धा और भक्ति के आधार पर कहा जाता था। यहाँ श्रद्धा–भक्ति से पहले समझने की बात होती थी। कथा प्रायः गीता में से होती थी। गीता में भी श्रद्धा–भक्ति की बात कही गयी थी, परन्तु बुद्धि के प्रयोग पर भी बल था।

सायंकाल एक सौ तक लोग सुनने वाले आ जाते थे। कथा के उपरान्त प्रश्नोत्तर होते थे। लोग कथा पर अपनी शंकाएँ उपस्थित करते थे और सदानारायण उनकी शंकाएँ निवारण करने का यत्न करता था। अन्ना को इस प्रकार से विचार भी तरीके में रस आने लगा था। यूं तो बम्बई नगर से भी लोग आते थे। इस पर भी प्रायः आस–पास के रहने वाले ही होते थे। रविवार को तो बहुत लोग नगर के होते थे। उपस्थिति पाँच सौ से एक सहस्र तक हो जाती थी। लोग मोटरगाड़ियों में तथा बहुत से बसों में आते थे।

एक दिन सदानारायण ने बताया, "मैं कुछ दिन के लिये बम्बई से बाहर जा रहा हूँ। मेरे स्थान पर राधा देवी खटाऊ कथा किया करेंगी।"

अन्ना को इस घोषणा पर विस्मय हुआ। कथा के उपरान्त उसने सोहनी से पूछ लिया, "राधा जी आज आयी थीं क्या?"

"हाँ। वे सदानारायण जी के समीप खड़ी हैं।"

"ये पारसी जाति की हैं?"

"जन्म से तो पंजाब की हैं और मुसलमान माता–पिता की लड़की हैं। विवाह एक थिएटर के मैनेजर काउस जी खटाऊ से हुआ है और वे अब इस्लाम पर एतकाद नहीं रखतीं।"

"तो किस मजहब को मानती हैं?"

"मानवता। जिसको अंग्रेजी में 'ह्यूमैनिटी कहते हैं।"

अन्ना विस्मय में चुप रही। कथा के उपरान्त सदानारायण और राधा तथा उनके साथ एक वृद्ध पारसी महाशय मन्दिर से निकल सदानारायण के घर की तरफ चल पड़े। अन्ना अभी भी वहाँ खड़ी विस्मय में राधा को देख रही थी। सदानारायण की दृष्टि उस पर पड़ी तो उसने संकेत से अन्ना को समीप बुला लिया। जब वह उनके साथ–साथ चलने लगी तो सदानारायण ने राधा को सम्बोधन करते हुए कहा, "लीजिये आपका इनसे परिचय करा दूँ।"

राधा ने अन्ना की ओर देखा तो अन्ना ने हाथ जोड़ नमस्कार कर दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सदानारायण ने अन्ना का परिचय दे दिया। अब तक उसको उसका पूर्ण इतिहास विदित हो चुका था और उसने संक्षेप में वह सब कुछ बता दिया जो वह जान सका था। यद्यपि वह जान गया था कि उसका जिन्ना साहब से कैसा सम्बन्ध था, इस पर भी उसने इस विषय में कुछ नहीं बताया।

राधा ने अन्ना की बाँह में बाँह डाल कर पूछ लिया, "और, यहाँ सुखी तो हो?"

"जी। शारीरिक कष्ट कुछ नहीं। मन में एक दुःख है और कभी–कभी वह दुःख वेदना का रूप ले लेता है।"

"ओह। तब तो आप से बहुत लम्बी बातें करनी होंगी। बहिन! संसार में सब बातें दुःखकारक हैं। इस पर भी वे बातें छूटती नहीं। इस दुःख से छुट्टी पाने का एक तरीका है। वह कठिन अवश्य है, परन्तु उसका पार पाया जा सकता है। अच्छा, मैं कल से तुम्हारे साथ एक घंटा व्यतीत किया करूँगी। कदाचित् मैं इस दुःख में कमी कर सकूँ। यदि कुछ भी कम कर सकी तो मैं अपने को कृतकृत्य मानूँगी।"

सदानारायण हैदराबाद चला गया। राधा नित्य कथा के लिये अपनी मोटर में आने लगी। साथ ही वह अन्ना से बातचीत करने लगी।

ये अप्रैल मास के अंतिम दिवस थे और अन्ना तथा राधा का सम्पर्क चलते हुए सितम्बर मास आ गया था। अन्ना के विचारों में भारी परिवर्तन हुआ था। वह अपने आप में नया जीवन आ गया अनुभव करती थी। उसको अपने शरीर के द्वारा पुरुषों को अपनी ओर आकर्षित करना एक बहुत ही तुच्छ बात प्रतीत होने लगी थी। वह देख रही थी कि साधना आश्रम में लोग शरीर के अतिरिक्त भी अपने में कुछ रखते प्रतीत होते हैं और उसको आकर्षक बनाने का यत्न करते रहते हैं।

आत्मा, मन और बुद्धि ये तीन पदार्थों को मानव शरीर के अतिरिक्त समझ वह उनको बलवान बनाने का यत्न करने लगी थी।

एक दिन वह कथा सुन रही थी। राधा वर्णन कर रही थी कि शरीर को चलाने वाला साथी मन है। मन पर शासक उसकी बुद्धि है, और बुद्धि, मन और शरीर का मालिक आत्मा है। इस आत्मा से इन तीनों पर शासन किया जा सकता है।

अन्ना कथा सुन रही थी कि उसको ऐसा समझ आया कि द्वार पर उसका पिता खड़ा है। वह समझ गयी कि वह उसको ढूँढ़ता हुआ वहाँ आया है। इस कारण वह उठ कर बाहर उसके पास चली गयी। "डैडी! तुम भी भीतर आ सकते हो।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं आ तो जाता, परन्तु जूता पहिने हुए हूँ।"

"वह आप उधर उतार दीजिये। वहाँ माली उसकी देख–रेख करेगा।"

"नहीं! फिर पहिनना पड़ेगा। मैं तो तुमको एक संदेश देने आया हूँ। वह देकर चल दूँगा।"

"तो बता दीजिये।"

"जॉन का पत्र आया है। वह दिल्ली पहुँच गया है।" अन्ना इस सूचना से भौचक्की हो खड़ी रह गयी। अन्ना के पिता ने आगे बताया– "जॉन अपनी धन–सम्पदा कराची से ला नहीं सका। वह भाग कर आया है। उसके कराची पहुँचने से पहले ही गवर्नमेंट हाउस के चौकीदारों ने उसके कमरे का ताला तोड़ सब कुछ लूट लिया था। वह पैदल ही चलता हुआ राजस्थान का रेगिस्तान पार कर दिल्ली पहुँचा है। पहिले वह एक होटल में ही नौकरी करता था, लेकिन अब वह एक बड़े आदमी की नौकरी में चला गया है, जहाँ तुमको बुला सकता है। उसने लिखा है कि यदि तुम हमें मिलो तो हम तुम्हें वहाँ भेज दें। उसने अपना पता लिखा है।"

अन्ना के मानसिक विकास में अब जॉन के लिये स्थान नहीं रहा था। इस पर भी पिछले तीस वर्ष का उससे सम्पर्क और संगत उसको जॉन की ओर खींचने लगी थी। उसने अपने पिता को कह दिया, "मैं अब जॉन के पास जाऊँगी अथवा नहीं कल आकर बताऊँगी।"

: 4 :

कथा के उपरान्त अन्ना ने सोहनी को बताया, "बहिन जी! मेरे पिता आये थे और कह रहे थे कि मेरे घर–वाले का समाचार मिल गया है और वह इस समय दिल्ली में किसी बड़े रईस के यहाँ नौकरी पा गया है। मुझे उसने बुलाया है। मैं आप से राय करना चाहती हूँ कि मैं जाऊँ अथवा न?"

"वह तुम्हारा विवाहित पति है क्या?"

"जी? आज से बीस वर्ष पूर्व हमारा विवाह यहीं बम्बई में कैथोलिक चर्च में हुआ था।"

"और फिर तुम अपने पति के पास जाने में संकोच क्यों करती?"

"इस आश्रम में मेरा चित्त लग रहा है। यहाँ का वातावरण और यहाँ की बातें चित्त को शान्ति देने वाली हैं। वहाँ अपने पति के व्यवहार से मन सदा चंचल रहता था। मेरी चंचलता में मेरा पति सहायक होता था और उस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चंचलता में किये जाने वाले व्यवहार से वह और मैं भी धन संचय कर रहे थे। अब यहाँ की बातों से मैं यह समझ रही हूँ कि शारीरिक चंचलता से चित्त की शान्ति नहीं मिलती है। चंचलता से प्राप्त धन भी वह सुख और शान्ति नहीं दे सका, जो यहाँ अनायास ही प्राप्त हो रही है।

"वहाँ पुनः मेरी आवश्यकता अनुभव हुई है। कदाचित् पाकिस्तान में खो गये धन की प्राप्ति के हेतु मेरी सहायता की आवश्यकता है।"

"परन्तु यह तुम्हारा अनुमान है न?"

"पहिले की बात सत्य है। अब के विषय में अनुमान ही है।"

"तो मेरी राय मानो और जाओ। यदि पुनः वैसा ही कुछ करने को कहे तो यहाँ चली आना। वह आ सके तो उसको भी ले आना। अन्यथा शरीर बेचने से तो यहाँ संयम से रहने में अधिक सुख–शान्ति मिलेगी।"

इस बात ने अन्ना के मन को स्थिर कर दिया और वह दिल्ली जा पहुँची। जॉन से लिखे पते को पढ़ कर वह विस्मित रह गयी। लिखा था–त्रिमूर्ति, नई दिल्ली। उसको विदित था कि भारत के प्रधानमन्त्री इस भवन में रहते हैं। इस ज्ञान ने उसके मन में कौतूहल उत्पन्न कर दिया। प्रधानमन्त्री की प्रसिद्धि और पदवी ने उसके मन का संशय निवारण कर दिया।

नई दिल्ली स्टेशन से टैक्सी करके वह त्रिमूर्ति पर जा पहुँची। अपनी सूचना भीतर भेजने पर उसको सेवकों को प्रवेश द्वार दिखा दिया गया। वहाँ पर जॉन को बुलाया गया और वह उसको भीतर अपने कमरे में ले गया।

नौकरों के क्वार्टरों में एक अन्य नौकर का आधा क्वार्टर उसे मिला हुआ था। दोनों ने अपनी–अपनी कहानी बतायी। अन्ना ने अपने बच निकलने का समाचार सुना कर कहा, "मैंने एलेग्जेंडर को आपके विषय में पत्र लिखा था। उसका उत्तर आया था कि आप हवाई जहाज के अड्डे से भाग गये हैं और आपने गवर्नमेंट हाउस में पहुँच, अपने कमरे का ताला तोड़ अपना सब कुछ चुरा लिया है।"

जॉन हँस पड़ा। हँस कर उसने बताया, "यह सब कुछ झूठ है। मैं कुछ नहीं कह सकता कि किसने यह झूठी कहानी मशहूर की है। असल वाकया यह है कि मुझे लाहौर से कराची हवाई जहाज में भेजा ही नहीं गया था। मुझको रेल में दो सिपाहियों के साथ बैठा दिया गया तो मैं सोचने लगा था कि इनको कैसे चकमा दूँ। गाड़ी शिकारपुर से रात के एक बजे चली। तब तक मेरे दोनों मुहाफिज सो गये थे। एक स्थान पर सड़क की मरम्मत होने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
के कारण गाड़ी चलनी धीमी हो गयी। मैं चुपचाप उठा और दरवाजा खोल नीचे लटक गया। गाड़ी चलनी हल्की तो हो गयी थी, परन्तु बिल्कुल खड़ी नहीं हुई थी। इससे घुटनों और कुहनियों में चोटें लगी थीं। एक बार एक भागे हुए चोर ने बताया था कि चलती गाड़ी से उतरने में सिर को बचा कर रखना चाहिए। सिर को लगी चोट से बचना मुश्किल है। मैंने इस बात की एहतियात रखी थी और बच गया।

"मगर वहाँ से मैंने गाड़ी में चढ़ना उचित नहीं समझा। पैदल ही कराची को चल पड़ा। एक सप्ताह के सफर के बाद कराची पहुँचा। एक रात गवर्नमेंट हाउस में गया, परन्तु अपने कमरे का दरवाजा और कुंडा टूटा हुआ पाया। भीतर का सामान, सोना और नकदी सब कुछ चोरी हो चुका था।

वहाँ से मैं मौलाना बशीर साहब के बँगले पर पहुँचा। वह मुझे देखकर घबराये और मुझको कहने लगे कि मैं भाग जाऊँ अन्यथा पकड़ा जा सकता हूँ। मैंने अपना रुपया माँगा, वह उसने दिया नहीं। लेकिन जब मैंने हल्ला करने की धमकी दी तो उसने मुझे एक सौ रुपया दिल्ली जाने का खर्च दे दिया। मैंने बशीर को तो कहा कि मैं रेल से जा रहा हूँ और मैं चल पड़ा पैदल ही। सिंध से जैसलमेर के मार्ग से होकर भारत चला आया हूँ। यह मौलाना से ही पता चल गया था कि तुमको लाहौर के किले में बन्द कर दिया गया था। मगर किसी न किसी तरीके से तुम वहाँ से छूट गयी हो। मौलाना साहब ने यह भी बताया था कि तुम उससे गवर्नर की कोठी पर भी मिली थीं। इससे मुझको यह समझ आया था कि तुम्हारा गवर्नर बहादुर से सम्बन्ध बन चुका होगा और उसी ने तुमको छुड़ाया होगा। बशीर साहब ने ही बताया था कि तुम दिल्ली आ रही थीं।

"मैं दिल्ली आया तो तुमको ढूँढ़ने लगा। फिर जेब के रुपये खर्च हो जाने पर इम्पीरियल होटल में बैरा का काम करने लगा था। इन दिनों अलेग्जैंडर से होटल में ही भेंट हुई। उसने यह बताया कि तुम अपने माता–पिता के पास हो। होटल में रहने को अलहदा जगह नहीं मिल सकी। हम पाँच बैरे एक ही कमरे में सोते थे। इस वजह से तुमको बुलाया नहीं। वहाँ मेरी मुलाकात मिसेज रिजवी से हो गयी। वे उसी होटल में ठहरी हुई थीं। अक्सर मुझसे होटल के रिसेप्शन हॉल में सुनी बातें पूछने के लिये अपने कमरे में बुला लिया करती थीं। एक दिन एक खूबसूरत हिन्दू औरत उनसे मिलने आयी, तो मिसेज रिजवी ने उससे मेरी तारीफ के इतने पुल बाँधे कि मुझे इस जगह नौकरी मिल गयी। रिजवी को इसमें दिलचस्पी यह थी कि मैं यहाँ की बातें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
उसे बताया करूँ। इन खबरों की एवज में वह मुझको धन देती है। मालूम होता है कि मेरी तारीफ पंडित जी के सामने बहुत की गयी थी और उन्होंने मुझको अपने पास बैरा के तौर पर रखा हुआ है। मेरी पदवी यहाँ पर अच्छी नहीं तो वैसी जरूर है जैसी जिन्ना साहब के घर में थी।

"मेरी साफ और खालिस उर्दू में बातचीत का उनके दिमाग में बहुत असर हुआ मालूम होता है।

"पाँच–छः दिन हुए मैंने उनसे कहा था कि अगर वे मुझको कोई दो कमरे का पूरा क्वार्टर दिलवा दें तो मैं अपनी बीवी को भी यहाँ बुला लूँ। उन्होंने मुझको कहा है कि मैं बीवी को बुला लूँ और क्वार्टर मिल जायेगा।

"क्वार्टर तो खाली है मगर वह तीन कमरे का है और मेरी पदवी से ऊँचे बटलर के लिये है। मगर मैं समझता हूँ कि अगर उनकी मेहरबानी हो गयी तो वह क्वार्टर मुझको मिल जायेगा।

"तुम गुसल वगैरा कर लो तब हम उनसे क्वार्टर के लिए दरख्वास्त करने चलेंगे। वे एक बजे खाना खाने आते हैं। उस वक्त मेरी ड्यूटी उनकी मेज पर रहती है। मैं तुमको उनके दर्शन के लिये ले चलूँगा।"

अन्ना स्वयं भी भारत के प्रधानमन्त्री के दर्शन के लिये उत्सुक हो रही थी। इस समय ग्यारह बज रहे थे। वह उठी और क्वार्टर के साझे के गुसलखाने में स्नान आदि कर तथा अपने साफ–सुथरे कपड़े पहिन कर प्रधानमन्त्री के दर्शन करने के लिये तैयार हो गयी।

जॉन साढ़े बारह बजे अन्ना को लेकर पंडित जी के खाने के कमरे में गया। उसने खाने की मेज लगा दी। चाँदी की क्रॉकरी के बर्तन लगाये गये। लाल गुलाब के फूलों का गुलदस्ता और इत्रदान रख दिया गया। जॉन ने अन्ना को एक साथ के कमरे में बैठा दिया और कह दिया, "अगर उन्होंने तुम्हें बुलाने के लिये कहा तो बुला लूँगा।"

नियत समय में कुछ देरी हो गयी थी। यद्यपि यह पहिले कभी नहीं हुआ। इस पर भी विस्मय करने का कोई कारण नहीं था।

प्रधानमन्त्री एक बज कर दस मिनट पर आये और खाने की मेज पर बैठ गये। वे अकेले थे। प्रातः की चाय और मध्याह्न का भोजन वे प्रायः अकेले लिया करते थे। जॉन देख रहा था कि पंडित जी कुछ गम्भीर हो रहे थे। जॉन सेवा में खड़े–खड़े उनके मुख पर स्वाभाविक बच्चों की सी मुस्कान और खुशी आने की प्रतीक्षा में था, परन्तु आज पंडित जी का गम्भीर भाव मिटने में ही नहीं आ रहा था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खाना लगभग समाप्त हो चुका था। जॉन अपने मन की बात कह नहीं सका। पंडित जी को हाथ धोते और फिर नैपकिन से पोंछते हुए देख उसने साहस बाँध कह दिया, "हजूर...।"

"तुम मकान के विषय में कहना चाहते हो? तुम्हारी बीवी आ गयी है न?"

जॉन इस सूचना से आश्चर्यवत् देखता रह गया। पंडित जी ने कह दिया, "तुम जमादार से क्वार्टर डी–3 की चाबी ले लो और देखो! तुम अपनी बीवी को भी यहाँ नौकर करवा दो। कभी–कभी इन्दिरा आती है तो यह उसकी सेवा में रहा करेगी।"

जॉन ने झुककर सलाम कर दी। इस पर पंडित जी हँस पड़े, "यह तुम लोग क्या करते हो। मैं कोई राजा या रईस नहीं जो इस तरह सलाम किया करते हो।"

"हुजूर! उनके सिर पर सींग नहीं होते। जो राज्य करता है वही राजा समझा जाता है।"

"मैं राजाओं की तरह गधा नहीं हूँ।"

"नहीं हुजूर! वे तो आपके जानशीन होंगे। राज्य बनाने वाले तो बहुत ही लायक आदमी होते हैं। हाँ, जानशीन जो मेहनत–मशक्त के बिना राजा बनेंगे। वे जो कुछ भी आप समझें, हो सकते हैं।"

"बहुत खूब! अच्छा। उसको रात के खाने के वक्त अपने साथ यहाँ रखना, जिससे वह यहाँ के तौर–तरीके सीख ले।"

पंडित जी चले गये। जॉन समझा था कि पंडित जी ने किसी से जान लिया है कि उसकी बीवी आ गयी है। एक बात से वह प्रसन्न था कि उसको अपने आप ही इस बढ़िया क्वार्टर के लिये कहना नहीं पड़ा। पंडित जी के चले जाने के उपरान्त वह साथ के कमरे में गया और अन्ना को गम्भीर विचार में बैठा देख पूछने लगा–"क्यों, क्या बात है?"

"कुछ नहीं। आपने बुलाया नहीं...।"

"जरूरत नहीं पड़ी। अब आओ। खाना ले लें।"

वह अन्ना को लेकर खाने के कमरे में चला आया और किचन में जाकर दो आदमियों के लायक खाना ले आया। दोनों खाने लगे। इस वक्त रसोइये भी वहाँ आ गये थे और सब अपना–अपना खाना उठाकर वहीं ले आये थे।

जॉन ने अन्ना का परिचय करा दिया और यह बता दिया कि यह भी यहाँ पर पंडित जी की लड़की की सेवा के लिये नौकर रख ली गयी है।

सब ने अन्ना को सिर से पाँव तक देखा। हैड बटलर ने कह दिया,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मगर इन्दिरा जी इसे पसन्द करेंगी तब न?"

"वह भी हो जायेगा।"

वहाँ मेज पर अन्ना चुपचाप बैठी खाती रही। वह अब भी गम्भीर भाव धारण किये रही।

क्वार्टर में पहुँच कर जब जॉन ने बताया कि पंडित जी को किससे पता चल गया है कि अन्ना वहाँ पहुँच गयी है, तो अन्ना खिलखिलाकर हँस पड़ी।

इस पर जॉन ने पूछ लिया, "क्यों? हँसी क्यों हो?"

"यहाँ के प्रधानमन्त्री पाकिस्तान के गवर्नर जनरल से कहीं ज्यादा खूबसूरत जवान हैं।"

"तो तुमने उनको देखा है?"

"देखा ही नहीं बल्कि बातचीत भी की है। जब आप मुझको उस कमरे में बैठा कर चले गये तो मैं कमरे के दरवाजे में से झाँकने लगी थी। मैं समझ रही थी कि वे बाहर बरामदे में से ही गुजरेंगे। मैं पर्दे के पीछे खड़ी झाँक रही थी कि वे आये और शायद उनको समझ आया कि कोई पर्दे के पीछे है। वे खड़े हुए और एकदम हाथ से पर्दा हटा कमरे में देखने लगे। मैं तो वहाँ दरवाजे में ही खड़ी थी। मुझे देखते ही बोले, "तुम कौन हो?"

"मैंने कह दिया, 'अन्ना फ्रांसिस। जॉन की बीवी हूँ।'

"वे बोले, 'ओह! समझ गया। मैं समझा था कि कोई मुझको कत्ल करने के लिये छिपा खड़ा है।'

"इतना कहते हुए वे कमरे में आ गये और एकदम मुझसे गले मिले और मेरा मुख चूम कहने लगे, "तुम मेरी लड़की के बराबर हो। मुझको बहुत प्यारी लग रही हो।'

"हमारे समुदाय में भी तो बाप बेटियों का मुख चूम लेता है। इससे कुछ विचित्र प्रतीत नहीं हुआ, परन्तु...।"

"परन्तु क्या?"

"कुछ नहीं। फिर बताऊँगी। वे मुझसे पूछते थे कि क्या मैं उनकी नौकरी करूँगी? मैंने कह दिया, 'मेरे पति जैसा कहेंगे।"

जॉन ने बता दिया, "वे चाहते हैं कि तुम उनकी लड़की की खिदमत में रहो।"

"मैंने अभी फैसला नहीं किया।"

"मगर इनकार कैसे करोगी? मेरी नौकरी भी जायेगी।"

"सब बातों पर गौर कर लेंगे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आज रात के खाने के वक्त उन्होंने तुमको भी हाजिर रहने को कहा है जिससे तुम यहाँ के तौर–तरीके सीख लो।"

अन्ना फिर गम्भीर हो सोचती रह गयी। उसने केवल यह कहा, "मैं बम्बई में एक आश्रम में नौकरी करती रही हूँ। मुझको वहाँ के तौर–तरीके ज्यादा पसन्द हैं।"

"क्या तनख्वाह मिलती थी वहाँ से?"

"रोटी, कपड़ा, रहने की जगह और...।" अन्ना विचार करने लगी थी कि दूसरी बातों को किन शब्दों में वर्णन करे।

"रोटी कपड़े के अलावा और कितना?"

"और रूहानी खुराक।"

"वह क्या होती है?"

"जो प्रभु ईसा मसीह ने अपने शागिर्दों को दी थी।"

"और जिससे उसके बारह शागिर्द डरपोक व कायर निकले थे और एक ने गद्दारी ही कर दी थी।"

"बात यह है कि हजरत के और इस आश्रम वालों के तौर–तरीके इतने मुश्किल हैं कि बड़े–बड़ों का हौसला छूट जाता है।"

"तो उस राह पर चलने से फायदा ही क्या है?"

"यही सोच रही हूँ कि वहाँ के तौर–तरीकों पर चलूँ अथवा नहीं।"

"यहाँ रहते हुए उन पर नहीं चला जा सकता है क्या?"

"बहुत मुश्किल है।"

"तो फिर?"

"जरा सोचने दीजिये।"

"रात को चलना होगा।"

"वह तो चलूँगी।"

"मैं मकान की चाबी लेने जा रहा हूँ।"

: 5 :

उक्त घटना के कई दिन पाछे की बात है कि सायंकाल चाय के समय प्रधानमन्त्री के साथ अन्य दो व्यक्ति चाय ले रहे थे। एक तो मन्त्रिमण्डल के सदस्य ही थे। ये थे डॉ. अम्बेडकर और दूसरे थे सदानारायण।

यह हैदराबाद पर 'पुलिस ऐक्शन' के पाँच–छः दिन पीछे की बात थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैदराबाद में सैनिक व्यवस्था स्थापित हो चुकी थी। डॉ. अम्बेडकर को सदानारायण एक अति विद्वान व्यक्ति समझ आया था। वह उससे कई बार मिल चुका था और विभिन्न विषयों पर विचार–विनिमय कर चुका था। डाक्टर साहब ने प्रधानमन्त्री से सदानारायण के विषय में बात की और उसके विभिन्न देशों के संविधानों के विषय में ज्ञान की चर्चा की तो प्रधानमंत्री सदानारायण से बातचीत करने पर तैयार हो गये। यह निश्चय हुआ कि डाक्टर साहब सदानारायण को लेकर सायंकाल की चाय के समय आयेंगे। पंडित जी ने एक घंटे का समय इस कथित–विद्वान के विचार जानने के लिये रिक्त रखा हुआ था।

मध्याह्न के खाने के समय उन्होंने भोजन अपनी लड़की के साथ बैठकर किया था और उस समय ही उन्होंने जॉन और अन्ना को कह दिया था कि सायंकाल की चाय के समय दो अन्य व्यक्ति आने वाले हैं।"

अन्ना का विचार था कि प्रधानमन्त्री की लड़की भी उपस्थित होगी, परन्तु वह तो चाय के समय से पूर्व ही बम्बई के लिये प्रस्थान कर गयी थीं।

अन्ना का अभी तक यही यत्न रहा था कि वह नौकरी के विषय में अपना निर्णय स्थगित करती जाये। वह भली–भाँति समझती थी कि उसको शीघ्र निश्चय करना चाहिए। उसके मन में द्वन्द्व चल रहा था। वह निश्चय नहीं कर सकी थी।

इस चाय पर उपस्थित रहने के आदेश ने उसके मन को इस प्रश्न पर विचार करने के लिए बाध्य कर दिया था। वह देख रही थी कि प्रधानमन्त्री यह समझ रहे हैं कि उसने और उसके पति ने उनकी नौकरी में रहना स्वीकार कर लिया है। इस चाय के उपरान्त उसने अपना निर्णय कर लेने का निश्चय कर लिया था। प्रधानमन्त्री को निर्णय बताने से पूर्व वह अपने पति से राय करना चाहती थी।

परन्तु इस चाय पर सदानारायण को आते देख वह चकित रह गयी। प्रधानमन्त्री अभी नहीं आये थे। डाक्टर साहब और सदानारायण प्रधानमन्त्री के सेक्रेटरी के साथ वहाँ पहुँचे थे। सदानारायण भी अन्ना को वहाँ देख विस्मित हुआ था। वह उसे पहिचानते ही विस्मय में खड़ा रह गया और उसके मुख से निकल गया, "अन्ना! तुम यहाँ कब आयी हो?"

अन्ना ने उत्तर देने के स्थान जॉन का परिचय दे दिया– "ये मेरे पति हैं। ये यहाँ नौकरी पा गए तो मुझे ढूँढ़ने का यत्न करने लगे। इनके बुलाने पर मैं यहाँ आ गयी हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो ठीक है।"

इससे अधिक बात नहीं हो सकी। प्रधानमन्त्री आ गए। अन्ना और जॉन सावधान हो पीछे हट कर खड़े हो गए। सेक्रेटरी चला गया और पंडित जी के बैठते ही दोनों मेहमान भी बैठ गए।

चाय के साथ खाने के लिए सामान तो मेज पर लगा था। प्याले इत्यादि भी रखे थे। केवल चाय का पानी वहाँ नहीं था जॉन प्रधानमन्त्री के चाय लाने के संकेत की प्रतीक्षा में सतर्क खड़ा था। प्रधानमन्त्री ने एक बिस्कुट उठाते हुए सदानारायण की ओर देख कर कह दिया, "डाक्टर साहब ने आपका परिचय दे रखा है। इस कारण इस औपचारिक बात को छोड़ मैं आपसे मिलने के विषय पर एकदम आना चाहता हूँ।

"हम आजकल अपने मुल्क का संविधान बना रहे हैं। सुना है आप इस विषय के पंडित हैं। इस कारण आप हमको बताइये कि हमें क्या करना चाहिए?"

"डाक्टर साहब ने बताया है?" सदानारायण ने सतर्क हो कह दिया कि "आपके पास केवल एक घंटा रिक्त है। इस कारण मैं भिन्न–भिन्न देशों के संविधानों की चर्चा नहीं करूँगा। मैं भारतीय संविधान के विषय में और वह भी सैद्धान्तिक रूप में ही कह सकूँगा।"

पंडित जी ने बात बीच में ही रोक कर कहा, "तो क्या भारत में भी कभी किसी प्रकार का संविधान रहा है?"

"जी।"

"यहाँ तो सदैव राजा ही रहा है। कहते हैं कि प्राग्–ऐतिहासिक काल में यहाँ गणराज्य थे। उस समय सब कुछ मौखिक ही था और हम उस काल की बात जानते भी नहीं।"

"नहीं पंडित जी! यह इस प्रकार नहीं है। यहाँ कोई भी काल प्राग्–ऐतिहासिक नहीं रहा। हमारे पास सृष्टि के आदि काल से इतिहास विद्यमान है। एक बात अवश्य हुई है कि इतिहास काल इतना लम्बा है कि उसका इतिहास मुख्य–मुख्य घटनाओं तक ही सीमित रह गया है। अन्य कुछ भी लिखने तथा पढ़ने के लिए न तो समय था और न ही कागज एवं स्याही। इस पर भी संविधान तो उपस्थित है। उसमें राजाओं पर भी प्रतिबंध है और प्रजा पर भी। इसी को तो संविधान कहते हैं।"

"किस पुस्तक में यह लिखा है?"

"मनुस्मृति में।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंडित जी ने मुस्कुरा कर कह दिया, "जिसमें औरतों को शूद्रों के समान बताया है।"

"नहीं पंडित जी! औरतों को शूद्रों के समान नहीं, वरन शूद्रों को औरतों के समान बताया है। एक गृहस्थ के गृहस्थ–धर्म पालन के लिए जितनी आवश्यक उसकी भार्या होती थी उतना ही आवश्यक उसका सेवक होता था।"

"आपका मतलब है कि शूद्र की पदवी उतनी ही है जितनी घर में किसी स्त्री की।"

"जी!"

"तो यह क्यों लिखा है कि स्त्री और शूद्र वेद न पढ़ें।"

"यह तो नहीं। इस पर भी इसका प्रयोजन यह है कि उनके समाज में कार्य के लिए वेद पढ़ना न सम्भव है, न आनन्दमय और न आवश्यक है। जो स्त्री पढ़ जाती थी, उससे फिर घर–गृहस्थी का काम लेना कठिन हो जाता था।"

"परन्तु गार्गी, मैत्रेयी इत्यादि स्त्रियाँ तो वेद भी पढ़ी थीं।"

"ठीक है, परन्तु वे घर का काम नहीं करती थीं।"

"तो क्या करती थीं?"

"अपने पतियों की सेवा करती थीं। और पति उनकी सेवा करते थे। घर का काम–काज दूसरे लोग करते थे।"

"अच्छा छोड़ो इस बात को। सिद्धान्त रूप में यह बताओ कि मनु ने संविधान में क्या लिखा है?"

"सिद्धान्त रूप में लिखा है कि मानव समाज दो वर्गों में विभक्त है। दैवी स्वभाव वाले और आसुरी स्वभाव वाले। दोनों के लिए राज्य में स्थान भिन्न–भिन्न हैं?"

"क्या–क्या स्थान हैं इनके लिए?"

"आसुरों के लिए जेलखाना अथवा मृत्यु–दण्ड है और देवताओं के लिए राज्य का संरक्षण।"

"कैसे पता चले कि दैवी स्वभाव वाला कौन है?"

"यह उनके वचन और कर्मों से पता चलेगा और उनके वचनों और कर्मों पर निर्णय न्यायालय करेगा।"

"परन्तु न्यायालय तो कानून के अनुसार ही निर्णय करेंगे। यदि कानून यह निश्चय करे कि कोई असुर नहीं तो क्या हो?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कानून ने यह सदैव के लिए निश्चय कर रखा है। लिखा है–

[1]आढ्योऽभिजनवानस्मि कोऽन्योऽस्ति सदृशो मया।

"फिर जो

[2]अनेकचित्त् विभ्रान्ता मोह जाल समावृताः।
प्रक्षताः कामभोगेषु पतन्ति नरकेऽशुचै।।

"अथवा

[3]अहंकार बलं दर्पं कामं क्रोध च संश्रिताः।
मामात्मपरदेहेषु प्रद्विषन्तोऽभ्यसूयकाः।।

"वे सब...

"क्या अभिप्राय है इसका?" पंडित जी ने श्लोक पढ़ रहे सदानारायण को रोक कर कहा।

इस पर डाक्टर साहब ने कह दिया, "ये गीता के सोलहवें अध्याय के श्लोक हैं। इनका अभिप्राय है कि जो व्यक्ति समझता है कि वह बहुत बड़ा धनवान है, बहुत बड़े कुटुम्ब वाला है और उसके समान दूसरा कोई नहीं, वह असुर है। जिसका चित्त स्थिर न हो वह असुर है।

"जिसमें अहंकार और बल का घमण्ड है, जो काम, क्रोध के आधीन हो, दूसरों की निन्दा करता हो, वह असुर है।"

"तो ऐसे लोगों के लिये जेल का दण्ड है?"

"जी!"

"और संसार किनके लिये हैं?"

"दैवी स्वभाव वालों के लिये। उनके भी लक्षण लिखे हैं। देवी स्वभाव के लोग–

[4]अहिंसा सत्यमक्रोधस्त्यागः शान्तिरपेशुनम्।
दया भूतेष्वलोलुप्त्वं मार्दवं हरिचापलम्।।
तेजः क्षमा धृतिः शौचमद्रोहो नातिमानिता।
भवन्ति संपदं देवीमभिजातस्य भारत।।

डाक्टर साहब ने इसका भी अर्थ कह दिया :

"दूसरों को दुःख न पहुँचाने वाले, सत्यवक्ता, क्रोध न करने वाले, त्यागी

---

1. गी. 16–15
2. भ. गी. 16–16
3. भ. गी. 16–18
4. भ. गी. 16–2,3

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शान्त और प्रसन्न रहने वाले, सब प्राणियों पर दया और बिना निन्दा का व्यवहार रखने वाले, इन्द्रियों के विषयों के पीछे न जाने वाले, कोमल और व्यर्थ के काम न करने वाले–दैवी प्रवृत्ति के लोग होते हैं।

"तेज, क्षमा, धैर्य किसी से शत्रु–भाव न रखने वाले नीतिमान लोग, दैवी स्वभाव वाले माने जाते हैं।

पण्डितजी हँस पड़े। वे समझे कि यह विद्वान् अपनी ही बात में फँस गया है। वे कहने लगे, "यदि सबसे घृणा नहीं करनी और किसी पर भी क्रोध नहीं करना तो फिर आसुरी स्वभाव वालों को बन्दी कैसे किया जायेगा?"

सदानारायण को इस प्रश्न पर विस्मय नहीं हुआ। वह इससे अधिक की उनसे आशा भी नहीं क़रता था। अतः उसने केवल यह कह दिया, "एक दुष्ट को जेलखाने में बन्द कर देना, उस पर दया करने के तुल्य ही है। ऐसा करना क्रोध–युक्त कार्य नहीं कहा जा सकता। हाँ, जब दुष्ट दुष्टता करता ही चला जाये और उसके सुधरने की आशा न हो तो उसको मृत्यु दण्ड देना भी उस पर दया करना ही होगा। वह नया शरीर पायेगा। शरार के साथ बुद्धि भी नयी मिलेगी और उसको पुनः अपना कल्याण सम्पन्न करने का अवसर प्राप्त होगा।"

पण्डितजी ने मुस्कुराते हुए पूछ लिया, "इसके लिये पुनर्जन्म को भी मानना चाहिए।"

"इससे कुछ हानि नहीं होगी। लाभ तो स्पष्ट समझ आ रहा है।"

"कैसे समझ आ रहा है?"

"यह अंकुश है। उन धनी–मानी और सत्ता–सम्पन्न लोगों पर, जो अपने धन एवं राज्यसत्ता के बल पर सब प्रकार के अन्यायचरण तथा अनैतिकता करने की सामर्थ्य रखते हैं।"

"परन्तु अन्याय और अनैतिकता भिन्न–भिन्न लोगों के विचार में भिन्न–भिन्न हो सकती है।"

"जी नहीं! यह ऐसा नहीं। हमारे शास्त्रियों ने व्यवहार के लिये एक सुगम नियम बनाया है।

[1]तस्माद् धर्मप्रधानेन भवितव्यं यतात्मना।
तथा च सर्वभूतेषु वर्तितव्य यथात्मने।।

"अभिप्राय यह कि मन को वश में करके मनुष्य को अपने सब कर्मों में धर्म

---

1. महंशां 167–9।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रधान मानना चाहिए और सम्पूर्ण प्राणियों के साथ वैसा ही व्यवहार करना चाहिए, जैसा हम अपने लिये चाहते हैं।''

''यह तो कुछ न हुआ। लोग मुझको प्रधानमन्त्री मानते हैं इस कारण मैं भी सब को प्रधानमन्त्री मानूँ क्या?''

''जी, इसका यह अभिप्राय नहीं है। इसका अभिप्राय यह है कि यदि आप जनता से प्रधानमन्त्री के नाते किसी प्रकार के व्यवहार की आशा करते हैं तो वही आशा करिये, जो किसी अन्य के प्रधानमन्त्री होने पर, आप उससे व्यवहार कर सकेंगे।

''इसको इस प्रकार भी कहा जा सकता है कि एक शक्तिशाली व्यक्ति किसी दूसरे की पत्नी अथवा बहिन व लड़की से वही, व्यवहार करे जो वह किसी के द्वारा अपनी पत्नी, बहिन अथवा लड़की से आशा करता है।''

प्रधानमन्त्री इस सिद्धान्त पर अवाक् बैठे रह गये। वह विचार कर रहे थे कि यदि अपने से मतभेद रखने वालों को वे बिना मुकदमे के कैद कर रहे हैं तो वे भी अवसर मिलने पर उसको कैद कर लें क्या?''

: 6 :

उस समय देश में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सदस्यों को बिना मुकदमा किये कैद किया जा रहा था। पण्डितजी समझते थे कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ वालों का विचार देश के हित में नहीं है, परन्तु इसका किसी निष्पक्ष न्यायालय में निर्णय नहीं किया गया था। तो क्या विचार भेद पर कोई उसको भी कैद करने का अधिकार रखता है?

नागपुर के समीप कुछ लोगों ने गांधी जी की हत्या के समाचार पर ब्राह्मणों की लूट–मार मचा दी थी। पंडित जी ने इसको एक ओजपूर्ण कार्य माना था। परन्तु सामने बैठा विद्वान कह रहा था कि कोई ऐसा व्यवहार नहीं करना चाहिए जैसा वह अपने साथ पसन्द नहीं करता। तो क्या उनको भी जला डाला जाये? वह भी तो ब्राह्मण–कुलोत्पन्न है।

इससे उन्हें कँपकँपी हो उठी। इस पर उन्होंने बात बदल कर जॉन से कह दिया, ''चाय ले आओ।''

जॉन कमरे से बाहर निकल गया। अन्ना भी यह वार्तालाप सुन रही थी। उसने इसको इस ढंग पर समझा था कि प्रधानमन्त्री ने उससे आलिंगन किया है और कह दिया है कि वह उसको लड़की समान मानता है। तो क्या उसका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पति भी इन महानुभाव की लड़की का आलिंगन कर, उसका मुख चूम सकता है?

ऐसा करने के परिणाम का विचार कर अन्ना भी काँप उठी थी। जॉन यह नहीं कर सकता। केवल इसलिये कि जॉन प्रधानमन्त्री नहीं, वरन् उनका सेवक है।

जॉन चाय लेकर आया और पंडित जी के लिये चाय बनाने लगा। डाक्टर साहब सामने रखे केक को खाने लगे थे। सदानारायण ने अपनी बात को जारी रखा। उसने कहा, "श्रीमान्! ऐसा विधान बनना चाहिए जिससे दुष्ट लोगों की विवेचना हो जाये। उन पर दया कर उन्हें जेल में बन्द कर दिया जाये, ताकि वहाँ उनके सुधार का प्रबन्ध हो सके।

"फिर समाज के दैवी अंग को चार भागों में, मेरा मतलब है कि वर्णों में विभक्त कर दिया जाये।"

पंडित जी ने पुनः बात बीच में ही टोक कर कहा, "और शूद्रों को पढ़ने से मना कर दिया जाये?"

सदानारायण को अनुभव हो रहा था कि प्रधानमन्त्री को हिन्दू समाज का ज्ञान रूढ़िवादी हिन्दुओं से ही प्राप्त हुआ है। इनको किसी बुद्धिशील हिन्दू से कभी कुछ सीखने का अवसर ही नहीं मिला। इस पर भी उसने विचार किया कि जो भी थोड़ा सा समय उसे मिला है, उसमें जो कुछ बताने और समझाने का अवसर मिले उतना ही अच्छा है। इस कारण वह कहने लगा, "पडित जी! व्यवस्था इस प्रकार है कि सबको स्कूल में भरती करा दिया जाये। स्कूल की आठवीं श्रेणी तक सब पढ़ें। जो परीक्षा पास कर ले उनको द्विज माना जाये और जो आठवीं श्रेणी की परीक्षा भी पास न कर सके उनको शूद्र का काम करने को मिले। इस प्रकार दसवीं श्रेणी तक यह निश्चय हो जाये कि राजसी स्वभाव वाले को क्षत्रिय और व्यापार–बुद्धि रखने वालों को वैश्य और विद्या–प्रियों को ब्राह्मण मान, तद्नुसार ही उनकी कॉलेज की पढ़ाई हो।"

"कौन करेगा यह सब कुछ?"

"इसकी चिन्ता आपको नहीं करनी पड़ेगी। यह तो स्कूल के अध्यापक विद्यार्थी के स्वभाव और उसके परिवार की परम्परा देखकर करेंगे।"

"स्कूल के मास्टर रियायत कर सबको ब्राह्मण वर्ण में कर देंगे।"

"तो अधिकारी उस मास्टर को स्कूल से निकाल देंगे।"

"यह कहना सुगम है, परन्तु करना कठिन है।"

"तो ऐसा करिये कि लोगों को अपना काम स्वेच्छा से ढूँढ़ने की स्वीकृति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दे दीजिये। जब वे काम करने लगें तो फिर उनको चार वर्णों में विभक्त कर उनके कर्तव्य निश्चय कर दें।"

"कोई नहीं मानेगा।"

"यह आप देख लीजिये। मैं तो यह राय देने आया हूँ कि आपको इन मार्गों पर चलने की प्रेरणा लेनी चाहिए।"

इसी समय पंडित जी ने घड़ी की ओर देखकर कह दिया, "आज का समय तो हो गया। परन्तु पंडित जी आपने तो चाय ली ही नहीं?"

सदानारायण ने भी घड़ी देखी। प्रधानमन्त्री को आये अभी पैंतीस मिनट ही हुए थे। उसने कह दिया–

"मैं अब होटल में जाकर पी लूँगा।"

"नहीं! आप यहाँ बैठ कर पी सकते हैं। डाक्टर साहब तो मेरे साथ जा रहे हैं।"

सदानारायण भी जाने लगा था कि पंडित जी के प्राइवेट सेक्रेटरी आ गये और कहने लगे, "आप ठहरिये। मैं आपको छोड़ने जाऊँगा। मैं अभी आ रहा हूँ।"

इतना कह वह महाशय भी पंडित जी के पीछे–पीछे चले गये। इस पर अन्ना ने कहा, "आप ठहरिये। चाय लीजिये। मैं आपसे एक बात पूछने वाली हूँ।"

सदानारायण ठहर गया। जॉन ने सदानारायण के लिये चाय बनानी आरम्भ कर दी तो वह बैठ गया। अन्ना ने उनके सामने खड़े–खड़े ही कह दिया, "प्रधानमन्त्री मुझको अपने यहाँ नौकर रखना चाहते हैं।"

सदानारायण ने कुछ उत्तर नहीं दिया। अन्ना ने अभी प्रश्न पूछा भी नहीं था। वह अन्ना की ओर देखता हुआ चाय पीने लग गया।

अन्ना ने आगे कहा, "मेरा चित्त नहीं करता।"

अन्ना ने अभी भी कुछ पूछा नहीं था। सदानारायण ने भी कुछ नहीं कहा। इस पर अन्ना ने आगे बताया– "मेरे मन में द्वन्द्व चल रहा है। मैं निश्चय नहीं कर सकी। आप बताइये कि मै क्या करूँ?"

"यह तुम मुझसे क्यों पूछती हो?"

"आप आश्रम के अध्यक्ष हैं। और आश्रम की शिक्षा ने मेरे मन पर बहुत गहरा असर किया है। यह द्वन्द्व भी तो उस शिक्षा का ही परिणाम है।"

"तो मेरा उत्तर यह है कि ऐसे अनभिज्ञ व्यक्ति की नौकरी में किसी को भी लाभ नहीं हो सकता।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कारण?" जॉन ने पूछ लिया।

सदानारायण चाय पीता हुआ ही चाय के प्याले में देख रहा था। अब जॉन की इस क्यों से उसने आँखें उठाकर उसकी ओर देखा तो प्रधानमन्त्री महोदय का प्राइवेट सेक्रेटरी जॉन के पास खड़ा उसकी प्रतीक्षा करता दिखाई दे गया। सदानारायण उठ खड़ा हुआ। उसने प्याला मेज पर रखे सॉसर में रख दिया। प्राइवेट सेक्रेटरी ने कह दिया, "आप पीजिये मैं जल्दी में नहीं हूँ।"

जॉन ने प्राइवेट सेक्रेटरी को कह दिया, "आप भी एक प्याला लीजिये।

"हाँ! बैठिये पंडित जी।" प्राइवेट सेक्रेटरी ने सदानारायण से कहा, "आप लेंगे तो मैं भी एक प्याला ले सकूँगा।"

सदानारायण फिर बैठ गया और प्याला उठा तथा एक चुस्की लगा जॉन को सम्बोधन कर बोला, "इसका उत्तर तुम आश्रम में आकर ले सकते हो।"

इस पर प्राइवेट सेक्रेटरी ने कह दिया, "आप प्रधानमन्त्री जी के विषय में कुछ कहना चाहते हैं न। आप निशंक हो कह सकते हैं। मैं किसी की भी चुगली नहीं खाता।"

"मगर वह बात जो मैं कहना चाहता था और जिसके लिये मैं इस दम्पति को अपने आश्रम में बुला रहा हूँ, वह गुप्त नहीं है वरंच लम्बी है। उसका सारांश तो बता ही सकता हूँ। यह मैं भारत के प्रधानमन्त्री के विषय में नहीं कह रहा। यह मैं श्रीमान् जवाहरलाल जी नेहरू के विषय में ही कह रहा हूँ। इस महानुभाव के संस्कार दूषित हैं। इन संस्कारों के आधीन ये कभी भी और किसी का भी शुभ न कर सके हैं और न कर सकेंगे।

"दुर्भाग्य से इनकी बुद्धि भी अविकसित है। ये अपने स्वभाव को उस बुद्धि से परिष्कृत नहीं कर सकते। इस कारण मैं तो यह सम्मति सबको देता हूँ कि किसी भी ईमानदार आदमी को इनके अधीन काम करने से लाभ नहीं होगा।"

"और बेईमानों को?"

"उनको ये नेक समझेंगे। यह भी अपने दूषित संस्कारों के कारण है।"

प्राइवेट सेक्रेटरी ने एकदम बात बदल कर पूछ लिया, "आप ठहरे हुए कहाँ हैं?"

"मैं 'मेडन्स होटल' में ठहरा हूँ। कमरा नं. बावन है। अभी दो–तीन दिन तक तो वहाँ पर ही ठहरने का विचार है।"

प्राइवेट सेक्रेटरी के सामने अन्ना अपने मन में उठ रहे संदेह का वर्णन नहीं कर सकी। इस कारण वह चुप रही। जॉन भी वार्तालाप का रंग समझ चुप रहा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राइवेट सेक्रेटरी ने चाय समाप्त की तो सदानारायण उठ खड़ा हुआ और सेक्रेटरी के साथ बाहर निकल आया।

सरकारी मोटर गाड़ी में सदानारायण को बैठाकर प्रधानमन्त्री के प्राइवेट सेक्रेटरी उनके साथ ही चल पड़े। मार्ग में अनौपचारिक वार्त्तालाप ही होता रहा। सेक्रेटरी एक पंजाबी युवक था। नाम था महादेव। अपनी अंग्रेजी बोलने और लिखने की योग्यता के कारण प्रधानमन्त्री के प्राइवेट स्टाफ में नियुक्त हो गया था। उसका काम केवल यह था कि दिन में केवल आठ घण्टे प्रधानमन्त्री की कोठी पर मिलने के लिये आने वालों की प्रधानमन्त्री से भेंट का प्रबन्ध करना।

चाय पीते–पीते पाँच बज गये थे और दूसरा व्यक्ति जो सायं पाँच बजे से रात के एक बजे तक कोठी पर रहता था, आ गया था। महादेव उसको अपना चार्ज देकर सदानारायण के साथ चलने को तैयार हो गया। सदानारायण द्वारा प्रधानमन्त्री के विषय में व्यक्त किये विचारों से प्रभावित हो वह उनसे और कुछ पूछने की लालसा करने लगा था। गाड़ी में बैठा हुआ वह मन की बात पूछ नहीं सका। वह ड्राइवर के सामने पंडित नेहरू जी पर किसी प्रकार की विवेचना न तो करना चाहता था और न ही किसी दूसरे को कहने में प्रोत्साहन देना चाहता था।

मोटर में इधर–उधर की बातें होती रहीं। सदानारायण ने बम्बई में साधना आश्रम का परिचय और पता बताया।

जब मोटर मेडन्स होटल में पहुँची तो सदानारायण मोटर से उतर पड़ा। महादेव भी साथ ही उतरा और सदानारायण के साथ उनके कमरे तक गया। ड्राइवर अब बाहर गाड़ी में बैठा रह गया था। जब सदानारायण कमरा खोल भीतर जाने लगा तो महादेव ने पूछ लिया, "मैं आपके साथ, आपसे कुछ जानने की इच्छा से आया हूँ। यदि आपको अवकाश हो तो अभी बात कर सकता हूँ अथवा कोई समय बताइये जब मैं आ सकूँ।"

"मेरे पास अभी समय है। आप आ सकते हैं।"

महादेव कमरे में पहुँचा तो उसे बैठाकर सदानारायण ने पूछ लिया, "आपने वहाँ चाय नहीं पी। कहिये तो यहाँ मँगवा दूँ?"

"जी नहीं! मैं जितनी पिया करता हूँ उतनी पी आया हूँ। आपने पूर्ण वार्तालाप में न कुछ खाया है, न पिया है। इस कारण आप अपने लिये मँगवाइये। मेरे लिये कष्ट करने की आवश्यकता नहीं।"

"नहीं! मैं चाय नहीं पीता। वहाँ तो अन्ना के प्रश्न का उत्तर देने के लिये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ठहर गया था और इसी कारण चाय स्वीकार की थी। हाँ, तो बताइये क्या जानना चाहते हैं?"

"आप ने पंडित जी के स्वभाव के विषय में जो कुछ कहा है, वह अपने ज्ञान के आधार पर कहा है अथवा अनुमान के आधार पर?"

"ज्ञान के आधार पर।"

"तो आपका पंडित जी से किसी प्रकार का पूर्व का परिचय था?"

"नहीं! उन्होंने मुझको पहली बार देखा है और मुझको भी उनसे बातचीत करने का आज ही अवसर मिला है। इससे पूर्व हम एक–दूसरे से परिचित नहीं थे।"

"तो ज्ञान निराधार था?"

"निराधार भी नहीं कहा जा सकता। मिस्टर महादेव! मैंने अन्ना और जॉन को दो बातें कही हैं। एक तो यह कि पंडित जी के पिछले जन्म के संस्कार ठीक नहीं।

"इसमें आधार है। उनका इच्छित विषय पर बात न करने देना। मुझे विश्वास हो गया है कि वे मुझे बुला कर अपने साथियों को यह बताना चाहते थे कि उन्होंने मेरी बात सुन ली है। और वास्तव में मुझे अपनी बात कहने ही नहीं दी।

"बच्चों की भाँति, अनावश्यक और असम्बन्धित विषय के पीछे वे भागते रहे। अभी एक घन्टा समाप्त भी नहीं हुआ था कि उन्होंने कह दिया, 'समय हो गया है।' अभी पच्चीस मिनट बात करने के लिये शेष थे। मैं इसका यह अर्थ समझा था कि वे विवश होकर ही मुझसे बात कर रहे थे और मुख्य विषय पर बात होने देना चाहते ही नहीं थे। जब मैंने हठपूर्वक विषय से इधर–उधर जाने से इन्कार किया तो उन्होंने वार्तालाप ही समाप्त कर दिया।

"यह आधार है, जिससे मैं समझता हूँ कि उनके संस्कार दूषित हैं और प्रबल हैं। दूषित इसलिये कहता हूँ कि वे कुछ भी सीखने की लालसा नहीं रखते। वे अपने को प्रत्येक विषय का महान् पंडित मानते हैं। उनको यह समझ ही नहीं आ सकता कि कोई दूसरा भी बुद्धि रखता है। यह संस्कारों के दूषित होने के कारण बिगड़ा हुआ स्वभाव है।

"ये संस्कार और स्वभाव सुधर सकते थे यदि इनकी बुद्धि परिष्कृत और तीव्र होती। न तो वे किसी गम्भीर विषय पर विचार कर सकते हैं, न ही उनकी बुद्धि का उनके स्वभाव पर नियन्त्रण है। यही मैंने जाना है। और पैंतीस मिनट के वार्तालाप में ही मैं इस परिणाम पर पहुँचा हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
इस पर महादेव कहने लगा, 'मैं भी ऐसा ही समझता था, परन्तु मेरी सम्मति तो इनके पिछले छः मास में व्यवहार को देख कर ही बनी है। मैं अंग्रेजी राज्य काल में सेक्रेटेरिएट में सुपरवाइजर के रूप में काम करता था। स्वराज्य होने के उपरान्त मुझको प्रधानमन्त्री जी ने अपने पर्सनल स्टाफ में रख लिया है। मैं तब से ही देख रहा हूँ कि इनके स्वभाव के कुछ 'ट्रेटस'[1] ये हैं।

"ये हिन्दुओं का और उनकी प्रत्येक बात का विरोध करते हैं। ये किसी भी मुसलमान और ईसाई को प्रत्येक हिन्दू से श्रेष्ठ व्यक्ति मानते हैं। इनको कोई भी हिन्दुस्तानी–चलन पसन्द नहीं। एक बार आपकी भाँति श्री टण्डन जी से भी इनकी बातचीत मेरे कार्य–काल में हुई थी। टण्डन जी कह बैठे कि पंडित जी का लार्ड माउण्टबेटन की लड़की से आलिंगन हिन्दू रीति–रिवाज के विपरीत है, उन्होंने ऐसा कर हिन्दुओं का एक विदेशी पर बुरा प्रभाव डाला है।

"इस पर पंडित जी ने तुरंत कह दिया, 'बाबू जी! मैं आपका मान करता हूँ, परन्तु मैं हिन्दुओं को बहुत ही बुरा आदमी मानता हूँ। उनकी बातें तो मैं सुन सकता ही नहीं, न ही उनके व्यवहार को अपना सकता हूँ।'

"पर टण्डन जी का कहना था कि यह हिन्दुस्तानी रीति–रिवाज के भी विपरीत है। पंडित जी ने कहा, 'मैं हिन्दुस्तान को इस प्रकार के घटिया ख्यालों से ऊपर ले जाना चाहता हूँ। मैं हिन्दू, हिन्दुस्तान और हिन्दी के नाम से ही नफरत करता हूँ।'

"टण्डन जी बहुत ही सहनशील व्यक्ति थे। वे इतनी उत्तेजनात्मक बात सुन कर भी मुस्कराते रहे और बोले, 'अच्छा, हिन्दू और हिन्दुस्तानी को छोड़ो, परन्तु यह तो मानवता के भी विपरीत है। अपनी स्त्री के अतिरिक्त किसी स्त्री से आलिंगन करने पर पुरुष और स्त्री वासना विभूत होकर अनुचित व्यवहार करने लगते हैं।"

"पंडित जी ने कह दिया, 'जिसको आप अनुचित कहते हैं मैं उसको स्वाभाविक मानता हूँ। इसमें कुछ भी पाप नहीं है।'

"टण्डन जी ने कहा, 'मैं पाप–पुण्य की बात नहीं कह रहा, मैं तो समाज में व्यवस्था बिगड़ जाने की बात कह रहा हूँ।

"पंडित जी ने कह दिया, 'जो पहिले ही गलत है उसको बदलने से सुधार

---

1. लक्षण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
होगा, बिगाड़ नहीं।'

"टण्डन जी ने बात बदल दी और कहा, 'मैं तो हिन्दी के विषय में बात करने आया था।'

"पंडित जी का कहना था कि आपने हिन्दुस्तानी नाम और उर्दू लिपि को मान्यता नहीं दी। इस कारण दक्षिण भारत के लोगों के साथ मुसलमान सम्मिलित हो गए हैं।'

"टण्डन जी ने कहा भी कि वे उनको हिन्दी और संस्कृत के गुण बता कर मना लेंगे। वैसे भी वे लोग अल्पसंख्या में हैं। परन्तु पंडित जी अपने हठ पर अड़े रहे। उनका कहना था कि वे उनको छोड़ नहीं सकते। बहुसंख्यक महामूर्ख हैं और वे उनके साथ कोई सहानुभूति नहीं रखते।

"इस कारण मैं तो अनुभव से जानता हूँ कि प्रधानमन्त्री बुद्धि से विचार कर बात नहीं करते। वे स्वभाववश ही बातें करते हैं। जब आपने भी यही बात कही तो मैं यह जानने की लालसा करने लगा था कि क्या आपने भी मेरी भाँति कुछ देखा अथवा सुना है।"

: 7 :

सदानारायण महादेव की बात सुन मुस्कराता रहा था। उसके समाप्त करने पर वह कहने लगा, "मनुष्य को जीविकोपार्जन के लिए, किसी दूसरे की सेवा करना मैं उसके किसी पूर्व जन्म के पापों का फल समझता हूँ। दूसरे की सेवा तो यज्ञ रूप में ही करनी ठीक है। यज्ञ का अर्थ वह कर्म है, जिसमें स्वार्थ की भावना मिश्रित न हो। जब मनुष्य कार्य लोक–कल्याण के निमित्त करता है और उस कार्य में उसका अपना स्वार्थ न हो तब वह यज्ञ कर्म कहाता है। यज्ञ करने वाले का भी तो जीवन–पालन होना चाहिए। अन्यथा यज्ञ करने वाला ही न रहेगा तो यज्ञ किस प्रकार सम्पन्न होगा। इस निमित्त यज्ञ–कर्म से बचा अन्न अर्थात आहुति का अवशिष्ट ही यज्ञकर्ता को ग्रहण करना चाहिए।

"मैं इसको इस प्रकार समझता हूँ कि मनुष्य जब भी किसी कार्य को करे तो उसके मन में यह भावना होनी चाहिए कि वह लोक–कल्याण का कार्य कर रहा है। ऐसे व्यक्ति के जीवनयापन का भार समाज पर हो जाता है। वह कार्य का प्रतिकार इसी भाव में स्वीकार करे जैसे आहुति का अवशिष्ट स्वीकार किया जाता है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"परन्तु पंडित जी! आप तो जॉन की पत्नी को प्रधानमन्त्री की नौकरी न करने के लिये कह रहे थे।"

"यह इस लिए कि अन्ना प्रधानमन्त्री की सेवा में किसी प्रकार से भी लोक–कल्याण का कार्य करती दिखाई नहीं देती। प्रधानमन्त्री के पास रह कर लोक–कल्याण का अर्थ देश कल्याण से है। अन्ना देश कल्याण के स्थान पर कुछ अकल्याण करती हुई प्रतीत हुई थी।"

इस बार मुस्कुराने की बारी महादेव की थी। उसने पूछ लिया, "आप को वह क्या अकल्याण करती प्रतीत हुई है?"

"देखो, मिस्टर महादेव!" सदानारायण ने सतर्क हो संयत भाषा में कह दिया, "मैंने पडित जी का स्वरचित जीवन चरित्र पढ़ा है। उसमें उन्होंने स्वयं स्वीकार किया है कि यौन–आकर्षण को वे पाप नहीं मानते। ऐसी अवस्था में मैं किसी भी चिकनी–चुपडी सुन्दर दिखाई देने वाली स्त्री का प्रधानमन्त्री के पास फटकने देना पसन्द नहीं करता। प्रधानमन्त्री के व्यवहार और नीतियों को मैं पसन्द नहीं करता। इस पर भी मैं उनके जीवन को हानि पहुँचाने वाले तत्त्वों से उनको बचाना चाहता हूँ। स्त्रियाँ और विशेष रूप में सुन्दर स्त्रियाँ तो प्रधानमन्त्री से आर्थिक लाभ प्राप्त करने के लिए उनको घेरेंगी ही, परन्तु यह प्रधानमन्त्री के और विशेष रूप में उस प्रधानमन्त्री के जो यौन–आकर्षण को पाप नहीं मानता उसके अपने लिए और उस देश के लिए हानिकर होगा जिसका वह प्रधानमन्त्री है।"

"मैं अपने विषय में जानना चाहता हूँ कि मैं इस ज्ञान के उपरान्त क्या करूँ?"

"क्या वेतन मिलता है इस समय?"

"ग्यारह सौ रुपया मासिक तो मिलता ही है।"

"और इतनी बड़ी नौकरी मिल सकेगी कहीं अन्य स्थान पर?"

"मिल तो सकती है, परन्तु क्या वह व्यक्ति जो इतना बड़ा वेतन मुझको देगा, पंडित जी से अधिक श्रेष्ठ संस्कारों वाला और बुद्धिशील होगा?"

"आपका विचार ठीक है। ऐसी अवस्था में तो मैं यह कहूँगा कि आप अपने कार्य की कीमत को देखिए अन्यथा यत्न कर अपनी बदली पुनः सरकारी कार्यालय में करवा लीजिये। वहाँ आप अपना जीवन यज्ञमय बना कर चला सकते हैं।"

महादेव एक नया विचार लेकर ही सदानारायण के कमरे से निकला। सदानारायण कुछ दिन तक तो सरदार पटेल के बंगले में रहा था। पीछे वह 'मेडन्स–होटल' में चला आया था। उसकी इच्छा थी कि देश विभाजन के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
समय लाहौर से निकल कर आये सम्बन्धियों और मित्रों से मिलेगा। हैदराबाद की समस्या सुलझ जाने पर उसकी रुचि अब उस राजनीति में नहीं रही थी। हैदराबाद अब भारत का अंग बन चुका था।

उस दिन उसके लाहौर से निर्वासित एक सम्बन्धी उषनाक राय ने रात के आठ बजे आना था। इस कारण वह समय व्यतीत करने के लिए एक पुस्तक लेकर पढ़ने लगा।

होटल के प्रत्येक कमरे में टेलीफोन लगा था और होटल के ऐक्सचेंज से नगर के अन्य टेलीफोनों से सम्बन्ध जुड़ सकता था। वह अभी पुस्तक खोल कर बैठा ही था कि कमरे के टेलीफोन की घंटी खड़की। उसने चोगा उठाया और पूछा, "कौन?"

उत्तर आया, "अम्बेडकर। कौन बात कर रहा है?"

"डाक्टर साहब! मैं सदानारायण बोल रहा हूँ। फरमाइये, क्या सेवा कर सकता हूँ?"

"देखिए पंडित जी! प्रधानमन्त्री का यह अनुमान है कि आप एक योग्य आदमी हैं और यदि आप पसन्द करें तो आपको भारत सरकार में नौकरी दी जा सकती है।"

"किस काम में वे मुझे नियुक्त करना चाहते हैं?"

"जिस काम को आप अपने अनुकूल समझते हैं।"

"मैं तो अपने को शिक्षा मंत्री के योग्य समझता हूँ।"

"परन्तु वहाँ पर तो मौलाना आजाद नियुक्त हैं।"

"मेरा उनसे मुकाबिला हो जाए। शिक्षा के विषय में अथवा अन्य किसी भी विषय में?"

"अरबी साहित्य के विषय में भी?"

"परन्तु अरबी साहित्य की आज के भारत को आवश्यकता है क्या?"

"देखिये सदानारायण जी! आपको उस विभाग में सचिव बनाया जा सकता है।"

"मुझको अपने से अयोग्य और कम बुद्धिशील व्यक्ति के अधीन काम करना पसन्द नहीं।"

"आपको किसी विदेश में राजदूत बना कर भेजा जा सकता है।"

"मैं इस काम के योग्य अपने को नहीं पाता।"

"तो बताइये, मैं आपकी किस प्रकार से सेवा कर सकता हूँ।"

"एक सेवा मैंने आपको कल बताई थी। वह आपने अति कृपापूर्वक आज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कर दी है, परन्तु उसका कुछ प्रभाव नहीं हुआ।''

"प्रभाव तो हुआ है। आपको पंडित जी नौकरी देने के लिए तैयार हैं।''

"इसके लिए आप धन्यवाद के पात्र हैं, परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि यह नौकरी मुझको बाँधने के लिए दी जा रही है। मेरी योग्यता का लाभ देश और राष्ट्र को पहुँचाने के लिए नहीं।''

इस पर डाक्टर जी हँस पड़े। हँस कर बोले, "सत्य बात तो यही है। हम चाहते हैं कि देश के सब योग्य लोग देश का कल्याण करने में लग जायें। इस पर भी हममें से कोई यह नहीं चाहेगा कि हमारे विचारों के विरुद्ध कार्य हो। हम लोग मंत्री हैं। जनता में अपनी प्रतिष्ठा के कारण और जनता ने हमको हमारी नीतियों के लिए ही स्वीकार किया है। अतः हमारी नीतियाँ तो सब को माननी होंगी।''

"डाक्टर साहब! यह मैं समझता हूँ कि संसदीय प्रजातन्त्र में जनता के प्रतिनिधि सर्वोपरि होते हैं। इसी विषय पर प्रधानमंत्री से बात कराने के लिये मैंने आपको कष्ट दिया था, परन्तु असली विषय पर बात होने ही नहीं पायी कि प्रधानमंत्री महोदय ने समय से पूर्व ही मुझको छुट्टी दे दी। अभी पच्चीस मिनट समय में रहते थे।''

"प्रधानमंत्री आपके विषय में कहते थे कि यह एक पढ़ा–लिखा और योग्य व्यक्ति है, परन्तु इसके मस्तिष्क में भारतीयता घुसी हुई है। इसको निकालने के लिये इसको नौकरी के लिए तैयार करना चाहिए। एक बार यह नौकर हुआ तो दो महीने में एक सधे हुए घोड़े की भाँति गाड़ी में जुत कर चल निकलेगा।''

"तो मेरा अनुमान ठीक है। मैं यह समझा था कि जानबूझ कर मुझको बात नहीं करने दी गयी और जब मैं हठपूर्वक असली विषय पर बात करने लगा था तो 'समय' नहीं है, का बहाना कर दिया गया था। इसका अर्थ मैं यह समझा हूँ कि ये महान पुरुष अपने संस्कारों के अधीन कार्य करते हैं और देश का दुर्भाग्य है कि इनके संस्कार कुछ अच्छे नहीं हैं। बुद्धि का प्रयोग ये करेंगे नहीं।''

"तो आप नौकरी करना नहीं चाहते?''

"मुझे नौकरी की आवश्यकता नहीं। सरकार मेरी योग्यता से लाभ उठाना नहीं चाहती। प्रत्युत वह चाहती है कि मेरी योग्यता को एक शक्तिशाली घोड़ा समझ इसको सरकार रूपी गाड़ी में जोत दिया जाये।

"क्षमा करें। मेरी योग्यता मेरी आत्मा के अधीन है और वह इसको घोड़ा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
बनने की स्वीकृति नहीं देती।"

"तो फिर आपके कब दर्शन होंगे?"

"मैं परसों मध्याह्न के बाद हवाई जहाज से बम्बई जा रहा हूँ। तीन बजे यहाँ से चल कर रात के नौ बजे बम्बई पहुँच जाऊँगा। मेरा अभिप्राय यह है कि परसों एक बजे तक मैं होटल में हूँ। इसके पश्चात् एयरोड्रोम पर।"

बात समाप्त हुई तो फिर टेलीफोन आ गया। इस बार अन्ना बोल रही थी। उसने कहा, आपसे अभी मिलना चाहती हूँ।"

"क्यों? क्या बात है?"

"टेलीफोन पर बताना नहीं चाहती। मैं आ रही हूँ। यदि आप कहीं जा रहे हों तो मेरी प्रतीक्षा करें। मैं कनॉट प्लेस की एक दुकान से बोल रही हूँ। पन्द्रह मिनट से टेलीफोन मिलाने का यत्न कर रही थी। परन्तु शायद आप से कोई बातें कर रहा था। अब मैं आ रही हूँ।"

टेलीफोन बन्द हो गया। अन्ना के इन शब्दों से सदानारायण को आशंका हो गई कि अन्ना का अपने पति से किसी प्रकार का झगड़ा हो गया है। वह विचार करने लगा था कि पति–पत्नी के झगड़े में वह किस प्रकार हस्तक्षेप कर सकता है? इस पर भी अन्ना उसकी देख–रेख में कुछ मास तक साधना आश्रम में रही थी और उन दिनों उसने उसमें किसी प्रकार का दोष नहीं देखा था। उस व्यवहार के नाते उसने उसकी किसी भी प्रकार के अन्याय से रक्षा करने का निश्चय कर लिया। परन्तु पति के अधिकार की सीमा के सम्बन्ध में वह अनिश्चित था। यह सीमा अपने–अपने परिवार के रीति–रिवाज से सम्बन्ध रखती है। इस कारण न्याय–अन्याय का निर्णय सुगम नहीं था। वह उत्सुकुता से उसके आने की प्रतीक्षा करने लगा।

अन्ना, उषनाक राय परिवार के लोगों से पहले ही पहुँच गयी। उसने कमरे में आते ही कहा, "मैं अपने पति से भागकर आ रही हूँ।"

'किसलिए?"

"वह मुझको पीटने वाला है। मैंने उसकी एक नावाजिब बात मानने से इन्कार कर दिया है।"

"क्या नावाजिब बात है जिसको तुमने मानने से इन्कार किया है?"

"वह चाहता है कि मैं प्रधानमंत्री के पर्सनल स्टाफ में नौकरी कर लूँ।"

"और तुम नहीं चाहतीं?"

"नहीं।"

"यह तो ठीक है परन्तु इस बात के लिए वह तुमको पीटेगा क्यों?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जी! उसने कहा है।"

"परन्तु पहिले भी कभी पीटा है उसने?"

"हाँ! कई बार पीटा है। मेरा विवाह इससे सन् 1930 में हुआ था। तब मैं बीस वर्ष की आयु की थी और फ्रांसिस पैंतीस वर्ष का था। मैंने विवाह किया था अपने स्वतंत्र जीवन की किसी दुर्घटना पर पर्दा डालने के लिए। जब इसको पता चला तो यह मुझको पीटने लगा। आखिर मैंने इस पिटने से छुट्टी पाई। इसके आका से अनुचित सम्बन्ध बना कर। यह उनके अधीन था और उनके डर के कारण इसने मुझको पीटना बंद कर दिया।

"पाकिस्तान में ईसाईयों के साथ हुए अत्याचार को देख कर मैंने आका से अत्याचार को रोकने के लिये कहा तो उसने कह दिया कि वह यह रोकना नहीं चाहता। और जब मैं उसके यहाँ से भागने का विचार करने लगी तो उसने मुझको कैद कराने का यत्न किया। मैं कैद से भागने में सफल हो गई।

"मैं समझी थी कि यह अब मुझको नहीं पीटेगा। एक तो इसे मुझको पीटे बहुत वर्ष हो चुके थे। दूसरे, अब मैं वैसा स्वतंत्र जीवन चलाने का विचार नहीं रखती। इस विचार से मैं इसके पास रहने चली आयी थी।

"यहाँ प्रधानमंत्री की दृष्टि मुझ पर पड़ी तो वे मुझको नौकर रखने की बात कहने लगे। मैं निश्चय नहीं कर पाती थी। मेरा चित्त इस नौकरी में नहीं था। इस पर भी मैं द्विविधा में फँसी हुई थी। कल सायं जब आपने कहा कि मुझे यहाँ नौकरी नहीं करनी चाहिए तो मैंने निर्णय कर लिया। मैंने अपने घर वाले को कह दिया कि मैं इनकी नौकरी करना नहीं चाहती। इस पर वह मुझको उसी समय पीटना चाहता था। उसने मुझको अपने पूर्व मालिक से मेरे सम्बँधों की याद दिलाई और कहा कि अब वह मेरी रक्षा नहीं कर सकेगा।"

घटनावश इसी समय प्रधानमंत्री का बुलावा आ गया और वह चला गया। मैं वहाँ से वैसे ही, जैसी बैठी थी, यहाँ के लिये चल पड़ी। कनॉट–प्लेस में एक दुकानदार को दो आने देकर आपको टेलीफोन किया। आपका टेलीफोन रुका था। इस कारण वहीं आपको आने के विषय में बताने बैठी रही थी।"

"देखो अन्ना! तुम क्या कर आयी हो, इससे मेरा सम्बन्ध नहीं। मेरा तो प्रश्न यह है कि मेरे पास किसलिये आयी हो? तुम मुझसे क्या चाहती हो? जब तुम बता दोगी तो फिर मैं बताऊँगा कि क्या कर सकूँगा।"

"परन्तु आपने ही तो कहा था कि वे अच्छे आदमी नहीं। उनकी नौकरी ठीक नहीं है।"

"यह मेरी सम्मति थी। इसको मानना, न मानना तुम्हारा काम था। यदि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम मेरी सम्मति के अनुसार न भी करतीं तो भी तुम्हारे वैसा करने पर मुझे किसी प्रकार का खेद नहीं होता। अब तुमने मेरे कहे अनुसार कर्म किया है तो मुझको विशेष हर्ष नहीं। कारण यह कि भला अथवा बुरा तुम्हारा होने वाला है, मेरा नहीं।

"मुझको प्रधानमन्त्री से किसी प्रकार का द्वेष नहीं। इस पर भी मैं तुम जैसी औरत को उनकी नौकरी के लिये न तो तुम्हारे हित में मानता हूँ, न ही प्रधानमन्त्री के अपने हित में। देश का तो तुम्हारे नौकर होने अथवा न होने से किसी प्रकार का हित अथवा अहित नहीं हो सकता। उसका हित–अहित दूसरी बातों पर निर्भर है।"

"तो मैं क्या करूँ।"

"तुम क्या विचार लेकर यहाँ आयी हो?"

"मैं आपके आश्रम में जाकर रहना चाहती हूँ।"

"मगर अब वहाँ का पता तुम्हारे पति को है और वह तुमको वहाँ पहुँच पकड़ सकता है और तुमको हानि पहुँचा सकता है।"

"तो वह आश्रम मेरी रक्षा नहीं करेगा?"

"आश्रम रक्षा का यत्न करेगा। इसमें सन्देह नहीं। परन्तु वह कर सकेगा क्या? इसमें मुझको सन्देह है।"

"तो कहाँ जाऊँ?"

"मैं एक स्थान बता सकता हूँ। वहाँ जीविकोपार्जन कुछ कठिन है और साथ ही बहुत सरल जीवन व्यतीत करना होगा।"

"बताइये।"

"तुम यहाँ से हरिद्वार चली जाओ और वहाँ से ऋषिकेश। ऋषिकेश से बस में बैठ देवप्रयाग फिर भागीरथी का पुल पार कर अलखनंदा का पुल पार कर लेना। वहाँ पगडंडी से आधा फर्लांग दक्षिण को आ जाना और पहाड़ पर चढ़ जाना। एक चौड़ी पगडंडी बनी है। आधा फर्लांग चढ़ने पर एक आश्रम मिलेगा। वहाँ मेरा पत्र लेकर चली जाओ। जब यहाँ पर खोज शान्त हो जायेगी तो फिर इच्छा हुई तो यहाँ चली आना।"

"आप वहाँ आयेंगे?"

"वहाँ मेरे ताया जी रहते हैं। इस समय उनकी आयु एक सौ दस वर्ष से ऊपर है। वे वहाँ भगवद् भजन करते हैं और ध्यान–योग–तपस्या में लीन रहते हैं।

"वहाँ अन्य लोग भी हैं क्या?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"चार–पाँच प्राणी तो वहाँ रहते ही हैं। बाहर के लोग भी जाते रहते हैं। वहाँ रोटी, साग–भाजी, खद्दर के वस्त्र और कुछ न कुछ काम करने को मिल जायेगा।"

"तो वहाँ जाने लायक खर्च दे दीजिये और एक पत्र भी दे दीजिये।" सदानारायण ने महात्मा रत्नलाल के नाम एक पत्र लिख कर दे दिया और पच्चीस रुपये जाने का खर्च दे दिया। साथ ही कह दिया, "अभी साढ़े सात बजे हैं। यदि तुम टैक्सी ले अभी चली जाओ तो देहरादून जाने वाली गाड़ी मिल सकती है। वह ठीक दस बजे छूटती है।"

अन्ना तुरन्त उठ खड़ी हुई और नमस्कार कर कमरे से निकल गयी।

: 8 :

उषनाक राय की तो लाहौर रंगमहल के चौक में, उनके अपने मकान के सामने ही हत्या हो गयी थी। उसका लड़का गिरधारी, गिरधारी की पत्नी और उसके तीन बच्चे बच निकले थे। गिरधारी की बहिन निर्मला और उसका लड़का रमेश देश विभाजन के समय से बम्बई में थे।

उषनाक राय के मकान को तो आग लगा कर फूँक दिया गया था, परन्तु गिरधारी लाल अपने बैंक में से जमा पूँजी और अनारकली दुकान का बहुत–सा सामान पाकिस्तान से निकाल लाने में सफल हो गया था। गिरधारी लाल ने दस हजार पगड़ी देकर चाँदनी चौक में एक दुकान भाड़े पर ले ली थी। वहाँ उसने अपना बजाजी तथा बने हुए कपड़े बेचने का काम आरम्भ कर दिया था।

निर्मला का लड़का रमेश बम्बई में नौकरी करता था। उसको विदित था कि साधना आश्रम जुहू के सदानारायण उनके सम्बन्धी हैं। वह उनसे मिलता रहता था। इस प्रकार सदानारायण को उषनाक राय के परिवार की गतिविधियों का ज्ञान रहता था।

देश–विभाजन के उपरान्त वह एक बार दिल्ली आया था और जहाँ महानारायण के परिवार से मिलकर सुख समाचार ले गया था वहाँ वह उषनाक राय के परिवार वालों से भी मिला था। महानारायण का विचार था कि अपने पुत्र और पौत्रों को लेकर चंडीगढ़ चला जाये और वहाँ नये बन रहे नगर में ठेकेदारी करे। परन्तु उषनाक राय का परिवार दिल्ली में ही टिक जाने का विचार रखता था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब इस बात को ग्यारह महीने से ऊपर हो गये थे। सदानारायण पिछले दिन दुकान पर उनसे मिलने गया था।

वहाँ तो केवल सुख समाचार ही पूछा जा सका था। गिरधारी लाल बहुत व्यस्त था। इस पर भी उसने ही बात की थी। उसने पूछा, "भापा! कहाँ ठहरे हो?"

"मेडन्स होटल में ठहरा हूँ।"

"वहाँ व्यर्थ में धन खर्च करते हो। अपने घर में आ जाओ न! मैंने दरियागंज में एक मकान मोल ले लिया है।"

"परन्तु गिरधारी! मेरा काम वहाँ रहते हुए हो नहीं सकेगा।"

"हमारे घर आते तो तुमको एक नये प्राणी के दर्शन कराते।"

"तो ऐसा करो न! सब नये–पुराने प्राणियों को लेकर होटल में आ जाओ। रात का भोजन वहीं करना। सबके दर्शन भी होंगे और जान–पहिचान भी होगी।"

"नहीं भापा! पहिले तुम हमारे घर में आओ तब ही कुन्दन की माता वहाँ होटल में आना स्वीकार करेंगी।"

"तो ऐसा करता हूँ कि आज रात के खाने के समय मैं आता हूँ और वहाँ भोजन करूँगा तथा सबको निमन्त्रण भी दे दूँगा।"

"तो ठीक है। तीन बटा दस नम्बर, अन्सारी रोड पर रात के आठ बजे आना। हम सब प्रतीक्षा करेंगे।"

कुन्दन लाल गिरधारी लाल का लड़का था। एम.ए. पास कर अभी तक बेकार घूम रहा था। लाहौर में दयालसिंह कालेज में प्राध्यापक नियुक्त हुआ था। परन्तु पंजाब–विभाजन के कारण नौकरी छूट गयी थी। दिल्ली में आकर कुछ देर तक कैम्प कालेज में काम पर गया था, परन्तु किसी अज्ञात कारण से नौकरी छोड़ घर में आ बैठा था। कुछ ही दिन पूर्व वह एक ऐंग्लो–इंडियन लड़की को घर में ले आया था और उसको पत्नी के रूप में रखे हुए था। यह ही नया प्राणी था, जिसके विषय में गिरधारी लाल ने कहा था। कुन्दन लाल का बड़ा भाई तो केवल मैट्रिक तक ही पढ़ा था। लाहौर में और अब दिल्ली में भी पिता के साथ दुकान में काम करता था। इसका नाम था बनवारी लाल। बनवारी लाल के एक लड़का और एक लड़की भी थी। बनवारी लाल की बहिन शकुन्तला का विवाह दिल्ली में आकर किया गया था और उसका पति कलकत्ता में काम करता था। शकुन्तला कलकत्ता में अपने पति के पास थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सदानारायण पूर्ण परिवार से परिचित था और जब वह गिरधारी लाल के मकान पर पहुँचा तो सब उसके चारों ओर एकत्रित हो गये।

बनवारी लाल का लड़का भी उसको पहिचान गया था। वह इस समय चार वर्ष का था। उसने तुरन्त कह दिया, "ये बम्बई वाले बड़े भापा हैं।"

"ठीक है!" सदानारायण ने उसको अपने समीप बैठा कर कहा, "परन्तु वहाँ एक और भापा भी तो हैं।"

"हाँ! वे दादा हैं। पर वे हमको बुलाते नहीं।"

"और मैं?"

"आप तो पहिले भी आये थे। तब हम चाँदनी चौक की एक धर्मशाला में रहते थे।"

सदानारायण ने अपना विचार बता दिया, "यह लड़का बहुत ही मेधावी होगा। इस पर भी इसकी देख–रेख की आवश्यकता है। अन्यथा इसकी बुद्धि कुण्ठित भी हो सकती है।"

इस समय कुन्दन लाल भी अपनी पत्नी के साथ वहाँ आ गया। गिरधारी लाल ने कुन्दन की पत्नी का परिचय कराने के लिये कहा, "ये देखिये। यह हमारे घर में नया जीव आया है...।"

कुन्दन लाल ने कह दिया, "भापा! तुम रहने दो। मैं स्वयं परिचय करा देता हूँ।"

गिरधारी लाल चुप कर गया और कुन्दन लाल ने कह दिया, "ये हैं मेरी जॉनसन। लगभग एक मास से ये मेरी साथिन[1] बन रह रही हैं।"

"ओह! ये कहाँ की रहने वाली हैं?"

"इस दुनिया की। मेरा मतलब है कि सूर्य का चक्कर काट रही पृथ्वी पर इनका जन्म हुआ है।"

"गुड! तो कुन्दन लाल, मैं तुमको 'कौंग्रेचुलेट' करता हूँ कि तुमको इस पृथ्वी का ही एक प्राणी साथी के रूप में मिल गया है।"

"हाँ! बधाई का पात्र तो मैं हूँ ही। विशेष रूप में जबकि इसने मुझको ढूँढ़कर अपना साथी बनाया है।"

"सत्य? भला यह कैसे?"

"मैं पिछले महीने बंगलौर गया था। ये एक दुकान पर कुछ खरीद रही थीं। मैं भी वहाँ कुछ खरीद रहा था। जब मैं दुकान से बाहर निकला तो ये

---

1. कौमरेड

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी मेरे साथ–साथ चलती हुई पूछने लगीं, 'क्या मैं आपका परिचय पा सकती हूँ?'

"मैंने कह दिया, 'मैं! मैं एक 'लैम्प आफ अर्थ विद ए स्पार्क आफ लाइफ हूँ।'[1]

"ये कहने लगीं, 'ऐण्ड सो एम आई। कान्ट दीज टू स्पार्कस बर्न टुगेदर।"[2]

"मेरा उत्तर था, 'क्यों नहीं?' और ये उसी समय मेरे साथ मेरे होटल में आ गयीं। वहाँ हम इकट्ठे रहे। दिल्ली आये हमें पन्द्रह दिन हुए हैं और अब ये तथा मैं इकट्ठे अपना जीवन चला रहे हैं।"

"वण्डर फुल," सदानारायण के मुख से निकल गया, "परन्तु कुन्दन, परमात्मा का धन्यवाद है कि इसने तुमको अपने घर चल कर जीवन भस्म करने के लिये नहीं कहा। यदि यह होता तो आज मुझको तुम्हारे दर्शन नहीं होते।"

"हाँ, यह तो है। यदि ये कहतीं तो मैं अवश्य इनके साथ चल पड़ता।"

"कदाचित् इसके माता–पिता नहीं हैं।"

"हैं। पिता बंगलौर स्टेशन पर स्टेशन मास्टर हैं और माँ रेलवे स्कूल में उस्तादनी हैं।"

"ओह! तो तुम उनसे मिले हो?"

"हाँ। वे चाहते थे कि हम गिरजाघर में जाकर 'वैडलौक' (विवाह–बन्धन) में बँध जायें। मैंने यह कहा था कि मैं तो मेरी के साथ–साथ हूँ। यदि ये गिरजाघर को चल पड़ेगी तो मैं जरूर वहीं चलूँगा।

"परंतु मेरी ने कह दिया कि वह यह आडम्बर पसंद नहीं करती। वे जैसे हैं वैसे ही ठीक हैं।

"इसके बाद हम यहाँ चले आये हैं। माँ ने भी कहा था कि विवाह हो जाता तो ठीक था, परंतु मैंने माँ को कह दिया कि जिस मतलब के लिये विवाह किया जाता है वह तो पूरा हो रहा है।"

"सत्य?" सदानारायण ने विस्मय प्रकट कर पूछ लिया।

"तो आपको इसमें संदेह है?"

"हाँ! संदेह तो था, परंतु कुन्दन जी! जब आप कहते हैं तो विश्वास करना ही पड़ेगा।"

---

1. एक मट्टी का ढेला जीवन की चिनगारी के साथ।
2. मैं भी तो यही हूँ। क्या ये दो चिनगारियाँ इकट्ठी जल नहीं सकतीं?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसके उपरांत सदानारायण ने बात मेरी से आरम्भ कर दी। वह हिन्दुस्तानी खूब समझती थी और घर के बच्चों से मेल–जोल रखती प्रतीत होती थी। बनवारी की लड़की, जो दो वर्ष की थी, लपक कर उसकी गोदी में चढ़ बैठी थी।

"मेरी डीयर!" सदानारायण ने उसको सम्बोधन कर पूछ लिया, "आप इस घर में प्रसन्न हैं?"

"यह घर उतना ही अच्छा है जितना कि इस पृथ्वी पर हो सकता है। ये सब लोग मुझसे स्नेह करते हैं। मैं इनकी आभारी हूँ।"

सदानारायण को प्रतीत हुआ कि लड़की समझदार है। इस पर भी वह समझना चाहता था कि लड़की किस प्रकार की प्रेरणा लेकर कुन्दन के साथ चली आयी है। साथ ही किस भरोसे वह बिना विवाह इसके साथ रहती है।"

अभी उससे पर्याप्त हेल–मेल न होने के कारण सदानारायण उसके मन की बात पूछ नहीं सका। वह उससे अधिक खुलकर बात आरम्भ करने का अवसर नहीं पा सका। उस समय सब भोजन के लिये खाने के कमरे में चले गये।

भोजन करते हुए तो सदानारायण गिरधारी लाल से बातचीत करता रहा। गिरधारी उसको अपने पुत्र की बात बता रहा था, "मुझको इस लड़की के घर में आने पर कुछ आपत्ति नहीं। यह सबसे हेल–मेल रखती है। कुंदन की माँ का भी अभीष्ट आदर करती है। इस पर भी मुझको भय है कि वह भाग जायेगी। पीछे एक दुःखद स्मृति छोड़ जायेगी। वह भी सम्भव है कि यह हमको लूट कर ले जाये।"

Central Library
167893
Gurukula Kangri (Deemed to be University), Haridwar

"ऐसी आशा आप किस कारण करते हैं?"

"यह बिना विवाह के रह रही है। विवाह की रस्म को तो मैं कुछ महत्त्व नहीं देता, परन्तु इस रस्म को करने के पीछे भावना को मैं बहुत बड़ी बात समझता हूँ। उस भावना के अभाव से ही मुझको भय है।"

सदानारायण गिरधारी लाल की बात को समझ गया। इस कारण उसने कह दिया, "परन्तु गिरधारी लाल जी! कुन्दन की माँ को इसके अन्तर की भावना को समझने का यत्न करना चाहिए।"

"वह यत्न किया गया है, परंतु कुछ पता नहीं चला। या तो यह लड़की अपनी सास को मूर्ख समझती है या वह इसको रूढ़िवादी मान अपने मन की बात बताती नहीं। जब–जब भी इस विषय पर बात होती है यह कह देती है कि आप चिंता न करें, सब ठीक रहेगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"परंतु मैं देख रहा हूँ कि भारत में रहने वालों के रीति–रिवाज में बहुत भारी फर्क पड़ने वाला है। हिन्दुओं में भी विवाह–बंधन ढीला पड़ने वाला है। यह निश्चय जानो कि तलाक की स्वीकृति होगी तो फिर विवाह कर के तलाक हुआ और विवाह न हो कर तलाक हुआ, क्या अंतर पड़ सकता है।"

"परंतु हिंदू मानेंगे तलाक को?"

"इस समय समाज की स्थिति ऐसी है कि कोई भी मनुष्य अपनी अवस्था से संतुष्ट नहीं। पति–पत्नी का एक–दूसरे से असंतुष्ट रहना भी समाज में व्यापक असंतोष का एक अंग ही है। तलाक तो इस असंतोष का प्रकट स्वरूप है। एक बार कानून ने तलाक की स्वीकृति दी तो फिर लाखों की संख्या में इसके लिए प्रार्थनाएँ दी जायेंगी।"

गिरधारी भौचक्का हो मुख देखता रह गया। सदानारायण ने आगे कहा, "मैं तो यह जानने में रुचि रखता हूँ कि यदि कुन्दन लाल की कहानी सत्य है तो इसकी पृष्ठभूमि क्या है? यह पृष्ठभूमि निपट पागलपन से लेकर एक दैवी स्वभाव तक कुछ भी हो सकती है। वह क्या बात है कि यह लड़की एक अपरिचित लड़के से दो बातें कर चल पड़ी थी। मैं तो इस विषय में ही जानना चाहता हूँ।"

"तो वह ठीक है। तुम यह जानने का यत्न करो। यदि सम्भव हो तो इन दोनों को अपने आश्रम में बुला लो। वहाँ कुछ दिन तक रखो और ठीक–ठीक बात जान कर हमको भी बताने का यत्न करना।"

"अभी तो मैं आप सब को अपने होटल में भोजन करने का निमन्त्रण दे रहा हूँ।"

"तो कुन्दन की माँ को कहो न?"

इस पर सदानारायण ने सारे परिवार को होटल में अगली रात के खाने के लिए आने का निमन्त्रण दे दिया।

कुन्दन लाल की माँ ने विस्मय में पूछ लिया, "किस होटल में?"

"मैडन्स होटल में।"

"व्यर्थ है। क्या खाने का देना पड़ेगा?"

"वह सब गिरधारी जी को नहीं देना पड़ेगा।"

"नहीं, भाई साहब! मैं यह बात नहीं कह रही। मैं कहती हूँ कि आप व्यर्थ में इतना कुछ खर्च करेंगे। हम तो बहुत कम में पेट भर सकते हैं।"

"देखो भाभी। रुपयों की बात मत करो। मेरा निमंत्रण पहिले था। गिरधारी लाल जी ने कहा कि मैं स्वयं आकर कुन्दन की माताजी को निमंत्रण दूँ। जब नियंत्रण देने के लिए आने पर तैयार हुआ तो भोजन के समय आकर पूर्ण परिवार

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से भेंट का अवसर मिल गया। मैं इस अवसर को तनिक लम्बा करना चाहता हूँ और अपने पूर्व के निमंत्रण को दुहराता हूँ। मैं समझता हूँ कि मेरी तो वहाँ खाना पसन्द करेगी और मुख्यतः यह नवीन बहू के निमित्त ही कह रहा हूँ।"

कुन्दन ने कह दिया, "माँ, यदि ताया जी के रुपयों की बहुत चिंता है तो खर्च हम दे देंगे।"

इस पर बनवारी लाल की बहू और उसके लड़के ने कह दिया, "हम तो होटल में खाने जाएँगे।"

इसने बात तय कर दी और उस दिन का निमंत्रण स्वीकार हो गया। सदानारायण ने एक छोटे से हाल में होटल में ठहरे हुए अन्य लोगों से पृथक खाने का प्रबन्ध कर दिया।

: 9 :

खाने के उपरान्त सदानारायण ने कुन्दन और उसकी पत्नी को बम्बई आने का निमन्त्रण दे दिया। इस पर मेरी ने कह दिया, "हम बंगलौर से आते हुए बम्बई निर्मला आन्टी से मिलने गए थे। उसने और उसके लड़के तथा बहू ने हमको कह दिया था कि हम उनसे कभी भी मिलने न जायें। इस विरोध से निराश हो हम आपसे भी मिलने नहीं गए। इन्होंने आपका इस परिवार से सम्बन्ध बताया तो मुझ को वह दूर का ही समझ में आया था।"

"और अब कैसा मालूम हो रहा है?"

"अपना उस समय का विचार गलत मालूम होने लगा है।"

"देखो मेरी! हमारे परिवार का इनसे सम्बन्ध तब की बात है जब कुन्दन और इसका बड़ा भाई भी उत्पन्न नहीं हुए थे। इनकी एक विधवा ताई ने मेरे भाई के लड़के से ऐसे ही विवाह कर लिया था जैसे तुमने कर लिया है। लगभग यही बात थी। 'इन्फैचुएशन एट फर्स्ट साइट'[1] हुआ था। तब कुन्दन के बाबा ने वही उदारता दिखाई थी जो अब तुम्हारी सास ने दिखाई है। उस समय मेरे पिता तथा ताया जी ने कुन्दन के बाबा को एक बुद्धिशील व्यक्ति समझा था और उनसे हमारे परिवार के सम्बन्ध घने हो गए थे और अब तो मैं तुम्हारी सास का तुम दम्पति से व्यवहार देख कुछ ऐसा अनुभव करता हूँ कि यह परिवार तो बिल्कुल अपना ही है।"

---

1. प्रथम दृष्टि में ही सम्मोहन।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो आप हमारे इस प्रकार के सम्बन्ध को एप्रूव[1] करते हैं?"

"पसन्द तो एक आपेक्षिक भावना है। पसन्द की मात्रा में भी तो भेद हो सकता है। मैं तुमको अपने लड़के की बात बताता हूँ। वह अमेरिका पढ़ने गया हुआ था और वहाँ एक लड़की से सम्बन्ध बना बैठा था। मुझको समाचार मिला तो मैं उससे मिलने चल पड़ा। वहाँ पहुँच मैंने उसको समझाया था। उससे भी, यही पसन्द और स्वीकृति में अन्तर पर बात हुई थी। पसन्द का अर्थ है जो मैं स्वयं भी करने अथवा लेने के लिये उत्सुक हो जाऊँ, परन्तु स्वीकार करने का अर्थ यह है कि मैं स्वयं तो वह करने अथवा लेने के लिये तैयार नहीं, परन्तु दूसरे के वैसा करने पर मुझको आपत्ति नहीं। यही बात विजय के विषय में थी और यही अब कुन्दन के विषय में कहता हूँ।

"जब मैंने पसन्द करने और स्वीकार करने में इतना अन्तर उसे बताया तो उसकी पत्नी 'लौरा' ने मुझसे पूछ लिया कि मैं उनके इस प्रकार सम्बन्ध में क्या पसन्द नहीं करता। तब मैंने उसको पुरुष–स्त्री के इकट्ठे रहने के प्रयोजन को बताया। मेरा कहना था कि उस प्रयोजन की सिद्धि के लिये केवल वासना तृप्ति के निमित्त सम्बन्ध एक अपर्याप्त कारण है। यह बात सिद्ध करनी अमेरिका में सुगम थी। वहाँ इस अर्थ में सम्बन्ध व्यापक रूप में होते देखे जाते हैं। ऐसे सम्बन्धों में आधा यौवन व्यतीत करने के उपरान्त प्रायः सबको नियमित विवाह करने के लिये उत्सुक भी देखा जा सकता है। इस स्थिति में लौरा को शीघ्र ही समझ आ गयी और वह विजय से विवाह करने के लिये हठ करने लगी। यह वस्तुस्थिति है कि विवाह बन्धन की परमानैन्सी[2] पत्नी की रक्षा के लिए है और विवाह का प्रयोजन सिद्ध करने के लिए आवश्यक है। लौरा समझी तो उसने विजय को विवाह के लिए राजी कर लिया था।"

"परन्तु यहाँ तो मैंने ही विवाह की रस्म के लिए अनिच्छा प्रकट की है। ये तो उसके लिए तैयार थे और अब भी हैं।"

"यह कुछ विचित्र अवश्य है, परन्तु क्या प्रयोजन है इसमें? क्या विशेषता अनुभव करती हो इसमें?"

"मैं रस्मों में बँधे हुए मानवों को पशु मानती हूँ।"

सदानारायण मुस्कुरा कर पूछने लगा, "सत्य? भला कौन पशु देखा है

---

1. पसन्द।
2. स्थायित्व।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुमने, जो विवाह की रस्म पूरी कर सम्बन्ध बनाता है।''

मेरी ने तनिक विचार कर कहा, ''मेरा यह अभिप्राय नहीं। मेरे कहने का अर्थ यह है कि पशु न तो ये रीति–रिवाज पालन करते हैं न ही उनमें बन्धन स्थायी होते हैं। परन्तु मानव तो पशु है नहीं। वह तो बिना रीति–रिवाज के भी बन्धन स्थायी बनाने का यत्न करता रहता है।''

''इस पर भी छोटे–बड़े, ज्ञानवान–अज्ञानी, मालिक–मजदूर, अफसर, अधीनस्थ। अभिप्राय यह कि सब इस विवाह की रस्म का पालन करते हैं। इस बात को तुम पशुओं से भिन्न नहीं देखतीं क्या? क्या इसका यह अर्थ नहीं कि मनुष्य स्त्री–पुरुष के सम्बन्ध को स्थायी बनाना चाहता है। वह इसको पशुओं की भाँति एक अस्थायी सम्बन्ध नहीं मानता। इसके स्थायी बनाने के लिए ही इसको यह आवश्यकता अनुभव नहीं हुई क्या, कि इस सम्बन्ध बनाने के कुछ साक्षी भी बना लें?

''यह केवल इस कारण है कि मनुष्य में सम्पत्ति बनाने की लालसा बन गई है और उस सम्पत्ति के उत्तराधिकारी बनाने होते हैं। इसके लिये बच्चे को अपने–पराये होने में 'सर्टिफिकेट' (प्रमाण) की आवश्यकता है। यह विवाह की रस्म और साक्षी इसी अर्थ में चाहिए।

''मैं न तो सम्पत्ति रखना आवश्यक समझती हूँ, न ही उसके लिए उत्तराधिकारी निर्माण करना कोई शुभ कार्य है। अतः विवाह की रस्म की आवश्यकता नहीं।''

''ओह! तो यह बात है?'' सदानारायण समझ गया कि इस लड़की पर कम्युनिज्म का रंग चढ़ गया है। इस कारण उसने कहा, ''तो तुम सम्पत्ति–विहीन मानव समाज चाहती हो?''

''बिलकुल।''

''यह बात अभी तक सम्भव सिद्ध नहीं हुई।''

''परन्तु रूस में तो सफल हो रही प्रतीत होती है।''

''मुझे तो इसके विपरीत ही कुछ समझ आ रहा है। वहाँ सम्पत्ति रखने की भावना अन्य देशों से कुछ अधिक ही है। यदि यह भावना न होती तो रूस को पोलैंड, हंगरी, रूमानिया इत्यादि देशों पर बलपूर्वक अधिकार करने की आवश्यकता न होती।''

''परन्तु वह तो राज्य कर रहा है।''

''हाँ, और राज्य देश के लोगों की भावना का प्रतीक नहीं क्या? देखो मेरी! मैं इसको इस प्रकार समझता हूँ। यह गिरधारी लाल जी का परिवार है और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यदि परिवार का प्रत्येक सदस्य पृथक्–पृथक् सम्पत्ति न रखकर परिवार की साझी सम्पत्ति बनाने का यत्न करे तो यह रूस की बात हो जावेगी। सम्पत्ति रखने की भावना तो वहाँ पर भी है। यदि यह कहा जाय तो और भी उपयुक्त होगा कि देश की सामूहिक सम्पत्ति बनाने की भावना मैं न्याय–अन्याय, उचित–अनुचित, मानवतायुक्त–मानवत विहीन, सब प्रकार के उपाय प्रयोग करने क्षम्य मान लिए गए हैं। रूस एक बड़ा देश है। इसने अपने परिवार के सदस्यों को भूखा एवं नंगा रखकर युद्ध सामग्री और शस्त्रास्त्र इतने एकत्रित कर लिए हैं कि यह निरापद छोटे–छोटे पड़ोसी राज्यों की सम्पत्ति पर अधिकार जमा बैठा है।

"क्या यह सिद्ध नहीं करता कि सम्पत्ति रखने की भावना रूस में दूसरे देशों से अधिक है?"

मेरी पुनः विस्मय में मुख देखने लगी। वास्तव में उसने इस दृष्टि से रूस के व्यवहार को कभी देखा ही नहीं था। सदानारायण ने उसको विचार करते देखा तो इसमें उसकी सहायता करने के लिए कह दिया। उसने कहा, "देखो मेरी! सम्पत्ति रखने की भावना जब व्यक्ति में होती है तो उस पर नियन्त्रण रखना सुगम है। यह भावना कहीं दूसरों पर अन्याय और अत्याचार करने वाली न हो जाय, इसका प्रबन्ध देश की सरकार करती है। परन्तु किसी देश के नागरिक मिलकर इस भावना को अपने देश के राज्य के द्वारा कार्यान्वित करें तो संसार के दूसरे प्रबल देश ही उसको नियन्त्रण में रख सकते हैं और इससे युद्ध होंगे और क्रान्तियाँ और विप्लव होंगे। यह तो कुछ अच्छी स्थिति नहीं।"

"मैं कुछ नहीं समझ रही। मेरी पूर्ण शिक्षा को आप झूठा सिद्ध कर रहे हैं।"

सदानारायण हँस पड़ा। हँस कर बोला, "नहीं मेरी! यह पूर्ण शिक्षा नहीं। यह तुम्हारी पूर्ण शिक्षा का एक छोटा–सा परन्तु विकृत अंग है। यदि तुम इसके अतिरिक्त शिक्षा न पायी हुई होतीं तो मेरा तुमसे मतभेद रखने पर तुम भड़क उठतीं और मुझको भला–बुरा कहने लगतीं। तुमको इस परिवार में रहना भी स्वीकार न होता। यह तुमको पता लग गया होगा कि यह परिवार सम्पत्ति बनाने में लगा हुआ है। कम–से–कम इतना तो कहा ही जा सकता है कि तुम सभ्य हो और दूसरों से मतभेद रखते हुए भी सहन–शक्ति रखती हो।"

"तो क्या आप समझते हैं कि सम्पत्ति रखने का विरोध करने वाला व्यक्ति असभ्य ही होता है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नहीं, मैं यह नहीं कह रहा। मैंने तो यह कहा है कि सम्पत्ति के विषय में जो कुछ तुमने सीखा है एक सभ्य सुशील लड़की की भाँति रहने की शिक्षा उससे पृथक् है। और यह तुम भली–भाँति समझ रही हो। जो कुछ नहीं समझा वह सम्पत्ति रखने के विषय में है।"

"मैंने यह समझा था कि सम्पत्ति रखना एक 'सिन'[1] है।"

"परन्तु यह एक स्वाभाविक उत्कंठा है। इसको धर्मानुसार रखना पाप नहीं। यह तो इसी प्रकार है जैसे कुछ लोग पुरुष–स्त्री के सम्बन्ध को भी 'सिन' मानते हैं। परन्तु जब नियन्त्रण में रहकर यह सम्बन्ध बनाया जाता है तो यह पाप के स्थान पर पुण्य हो सकता है। यही बात अनियन्त्रित पुरुष–स्त्री सम्बन्ध की भी है। यह सीमा से बाहर और अनियन्त्रित होने पर पाप हो जाता है। पुण्य तथा पाप का निर्णय इसके नियन्त्रण के भीतर तथा बाहर होने से ही होता है।"

इस समय गिरधारी लाल के परिवार के लोग जाने को तैयार हो गये। मेरी ने भी उठते हुए कहा, "आपसे मिलकर कुछ तो नई बात पता चली है। मैं आपसे फिर मिलूँगी।"

"मैं अभी परसों मध्याह्न दस एक बजे तक यहाँ हूँ। कल मैं दिन भर अन्य कामों में व्यस्त हूँ। हाँ, यदि तुम और कुन्दनजी कल फिर यहाँ खाने के लिए आ सको तो मुझको बहुत प्रसन्नता होगी।"

"जी नहीं। कल आप मेरा निमन्त्रण स्वीकार करें। मैं आपको नई दिल्ली 'वैंगर' में निमन्त्रण देती हूँ।"

इतना कहते हुए उसने अपने पति कुन्दन लाल की ओर देखा तो कुन्दन लाल ने कह दिया, "दादा! मैं इसको अपने पर कृपा मानूँगा और वहाँ हम बम्बई आने के कार्यक्रम पर भी विचार करेंगे।"

: 10 :

सदानारायण न तो आशा करता था कि वह किसी प्रकार से कांग्रेस पर प्रभाव डाल सकता है और न ही वह इसके लिए उत्सुक था। इस पर भी वह डॉ. अम्बेडकर के कहने पर भारत के प्रधानमन्त्री से मिलने के लिये गया था।

डॉ. अम्बेडकर सदानारायण से प्रभावित हुआ था। सदानारायण से

---

1. पाप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इतिहास की भारतीय परम्पराओं के विषय में एक लम्बी वार्त्ता के उपरान्त ही उसकी प्रधानमन्त्री से भेंट कराने के लिए यत्न करने लगा था।

इस भेंट के उपरान्त डाक्टर प्रधानमन्त्री के साथ एक पब्लिक मीटिंग में जाने वाले थे परन्तु उसका समय साढ़े पाँच बजे का था और भेंट पाँच के स्थान पर चार बज कर पैंतीस मिनट पर समाप्त हो जाने के कारण जाने में अभी पौन घण्टे से अधिक समय था। अतः प्रधानमन्त्री डाक्टर साहब को अपने स्टडीरूम में ले गये और वहाँ पर बैठकर बोले, "मैं तो इस पण्डित की बातों से प्रभावित नहीं हुआ?"

"परन्तु इसने बात तो ठीक ही कही है।" डाक्टर साहब ने कह दिया।

"क्या ठीक कही है।"

"यही कि भारत में भी एक विधान तो था। वह मनुस्मृति है।"

प्रधानमन्त्री हँस पड़े। बोले, "जिसमें शूद्रों के लिए सदा दासता ही लिखी है?"

"मैं भी ऐसा ही समझता था परन्तु इसने मुझे यह लिखा हुआ दिखाकर चकित कर दिया कि वहाँ शूद्र जन्म से नहीं वरंच गुण–कर्म–स्वभाव से माने हैं।

"इसके अतिरिक्त शूद्रों को उन्नति करने के मार्ग में शास्त्र तो बाधक नहीं। यह बाधा तो समाज में शास्त्र के अतिरिक्त पैदा हुई। वह कहता था कि यह बाधा मुख्य रूप में ईसा की पहली शती में जनता में उत्पन्न होनी आरम्भ हुई थी और मुसलमानों के आने के समय तक व्यापक रूप में बन गई थी। वह चाहता था कि हम शास्त्र के नाम पर जनता में फैलाई गई कुरीतियों को दूर करें। इससे सफलता सुगमता से और अल्पकाल में मिल सकेगी।"

"मैं ऐसा नहीं समझता। मैं समझता हूँ कि इस ब्राह्मण के बेटे ने आपको मुगालते में डाल दिया है।"

"तो आप क्या समझते हैं?"

"मैं तो यूरोप के ज्ञान–विज्ञान को ही हिन्दुस्तान की मूर्खता दूर करने का एक उपाय समझता हूँ।"

"मैं यह देखता हूँ," डाक्टर साहब ने कहा, "कि मद्रास और महाराष्ट्र में अंग्रेजी शिक्षा का प्रभाव देश के अन्य भागों से अधिक है और छुआछूत का चलन इन क्षेत्रों में से अधिक है। यह व्यक्ति भी पंजाब का रहने वाला है। यह ब्राह्मण जाति का भी नहीं। यह जाति का सूद है जिसको शूद्र भी कहा जा सकता है। पंजाब में अछूतोद्धार का आन्दोलन सबसे पहले चला था और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंजाब में अंग्रेजी की शिक्षा देश में सबसे कम है। जिन क्षेत्रों में अंग्रेजी पढ़े–लिखों की संख्या अधिक है वहाँ यह आन्दोलन चल नहीं सका।''

पण्डित नेहरू इस युक्ति से भौचक्के हो मुँह देखते रह गये। फिर एकाएक बोले, ''इट इज आल नौन्सैंस, देखिए डाक्टर साहब! आप इसको सरकार की नौकरी करने के लिए राजी कर लीजिए। मैं समझता हूँ कि एक बार वह नौकरी में आयेगा तो उसका मस्तिष्क ठीक हो जायेगा।''

''यत्न करूँगा। परन्तु वह शायद ही माने।''

''क्यों? ''

''वह कहता था कि जिस राज्य में विद्वानों को नौकर रखा जाता है उस राज्य में विद्वानों का अभाव हो जाता है। साथ ही वह मानता है कि जब विद्वान नौकरी करता है तो उसकी विद्वत्ता उसे छोड़ जाती है।''

''आप अपने विषय में क्या समझते हैं?'' पण्डितजी ने मुस्कराते हुए पूछा।

''मैं अपने को एक विद्वान व्यक्ति मानता था परन्तु पिछले तीन–चार दिन के वार्त्तालाप से मुझको अपनी विद्वत्ता पर सन्देह होने लगा है।''

''तो गांधीजी ने एक अविद्वान् को स्वतन्त्र भारत के प्रथम मन्त्रिमण्डल में रखने की सिफारिश की थी?''

''गांधीजी ने क्या समझा था मैं नहीं जानता। परन्तु मैं यह यत्न कर रहा हूँ कि अछूतों के प्रतिनिधि मन्त्रिमण्डल में सदा बने रहें। यह बात इस विद्वान् ने गलत सिद्ध कर दी है। मैं अब एक द्वंद्व में फँसा हुआ हूँ। मैं यह समझता हूँ कि आगामी निर्वाचनों में मुझको चुनकर लोकसभा में आने का अवसर नहीं मिलेगा और यदि निर्वाचित हो भी गया तो आप मुझको मन्त्रिमण्डल में लेंगे नहीं। इस कारण मुझको अपनी एक लॉबी बनाने के लिए अछूतों का नेता बनना चाहिए। परंतु यह इस शूद्र जाति में उत्पन्न विद्वान् ने सिद्ध कर दिया है कि मेरा ऐसा करना अछूतों को ही हानि पहुँचा रहा है।

''वह कहता था कि गांधीजी ने अछूतों का प्रश्न देश की राजनीति से जोड़ कर देश को हानि ही पहुँचाई है। साथ ही अछूतों को भी अपार क्षति पहुँचाई गई है।''

''वह बहुत चतुर व्यक्ति प्रतीत होता है जो आपको मूर्ख बना गया है।'' इस पर दोनों महानुभाव हँस पड़े। प्रधानमंत्री ने कह दिया, ''राजनीति में किसी प्रकार की पेशीनगोई नहीं की जा सकती। इस पर भी मैं कोई कारण नहीं समझता कि आपको भावी मन्त्रिमण्डल में न लिया जावे।

''इस पर भी मैं समझता हूँ कि हिन्दुवाद से समाजवाद आपकी अधिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रक्षा करेगा।''

अम्बेडकर के मुख पर अभी भी अनिश्चित भाव विद्यमान था। वह देख रहा था कि वह सरदार पटेल के विचारों से स्वयं को अधिक समीप समझता था और सरदार पटेल समाजवाद को धोखे की टट्टी समझते थे। पण्डित जवाहरलाल समाजवादी थे और देश के मुख्य–मुख्य प्रश्नों पर उनका पटेलजी से मतभेद रहता था।

सदानारायण से भी डाक्टर ने इस विडम्बना का उल्लेख किया था और उसने बताया था कि इसमें कारण है डाक्टर और सरदार पटेल दोनों का योग्य वकील होना। उसने यह भी बताया था कि भारत के प्रधानमंत्री कानून की एबीसी भी नहीं जानते। वे एक ठेठ समाजवादी की भाँति बहुसंख्यक जनता के कथन को कानून मानते हैं और उससे भी बढ़ कर अपने मन की बात को कानून का सार समझते हैं।

डॉ. अम्बेडकर अभी इस कथन की सत्यता पर विचार कर ही रहे थे कि पण्डित जी उठ खड़े हुए और बोले, ''अब चलना चाहिए। समय हो गया है। आप मीटिंग से लौट कर इससे पता करें कि यह भारत सरकार की नौकरी करेगा अथवा नहीं। मैं इसकी सचिव के पद पर नियुक्ति करा दूँगा। दो हजार रुपये तक इसको वेतन मिल सकता है।''

यही प्रस्ताव डॉ. अम्बेडकर ने टेलीफोन पर सदानारायण को बताया था और उसको इसे अस्वीकार करते सुन हँस पड़ा था। सबसे विचित्र बात उसको पण्डित नेहरू की भावना का सदानारायण को ज्ञान होने की थी। वह समझ गया था कि प्रधानमंत्री उसको एक घोड़े की भाँति साधना चाहता था। डाक्टर साहब इससे प्रसन्न थे कि सदानारायण ने पण्डित जी के प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया था। इस इनकार करने से उनके मन में सदानारायण का मान बढ़ा ही था।

अतः अगले दिन उसने मध्याह्न दो बजे संविधान सभा से अवकाश पा सदानारायण को ढूँढ़ना आरम्भ कर दिया। उसने होटल में टेलीफोन किया तो पता चला कि वह अपने कमरे में नहीं है। इसके उपरान्त उसने ढाई बजे, फिर तीन बजे और अन्त में साढ़े तीन बजे टेलीफोन से पता किया। परन्तु वह उसको मिल नहीं सका।

निराश हो चार बजे वह डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी से मिलने के लिए चला गया। वहाँ पहुँच कर उसके विस्मय का ठिकाना नहीं रहा। सदानारायण वहाँ पर उपस्थित था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसने अपना नाम डाक्टर साहब के पास भेजा तो उसको भीतर बुला लिया गया। वहाँ सदानारायण को डाक्टर साहब के समीप बैठ चाय पीते देख वह चकित रह गया। उसने कहा, "पण्डित जी! आप यहाँ? मैं तो आपके होटल में टेलीफोन पर टेलीफोन खड़का रहा था।"

"मैं आज प्रातःकाल का ही वहाँ से निकला हुआ हूँ। भोजन एक सम्बन्धी के घर किया था और अब चाय यहाँ पी रहा हूँ।"

डॉ. मुखर्जी ने कहा, "तो डाक्टर। आप इनको जानते हैं?"

"जी! आपका इनसे परिचय कब से है?"

"मैं एक बार सन् 1947 में इनसे मिला था और इनके पिताजी ने कुछ बातें बताई थीं। वे मेरे मन पर अंकित हैं। पिछले हैदराबाद में पुलिस ऐक्शन के समय से मैं इनके पिताजी के विषय में पूछ रहा था। मैंने इनके आश्रम में लिखा था। वहाँ कोई राधा जी हैं। उन्होंने इनका हैदराबाद का पता बता दिया। वहाँ पत्र लिखा तो पता चला कि आप सरदार जी के बंगले पर ठहरे हुए हैं। और उनसे पता करने पर कल पता चला था कि आप मैडन्स होटल में हैं। सो कल इनसे तीन बजे मिलने का समय निश्चित कर लिया था।

"एक घण्टा भर इनसे कई विषयों पर अनेक बातें हुईं। मैं मन में विचार कर रहा था कि इनको आपसे मिलाऊँगा। परन्तु आप तो इनको पहले ही जानते हैं।"

"जी! मैं इनसे पटेल जी के बंगले पर ही मिला था। इनसे अनेक विषयों पर बातें की हैं। कल मैंने इनकी भेंट नेहरू जी से भी कराई थी और वे इनको एक बढ़िया मछली समझ कर इनको पकड़ने के लिये अपनी बंसी लगा बैठे थे। मगर ये पकड़े नहीं गये।"

"अम्बेडकर! इनके पिताजी से मिलना चाहिए। मैं दो दिन की छुट्टी कर उनसे मिलने के लिये जा रहा हूँ।"

"कहाँ हैं वे?"

"देवप्रयाग के पास एक आश्रम में रहते हैं। वे संन्यासी हैं और इस समय उनकी आयु एक सौ दस वर्ष से अधिक है।"

"मैं रात भर एक बात पर विचार करता रहा हूँ। इनकी बातें सुनकर मैं निश्चय कर बैठा था कि हिन्दू महासभा में सम्मिलित हो जाऊँ। और अगले निर्वाचनों में कांग्रेस को पराजित कर स्वयं प्रधानमन्त्री बनने का यत्न करूँ।

"परन्तु जब हिन्दू महासभा का आपसे व्यवहार स्मरण करता हूँ तो मन में से इनकी बात निकाल देता हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं तो यह समझता हूँ," डॉ. मुखर्जी ने कहा कि हम दोनों कांग्रेस में सम्मिलित हो जावें और सरदार के हाथ मजबूत करें।"

"परन्तु सरदार में एक दोष है। वह यह कि वे गांधी जी को वचन दे चुके हैं कि वे नेहरू का विरोध नहीं करेंगे। जब नेहरू के विरोध का प्रश्न आता है तो वे पीठ दिखा देते हैं।"

"परन्तु हिन्दू महासभा के टिकट पर तो हम स्वयं भी निर्वाचित नहीं हो सकेंगे। ये पण्डित सदानारायण जी कहते हैं कि देश में एक नवीन दल की आवश्यकता है। वह दल हिन्दू महासभा के पूर्वाग्रहों से मुक्त हो। इस पर भी प्राचीन हिन्दू सभ्यता का पोषक हो।"

"यही तो मैं विचार कर रहा था कि प्राचीन और नवीन सभ्यता में अन्तर जन साधारण की समझ में नहीं आ सकता। मुझे भय है कि यदि हम हिन्दू सभ्यता के नाम पर बल देने लगे तो साधारण हिन्दू फिर गौ, ब्राह्मण के नाम पर गोबर और गोमूत्र पिलाने लग जायेंगे।"

डॉ. मुखर्जी हँस पड़े। हँस कर बोले, "डरने की बात नहीं। हम गोबर और गोमूत्र का प्रयोग वैकल्पिक कर देंगे।"

इस पर सदानारायण ने कह दिया, "मेरे मन में आता है कि एक हिन्दुस्तानी दल के नाम से दल बनाया जाय और उसमें हिन्दुस्तान की प्राचीन सभ्यता का उद्धार एक उद्देश्य हो। देश में रहने वालों की शारीरिक, मानसिक और आत्मिक उन्नति दूसरा उद्देश्य रखा जाय। उद्देश्य हो कि देश की सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था प्राचीन शास्त्रानुसार स्थापित की जाय।"

इस पर डॉ. मुखर्जी डॉ. अम्बेडकर से कहने लगे, "मैं समाजवादी व्यवस्था चाहता हूँ। और पण्डित जी धर्मानुकूल व्यवस्था चाहते हैं। आपके आने से पूर्व हम इसी विषय पर बात कर रहे थे। मैं इनसे पूछ रहा था कि क्या समाजवादी व्यवस्था धर्म के विपरीत है?

"इस समय आप आ गये तो बात रुक गई। यदि आपको समय हो तो हम इनकी कल्पना के राजनीतिक दल का स्वरूप समझ सकते हैं।"

"हाँ, तो पण्डित जी!" डॉ. अम्बेडकर ने सदानारायण से पूछ लिया, "कैसा दल चाहते हैं आप? हमारी दृष्टि में तो केवल दो विकल्प हैं। एक है पूँजीवादी सरकार और दूसरी समाजवादी। आप इनमें से कौन सी चाहते हैं? तनिक बताइये।"

सदानारायण ने मुस्कुराते हुए कहा–"समाजवादी व्यवस्था तो बहुरंगी और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुरूपी है। इसके अनेक रंग और रूप देखकर ही तो भिन्न–भिन्न लोग इसके किसी एक रूप और रंग को ही इसका वास्तविक रंग–रूप समझ कर इस पर मुग्ध हो जाते हैं।

"परन्तु इन सब के नीचे एक वास्तविकता छिपी हुई है। वह है व्यक्ति का पूर्ण रूप से समाज के आधीन हो जाना। समाजवाद और पूँजीवाद परस्पर विरोधी नहीं हैं। ये एक ही विचार के दो पहलू हैं। दोनों में आर्थिक प्रभुता की वेदी पर मनुष्य के अन्य सब सद्‌गुणों का बलिदान छिपा हुआ है। इन दोनों में मन, बुद्धि और आत्मा गौण है और इन पर अर्थ का सुनहरी ढकना पड़ा हुआ है।

"इशावास्योपनिषद में इसी के विषय में तो कहा है–

'हिरण्यमयेन पात्रेण सत्यस्यापिहित मुखम्।'

"सत्य का मुख सुनहरी पात्र से ढका हुआ है। वह सत्य है, आत्मा–परमात्मा।"

"अतः मैं ने इन दोनों को एक समान अग्रहणीय मानता हूँ।"

"और सत्य क्या है?"

"मानव शरीर में मन और आत्मा भी है। मैं शरीर का विरोधी नहीं। परन्तु मन और आत्मा की अवहेलना को भी वांछनीय नहीं मानता। शरीर का पालन–पोषण अर्थ से होता है परन्तु अर्थ जब धर्म के अधीन हो तो कल्याणकारी होता है और यह सत्य को छिपाने वाला नहीं होता।"

इस पर डॉ. मुखर्जी ने पूछ लिया– "ये सिद्धांत की बातें बताने से कुछ लाभ नहीं। हम इनको तो हिन्दू परिवार में जन्म लेने से ही जानते हैं। आप व्यावहारिक पक्ष की ओर आइये।"

"व्यवहार को सिद्धांत से पृथक् नहीं किया जा सकता। इसी कारण इतना इसके विषय में बता दिया है।

"देखिये डाक्टर साहब! समाजवाद और पूँजीवाद शब्दों को छोड़ कर इनमें तत्त्व क्या है उनकी परीक्षा कीजिये। उन सिद्धांतों से व्यवहार स्पष्ट हो जायेगा।

"आत्मा बन्धनों से मुक्त रहना चाहता है। इस पर भी अपने अदृष्टों से बँधा हुआ इस संसार में आता है और एक सीमा तक बंधनों में जकड़ा हुआ जीवन व्यतीत करता है। इस पर भी वह अधिक से अधिक स्वतन्त्र रहना चाहता है। इस स्वतन्त्रता और बंधन की सीमा धर्म बाँधता है। धर्म वह है जो मनुष्य को समाज में रहते हुए अधिक से अधिक स्वतन्त्रता के लिये स्थान दे सके। इसी कारण महाभारत में महर्षि ने लिखा है–

'तथा च सर्वभूतेषु वर्तितव्यं यथात्मनि।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इसलिये जैसा व्यवहार अपने साथ स्वीकार करते हो वैसा ही दूसरों के प्रति पालन करो।

"यदि हम चाहते हैं कि समाज हम से अधिक से अधिक काम लेकर केवल निर्वाह के लिये हमको दे तो निश्चय हम दूसरों के साथ भी वही व्यवहार कर सकते हैं। यह व्यवस्था पूँजीवादी और समाजवादी दोनों ही नहीं मानते। व्यवस्था देने वाले दूसरों के साथ ही ऐसा करना चाहते हैं।"

"तो आप यह नहीं चाहते कि आप राष्ट्र के लिये अधिक से अधिक परिश्रम करें?"

"यह मेरे अथवा किसी के चाहने की बात तो है नहीं। यहाँ तो व्यवस्थापकों के चाहने की बात हो जाती है। देखिये साहब! मैं चाहता हूँ कि मैं चौदह घण्टे नित्य काम करूँ। इतने घंटे काम करने से मेरे निर्वाह से अधिक प्राप्त होगा। यह भी मैं जानता हूँ। सरकारी कर देकर भी मेरे पास पर्याप्त बचेगा। उस बचे हुए को मैं समाज कल्याण के लिये व्यय करना चाहता हूँ। परन्तु समाज कल्याण क्या है? इस विषय में किसी का भी अपना मत हो सकता है। इसी को धर्म–कर्म कहते हैं।

"मैं अपनी शेष बची आय को शिक्षा और वह भी शास्त्र की शिक्षा देने में व्यय करने में कल्याण समझता हूँ। एक दूसरा व्यक्ति उसको मन्दिर बनवाने में व्यय करना चाहता है। तीसरा मसजिद बनवाने में व्यय करना चाहता है। पूँजीवादी अथवा समाजवादी दोनों ही इसकी स्वतन्त्रता नहीं देते। वह मेरी 'सरप्लस वैल्यू', मेरे परिश्रम का मेरे निर्वाह से बचा धन, वोट डालकर व्यय करना चाहते हैं। मैं या और कोई भी अन्य बुद्धिशील व्यक्ति इसको स्वीकार नहीं कर सकता।"

"परन्तु साझे के लोक कल्याण के कार्य कैसे चलेंगे?" डॉ. मुखर्जी का प्रश्न था।

"कुछ कार्य हैं जो सबको मिलकर करने होते हैं। ये काम प्रायः नगर निगमों के काम हैं। इनके लिये नगर निगम टैक्स ले सकता है। परन्तु वह किसी भी मनुष्य की पूर्ण सरप्लस वैल्यू पर अधिकार नहीं कर सकता।"

"क्यों नहीं कर सकता?"

"इसलिये कि वह यदि ऐसा करेगा तो मनुष्य की स्वतन्त्रता शून्य के बराबर हो जायेगी। वह पशुवत जीवन व्यतीत करने वाला हो जाएगा।"

"तो राज्य द्वारा कर लेना आप स्वीकार करेंगे?"

"हाँ, परन्तु यह मनुष्य की सरप्लस वैल्यू का एक छोटा सा अंश ही होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह इस बचत का छठे भाग से अधिक नहीं होना चाहिए।''

"चौथा भाग क्यों नहीं?''

"यह भी हो सकता है। परन्तु यह पूर्ण 'सरप्लस' नहीं हो सकता। समाजवादी यही चाहते हैं।''

"यह सरप्लस कितना होता है।''

"भिन्न–भिन्न व्यक्तियों का और उनकी भिन्न–भिन्न परिस्थितियों में भिन्न–भिन्न होता है। इस मशीन युग में यह बहुत बढ़ गया है। इस पर भी इसका एक अंश मात्र ही नगर निगम ले सकते हैं। सब का सब नहीं।

"परन्तु डाक्टर साहब! इससे भी आवश्यक बात यह है कि कुछ शाश्वत धर्म है जिसका विरोध और अवहेलना तो कोई किसी काल अथवा अवस्था में नहीं कर सकता। संसद के सबके सब सदस्य भी मिल कर नहीं कर सकते।

"वे शाश्वत धर्म क्या हैं?''

"वे हैं–घृतिःक्षमा दमोस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रह।
धीर्विधा सत्यमक्रोधौ दशकं धर्मलक्षणम्।।''

"तब तो समाजवाद वर्जित नहीं।'' डॉ. मुखर्जी का कहना था।

"समाजवाद इस विधान के पाँच मद्दों के विपरीत जाता है। समाजवाद अधीरता का सूचक है। यह दम धर्म का विरोध करता है। यह बुद्धिगम्य नहीं और विद्या अर्थात् ज्ञानयुक्त नहीं। सबसे बड़ी बात है इसका अस्तेय धर्म के विपरीत होना।

समाजवादियों में मार्क्सवादी तो बलपूर्वक क्रान्ति करना चाहते हैं। वे धृति धर्म का उल्लंघन करने वाले हैं। यह असंयमशील हैं। अपनी बात न मानने वाले को मृत्यु दण्ड देने की योजना करते हैं। अतः यह कम्युनिज्म दया–धर्म का उल्लंघन करता है। यह बुद्धिगम्य भी नहीं है। यह समाजवाद चला ही वहाँ है, जहाँ विचार करने अथवा विचार प्रसार पर प्रतिबन्ध है। यह ज्ञान का भी सूचक नहीं। यह कहता है कि सब प्राणी मन, बुद्धि और भाग्य में बराबर हैं। यह अनुभव के विपरीत है। सबसे अन्तिम बात इसमें है कि यह सबके परिश्रम का फल राज्य के अधीन कर देना चाहता है। जब कि वह इस परिश्रम में किसी प्रकार का योगदान नहीं करता। यह अस्तेय हो जाता है।

"समाजवाद अस्तेय धर्म का उल्लंघन करने से चोर है। पूँजीवादी भी, जिस सीमा तक अस्तेय धर्म का उल्लंघन करते हैं, चोर हैं।

"मैं चाहता हूँ कि राज्य में धर्मानुकूल नियमोपनियम बनाने की संसद को स्वतंत्रता हो। और व्यापार उद्योग क्षेत्र में वैश्य वर्ग स्वतंत्र परन्तु धर्म से बंधे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुए समाज में काम करें। इन तीनों का समन्वय धर्म से हो। वैसे वे स्वतंत्र हों।"

इस समय डॉ. मुखर्जी ने एकदम कह दिया, "यह चलेगा नहीं। इस प्रकार का दल आज के युग में नहीं चल सकता।"

"तो कैसा चल सकता है?"

"आज प्रजातंत्र का युग है। जनता पूर्णाधिकार सम्पन्न बनना चाहती है। वह अपने अधिकारों का भोग संसद के द्वारा करना चाहेगी। इस प्रकार संसद एक पूर्णाधिकार युक्त, प्रभुता सम्पन्न संस्था है। उस पर किसी का भी बंधन नहीं होगा।"

"परमात्मा का भी नहीं?"

उत्तर डॉ. अम्बेडकर ने दिया। उन्होंने कहा, "वह कहीं है नहीं। इस कारण उसका अधिकार भी नहीं। जनता भी जनार्दन है।"

डॉ. मुखर्जी का कहना था, "समाजवाद सर्वथा धर्मानुसार है। सब मनुष्य समान हैं। कुछ थोड़ा सा अन्तर बुद्धि के कारण है और उससे थोड़ा सा अन्तर आय में और सम्पत्ति में हो सकता है। परन्तु इतना अन्तर नहीं हो सकता कि एक ओर तो सात रुपये कमाने वाला मजदूर हो और दूसरी ओर लाख दो लाख रुपया महीना कमाने वाला व्यक्ति हो। यह धर्मानुसार ही है कि सबको एक स्तर पर कर दिया जाय। यदि कुछ अन्तर हो तो अधिक से अधिक एक और बीस का हो सकता है।"

इस पर सदानारायण ने बात बदल दी। उसने कहा, "आप स्वामी जी से मिलने के लिए कब तक जाने वाले हैं?"

"संविधान सभा का अधिवेशन होने वाला है। इसका सत्र एक मास तक चलेगा। उसके उपरान्त ही मैं जा सकूँगा।"

सदानारायण ने डॉ. अम्बेडकर की ओर देखकर कह दिया, "डाक्टर साहब! आप भी आइए। कदाचित् कुछ ज्ञान में वृद्धि हो सके।"

"पण्डित जी! मैं कानून का विद्वान हूँ। यदि स्वामी जी कानून के विषय में कुछ जानते हों तो मैं उनसे मिलने में लाभ समझूँगा। अन्यथा मेरे पास समय नहीं है।"

"देख लीजिए। मेरा इसमें व्यक्तिगत कोई आग्रह नहीं है। एक बात कह सकता हूँ कि कानून से ऊपर भी एक विधि विधान है। उसके विषय में तो आपको कुछ मिल ही सकेगा।"

इतना कह सदानारायण ने डॉ. मुखर्जी को कहा, "और कुछ सेवा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
बताइये। मैं कल दिल्ली से वापस जाना चाहता हूँ।''

''ठीक है यदि मुझे देवप्रयाग जाना हुआ तो आप को लिखूँगा। तब आप भी उस समय वहाँ चल सकें तो ठीक रहेगा।''

इस पर भेट समाप्त हुई। सदानारायण उठ कर चला गया।

: 11 :

डॉ. मुखर्जी के मन में सदानारायण के कथन पर प्रथम प्रतिक्रिया यह थी, ''यह तो अति भयानक जीव है।''

''क्या भयानकता नजर आई है आपको इसमें?''

''यह तो प्रजातन्त्र का भी विरोधी है।''

डॉ. अम्बेडकर का दृष्टिकोण था कि उसको लाभ प्रजातन्त्र से ही होने वाला है। प्रजातन्त्र में वह अछूतों के घड़े का नेता होगा। संविधान में उन्होंने कम से कम दस वर्ष के लिए अछूतों के साथ रियायतें और उनका पृथक् प्रतिनिध्य मान लिया है। अतः वह समझता था कि प्रजातन्त्र में उसने अपने लिए कम से कम दस वर्ष के लिए मन्त्री का स्थान सुरक्षित कर लिया है। इस पर भी वह मन में विचार करता था कि प्रजातन्त्र में पंडित जवाहरलाल जैसे 'कन्फ्यूज्ड ब्रेन' वाले लोग भी तो नेता बन सकते हैं। इससे उसकी हँसी निकल गई।

हँसते हुए उसने कहा, ''मुखर्जी साहब! यह प्रजातन्त्र की ही कृपा है कि पण्डित जवाहरलाल और माहत्मा गांधी की चलती है। अन्यथा ये दो–दो कौड़ी के भी आदमी नहीं हैं।''

''कुछ भी हो।'' डॉ. मुखर्जी का कहना था, ''इसके अतिरिक्त अन्य कोई मार्ग भी तो नहीं।''

''ठीक है। परन्तु विवशता और सत्य पर्यायवाचक भी तो नहीं हो सकते। जो काम विवश होकर किया जाय क्या वह सत्य ही होगा।''

डॉ. मुखर्जी भी बैरिस्टर थे और योग्य वकील भी। परन्तु इस युक्ति से तो वे भी वार्त्तालाप आगे चला नहीं सके। वे एक कोने में फँस गए से अनुभव करने लगे।''

डॉ. अम्बेडकर ने उठते हुए कहा, ''मैं आपसे हैदराबाद के विषय में विचार करने के लिए आया था। परन्तु अब तो समय नहीं है। मुझे आज छः बजे के शो में रीगल में जाना है। मेरी श्रीमती वहाँ जाने का हठ कर रही है।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कौन श्रीमती, नवीन अथवा कोई और।"

"आप मुझे बैल समझते हैं क्या?"

"तो दो–तीन विवाह करना किसी बैल का काम है।"

"और क्या एक बार रँडवा होने पर पुनः विवाह न करना बैल का काम है।" इस पर दोनों हँसने लगे।

डॉ. अम्बेडकर अभी उठा ही था कि टेलीफोन की घंटी खड़की। डॉ. मुखर्जी ने चौंगा उठाया और तुरन्त रख दिया। अम्बेडकर ने पूछा, "कौन हैं?"

"सरदार की तबियत खराब है, वहाँ चलना चाहिए।"

डॉ. अम्बेडकर ने अपने बंगले में टेलीफोन कर कह दिया कि मैं आज सिनेमा नहीं जा सकता। फिर किसी दिन चलेंगे। या तुम अकेली चली जाओ।"

दोनों सरदार के बंगले जा पहुँचे। सरदार लेटे हुए थे और डाक्टर समीप बैठा हुआ कार्डियोग्राम ले रहा था। जब डाक्टर अपना काम कर चुका तो वह मशीन ले कर बाहर जाते हुए कह गया, "इनको फिर दिल का दौरा पड़ा है। मेरी तो यह राय है कि इनको बहुत कष्ट नहीं देना चाहिए।"

दोनों ही चिकित्सक के साथ उठकर बाहर जाने लगे तो सरदार ने उँगली से संकेत कर उनको रोक लिया। बिना बोले उन्होंने उँगली से ही समीप रखी तिपाही पर एक लिफाफे की ओर संकेत कर दिया।

डॉ. मुखर्जी ने वह लिफाफा उठा लिया तो सरदार ने उनको संकेत से जाने के लिए कह दिया। ये दोनों बाहर आ गए। ड्राइंगरूम में कुछ और लोग बैठे हुए थे और वे इनके मुख पर प्रश्न भरी दृष्टि से देखने लगे। मुखर्जी ने उनका आशय समझ कह दिया, "डाक्टर कार्डियोग्राम ले कर उसको स्टडी करने के लिए गया है। इतना तो स्पष्ट ही है कि अवस्था ठीक नहीं।"

मुखर्जी और अम्बेडकर बाहर लॉन में चले गए और लिफाफे में से पत्र निकाल कर पढ़ने लगे। वह पत्र गृहमन्त्री के नाम प्रधानमन्त्री का था।

"मैं देख रहा हूँ कि देश के घरेलू विषयों पर मेरी सम्मति की केवल अवहेलना ही नहीं की जा रही वरंच विरोध भी हो रहा है। यों तो इस बात को मैं आरम्भ से ही देख रहा हूँ परन्तु हैदराबाद के विषय में तो यह सीमा से बढ़ गई है। मैं चाहता हूँ कि इस देश में सब समुदायों और सम्प्रदायों तथा राष्ट्रों के लोग समाज भाव से रह सकें। मेरी इस भावना का सबसे बड़ा विरोध गृह विभाग कर रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं चाहता हूँ कि निजाम को हैदराबाद का राज्य प्रमुख बनाया जाय। मैं चाहता हूँ कि निजाम की रियासत तोड़ी–फोड़ी न जाय। यह एक मुसलमानी रियासत के रूप में भारत का अंग बनी रहे।

"यह तो हैदराबाद के विषय में होना ही चाहिए। इसके अतिरिक्त उर्दू हरूफ को नेशनल स्क्रिप्ट[1] के रूप में स्वीकार किया जाय। सरकारी जुबान में फारसी के अलफाज का इस्तेमाल होना चाहिए।

"मैं इसको अपने जीवन का कार्य समझता हूँ। यदि मैं यह नहीं कर सकता, मैं अपने को राजनीति से पृथक कर लूँगा।

"मगर मैं समझता हूँ कि देश मेरे साथ है। यदि मन्त्रिमण्डल ने विरोध किया तो मैं प्रधानमन्त्री पद से त्यागपत्र दे कर पुनः निर्वाचित होकर अपने अनुकूल मन्त्रिमण्डल बनाने का यत्न करूँगा।

"मैं हैदराबाद के विषय में दृढ़ सकल्प हूँ। मैं भारत के गृह मन्त्रालय की नीति में इस दिशा में मोड़ चाहता हूँ।"

दोनों डाक्टरों ने चिट्ठी पढ़ी और एक–दूसरे का मुख देखने लगे। एक क्षण में ही दोनों की हँसी निकल गई। डॉ. मुखर्जी ने पत्र लिफाफे में डालते हुए अपने साथी डाक्टर को कहा, "यह महानुभाव अब धमकियाँ देने लगा है। मैं गृहमन्त्री के स्थान पर होता तो प्रधानमन्त्री की चुनौती स्वीकार कर लेता और उसके मुकाबले में खड़ा हो उसको परास्त कर बताता कि–'नेहरू इज नाट दि लास्ट वर्ड इन इंडियन पौलिटिक्स।'[2]

मुखर्जी के इस कथन से अम्बेडकर का मुख लम्बा हो गया। उसने कहा, "सरदार इस बात को जानता प्रतीत होता है कि नेहरू चुनाव में अजेय है यही कारण है कि इस चुनौती से सरदार का दिल बैठने लगा है। परन्तु मैं एक बात जानता हूँ कि पण्डित जवाहरलाल नेहरू प्रधानमन्त्री पद से त्यागपत्र नहीं देगा। उसको अपने पर भी विश्वास नहीं। परन्तु सरदार तो उससे भी गया–गुजरा निकला है। इस चुनौती के उपरान्त यह दोनों नेताओं के मान की माँग है कि दोनों त्यागपत्र दे दें और दोनों एक–दूसरे के मुकाबले में खड़े हो कर अपनी–अपनी योग्यता का परिचय दें।"

"मैं समझता हूँ पण्डित जी की ओर घूर कर देखते ही वे बिना निर्वाचन के और बिना विरोध की चिन्ता किये भारत सरकार में रह जावेंगे।"

---

1. राष्ट्रीय लिपि।
2. नेहरू भारत की राजनीति में अंतिम शब्द नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुखर्जी का कहना था, "मगर इसका उत्तर तो कड़ी भाषा में जाना चाहिए।

"कौन देगा? सरदार? कुछ नहीं होगा। सरदार और पण्डित में कभी झगड़ा नहीं हो सकता।"

"तो क्या होगा?"

"होगा यह कि हम सरदार के दृष्टिकोण का समर्थन करेंगे और पण्डितजी के दृष्टिकोण का समर्थन मौलाना करेंगे और एक समझौता हो जावेगा।"

"परन्तु हमें सरदार जी से क्या कहना चाहिए?"

"कुछ नहीं। केवल यह कि जो भी वे करना उचित समझेंगे हम उनका समर्थन करेंगे।"

"इस समय तो उनके दिल का दौरा समाप्त होना चाहिए। और फिर हम देखेंगे कि किस प्रकार निजाम का नहूसत भी निकाला जा सकता है।"

दोनों व्यक्ति सरदार के कमरे में गये और उनके समीप रखी तिपाई पर पत्र रखते हुए कहने लगे, "यह तो कुछ नहीं। आप ठीक हो जाइये, हम निपट लेंगे। इस विषय में आप जो कुछ भी करेंगे हम आपका समर्थन करेंगे।"

सरदार लेटे–लेटे मुस्कुरा दिये और बात समाप्त हो गई। डाक्टर एक इंजेक्शन देने आ गया था।

दोनों बाहर आ अपने–अपने बंगलों को चले गये। सरदार की योजना थी कि हैदराबाद रियासत के तीन भाग कर दिये जावें। एक भाग मद्रास से मिला दिया जाय दूसरा मध्यप्रदेश से और तीसरा बम्बई से। पडिण्त नेहरू इसको पसन्द नहीं करते थे। मन्त्रिमण्डल में सरदार ने यह विचार रखा था परन्तु इस पर बातचीत आगे नहीं बढ़ाई थी। अभी तो वहाँ सैनिक सरकार बनी हुई थी। और उसका कार्य समाप्त नहीं हुआ था, रजाकारों और पाकिस्तानी एजेन्टों से निपटा जा रहा था।

यह बात उसी दिन मन्त्रिमण्डल की बैठक में उपस्थित की गई थी। उस समय तो पण्डित नेहरू जी ने इस विषय में कुछ नहीं कहा। मौलाना साहब भी भौचक्के से मुख देखते रहे। उस बैठक के दो घंटे उपरान्त ही यह पत्र पण्डित जी ने लिखा था। इस पत्र के लिखाने में मौलाना का विशेष हाथ प्रतीत होता था।

कुछ इस तरह की बात हुई प्रतीत होती थी कि मौलाना से अपनी कोठी से टेलीफोन करवाया गया था और फोन करवाने वाले थे साब्री साहब।

साब्री ने जब गृहमन्त्री के हैदराबाद के विषय में विचार सुने तो उस ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कह दिया, "हुजूर! आपको इसके खिलाफ आवाज उठानी चाहिए थी।"

"मैं पण्डित जी के मुख पर देख रहा था कि वे क्या करते हैं। जब वे चुप रहे तो मैं खामोश रहा। इसका मतलब यह है कि इस विचार की हम जोर से मुखालफत करेंगे।"

"कैसे करेंगे। सरदार साहब तो यह समझेंगे कि उन्होंने बात कर दी थी और मुतफिक राय से वजारत ने मंजूर कर ली थी।"

"नहीं, यह मंजूर नहीं हुई, इस पर बहस होगी।"

"आप प्रधानमन्त्री से टेलीफोन पर बात कर लीजिये।"

मौलाना ने टेलीफोन पर प्रधानमन्त्री से बात की और जब उन्होंने भी यह बताया कि इसका मतलब यही है कि बात स्वीकार हो गई है तो मौलाना ने कहा कि यह तो ठीक नहीं। मैं तो इस तजबीज के खिलाफ था, मगर जब वजीरे आजम ने कुछ नहीं कहा तो मैं समझा कि इस पर फिर बहस होगी।"

"प्रधानमन्त्री का कहना था अगरचे मैं यह नहीं चाहता। मगर निजाम साहब भी तो कुछ ऐसे वाक्या हुए हैं कि उनमें कोई अक्ल की बात दिखाई देती ही नहीं।"

"कुछ भी हो। वे मुसलमान हैं। मुसलमानों के रहनुमा हैं। सब हिन्दुस्तान के मुसलमान उनकी तरफ देखते हैं। अगर इस वक्त उनको हटाया गया तो सब के दिल में सदमा पहुँचेगा। और इसका नतीजा खराब भी हो सकता है।"

"तो आप क्या चाहते हैं?"

"यह रियासत जाहिरा तौर पर बनी रहनी चाहिए। इसके राज प्रमुख कश्मीर की रियासत की तरह ही बने रहने चाहिए।"

"सरदार मानेगा नहीं।"

"तो आप जरा दबाव डालिये।"

"मैं क्या दबाव डाल सकता हूँ।"

"आप इस्तीफा की धमकी दे सकते हैं।"

"अगर वे इस पर भी न माने तो।"

"तो इस्तीफा दे कर नया चुनाव करा दीजिये।"

"यह संविधान सभा तो विघटित नहीं हो सकती। विधान के मुतल्लिक किसी प्रकार का विरोध नहीं है।"

"विधान वगैरा सब बाद की चीजें हैं। विधान की बिना ही गलत हो गई तो विधान का क्या होगा।"

"क्या बिना है विधान की?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हिन्दुस्तान में सब फिरकों, सब मिल्लतों के लोग आजादी से रह सकें।"

पण्डित जी इस स्लोगन के पीछे चल पड़े। यह सैकुलेरिज्म का पर्याय ही था। बस फिर क्या था। वे एक निजी पत्र सरदार साहब को लिखने के लिये बैठ गये।

यह पत्र सरदार जी को चार बजे के लगभग मिला और पाँच बजे उनको दिल का दौरा पड़ गया। डाक्टर आया और उसने इंजेक्शन लगा दिया। सरदार ने अपने पी.ए. को कह दिया, "डॉ. मुखर्जी और डॉ. अम्बेडकर को बुला लो। मैं यह पत्र उनके हाथ में देना चाहता हूँ।"

मुखर्जी और अम्बेडकर आये तो सरदार को उनके कहने पर कि वे सरदार का समर्थन करेंगे, सन्तोष हुआ।

इस पर भी सरदार की अवस्था सर्वथा सुधरी नहीं। डाक्टरों की राय से वे देहरादून स्वास्थ्य सुधारने के लिये चले गये।

: 12 :

इस घटना के कई मास बाद की बात है कि डॉ. मुखर्जी और डॉ. अम्बेडकर देवप्रयाग स्वामी गरीब दास के आश्रम में जा पहुँचे। देवप्रयाग से वे दो पण्डों के पथ प्रदर्शन पर आश्रम में पहुँचे थे। चढ़ाई से मुखर्जी हाँफने लगे थे। डॉ. अम्बेडकर को तो साधारण थकावट ही हुई थी। इस पर भी चढ़ाई चढ़ कर जहाँ मुखर्जी एक शिला पर बैठ साँस लेने लगे वहाँ अम्बेडकर कहने लगे, "न जाने इन साधु–सन्तों के मस्तिष्क में क्या खराबी है कि ये ऊँचाइयो पर चढ़ कर ही निवास–स्थान बनाना चाहते हैं?"

डॉ. मुखर्जी ने हाँफते हुए कहा, "कुछ खराबी जरूर है। मगर मैं समझता हूँ कि वह मेरे शरीर में है। यह बिना पूछगीछ किए मोटा होता जाता है।"

यह सुन डॉ. अम्बेडकर हँस पड़े। इस समय डाक्टर ने देखा कि एक खद्दरधारी, सिर से नंगा इनकी ओर आ रहा है।

"मालूम होता है हमारा आना किसी को मालूम हो गया है।"

इस पर पंडा कहने लगा, "ये महात्मा रत्नलाल हैं। स्वामी जी के छोटे लड़के और वानप्रस्थी हैं।"

रत्नलाल के पीछे–पीछे सदानारायण भी अपने कक्ष से निकल आया। उसे देखकर तो अम्बेडकर ने कह दिया, "हमारा यहाँ चुपचाप आना तो विफल गया है। मैं तो पण्डित सदानारायण की अनुपस्थिति में स्वामी जी से बात

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करना चाहता था।''

''इसका प्रबन्ध तो अब भी हो सकता है।''

इम समय तक रत्नलाल उनके समीप पहुँच कर नमस्कार करता हुआ बोला, ''आप लोगों का सामान कहाँ है?''

''नीचे मोटर में रखा है।''

''वह मैं आदमी को भेजकर मँगवा लेता हूँ। आपके ठहरने की सब व्यवस्था सुनिश्चित है।''

''ठहरने की?'' अम्बेडकर ने विस्मय से कहा, ''तब तो आप हमको कोई और समझ रहे हैं। हमारे यहाँ आने की तो किसी को भी सूचना नहीं है।''

''जी नहीं, आपके विषय में भूल नहीं हो सकती। आपको कौन नहीं जानता।''

इसी समय सदानारायण वहाँ पहुँच गया था। उसने कह दिया, ''डाक्टर साहब, क्या मार्ग में गाड़ी बिगड़ गई थी?''

''बिगड़ी तो थी। परन्तु.....''

''आप नियत समय से एक घंटा बिलम्ब से पहुँचे हैं। आप प्रातः चार बजे दिल्ली से चले थे। आपको ग्यारह बजे के आस–पास यहाँ पहुँच जाना चाहिए था और अब बारह बज चुके हैं।''

अम्बेडकर और मुखर्जी विस्मय कर रहे थे। इस समय डॉ. अम्बेडकर को सदानारायण का हैदराबाद जाना और वहाँ के समाचार ले दिल्ली में आना स्मरण हो आया। उसने कह दिया, ''तो पण्डित सदानारायण, क्या हम पर भी तुम्हारे खुफिया जासूस लगे हुए हैं?''

''जी नहीं। आप निजाम हैदराबाद की भाँति कोई षड्यन्त्र तो कर नहीं रहे जो आपकी गतिविधि जानने के लिए धन व्यय किया जाय।''

''देखिये, मुझे यहाँ आये एक सप्ताह से अधिक हो गया है। आपके यहाँ आने के समाचार के विषय में वे ही बतायेंगे जिनको समाचार मिला है।''

इस समय डॉ. मुखर्जी उठ कर चलने के लिए तैयार हो गए और सब लोग चल पड़े।

रतन उनको अतिथि गृह में ले गया। वहाँ दो व्यक्तियों के ठहरने के लिए स्थान बना था। कमरे में दो पलंग भी लगे थे।

रतन ने उनको कहा, ''आप स्नान करेंगे अथवा कर आये हैं।''

''नहीं, स्नान नहीं किया। मगर पहले हमारा सामान मँगवा दीजिये।''

''उसके लिए आदमी चला गया है।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस समय सदानारायण इनके स्नानादि तथा हजामत बनाने के लिए सामान ले आया। अम्बेडकर देखकर हँस पड़ा। वह बोला, "यदि सब प्रकार का सामान आप लोगों ने इकट्ठा कर रखा है तो फिर हमें सामान साथ लाने की आवश्यकता ही क्या रही? किसी राजा–रईस के महल में मेहमान की भाँति रह सकते हैं।"

"सिवाय आपके पहनने के कपड़ों के अन्य किसी वस्तु की आपको आवश्यकता नहीं रहेगी। यहाँ बम्बई और कलकत्ता के कुछ सेठ लोग आते रहते हैं और जो यहाँ के प्रबन्ध के विषय में जान गए हैं उनको अपने कपड़ों के अतिरिक्त अन्य किसी प्रकार के सामान की आवश्यकता नहीं रहती। अब धनी से धनी व्यक्ति भी यहाँ बिना नौकर के आता है।"

डॉ. मुखर्जी ने हजामत बनाने का सामान ले लिया और अतिथि गृह में लगे दर्पण के सामने तिपाई लगा खड़े–खड़े ही हजामत बनानी आरम्भ कर दी।

डॉ. अम्बेडकर ने पूछ लिया, "सदानारायण जी! इस सब प्रबन्ध में तो स्वामी जी को बहुत कष्ट होता होगा।"

"यह तो आप उनसे ही पूछियेगा। बात इस प्रकार हुई है कि कल मैं उनको बता रहा था कि आप दोनों साहबों को मैं यहाँ आने का निमन्त्रण दे आया हूँ।

"इस पर वे पूछने लगे, इससे लाभ क्या होगा?'

"मैंने बताया, इस समय भारत सरकार में केवल तीन व्यक्ति हैं जिनको कुछ ज्ञान कराने से कुछ लाभ हो सकता है। इस पर वे दो क्षण तक आँखें मूँद अन्तर्धान होकर कहने लगे, 'वे दोनों मन्त्री गण यहाँ आने की तैयारी में है। शीघ्र ही यहाँ आने वाले हैं।'

"इसके उपरान्त आज प्रातःकाल मैं अपने नित्य कर्म से उठा तो स्वामी जी के सेवक कल्याण ने मुझको कहा कि स्वामी जी बुलाते हैं। यह नारायण उनकी गुफा में ही सोता है।

"मैं उपस्थित हुआ तो वे कहने लगे, दोनों डॉ. दिल्ली से चल पड़े हैं और आशा है कि ग्यारह बजे तक यहाँ पहुँच जावेंगे।'

"मैंने पूछा, कब चले हैं?' स्वामी जी ने कहा, चार बजने में पाँच मिनट रहते चले हैं।

"इस पर मैंने अनुमान लगा लिया कि आप लोग सात घण्टे में पहुँच जायेंगे। इस पर अपने नित्य कर्म से अवकाश पा मैंने आपके ठहरने का प्रबन्ध कर दिया। ये धोती अँगोछा, हजामत बनाने का सामान तो यहाँ तैयार रहता है। आपको अन्य भी सब सम्भव सुविधा प्राप्य रहेगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस पर अतिथि जो अतिथि नहीं भी कहे जा सकते थे अपने नित्य कर्म में लग गये।

स्नान के उारान्त भोजन स्वामी जी के साथ बैठ कर ही किया गया। स्वामी गरीबदास थे, सदानारायण, रत्नलाल और दोनों डाक्टर थे। कल्याण और उसकी पत्नी लक्ष्मी भोजन खिला रही थी।

दाल–भाजी, चटनी–अचार और रोटी–चावल थे। यही सब कुछ स्वामी जी के लिए भी था। इस पर अम्बेडकर पूछने लगा, "महाराज। आप चटनी–अचार भी खाते हैं?"

"हाँ। क्यों, आप किस लिए पूछ रहे हैं?"

"आप तो संन्यासी हैं?"

"हाँ, परन्तु मैं संन्यास का अर्थ खाना–पीना, सोना, मेल–मुलाकात इत्यादि के त्याग को नहीं मानता।"

"तो किसको संन्यास समझते हैं?"

स्वामी जी ने कह दिया–

नैव किंचित्करोमीति युक्तो मन्येत तत्त्ववित्
पश्यञ्जिघ्रन्स्पृण्वस्पृरञ्जिजिघ्रन्नश्नन्गच्छन्स्वपञ्वसन्।
प्रलपन्विसृजन्गृह्विन्नुन्मिषन्मिमिषन्नपि
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेषु वर्तन्ते इति घारयन्।।"[1]

"अम्बेडकर बाबू! इनका अर्थ मुखर्जी बाबू को बता देना।"

इस पर डॉ. मुखर्जी हँस कर बोले, "मैं इसके अर्थ समझता हूँ। मैं भी तो संन्यासी हूँ और मछली, मुर्गा खाता हूँ।"

स्वामी गरीबदास हँसने लये। वे बोले, "यह तो मैं जानता हूँ। परन्तु यहाँ तो सीमा चटनी–अचार तक ही है।"

"तो आप चटनी अचार और मछली को एक ही श्रेणी के पदार्थ मानते हैं।"

"हाँ, जहाँ तक उनके भोजनतत्त्व का सम्बन्ध है, दोनों में अन्तर नहीं है।

---

1. तत्त्व को जानने वाला योगी देखता हुआ, सुनता हुआ, स्पर्श करता हुआ, सूँघता हुआ, भोजन करता हुआ, गमन करता हुआ, सोता हुआ, श्वास लेता हुआ, बोलता हुआ, त्यागता हुआ, ग्रहण करता हुआ, आंखों को खोलता हुआ, मीचता हुआ भी ऐसा माने कि मैं कुछ नहीं करता और ये सब इन्द्रियां अपने–अपने अर्थों में बर्त रही हैं।
भ. गी. 5–8, 9।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शेष प्रश्न हिंसा–अहिंसा का रह जाता है। हिंसा–अहिंसा आपेक्षक भावनायें हैं। मनुष्य हिंसा किये बिना रह नहीं सकता। इस कारण जितनी कम से कम हिंसा कर निर्वाह हो सके, उतना ही ठीक है। हिंसा का अर्थ किसी की हत्या नहीं। इसका अर्थ है किसी को क्लेश, कष्ट अथवा दुःख पहुँचाना। अतः जिससे ये कम से कम पहुँचाये जावे, वह अहिंसा ही है।

"इसीलिए वनस्पतियों का सेवन अहिंसा है और मछली का खाना हिंसा है। वनस्पतियों को अपने खाये जाने से कम कष्ट और कम दुःख अनुभव होता है। मछली तो मारी जाते समय चीख–पुकार करती है। अतएव मछली खाना टमाटर जाने से अधिक हिंसायुक्त कार्य है।"

"तब तो स्वामी जी, बकरा खाना कम हिंसायुक्त होगा और तीतर–बटेर खाना अधिक।"

"हाँ, एक बकरे के माँस से तो तीस–तीस आदमियों का पेट भर जाता है। और एक का पेट भरने के लिए कई बटेर मारने पड़ते हैं।"

अम्बेडकर मन में विचार कर रहा था कि सदानारायण की भाँति यह स्वामी भी युक्ति करने में नम्बर एक है। इस पर भी वह अभी और गहराई में जाना चाहता था। उसने पूछ लिया, "तो फिर आप चूजों को खाने के स्थान बकरे का माँस खाना पसन्द करेंगे।"

"हाँ, यदि मेरे खेत की सब सब्जियाँ विनष्ट हो जावें तो मैं बकरे का माँस खाना अधिक हितकर मानूँगा और बकरे से हाथी का।"

"ओह! तो आप हाथी का भी माँस खायेंगे।"

"क्या हानि है?"

"पेट में पीड़ा करेगा।"

"तो कम खाने से निर्वाह हो जावेगा।"

"परन्तु निर्वाह करना ही चाहिए क्या?" डॉ. मुखर्जी ने पूछा।

"हाँ, परन्तु तब ही, जब जीवन से कुछ लोक–कल्याण का कार्य किया जा रहा हो। नहीं तो साग–भाजी से निर्वाह भी हिंसा और पाप हो जायेगा।"

इस पर वार्त्तालाप का अन्त हो गया, ऐसा अनुभव हुआ। सब चुपचाप खाने लगे। परन्तु डॉ. मुखर्जी को सन्तोष नहीं हुआ। वे पूछने लगे, "परन्तु लोक–कल्याण की मीमांसा में तो मतभेद है।"

"नहीं, मुखर्जी महाशय, लोक–कल्याण की मीमांसा में मतभेद नहीं है। मतभेद ज्ञान में है। एक सरल सा लक्षण लोक–कल्याण का शास्त्र में लिखा है। लोक–कल्याण का कार्य उसको कहते हैं जिससे सबको साझा हितकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फल मिले और जिसमें अपना भाग भी सबके समान हो।

"लोक–कल्याण के लिए एक पारिभाषिक शब्द है यज्ञ। यज्ञ का उदाहरण हवन है। हवन करने वाला सबके साझे हित के लिये करता है। इस साझे हित में हवन करने वाले का अपना भी उतना ही भाग है जितना उस हवन से किसी अन्य का होता है।"

"तब तो प्रजातन्त्रात्मक पद्धति यज्ञ की सूचक हो गई।"

"प्रजातन्त्रात्मक पद्धति में सबके हित की बात तो आती नहीं। सब की सम्पत्ति की बात तो है। यदि बहुसंख्यक की मति में यह आ जाय कि देश की सब गउओं को मरवा डाला जाय, जिससे उनके चरने के लिए छोड़ी हुई भूमि पर अन्नादि बोया जा सके, जो मनुष्य के भोजन का एक अंग है, तो यह प्रजातन्त्र तो होगा परन्तु यह लोक–कल्याण का सूचक नहीं होगा।"

"तो सबके लिए अन्न, उत्पन्न करना लोक–कल्याण नहीं?"

"यह लोक–कल्याण तो है, परन्तु सब गउओं को मरवा देना तो लोक–कल्याण नहीं हो सकता। अन्न से दूध और गाय से होने वाले अन्य पदार्थ अधिक कल्याणकारक हैं।"

"दूध तो हम विदेश से पाउडर के रूप में भी मँगवा सकते हैं।"

"तब ठीक है। परन्तु वह अनायास ही मिल सकेगा क्या? उसके लिए मूल्य नहीं देना पड़ेगा क्या?"

"देना तो पड़ेगा। इधर हम गाय की खाल और उससे बना सामान विदेश में बेचकर रुपया अर्जन करेंगे।"

"लेखा–जोखा करके देख लो। कहीं ऐसा न हो कि कोयले के लोभ में चन्दन का बन ही फूँक दो।"

भोजन समाप्त हो गया, परन्तु बात समाप्त नहीं हुई। यह डॉ. मुखर्जी ने कर दी। उसने कहा, "पण्डित सदानारायण ने बताया है कि आप को आज चार बजे प्रातःकाल ही हमारे दिल्ली से चलने का ज्ञान हो गया था। यह कैसे हुआ था?"

"यह तो सुगम है। कल सदानारायण ने आपके विषय में बात की थी तो मैंने अपना टेलीविजन सैट आपके घर पर फोकस कर दिया और आप अम्बेडकर बाबू से बातें करते दिखाई दिये। आप विचार कर रहे थे कि यहाँ आने से कुछ लाभ भी होगा अथवा नहीं। आपका विचार था कि कुछ लाभ नहीं होगा। अम्बेडकर बाबू बच्चे की भाँति एक बूढ़े जंतु को देखने की उत्सुकता रखते थे। मेरे जितने बूढ़े मानवों में बिरले ही हैं न?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"इस कारण आप यहाँ आना व्यर्थ मानते हुए भी अम्बेडकर बाबू का साथ देने के लिए आ गए हैं। आपने यह निश्चय किया था कि यदि किसी प्रकार की विघ्न–बाधा न हुई तो आप बहुत प्रातः आज दिल्ली से चलेंगे।"

"जब मैं शौचादि से निवृत्ति हो अपने योगध्यान पर बैठा तो मेरा ध्यान आपकी ओर चला गया। मैंने देखा कि आप दिल्ली से चल रहे हैं। आपका सामान मोटर के लगेज कैरियर में रखा जा रहा था और आप दोनों उस प्रक्रिया को देख रहे थे।

"मैंने आपको कहते भी सुना था कि अब चार बज रहे हैं। हमको देवप्रयाग सात घंटे में पहुँच जाना चाहिए।

"मैंने उसी समय सदानारायण को आपके आने का समाचार देकर कहा था कि आपके आराम से ठहरने का प्रबन्ध कर दे।"

"और यह टेलीविजन सैट कैसा है कि बिना ब्रॉडकास्ट के भी देखता है और सुनता है।" अम्बेडकर ने विस्मय में पूछ लिया।

"ब्रॉडकास्टिंग स्टेशन तो एक प्रकार का ऐम्प्लीफायर ही होता है। यह स्वयं न तो शब्द और न ही प्रकाश उत्पन्न करता है। यह प्रकाश और शब्द मनुष्य करता है। विशेषता मेरे रिसीविंग सैट में यह है कि यह इतना सुग्राही है कि आपकी क्षीण आवाज और वहाँ के क्षीण प्रकाश को भी सुन और देख सका था।"

"वह सैट कहाँ है।"

स्वामी जी ने अपने हृदय–स्थल पर हाथ रख कर बताया, "यहाँ है।"

: 13 :

वास्तविक भेंट तो अगले दिन प्रातःकाल के अल्पाहार के उपरान्त हुई। अम्बेडकर ने पहले दिन सायंकाल अल्पाहार के समय कहा था, "महाराज! पण्डित सदानारायण कहते थे कि आप मुझको पूर्वग्रहों से ग्रसित मानते हैं। जानना चाहता हूँ कि यह भ्रम आपको किस प्रकार हुआ।"

"मैंने कल प्रातःकाल के अल्पाहार के उपरान्त एक घंटा आपसे बातचीत के लिये निश्चित किया है। इस विषय पर भी कल ही बात करेंगे। उस समय हम तीनों ही होंगे और संकोचरहित होकर बातचीत हो सकेगी।"

इस प्रकार इस दिन अल्पाहार समाप्त होते ही स्वामी जी दोनों डाक्टरों को अपनी गुफा में ले गये और उनको अपने सामने चटाई पर बैठा कर बोले,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"यद्यपि आप दोनों यहाँ मनोरंजन के लिए आये हैं परन्तु उस मनोरंजन के साथ मैं आपको एक मन की बात बताना चाहता हूँ।

"आप दोनों का जीवन काल बहुत कम रह गया है। अतः भविष्य में देश की आसुरी शक्तियों से स्वयं को पृथक् कर दैवी शक्तियों से सम्बन्ध बना लीजिये। इसमें ही आप कल्याण की आशा कर सकते हैं।"

"आसुरी शक्तियाँ क्या हैं और कहाँ हैं?" अम्बेडकर का प्रश्न था।

"जो मनुष्य आत्मा को न देख केवल शरीर को ही देखता है और अपने सब आयोजन उसके सुख के लिए ही बनाता है, वह असुर है। जो ब्रह्माण्ड के इस छोटे से कण पृथ्वी पर एक अति सूक्ष्म रूप और विस्तार में रहता हुआ समझता है कि मैं सब कुछ जानता हूँ और जो उसकी तरह नहीं समझते वे महामूर्ख हैं, वे असुर हैं।

"आत्मसम्भाविता स्तब्धा धनमानमदान्विता।
यजन्तेनायज्ञैस्तैदम्भनाविधिपूर्वकम्।।[1]

"देखो बाबू साहिबान। योरोप में एक समाजवाद के नाम से बाद को जन्म दिया गया है। वह वास्तव में आसुरवाद है। इन समाजवादियों के एक गुरु थे। वे अपने विचार के अनुयायियों को कह गये हैं कि वर्तमान व्यवस्था तोड़–फोड़ दो और तब उस पर नई सृष्टि का सृजन करो। वह गुरु स्वयं को सर्वश्रेष्ठ मानता रहा है और यह कारण है कि लाखों–करोड़ों वर्षों के अनुभव को जला कर फूँक देना चाहता है। वह असुर था। उसके मत को मानने वालों से सम्पर्क रखने वाले भी असुर बन गए हैं।"

"परन्तु बाबा जी।" डॉ. मुखर्जी ने कह दिया, "वह तो कम्युनिस्ट था। हम भारत में सोशलिज्म लाना चाहते हैं और हमारे विचार के लोग क्रान्ति के पक्ष में नहीं हैं।

"क्रान्ति और विशेष रूप में खूनी क्रान्ति तो राज्य अधिकारी नहीं करते। इसको तो वे करते हैं जो सत्ताधारी नहीं होते। कम्युनिस्टों का गुरु मार्क्स राज्याधिकारी नहीं था। इसी कारण वह सूनी क्रान्ति के लिए कहता था। परन्तु तुम लोग तो सत्ताधीश हो। तुमको खूनी क्रान्ति की आवश्यकता नहीं।

---

1. जो अपने आपको ही श्रेष्ठ मानने वाले हैं, जो घमण्डी, धन और मान के मद से युक्त हैं, शास्त्र के विपरीत नाममात्र का यज्ञ करते हैं, वे पाखण्डी और आसुरी सम्पदा वाले हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम राज्य बल के प्रयोग से वही कुछ कर सकोगे, जो मार्क्स खूनी क्रान्ति से करना चाहता था। अपने को सर्वगुण सम्पन्न तो तुम भी मानते हो। देखो, तुम लोग जमींदारियाँ जप्त करने की बात कर रहे हो। राज्य के बल पर ऐसा करोगे, यह अधर्म होगा।

"अधर्म?" डॉ. मुखर्जी ने विस्मय प्रकट करते हुए कहा, "आप अधर्मी को अधर्म से प्राप्त किए पद से पदच्युत करने को अधर्म कहते हैं?"

"किस न्यायालय ने उनको अधर्मी सिद्ध किया है?"

"पार्लियामैंट ने।"

"पार्लियामैंट ने क्या निश्चय किया है?"

"यह निश्चय किया है कि सब बड़ी–बड़ी जमींदारियाँ काश्तकारों में बाँट दी जावेंगी।"

"वे तो पहले ही बँटी हुई हैं। कोई जमींदार सारी की सारी भूमि को स्वयं जोतता–बोता नहीं। काश्तकार ही जोतते–बोते थे। पार्लियामैंट ने यह नहीं किया। कुछ और किया है।"

अम्बेडकर स्वामी जी का भावार्थ समझ रहा था। उसने कह दिया, "जी। आप ठीक कहते हैं। हमने भूमि का स्वामित्व बदला है।"

"अब स्वामी कौन हो गया है?"

"अब स्वामी समाज है।"

"किस धर्मशास्त्र या न्यायशास्त्र में यह लिखा है?"

"लिखा तो नहीं। परन्तु प्राकृतिक पदार्थों का स्वामी मानव समाज है।"

"डाक्टर साहब, इसमें प्रमाण और युक्ति क्या है? और वास्तव में, आपने यह भी नहीं किया। या तो आप मुझको भ्रम में रख रहे हैं या स्वयं भी उस संसद के निर्णय को समझे नहीं।

"देखिये, मैं बताता हूँ। संसद में इस बात को कि जमींदारियाँ काश्तकारों में बाँटी जाएँ, प्रस्तुत करते समय इसके प्रवक्ता ने एक बात कही थी और वह यह कि भूमि का मालिक समाज है जिसकी प्रतिनिधि सरकार है। अर्थात् भूमि की मालिक सरकार है। जो प्रजातन्त्रात्मक राज्य पद्धति में पूर्ण समाज का प्रतिनिधि कभी भी नहीं होती। इससे क्या यह सिद्ध नही होता कि आपने जमींदारियाँ जमींदारों से छीन कर सरकारी अधिकार में कर ली हैं। और अभी आपने यह निश्चय किया है कि जो लोग वहाँ काश्त करते हैं वही काश्त करते जावेंगे। यह गलत है क्या?"

इस पर डॉ. मुखर्जी ने कह दिया, "भूमि की स्वामी सरकार न हो तो कौन हो?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जो उसका लगान सरकार को देता है।"

"कोई सरकार को लगान क्यों दे?"

"इस लिए कि सरकार उसकी धर्मयुक्त रक्षा के लिए नियुक्त है। यह वह अपनी सरकार को वेतन के रूप में देता है।"

"अब यह विचार गलत सिद्ध हो चुका है।"

"किस न्यायालय में?"

"पार्लियामैंट के न्यायालय में।"

"परन्तु पार्लियामैंट न्यायकर्त्ता कैसे हो गई? वह तो स्वयं इस विवाद में एक पक्ष है। क्या मुद्दई और मुद्दालय में से कोई भी न्यायकर्त्ता हो सकता है?"

"संसद जनता की प्रतिनिधि होने से यह सब कुछ स्वयं हो सकती है।"

"परन्तु जनता का बहुसंख्या में किसी मत को प्रकट करना क्या सदा न्याय का सूचक ही होता है?

मुखर्जी विचार कर रहा था कि इसका क्या उत्तर है। वह इतना तो समझता था कि संसद में कांग्रेस का बहुमत है और उस बहुमत से कांग्रेस मनमानी कर रही है। जो उससे सहमत नहीं वे चुप रहने पर विवश हैं। परन्तु उससे क्या यह सिद्ध हो गया है कि अल्पमत गलत है?

अभी–अभी कश्मीर में युद्ध–विराम हुआ था। यह युद्ध–विराम पण्डित नेहरू ने जिद करवा कर किया था और मन्त्रिमण्डल के प्रायः सभी सदस्य इस कारण चुप थे कि जनता पण्डित जी के कथन पर फूल चढ़ायेगी। यह सत्य और झूठ, न्याय और अन्याय, उचित और अनुचित में निर्णय तो है नहीं।

इस प्रकार विचार करता हुआ वह चुप था। डॉ. अम्बेडकर में न्याय बुद्धि अधिक थी। वह यह समझता था कि संविधान में उन्होंने न्यायाधीशों को संसद के अधीन नहीं रखा था। क्या यह इसलिए नहीं कि संसद सर्वोच्च संस्था नहीं। इसके कामों को देखने के लिए कोई अन्य नियुक्त है।

वह विचार करता था कि संविधान सभा ने न्यायाधीशों को संसद द्वारा बनाये कानूनों के अनुसार निर्णय देने का आदेश दिया है। परन्तु क्या कुछ ऐसी आधारभूत बातें हैं, जिन्हें संसद भी रद्द नहीं कर सकती। यदि है तो उन बातों से संसद को न्यायाधीश कैसे रोक सकता। डॉ. अम्बेडकर भी स्वामी जी की बात में युक्ति को देख रहा था। परन्तु वह यह बात समझता था कि जमींदारों से अधिकार छीन कर किसी प्रकार गलत बात नहीं की गई।

स्वामी जी दोनों को गम्भीर विचार में लीन देख स्वयं ही कहने लगे,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"देखिए, हम समझते हैं कि कुछ आधारभूत धर्म हैं, उनके विरोध में कानून नहीं बनाय जाने चाहिए। आप किसी के अधिकार में से कोई भी वस्तु छीन नहीं सकते। जब तक किसी स्वतन्त्र न्यायालय में यह सिद्ध नहीं कर देते कि वह वस्तु उसके पास अधर्म युक्त उपायों से पहुँची है। बिना यह सिद्ध किए किसी की वस्तु छीन लेना तो चोरी हो जाएगी।"

"इतनी बड़ी सम्पत्ति जिससे लाखों रुपये वर्ष की आय हो भला न्याय संगत कैसे हो सकती है?"

"यह तो न्यायाधीश निर्णय करेगा कि सम्पत्तिधारी का सम्पत्ति रखने का किसी प्रकार का हक है अथवा नहीं? यह निश्चय वे नहीं कर सकते जिन का स्वयं यह निश्चय करने से लाभ होने वाला हो।"

"यह सब बातें पुराने जमाने की हो चुकी हैं।" डॉ. मुखर्जी ने कह दिया।

स्वामी जी ने मुस्कुराते हुए डॉ. अम्बेडकर से पूछ लिया, "क्या आप भी यही समझते हैं?"

"सिद्धान्त रूप में मैं यह समझता हूँ कि दुनिया की परिस्थिति वह नहीं रही जब आप वाले धर्म की व्यवस्था दी गई थी। इस मशीन युग में सत्य–झूठ, न्याय–अन्याय उचित–अनुचित सब के लक्षण वे नहीं रहे, जो आज से चार–पाँच सहस्र वर्ष पूर्व थे।"

डॉ. अम्बेडकर के कथन से उत्साहित हो डॉ. मुखर्जी ने भी कह दिया, "हाँ स्वामी जी! सत्य बात तो यही है। अब राम–राज्य नहीं रहा, जब मिथ्या लांछन से राम जैसा व्यक्ति अपनी पत्नी को घर से निकाल दे। अब तो ड्यूक ऑफ विंडसर का काल है। जब पत्नी के प्रेम के लिये राज्य को लात मारी जा सकती है।"

स्वामी जी ने कह दिया, "पत्नी अथवा दूसरे की पत्नी के लिये।"

"कुछ भी हो। अब वह राज्य को लात मारने वाले की स्थायी पत्नी है।"

"प्रायः सब पतित स्त्रियाँ अन्त काल में किसी के पास रहती ही हैं। अच्छा एक बात और कहता हूँ। मैं यह देख रहा हूँ कि जिस सरकार की समाजवादी नीतियों का आप समर्थन कर रहे हैं, वह समाजवादी सरकार आप छोड़ेंगे और उसकी मूर्खता अथवा अन्याय के विरुद्ध आप नवीन राजनीतिक दल बनायेंगे और वह दल आपके अन्तिम आश्रय होंगे।"

"इस पर भी मैं हिन्दू हूँ। मैं प्रगतिशील हिन्दू हूँ। मैं प्रजातन्त्रात्मक पद्धति में विश्वास रखता हूँ।" डॉ. मुखर्जी का कहना था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वामी जी ने मुस्कुराते हुए कहा, "और आप सहयोग दे रहे हैं एक हिन्दू विरोधी संस्थाओं को, एक पूर्वग्रहों से ग्रसित नेता को और कम्युनिस्ट तानाशाही के प्रशंसक को।

"इस पर भी मेरी शुभकामना आप लोगों के साथ है।"

पूर्वग्रहों की बात सुन डॉ. अम्बेडकर को पिछली सायंकाल को अपना प्रश्न स्मरण हो आया। वैसे तो स्वामी जी ने शुभकामना प्रकट कर यह संकेत दे दिया था कि उनका समय समाप्त हो गया है और उनको अब जाना चाहिए। परन्तु अम्बेडकर पूछने लगे, "परन्तु मेरा पिछले दिन का प्रश्न तो रह ही गया है।"

"हाँ, वैसे तो इस समय का पूर्ण वार्त्तालाप सदानारायण के कथन की पुष्टि कर रहा है। परन्तु यदि आप और स्पष्ट भाषा में जानना चाहते हैं तो सुनिये। आप अछूतों का एक दल निर्माण कर रहे हैं। भला किस लिये? क्या यह भी कोई राजनीतिक विचारधारा है जिस पर एक राजनीतिक दल निर्माण किया जा रहा है।"

"राजनीतिक विचारधारा तो नहीं। अटूट राजनीतिक विचार से पददलित लोग हैं जिनको अपने अधिकार पाने चाहिए।"

"वे अधिकार तो आपने वयस्क मतदान से उनको दे दिये हैं। साथ ही आपने यह निश्चय किया है कि राज्य की ओर से प्रत्येक नागरिक समान अधिकार रखेगा और नागरिक–नागरिक में मजहब, नसल, जाति, यौन अथवा जन्मस्थान के आधार पर भेदभाव नहीं किया जावेगा।"

अम्बेडकर तो अपने को विधान के पण्डित मानते थे। इस कारण इतने से निरुत्तर न होकर कहने लगे, "परन्तु हमने इसी विधान में यह भी निश्चय किया है कि पिछड़ी हुई जातियों के लिये सरकार विशेष प्रबन्ध कर सकती है, जिससे उन जातियों की ओर से अपने लिये विशेष प्रबन्ध कराने के लिये आन्दोलन करना आवश्यक है। इस कारण दल बनाना आवश्यक हो गया है।"

"अर्थात् बिना दल बनाये सरकार उचित प्रबन्ध नहीं करेगी।"

"महाराज, यह प्रजातन्त्र का नियम है कि सबको अपने अधिकारों के लिये सतर्क रहना चाहिए।"

"अर्थात् सब प्रकार के लोगों को अपने हितों की रक्षा के लिये राजनीतिक दल बनाने चाहिए? इस प्रकार तो संसद भानुमति का पिटारा हो जायेगी।"

"अछूतों की विशेष स्थिति है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"और इस प्रकार दल बनाकर आप उनकी विशेष स्थिति को एक स्थायी स्थिति बनाना चाहते हैं?

"देखिये बाबू अम्बेडकर, अपने मन में विचार करिये तो आपको भी विदित हो जायेगा कि आप यह सब प्रयास अपनी नेतागिरी बनाये रखने के लिये कर रहे हैं।

"यही पूर्वग्रह हैं आपके। अंग्रेजों ने आपके मन में यह बात बैठा रखी है कि हिन्दुस्तान का मानव इतना नीच है कि वे योग्यता की प्रतिष्ठा न कर आपके जन्म के कारण आपको छोटा समझेगा।

"मैं आपको बताता हूँ कि होने वाला यह है कि आप कांग्रेस में नहीं लिये जायेंगे। यह आपकी जन्म–जाति के कारण नहीं, वरंच आपकी स्वतंत्र मनोवृत्ति के कारण होगा। आपको कांग्रेस में नहीं लिया जायेगा और आप नये निर्वाचनों के उपरान्त मन्त्रिमण्डल में नहीं होंगे।"

यह भविष्यवाणी डाक्टर को सुखद अनुभव नहीं हुई। वह चुपकर गया।

डॉ. मुखर्जी उठ खड़े हुए। वह मन में समझ रहे थे कि यह वृद्ध सज्जन अपनी अज्ञानता को ज्ञान मान रहा है। परन्तु उनकी वृद्धावस्था और साधु होने के कारण चुप थे।

दोनों डाक्टर उठ खड़े हुए। प्रणाम कर चलने लगे तो स्वामी गरीबदास ने कह दिया, "गाड़ी आपके पास अपनी है। आप मध्याह्न का भोजन कर जावेंगे तो भी सायंकाल तक ठिकाने पर पहुँच जावेंगे।"

"आपका धन्यवाद है। परन्तु हमको चार बजे एक काम है। उससे पहले हमको पहुँच जाना चाहिए। साथ ही मार्ग में मोटर के बिगड़ जाने का भय है।"

"ठीक है। रत्नलाल आपको वहाँ पहुँचाने का प्रबन्ध कर देगा।"

: 14 :

जब ये लोग आश्रम से बाहर निकल रहे थे तो अम्बेडकर ने साथ चलते हुए महात्मा रत्नलाल से पूछ लिया, "आप कितना पढ़े हुए हैं।"

"कुछ नहीं। मैंने कभी कोई परीक्षा पास नहीं की।"

"तो स्वामी जी को दिन के समाचार कौन बताता रहता है?"

"वह तो मैं ही बता दिया करता हूँ।"

"तब ठीक है। तुम्हारे जैसे अनपढ़ आदमी के ही विचार हम इन स्वामी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जी के मुख से सुनकर आये हैं।''

''परन्तु मैं उनको विचार नहीं बताया करता। मैं तो केवल समाचार बताया करता हूँ। उदाहरण के रूप में मैंने बताया था कि प्रथम जनवरी को युद्धविराम की एकपक्षीय घोषणा भारत ने कर दी है और पाकिस्तान ने भी यह युद्ध-विराम स्वीकार कर लिया है। अब संयुक्त राष्ट्र संघ दोनों में सन्धि कराने का यत्न कर रहा है।

''मेरे इस समाचार बताने पर स्वामी जी ने कहा था कि संयुक्त राष्ट्रसंघ सन्धि नहीं कर सकेगा। यदि वह कुछ करेगा तो भारत के विरुद्ध निर्णय देगा। भारत वह मान नहीं सकेगा। परिणाम यह होगा कि राष्ट्र संघ भारत का विरोधी हो जावेगा।''

''तो फिर क्या होगा? इसमें देवप्रयाग के दिव्य पुरुष की दिव्यवाणी क्या है?''

''यही कि पाकिस्तान एक छुरों का हार भारत के गले में पड़ा रहेगा।''

''कब तक?''

''जब तक भारत में यह सामर्थ्य नहीं बन जाती कि वह संयुक्त राष्ट्र संघ को अंगूठा दिखा सके।''

ये लोग मन्दाकिनी का पुल पार कर मोटर के पास पहुँच गये थे। अतिथियों का सामान गाड़ी में रखा गया और रत्नलाल से नमस्कार कर वे चल पड़े।

गाड़ी में चलते हुए डॉ. मुखर्जी ने कहा, ''आपने इस महात्मा को अनपढ़ कह दिया है। यह एक बहुत ही योग्य और जानकारी रखने वाला लेखक है। एक समय इसने बंगाल सरकार की नाक में दम कर रखा था।''

''ओह! यह कितना पढ़ा हुआ है?''

''वह तो उसने बताया ही था कि उसने कोई परीक्षा पास नहीं की थी। यह घर पर ही पढ़ा है। पन्द्रह वर्ष तक यह कलकत्ता के एक दैनिक पत्र 'वायस आफ इंडिया' का सम्पादक रहा था और इस समाचार पत्र के आश्रय ही बंगाल में हिन्दू महासभा जीवित थी। कलकत्ता के डायरेक्ट ऐक्शन के समय इस समाचार पत्र की इमारत फूँक दी गई थी और इसके सब सम्बन्धी उसमें जल मरे थे।''

डाक्टर भौचक्का हो मुख देखता रह गया। डॉ. मुखर्जी ने और बताया, ''इसका भाषा पर बहुत अधिकार था। साथ ही युक्ति और प्रमाण देने में इसके मुकाबिले का कोई आदमी नहीं था।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"परन्तु आपने मुझे पहले नहीं बताया।"

"मैं समझता था कि आप मुझसे अधिक जानते हैं। मेरा परिचय तो केवल स्वामी जी से ही है।"

"ये स्वामी जी तो समाजवाद के घोर विरोधी प्रतीत होते हैं।"

"इस विषय पर मेरा इनसे आज ही वार्त्तालाप हुआ है। बात इनकी ठीक ही है। परन्तु हमने अभी संन्यास नहीं लिया। हमको जनता का नेता बन जनता का हित करना है। हमें शीघ्रातिशीघ्र जनता को सन्तुष्ट कर अपनी लोकसभा में सदस्यता सुरक्षित करनी है।"

"हाँ, मैं भी यही विचार करता हूँ। अंग्रेजी सरकार ने छूत–अछूत की समस्या उत्पन्न कर दी है। उसने अछूतों के मन में राज्यसत्ता तथा राजनीतिक अधिकारों की लालसा उत्पन्न कर दी है। हम उस लालसा का विरोध करें तो अछूत मुझको अपना नेता नहीं मानेंगे। इस कारण मुझको उन्हें अपने हित में प्रकट करना ही है।"

डॉ. मुखर्जी समझ रहा था कि यह तो हिन्दू समाज में फूट डालने वाली बात होगी, परन्तु वह स्वयं भी समाजवाद से संशय अनुभव करने लगा था। इसपर भी वह भी वही कुछ विचार कर रहा था जो उसका साथी डाक्टर प्रकट कर रहा था। उमे भी आगामी निर्वाचनों में सफल होकर संसद में आना था।

इसपर अम्बेडकर ने कह दिया, "यदि कांग्रेस मुझे अपने टिकट पर निर्वाचन लड़ने की स्वीकृति दे दे तब तो अछूतों के लिए विशेष झगड़ा करने की आवश्यकता नहीं रहेंगी।"

"इसके लिए आपको सरदार का साथ देना चाहिए था। आप पण्डित जवाहरलाल को सहयोग देने के लिए दौड़ पड़े। सरदार अछूतों के लिए विशेषाधिकार के पक्ष में नहीं थे। आपने तो जवाहरलालजी से सहयोग किया और सरदार को विफल बना दिया। अन्य विषयों में आप जवाहरलाल का विरोध और सरदार को सहयोग दे रहे हैं। इससे न घर के रहे न घाट के, वाली बात बन जावेगी।"

"मगर एक बात लगभग निश्चय है कि सरदार चिरकाल तक जीवित नहीं रह सकेंगे। उनकी बीमारी दिन–प्रतिदिन बढ़ रही है। दूसरी ओर जवाहरलाल जी तो हृष्टपुष्ट भागते–फिरते हैं।"

"यह मरने की बात तो स्वामीजी ने हम दोनों के विषय में भी कह दी है।"

"मुझको उनकी सब बातों पर विश्वास नहीं है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह तो अच्छी बात है। परन्तु वे हमारे यहाँ आने का समाचार कैसे पा गये थे।"

"बात विचित्र तो है परन्तु सदानारायण कहता था कि वे हम लोगों की दिल्ली में बहुत–सी बातों को जानते हैं। इससे मुझको विश्वास हो रहा है कि उन्होंने हम लोगों पर खुफिया छोड़े हुए हैं। उन्हीं में से किसी ने उनको सूचना दे दी होगी कि हम आ रहे हैं।"

"और वह व्यक्ति प्रातः हमारे वहाँ से चलने के समय हमारे पास खड़ा हमको देख रहा था क्या?"

"हो सकता है।" अम्बेडकर साहब का कहना था, "मुझको तो इस बात का भी सन्देह हो रहा है कि दिल्ली में कोई ट्रांसमिटर सैट सदानारायण के आदमी के पास है और वह यहाँ पर स्वामीजी इत्यादि को सूचनाएँ देता रहता है।"

इसपर मुखर्जी गम्भीर हो गये। फिर कुछ विचार कर बोले, "यदि ऐसा है तो यह जुर्म है और सदानन्द भारी मुजरिम है। परन्तु मैं तो योग में सब प्रकार की चमत्कारिक शक्ति देखता हूँ।"

अम्बेडकर बाबू हँस पड़े। हँसते हुए बोले, "तो आपको अपने और मेरे शीघ्र ही मरने पर विश्वास हो गया है।"

"मैं मरने से डरता नहीं। परन्तु यह सब कुछ विचित्र अनुभव होता है। एक बार मेरे साथ यह घटना हो चुकी है कि मैं मर गया समझा गया था। तब मैं कलकत्ता विश्वविद्यालय का वाइस चांसलर था और मेरे मर जाने का समाचार नगर में विख्यात हो गया। सहस्रों लोग तथा विश्वविद्यालय के प्रोफेसर अथवा विद्यार्थी मेरे मकान के नीचे एकत्रित हो गये थे।

"टेलीफोन पर लोगों के शोक सन्देश आने लगे और मैं बच गया। लोग प्रसन्नता में ईश्वर का धन्यवाद करते हुए लौट गये।"

"तो आप मरे नहीं थे।"

"क्या जाने क्या हुआ था। मैं उस अचेतावस्था का ध्यान करता हूँ तो कुछ विचित्र और वर्णनातीत प्रतीत होता है। मैं शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकता।"

अम्बेडकर फिर हँसा और बोला, "यदि विश्वास हो कि मैं पुनः जीवित हो उठूँगा तो मैं भी वही अनुभव करना चाहता हूँ जो आप कहते हैं और जो वर्णनातीत अद्‌भुत है।"

"यह गारण्टी कौन दे सकता है।"

अम्बेडकर विचार कर रहा था कि उसको मंत्रिमंडल के दो बड़ों में से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसके साथ रहना चाहिए, जिससे कि वह कांग्रेस का टिकट पा सके। मुखर्जी स्वामी जी के इस कथन पर विचार करने लगा था कि जीवन थोड़ा सा रह गया है। इस कारण आसुरी विचार के लोगों की संगति छोड़ दैवी स्वभाव वालों से व्यवहार रखना चाहिए। मुखर्जी को यह समझ आया था कि समाजवादी असुर हैं। जवाहरलाल भी समाजवादी हैं अतः स्वामी जी का संकेत उनकी संगत से बचने का ही था।

डॉ. मुखर्जी का सम्बन्ध जवाहरलाल से एक अन्य कारण से टूटा था। सन् 1950 में एकाएक पूर्वी पाकिस्तान से हिन्दू मार–मारकर निकाले जाने लगे। एक बहुत बड़ी संख्या में कई लाख हिन्दू पूर्वी पाकिस्तान छोड़ कर भारत में वैसे ही आ गये जैसे सन् 1947 में उत्तरी और पश्चिमी पाकिस्तान से आये थे। इस घटना ने डॉ. मुखर्जी के मन में भारी हलचल मचा दी थी।

मन्त्रिमण्डल में इस घटना की प्रतिक्रिया हुई और पुनः प्रधानमन्त्री और राष्ट्रवादियों में रस्साकशी होने लगी। प्रश्न यह था कि इस विषय में क्या किया जाय। पूर्वी पाकिस्तान में हिन्दुओं के व्यापक वध की प्रथम प्रतिक्रिया प्रधानमन्त्री जवाहरलाल जी के मन में यह हुई कि यह एक विदेशी के देश के भीतर की समस्या है। अन्तर्राष्ट्रीय कानून से भारत इसमें हस्तक्षेप नहीं कर सकता।

डॉ. मुखर्जी का कहना था, "वे हिन्दू हैं। उनमें मुसलमान कोई नहीं। यह हत्याकांड उस वचन के विरुद्ध है जो जिन्ना ने दिया था कि दोनों राज्यों में अल्पसंख्यकों के साथ न्याय किया जायेगा। यह हत्याकांड उस वचन के विरुद्ध होने से हमारे हस्तक्षेप का विषय है।"

नेहरूजी का कहना था, "जिन्ना तो गये। यह वचन उनके उत्तराधिकारियों पर लागू नहीं होता।"

"जिन्ना साहब के जीवन काल में भी यह वचनभंग हुआ था। उन्होंने 1947 में ही कश्मीर पर आक्रमण किया था।"

"वह आक्रमण कश्मीर के विलय से पूर्व था। पाकिस्तान ने उसे भारत के साथ विलय कभी नहीं माना था।"

"पाकिस्तान ने ब्रिटिश पार्लियामैंट का वह कानून तो माना है जिससे पाकिस्तान का निर्माण हुआ है। उसी कानून से कश्मीर ने भारत के साथ विलय स्वीकार किया था और उसके उपरान्त पाकिस्तान को इसमें न करने का अधिकार नहीं था।"

"यह तो था और इसी कारण हमने पाकिस्तानी सेनाओं को कश्मीर से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निकाल बाहर किया है।''

''कश्मीर वादी से तो किया है परन्तु कश्मीर से नहीं। राजा ने पूर्ण कश्मीर का भारत के साथ विलय किया था।''

''राजा को ऐसा करने का अधिकार मैं नहीं मानता।''

''परंतु पण्डित जी, यह अधिकार आपने राजा साहब को नहीं दिया था। इसको देने वाली अंग्रेजी सरकार है। हमें तो उससे लाभ ही हो रहा है।''

''वह बात अब समाप्त हो गई है। अब मुआमला यू.एन.ओ. में है।''

''देखिये पण्डित जी! पाकिस्तान ने 15 अगस्त 1947 के बाद भी हिन्दुओं को फ्रंटियर प्रान्त से तथा सिन्ध प्रान्त से निकाला है। पाकिस्तान सरकार इन क्षेत्रों में हिन्दुओं की रक्षा करने में असमर्थ रही है। हमने फ्रंटियर के और सिन्ध के हिन्दुओं को अपने देश में स्थान दिया। इसके उपरांत उन्होंने कश्मीर के हिन्दुओं को निकालने का आयोजन किया। हमने वहाँ से भागकर आये हुए हिन्दुओं को भी यहाँ बसने की सुविधा दी। बाद में जब राजा ने रियासत का विलय भारत से किया तो हमने पाकिस्तानी सेना को निकालने के लिए अपनी सेना भेजी। युद्ध हुआ और हमारी सेना ने अद्‌भुत शौर्य दिखाकर शत्रु को वादी से निकाला और अन्य क्षेत्रों से निकालने के लिए सेना को स्वीकृति नहीं दी गई। उनकी योजना को अस्वीकार कर हमने युद्ध–विराम की घोषणा कर दी। युद्ध–विराम को अभी एक वर्ष ही हुआ है। पकिस्तान अपनी वही पुरानी चाल चलने लगा है। वह पूर्वी पाकिस्तान को हिन्दुओं से खाली कराना चाहता है।''

''हमने भी तो हैदराबाद पर आक्रमण कर उसका क्षेत्र ले लिया है।''

''परन्तु क्या हैदराबाद पाकिस्तान का हिस्सा था। क्या उसमें से हमने मुसलमानों को मार–मार कर निकाला है? इन दोनों बातों का किसी प्रकार का मुकाबला नहीं किया जा सकता।''

प्रधानमन्त्री ने विवाद बन्द कर पूछ लिया, ''तो डाक्टर साहब क्या चाहते हैं?''

''मेरा कहना तो यह है कि हम पाकिस्तान को अल्टीमेटम दे दें और कहें कि यदि उसने पाकिस्तान में हिन्दुओं की उचित रक्षा नहीं की और हिन्दुओं का इधर आना जारी रहा और इधर आये पाकिस्तानी हिन्दुओं को वापस पाकिस्तान में अपना स्थान न दिलाया तो हम पाकिस्तान के उचित क्षेत्र अपने अधिकार में कर इन विस्थापितों को बसा देंगे। हम हिन्दुओं की दुर्दशा वहाँ होती देख नहीं सकते।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"हम हिन्दुओं की दुर्दशा क्यों नहीं देख सकते?" पण्डितजी ने माथे पर त्यौरी चढ़ाकर कहा।

"इसलिए कि एक समय में वे भारत के ही नागरिक थे। हमने उनको पाकिस्तान के अधिकार में छोड़ा था एक शर्त पर। वह शर्त पाकिस्तान पूरी नहीं कर रहा।"

"परन्तु कैसे हम पाकिस्तान का क्षेत्र ले लेंगे?"

"जैसे कश्मीर वादी जो पाकिस्तान के अधिकार में गई थी वापस ले ली है।"

"मगर जानते हैं कि इससे विश्व युद्ध हो जावेगा।"

"तो हो जावे।"

"सब कुछ नष्ट हो जावेगा।"

"किसका?"

"हमारा, पाकिस्तान का और भी अन्य बहुत–से देशों का।"

"देखिये प्रधानमन्त्री महोदय, हमारा पक्ष न्याय का है। इसकी रक्षा करते हुए कोई नष्ट होता है तो चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं। यदि अन्याय का पक्ष लेते हुए पूर्ण संसार भी विध्वंस हो जाता है तो हम को क्या। इतना मैं कहता हूँ कि– हम नष्ट नहीं होंगे।"

इससे प्रधानमन्त्री का मुख क्रोध से लाल हो गया। वह एक क्षण तक अपने पर नियन्त्रण कर बोला, "इस प्रकार की नौनसैंस (वाहियात) बात मैं सहन नहीं कर सकता। यह सब वाहियात है।"

डॉ. मुखर्जी इस नौंनसैंस को सुन तुरन्त बोले, "जो जैसा होता है उसे सब कुछ वैसा ही दिखाई देता है।"

प्रधानमन्त्री अपने स्थान से उठ खड़े हुए। वह यह सहन नहीं कर सके कि कोई उनको 'नौनसैंस' कहे। क्रोध में प्रधानमन्त्री की मुट्ठी बँध गई। ऐसा लगता था कि वह घूँसा मारने वाले हैं। डॉ. मुखर्जी भी उठ खड़े हुए। वे समझे कि उनपर प्रहार होगा।

परिस्थिति का कुछ ऐसा ही अनुमान लगाकर दूसरे मन्त्रीगण भी उठ खड़े हुए और दोनों महानुभावों के बीच खड़े हो गये।

सरदार एक ओर खड़ा गम्भीरतापूर्वक यह सब कुछ देख रहा था। मन्त्रिमण्डल की बैठक स्थगित कर दी गई। मौलाना आजाद और कुछ अन्य मन्त्रीगण प्रधानमन्त्री को बांह से पकड़ तथा आग्रह कर कमरे से बाहर ले गये। द्वार के समीप डॉ. मुखर्जी खड़े थे। जाते–जाते प्रधानमन्त्री ने घूरकर डाक्टर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
की ओर देखा। डॉक्टर ने दबी जबान से केवल यह कहा, "इट वाज सिम्पली टिट फार टैट।"[1]

जो लोग प्रधानमन्त्री को उनके अपने कमरे में ले गये थे उनमें से एक ने आकर कहा, "हम इस विषय पर कल पुनः विचार करेंगे।"

: 15 :

घर पर पहुँचकर डॉ. मुखर्जी ने एक–एक कर सब मन्त्रियों को टेलीफोन पर यह प्रश्न किया, "आप इस विषय में क्या करना चाहते हैं? इस हत्याकांड के लिए पाकिस्तान के विरुद्ध किसी प्रकार का कार्य करना चाहिए अथवा नहीं?"

दो सदस्यों के अतिरिक्त सब किसी–न–किसी कार्यवाही के लिए सहमत थे। मतभेद इस बात पर था कि क्या कार्यवाही की जाए। सबसे विस्मय की बात यह थी कि मौलाना आजाद के साथ डॉ. अम्बेडकर भी यह समझते थे कि भारत पाकिस्तान के विरुद्ध कुछ कर नहीं सकता। जब मुखर्जी ने कुछ न कर सकने का कारण पूछा तो अम्बेडकर ने कह दिया, "मैं आपकी कोठी पर आ कर बात करूँगा।"

इससे पहले डॉ. अम्बेडकर सदा उससे सहमत रहा था। इन दोनों नेताओं में केवल अछूतों के प्रति व्यवहार की विधि पर मतभेद था। परन्तु कानूनी, सामाजिक और राष्ट्र के विषय में वे सदा सहमत रहते थे। इस कारण इस विषय पर डाक्टर को विलक्षण मत रखते देख विस्मय हुआ। डॉ. मुखर्जी के टेलीफोन करने का परिणाम यह हुआ कि उसके बंगले पर सदस्य आने लगे। सबसे वार्त्तालाप हुआ और धीरे–धीरे यह राय बन रही थी कि इस हत्याकांड की सूचना संयुक्त राष्ट्रसंघ को देनी चाहिए। यदि वहाँ पर कुछ परिणाम न निकला तो फिर अल्टीमेटम के विषय पर विचार कर लिया जाए। प्रायः सब मिलने वालों का यह विचार हो रहा था कि राष्ट्रसंघ पाकिस्तान में हो रही हत्याओं को तो रोक नहीं सकेगा। हाँ, उसमें विस्थापितों के लिए पाकिस्तान से एक उचित क्षेत्र माँगना चाहिए। इसमें राष्ट्रसंघ के आशीर्वाद से पाकिस्तान पर आक्रमण किया जा सकता है।

यद्यपि मुखर्जी इस बात को व्यावहारिक नहीं मानते थे, परन्तु तो भी

---

1. यह केवल जैसे को तैसा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मन्त्रिमण्डल के अधिकांश सदस्यों को साथ रखने के लिए वे इस उपाय पर तैयार थे।

सबसे रोचक बात डॉ. अम्बेडकर से हुई। उसका कहना था कि देश के भीतर हो रहे हत्याकांडों में राष्ट्रसंघ हस्तक्षेप नहीं कर सकेगा। इस कारण वहाँ अभी जाने का प्रश्न नहीं। जब तक किसी कार्य से विश्व–शान्ति भंग होने की संभावना न हो तब तक राष्ट्रसंघ की सुरक्षा परिषद हस्तक्षेप नहीं कर सकेगी। अम्बेडकर का यह भी कहना था, "यह हो सकता है कि हम आक्रमण कर दें। तब पाकिस्तान विश्व में युद्धक्षेत्र के फैल जाने की संभावना प्रकट कर संयुक्त राष्ट्रसंघ का आश्रय ले। उस अवस्था में हम बदनाम होंगे और संयुक्त राष्ट्रसंघ के समक्ष हम दोषी के रूप में होंगे।"

डॉ. मुखर्जी ने कहा, "हम दोषी तो कश्मीर के विषय में भी माने जा रहे हैं। कश्मीर के विषय पर सुरक्षा परिषद में ब्रिटेन का यह कहना है: यद्यपि अभी सुरक्षा परिषद का निर्णय नहीं हुआ तो भी क्या यह सम्भव नहीं कि संयुक्त राष्ट्रसंघ कश्मीर में मतदान कराने का निर्णय करे। अर्थात् कश्मीर के विलय के न्यायसंगत होने के विषय में जाँच कराये? अतः मैं तो यह समझता हूँ कि हमको अपने साथी राष्ट्र संघ में बनाने चाहिए।"

"यह कैसे हो सकता है?"

"कुछ देशों के साथ सुरक्षा सम्बन्धी संधियाँ करके।"

"प्रधानमन्त्री विदेशी विषयों के भी मन्त्री है। इस विषय में वे ही विचार कर सकते हैं।"

"तो हम उस विचार को उपस्थित भी नहीं कर सकते क्या?"

"बहुत कठिन है। प्रधानमन्त्री अपने विभाग में किसी दूसरे का हस्तक्षेप पसन्द नहीं करते। और हममें दम नहीं कि हम उनकी बात का विरोध कर सकें।"

"परन्तु मैं तो विरोध कर रहा हूँ। पाकिस्तान भी तो विदेश है। उसके विषय में ही तो यह सब झगड़ा है।"

"हाँ, इसलिए तो पण्डित जी ने आपकी बात सुनकर 'नौनसेंस' कहा है। देखो मुखर्जी साहब। यदि इस विषय में मन्त्रिमंडल ने उनकी इच्छा के विरुद्ध किसी प्रकार का भी निर्णय लिया तो वे त्यागपत्र देने पर तैयार हो जावेंगे। और मैं सत्य कहता हूँ कि ये सब चुहियाँ जो यहाँ आकर लम्बी–चौड़ी बातें कर गई हैं, पण्डित जी की एक धमकी के सामने मौन हो जावेंगी और आप मूर्ख बन जायेंगे।"

डॉ. मुखर्जी विस्मय में मुख देखते रह गए। उन्होंने पूछ लिया, "तो फिर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप क्या करने को कहते हैं?''

''मैं अभी–अभी प्रधानमन्त्री से मिलकर आ रहा हूँ। यह सब मैं उनके मन की बात उनके मुख से सुनकर आ रहा हूँ। वे कहते हैं, मैं विदेश नीति में आप लोगों को हस्तक्षेप करने नहीं दूँगा। आपमें इस विषय पर कुछ भी करने की योग्यता नहीं। इस पर भी आप लोगों ने हस्तक्षेप करने का यत्न किया अथवा हठ किया तो मैं त्यागपत्र दे दूँगा। और नए निर्वाचनों के लिए आग्रह करूँगा।''

मुखर्जी मुख देखते रह गए। दोनों चिरकाल तक इसी प्रकार मौन बैठे एक–दूसरे का मुख निहारते रहे। आखिर मुखर्जी ने कहा, ''मेरे कानों में स्वामी गरीबदास की बात गूँज रही है कि ये लोग असुर हैं। उनकी संगति छोड़कर हमको दैवी स्वभाव वालों की संगति में जाना चाहिए। उन्होंने यह भी बताया था कि असुर कौन हैं। मैं समझता हूँ कि हमको यह मन्त्रिमण्डल छोड़कर नए निर्वाचनों में इस व्यक्ति का विरोध करना चाहिए।''

''होना तो यही चाहिए।'' अम्बेडकर का कहना था कि, ''परन्तु मैं देखता हूँ कि नए निर्वाचनों में हम सफल नहीं होंगे। जवाहरलाल और गांधी जी के नाम पर वोट उन सब के पक्ष में पड़ेंगे जिनको जवाहरलाल का समर्थन प्राप्त होगा।''

''इस पर भी हम अपना पक्ष देश के सामने उपस्थित कर सकेंगे।''

''क्या लाभ होगा। लोग हमको पागल कहेंगे। हम संसद में यदि पहुँच भी गए तो भी अकेले होंगे और कोई हमारी सुनेगा नहीं।''

''तो आप प्रधानमन्त्री की चुनौती स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं?''

''मुझमें सामर्थ्य नहीं। मैं अब राजनीति को छोड़ भी नहीं सकता और राजनीति बिना संसद सदस्य बने कुछ भी अर्थ नहीं रखती।''

डॉ. मुखर्जी अम्बेडकर की इस कलाबाजी पर चकित रह गया। परन्तु अगले दिन मन्त्रिमण्डल की बैठक में और भी कलाबाजियाँ लगीं। पाकिस्तान के व्यवहार की शिकायत संयुक्त राष्ट्रसंघ में भेजने का प्रस्ताव सरदार ने रखा। प्रस्ताव का समर्थन डॉ. मुखर्जी ने किया। इस पर अन्य मन्त्रीगण विचार उपस्थित करते रहे। प्रायः सब मन्त्रीगण इसके पक्ष में थे। केवल मौलाना आजाद ने इस प्रस्ताव का विरोध किया और कह दिया, ''मेरी राय में पाकिस्तान से दोस्ताना तौर पर बातचीत की जाए। यदि कोई तरीका है जिससे दोनों मुल्कों में मेल रह सकता है तो यही है।''

डॉ. अम्बेडकर मौन बैठे रहे। सबसे अन्त में पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कह दिया, "यह विदेश विभाग की बात है। उसकी देख–रेख मैं कर रहा हूँ। इस मसले को मैंने मन्त्रिमण्डल में उठाया नहीं। इस पर भी आप सब की बातें मैंने सुनी हैं और मैं कहता हूँ कि मैं पाकिस्तान के प्रधानमन्त्री लियाकत अली साहब को लिख रहा हूँ कि इस विषय पर मुझसे बातचीत का समय निश्चय करें। अब मैं इस विषय पर और बात सुनना नहीं चाहता। मैं मन्त्रिमण्डल के सम्मुख अगला विषय उपस्थित करता हूँ।"

नियोगी ने दबी जवान से पूछ लिया, "मन्त्रिमण्डल आपके इस उपाय को अपर्याप्त मानता है। इससे कुछ होगा नहीं और लाखों मारे गये हैं, मारे जा रहे हैं, और मारे जावेंगे। लाखों हिन्दू भागकर भारत आये हैं और वे कलकत्ता के बाजारों और पटरियों पर भीख माँग रहे हैं। मन्त्रिमण्डल आपके उपाय से कुछ भी परिणाम निकलता नहीं देखता।"

"मैं ऐसे मन्त्रिमण्डल को डिसमिस कर दूँगा।"

"तो कर दीजिये।"

"तो राय हो जाय। या तो मेरी बात मान ली जाय अन्यथा मैं अपना त्याग–पत्र राष्ट्रपति के पास भेज दूँगा। परिणामस्वरूप यह मन्त्रिमण्डल भंग होगा।"

इस पर पूर्ण मन्त्रिमण्डल में मौन छा गया। डॉ. मुखर्जी उठकर कमरे से बाहर निकल आये। मुखर्जी के मुख से यह कहा जाता सुना गया, "मैं इस मन्त्रिमण्डल में नहीं रह सकता।"

सब मुख देखते रहे। प्रधानमन्त्री ने इस विषय को बन्द करते हुए कहा, "समाजवाद हमारे देश की नीति का उद्देश्य होना चाहिए।"

इस समय नियोगी साहब भी उठे और कमरे से निकल गये। तदनन्तर मन्त्रिमण्डल समाजवाद पर विचार करने लगा।

सबके मन में दुःख था, परन्तु कोई कुछ कह नहीं रहा था। कदाचित् जो कुछ प्रधानमन्त्री समाजवाद के विषय में कह रहे थे कोई सुन और समझ भी नहीं रहा था। सबका चित्त खिन्न था।

डॉ. मुखर्जी और नियोगी ने मन्त्रिमण्डल से त्यागपत्र दे दिया। सरदार पटेल ने डाक्टर साहब को अपना त्यागपत्र वापस लेने के लिये कहा तो उन्होंने कह दिया, "मैं इस प्रधानमन्त्री के साथ बैठकर काम नहीं कर सकता।"

"परन्तु डाक्टर साहब। एक समय आप ही जवाहरलाल की बहुत प्रशंसा किया करते थे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जी, वह मेरी भूल थी।"

"तब मैं बताया करता था कि यह अच्छा व्यक्ति नहीं और आप मुझ को भूल करता हुआ कहा करते थे। आज हम दोनों पूर्णतया एकमत हो गये हैं। इस पर भी मेरी राय है कि स्वयं बाहर धकेले जाने से अधिक ठीक यह होगा कि हम मन्त्रिमण्डल में रह कर ही इस व्यक्ति का विरोध करें।"

"मेरी आत्मा नहीं मानती।"

"आपके बिना मैं मन्त्रिमण्डल में अकेला अनुभव करता हूँ।"

"तो आप भी त्यागपत्र दे दें। हमारा पक्ष प्रबल हो जावेगा।"

"नहीं मुखर्जी। मैंने गांधी जी के सम्मुख यह सौगन्ध खाई हुई है कि मैं जवाहरलाल का विरोध नहीं करूँगा।"

"परन्तु मैंने तो कसम नहीं खाई है। यदि मैं इस अभिमानी के अभिमान को चूर नहीं कर सकूँगा तो इस कारण कि मुझ को मन से ठीक समझने वाले भी मेरे साथ खड़े होने को सहमत नहीं होते। मैंने तो इसके साथ काम न करने का निश्चय कर लिया है।"

सरदार डाक्टर से उसकी बहिष्कार की नाति में सहमत नहीं हो सका। अतः मुखर्जी और नियोगी नेहरू मन्त्रिमण्डल से बाहर हो गये। नेहरू की लियाकतअली से बातचीत हुई। लियाकतअली नई दिल्ली में इस बातचीत के लिये आया। इस वार्त्तालाप का परिणाम एक समझौता हुआ, जिसमें भविष्य के लिये दोनों देशों में अल्पसंख्यकों की रक्षा और उसके सुखपूर्वक रहने के लिये प्रबन्ध करने का वचन दिया गया। जो घर–बाहर छोड़कर आ गये सो आ गये। उनके विषय में कुछ निश्चय नहीं हो सका। यह भी निश्चय हो गया कि दोनों देश दूसरे देश से आने वाले नागरिकों को अपने देश में घुसने नहीं देंगे। भारत से मुसलमान तो जा नहीं रहे थे। भारत में पाकिस्तानी हिन्दू आ रहे थे। उनको तो भारत में आने से रोकने का प्रयत्न होने लगा।

CC-0. Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चतुर्थ परिच्छेद

: 1 :

जब डॉ. अम्बेडकर और डॉ. मुखर्जी देवप्रयाग के स्वामी गरीबदास के आश्रम में गये थे तो मुमताज वहीं पर थी। उसने दोनों डाक्टरों से भेंट कर अपने पति के विषय में पूछा था। मुमताज ने अपनी इतनी बात बताई थी, "मेरे खाविन्द यहाँ से मौलाना आजाद के पास नौकरी करने के लिये नई दिल्ली गये थे। वहाँ से उनके दो पत्र आये थे। दूसरे पत्र में लिखा था कि वे सरकारी काम से कराची जा रहे हैं। फिर कराची से भी उनका एक पत्र आया था। इसको अब एक साल हो चुका है। मैंने भारत के शिक्षा मन्त्री को लिखा है। उनका भी अभी कोई उत्तर नहीं आया।

"वैसे तो बाबू सदानारायण पता करने के लिये लिखा–पढ़ी कर रहे हैं, परन्तु कुछ परिणाम नहीं निकल रहा। आप इसमें मेरी कुछ सहायता कर सकते हैं क्या?"

मुखर्जी ने आश्वासन दिया था कि वह पता करेगा। उसने दिल्ली पहुँच कर एक दिन मौलाना के बंगले पर टेलीफोन द्वारा मियाँ शमशाद के विषय में पूछ लिया। टेलीफोन पर बात करने वाले थे मौलाना अब्दुल रशीद साब्री। साब्री समझ नहीं सका कि मुखर्जी साहब किसलिये पूछ रहे हैं। अतः अभी बात टालने के विचार से साब्री ने कह दिया, "हुजूर। मैं किसी शमशाद मियाँ को नहीं जानता। हाँ, मौलाना साहब से पूछूंगा। अगर उनको कुछ मालूम हुआ तो कल तक अर्ज कर दूँगा।"

इसके उपरान्त साब्री और शमा में विचार होने लगा। शमा का ख्याल था कि शमशाद वहाँ इतना बिगड़ गया है कि वह सारे सफारतखाने में बदनाम हो रहा है। उसको दिल्ली वापस बुला लेना चाहिए। मगर साब्री इसके हक में नहीं था। दिल्ली के पाकिस्तानी सफारत खाने से यह पता चल रहा था कि वह पाकिस्तान सरकार को बहुत फायदेमन्द साबित हो रहा है। इसलिये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साब्री का ख्याल था कि शमशाद को वहीं रहना चाहिए। यह कारण था कि मुमताज के जो पत्र मौलाना के नाम आते थे वे फाड़ कर फेल दिये जाते थे।

अब डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी के उसके विषय में पूछने पर विचार यह होने लगा था कि अगर हमने डाक्टर साहब को तसल्लीबख्श उत्तर न दिया तो डाक्टर साहब मौलाना से खुद पूछेंगे और तब मौलाना साहब उसका पता बता देंगे। इस कारण दोनों ने यह विचार कर लिया था कि मौलाना साहब को भी इस रहस्य में सम्मिलित कर लिया जाय। इतना तो मौलाना साहब जानते थे कि शमशाद ने एक ईसाई लड़की से विवाह कर लिया था और अब दोनों कराची में बदकारी की जिन्दगी बसर कर रहे हैं। वे यह भी जानते थे कि साब्री, शमा, शमशाद इस्लाम की बहबूदी में दिलचस्पी रखते हैं। परन्तु उनको यह पता नहीं था कि ये लोग भारत सरकार की रहस्य की बातें पाकिस्तान के पास बेचते रहते हैं।

मौलाना साहब का यह विचार था कि इस्लाम की तरक्की के लिये पाकिस्तान एक पृथक देश नहीं बनना चाहिए था। परन्तु जब बन गया है तो पाकिस्तान एक शक्तिशाली और दुनिया में बड़े देशों की पंक्ति में बैठने योग्य हो जाय। वह यह भी चाहता था कि जैसे अमरीका इंगलैंड तथा अन्य योरोपीय देश भारत में ईसाई धर्म का प्रचार करते रहते हैं वैसे ही समृद्ध और सफल पाकिस्तान भारत में इस्लाम की तबलीग में मदद करें।

परन्तु उनकी इच्छा और योजना के विपरीत पाकिस्तान भारत से लड़कर भारत के हिन्दुओं को इस्लाम के विरुद्ध कर रहा था। वे समझते थे कि इससे तो इस्लाम की उन्नति के स्थान पर उसका ह्रास होगा। इस कारण पाकिस्तान से वे अप्रसन्न हो रहे थे।

उनकी रही–सही सहानुभूति पाकिस्तान के हैदराबाद में षड्यन्त्र ने विलीन कर दी। अब पूर्वी पाकिस्तान में हिन्दुओं को मार–मार कर भगाने की नीति ने तो मौलाना की रही–सही सहानुभूति पाकिस्तान से निःशेष कर दी थी। जिस दिन मन्त्रिमण्डल में झगड़ा हुआ था उससे कई दिन पहले की बात है। मौलाना यह समाचार पढ़ कि हिन्दू–मुसलमान फसाद ढाका और पूर्वी पाकिस्तान में आरम्भ हो गये हैं, गम्भीर विचार में मग्न घर आये थे। जब सायं की चाय पीने के लिये मौलाना साहब बैठे तो उनसे मिलने के लिए हिन्दुस्तान टाइम्स के प्रतिनिधि आये हुए थे। साब्री चाय पिलाने में लीन था। पत्र प्रतिनिधि ने पूछा, "मौलाना साहब! क्या आप पाकिस्तान में हो रहे फसादों से किसी बहुत बड़ी सियासी हलचल की उम्मीद करते हैं?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मौलाना साहब का कहना था–"अभी कुछ कहना बहुत मुश्किल है। अभी तो यह भी पता नहीं चला कि झगड़ा शुरू कैसे हुआ है। किसने शुरू किया है और कौन ज्यादा मारे गये हैं।"

उसी पत्र प्रतिनिधि ने कहा, "हमारे पास आज यह समाचार आया है कि ढाका में झगड़ा तो एक जायदाद पर किसी उत्तर प्रदेश से गये मुसलमान ने शुरू किया था।" एक हिन्दू रईस अपनी हवेली में ताला लगा कलकत्ते चले आये थे। वे पिछले जून में वहाँ वापस गये तो उनकी हवेली और सम्पत्ति पर इस मुसलमान ने अधिकार जमाया हुआ था। इस बंगाली हिन्दू ने उसको हवेली छोड़ने के लिये कहा तो उसने छोड़ी नहीं। इस पर हिन्दू रईस ने अदालत में दावा दायर कर दिया। एक वर्ष के मुकदमे के उपरान्त उस अदालत ने मियाँ को मकान खाली करने के लिये कहा। इस पर उस मियाँ के भड़काने पर पहले उस रईस और उसके परिवार को मार डाला गया और फिर हिन्दुओं का कत्लेआम शुरू हो गया।"

"यह तो बहुत ही अफसोसनाक वारदात है। मगर यह किसने खबर दी है?"

"ढाका से आये हिन्दुओं के बयानों से यह बात पता चली है।"

"मेरा खयाल है कि यह खबर आपको छापनी नहीं चाहिए। इससे भारत में भी फिसाद शुरू हो सकते हैं। यहाँ तो हम भारत से गये मुसलमानों की जायदाद पर नियुक्त कस्टोडियन के फैसले को भी रद्द कर जायदाद उन मुसलमानों को दिलवा रहे हैं।"

इस पर पत्र प्रतिनिधि ने मुस्कुराते हुए पूछ लिया, "मैं तो आपकी सम्मति उन बलबों पर जानने की इच्छा रखता हूँ जो वहाँ हुए हैं?"

"एक लफ्ज में कह सकता हूँ कि वे बहुत अफसोसनाक वाकया है।"

"भारत सरकार को कुछ करना चाहिए क्या?"

"भारत सरकार क्या कर सकती है? हाँ, भारत सरकार अपने मुल्क में अमन रखने की हर मुमकिन कोशिश करेगी।"

"वहाँ से आये हिन्दुओं के साथ क्या सलूक होना चाहिए।"

"जैसा एक इन्सान का एक इन्सान के साथ होता है।"

"क्या वे भारत के नागरिक मान लिये जावेंगे।"

"यह कानूनी मसला है। मैं इसमें कोई राय देना नहीं चाहता।"

"वहाँ हिन्दुओं के कत्लेआम को रोकने के लिए आप क्या करना चहते हैं?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"खुदा से दुआ करना चाहता हूँ कि वहाँ के लोगों को वह अक्ल बख्शे।"

"भारत सरकार को इसमें दखल देना चाहिए या नहीं?"

"मैंने बताया है न कि यह कानूनी मसला है। मैं इसमें राय देने की तौफीक नहीं रखता।"

इस प्रकार की पैतरेबाजी से पत्र प्रतिनिधि कुछ भी न पा चाय का एक प्याला पी चला गया। अब साब्री ने सामने खड़े–खड़े ही कह दिया, "हजरत। आज डॉ. मुखर्जी का टेलीफोन आया था। वे शमशाद के मुताल्लिक आपसे पूछते थे।"

"कौन शमशाद?"

"वही जिसकी आपने पण्डित जी से सिफारिश की थी और उसको एक खूबसूरत लड़की से शादी करने पर कराची सफारतखाने में भेज दिया गया था।"

"ओह! याद आ गया है। यह डाक्टर उसके मुताल्लिक क्यों और क्या पूछना चाहता था?"

"यह तो हजूर मैं उनसे पूछ नहीं सका। अब आप जो कहेंगे वही उनसे कह दूँगा।

"देखो साब्री! शमशाद ने कराची में बहुत खराबी की है। वजीरे आजम मुझसे कह रहे थे कि वह बहुत बदमाश आदमी है। इस पर मुझको मजबूर होकर कहना पड़ा है कि उसको वापस बुला लिया जाय।"

"यह आपने क्या किया है?" वह तो वहाँ बहुत ही मुफीद साबित हो रहा है।"

"कैसे कहते हो?"

"पाकिस्तान के हाई कमिश्नर के दफ्तर में यह कहा जा रहा है कि शमशाद खाँ ही एक लायक आदमी भारत के सफारत खाने में है।"

"तुम इन पाकिस्तानियों से बहुत मेल–मुलाकात रखते हो, साब्री। यह ठीक नहीं। अगर किसी ने तुमको उस कमिश्नर के दफ्तर में आते–जाते देख लिया तो मैं भी बदनाम हो जाऊँगा। साब्री, नये चुनाव आ रहे हैं। जरा खबरदार होकर काम किया करो।"

"तो फिर डाक्टर साहब को क्या जवाब दूँ? मैंने उनसे कहा था कि आपसे पूछ कर बताऊँगा।"

"तो उनसे कह दो कि हम उसके मुताल्लिक कुछ नहीं जानते।"

"और अगर आपसे पूछ लिया तो।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मुझे भी यही कहना चाहिए। भला मैं क्या जानता हूँ उसके मुताल्लिक?"

"अगर प्राइम मिनिस्टर साहब से पूछ लिया तो।"

"वे उनसे नाराज हैं। मेरा ख्याल है कि उनसे पता नहीं करेंगे।"

अगले दिन साब्री ने खुद टेलीफोन कर डॉ. मुखर्जी को यह कह दिया, "मौलाना साहब से शमशाद मिया के मुताल्लिक पूछा था। वे उसको नहीं जानते। बात यह है कि यहाँ बहुत मुसलमान नौकरी इत्यादि के लिए आते रहते हैं। मौलाना साहब सबकी सिफारिश करते रहते हैं। कोई आया होगा। उनको अब याद नहीं।"

डॉ. मुखर्जी इससे अधिक नहीं जान सके। वे चुप रहे। इसके कुछ ही दिन बाद डाक्टर ने प्रधानमन्त्री से लड़कर त्यागपत्र दे दिया और मंत्रिमण्डल से पृथक् हो गये।

वास्तव में शमशाद सफारतखाने में इतना बदनाम नहीं हुआ था जितना भारत का कराची में हाई कमिश्नर लिख रहा था। शमशाद बहुत अच्छी अंग्रेजी लिख और बोल लेता था। इस कारण स्वराज्य से पहले वह मौलाना साहब का प्राइवेट सेक्रेटरी रहा था और इसी के आधार पर उसकी विदेश विभाग में नौकरी लगी थी।

विदेशीय सफारतखाने में खूबसूरत औरतों को रखने की परम्परा अंग्रेजी काल से चली आ रही थी। यहाँ तक कि हिन्दुस्तान के वायसराय और गवर्नरों के निर्वाचनों में भी उम्मीदवारों की सुन्दर स्त्रियाँ सहायक होती थीं। वही परम्परा भारत के विदेश विभाग में भी पूरी–पूरी नहीं तो एक बहुत अंश तक चलती थी।

शमशाद की सेवायें तो थीं। परन्तु जब उसके साथ सुन्दर स्त्री की समस्या बताई गई तो शमशाद ने एक ईसाई लड़की मरियम को अपना साथी बना लिया।

: 2 :

शमशाद भारत के हाई कमिश्नर का कल्चरल अटैची होने के नाते पाकिस्तानी अफसरों और मजहबी नेताओं से सम्पर्क बनाने लगा तो सबसे विचित्र बात यह हुई कि मरियम बहुत लोगों से जान–पहिचान रखती निकली।

कराची के एक फैशनेबल होटल में एक पुराने मुस्लिम लोग नेता के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निमन्त्रण पर शमशाद अपनी नयी पत्नी को लेकर पहुँचा तो उसे यह देख कर विस्मय हुआ कि मरियम 'होस्ट' से पूर्व परिचित है। होस्ट था चौधरी इश्तियाक हुसैन। वह कलकत्ता में मुस्लिम लीग का एक सक्रिय कार्यकर्ता रह चुका था। शमशाद को वह एक दिन बाजार में सैर करते मिला था। उसी ने शमशाद को पहिचाना था और परिचय हो जाने के उपरान्त 'सेसिल' में चाय पर बुला लिया था।

उस समय मरियम साथ नहीं थी और चौधरी साहब ने पूछ लिया था, "मिस्टर कुरैशी, बीबी साथ है?" उसका मतलब मुमताज से था।

"हाँ।" शमशाद ने कह दिया।

"तो उसको भी चाय पर ले आना।"

"जरूर। वह पर्दा नहीं करती।"

"कुरैशी साहब! कराची में पर्दा एक गये जमाने की बात हो गयी है।"

शायद मरियम को लेकर होटल में पहुँचा तो चौधरी उसकी प्रतीक्षा में खड़ा था। जब उसने शमशाद को एक नौजवान ऐंग्लो इण्डियन औरत के साथ टैक्सी से उतरते देखा तो विस्मित रह गया। मरियम जब से कराची में आयी थी स्कर्ट और ब्लाउज पहिनने लगी थी। सिर से नंगी और ऊँची एड़ी का जूता पहिनने लगी थी।

शमशाद ने चौधरी इश्तियाक हुसैन से अपनी बीबी मरियम कुरैशी का परिचय कराया तो चौधरी के मुख से निकल गया, "इनको तो मैं जानता हूँ। कब हुई है शादी?"

"कुछ अर्सा हो गया है।"

"मैं तो मुमताज की इन्तजार में था।"

"वह फौतब हो गयी है।" शमशाद ने झूठ बोल दिया।

"ओह, बहुत अफसोस है। बहुत दिलदार औरत थी। 'डायरैक्ट ऐक्शन' में कलकत्ता में उसका काम हम भूल नहीं सकते।"

"तीनों रिसैप्शन हाल की ओर चल पड़े। चौधरी ने मरियम को सम्बोधन कर पूछ लिया।

"मिसेज मरियम! जिन्दगी कैसे चल रही है?"

"स्पलैंडिड!" मरियम ने एक ही शब्द में उत्तर दे दिया।

शमशाद आश्चर्य कर रहा था कि मरियम चौधरी से कब की और कैसी वाकफीयत रखती है। वह अभी मन में विचार ही कर रहा था कि घर चलकर पता करेगा कि चौधरी ने कह दिया, "मिस्टर कुरैसी, आप कराची में आ गये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं। बहुत अच्छा किया है और मैं समझता हूँ कि मरियम की खिदमत बहुत ही कारआमद साबित होगी। मैं इसे तब से जानता हूँ, जब इसका बाप कलकत्ता में था। वह सन् 1946 की बात है। कांग्रेसियों को सूट करने के लिये भेजी गयी रेजिमेंट में मिस्टर बर्न लेफ्टिनेन्ट था। उसकी पत्नी और बेटी भी साथ ही आयी थीं। नाजमुद्दीन साहब ने मुझे लेफ्टिनेन्ट साहब की रहबरी के लिये लगाया था और कलकत्ता में बलवा तो एक ही दिन में शान्त हो गया था। मगर मेरी वाकफियत मरियम और इसकी माँ के साथ हो गयी। इसकी माँ से मेरे गहरे ताल्लुकात बन गये थे। मरियम तो उस वक्त बच्ची ही थी।"

"बच्ची?" शमशाद ने विस्मय में पूछ लिया, "क्या उम्र रही होगी इसकी उस वक्त?"

चौधरी ने शमशाद के प्रश्न का उत्तर देने के स्थान पर मरियम से पूछ लिया, "अब क्या उम्र है तुम्हारी?"

इस समय वे चौधरी द्वारा रिजर्व की गयी टेबल पर जा बैठे थे। बैरा आर्डर लेने के लिये सामने खड़ा था। चौधरी के लिखवाया तो बैरा खाने का सामान लेने चला गया। मरियम ने आयु की बात टालते हुए कह दिया, "चौधरी साहब को मैं ग्रांड–फादर कहा करती थी।"

"ओह!" शमशाद ने चौधरी की तरफ देखकर कह दिया, "तब तो चौधरी साहब। आप मेरे भी ग्रांड–फादर हो गये।"

इस पर तीनों हँसने लगे। चाय ली गयी और चौधरी ने बताया, "मैं आजकल पाकिस्तान इन्टरनैशनल इन्टेलिजेन्स डिपार्टमेंट में हूँ। मेरा काम तो बर्मा, मलाया, इण्डोनेशिया, मुल्कों में है। इस पर भी मैं भारत में भी मदद कर सकता हूँ। क्यों मरियम, कैसा ख्याल है?"

मरियम ने कहा, "मैं तो अब इनकी बीबी हूँ। मैं समझती हूँ कि मेरा फर्ज इनकी खिदमत करना है। मैं न तो किसी मुल्क की बात जानती हूँ न ही किसी ग्रांड–फादर की।"

"ठीक है। मैं तुमको अपने खाविन्द से बेवफाई करने के लिये नहीं कह रहा। मैं शमशाद मियाँ को जानता हूँ कि अंग्रेजों के जमाने में निजाम साहब के लिये वह क्या करते थे? अब मरियम के 'हसबैंड' बनने से इनकी खसलहत बदल गयी होगी, मुझे यकीन नहीं आता।"

"मैंने निजाम साहब के लिये क्या किया था?" शमशाद ने मुस्कुराते हुए पूछ लिया।

"उनके वजीफे का जायज इस्तेमाल किया था।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह तो नवाब साहब ने मेरे लिये किया था। सवाल तो यह है कि मैंने उनके लिये क्या किया था?"

"वे अब भी तुम्हारे लिये वही कुछ करने को तैयार हैं। कुरैशी! क्या भूल गये हो कि हमारे सामने एक आलीशान मकसद था। क्या वह नहीं रहा अब?"

"अब स्वराज्य मिल गया है।"

"निजाम को अभी नहीं मिला।"

"वे क्या चाहते हैं।"

"खुद मुख्तयारी?"

"चौधरी, उसकी मदद के लिये भारत का वजीरेआजम है। मौलाना हैं। भला मैं किस खेत की मूली हूँ।"

इसके बाद चौधरी चुप कर गया। तीनों खाने–पीने में लगे रहे। एकाएक चौधरी ने पूछ लिया, "मरियम! तुम्हारी माँ तुम्हारे साथ आयी है?"

"नहीं। अब हमें मुनासिब मकान मिल गया है और मैं उसको बुलाने वाली हूँ। आना न आना उसकी मर्जी पर है।"

"उसको मेरी बाबत लिखना कि मुझे उससे मिल कर बहुत खुशी होगी।"

"तबीयत करती है कि न लिखूँ।"

"क्यों?"

"आपसे उसे दूर रखने के लिये।"

"देख लो। तब तो केवल एक सूबाई हुकूमत से ताल्लुक था। अब मेरा एक आजाद मुल्क की हुकूमत से ताल्लुक है।"

"वह ख्याल कर रही थी कि भारत में जिन्दगी खतम करनी चाहिए।"

"पर जिन्दगी का आखिरी किनारा दिखाई देने लगा है क्या?"

"डैडी के मर जाने के बाद वे हमेशा गमगीन रहती हैं।"

शमशाद देख रहा था कि जब से चौधरी ने बताया है कि वह इन्टेलिजेंस डिपार्टमेंट से सम्बन्ध रखता है, मरियम का व्यवहार ठंडा हो गया है। वह कुछ सतर्क और शान्त मालूम होने लगी थी। उसमें वह चुलबुलापन नहीं रहा था जो चौधरी के प्रथम दर्शन पर उसमें था।

इसका रहस्य घर जाकर खुला। रात के खाने के समय शमशाद ने पूछ लिया, "मुझे नहीं मालूम था कि चौधरी इश्तियाक हुसैन तुम्हारा वाकिफ है।"

मरियम ने कहा, "यह, मेरी माँ का वाकिफ था और यह ठीक है कि दोनों में इन्टिमेट रिलेशन्ज थे। मगर उन सम्बन्धों से यह चौधरी का बच्चा मुस्लिम लीग की मदद कर रहा था। इसने फादर को कहकर कितने ही बेगुनाह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दुओं को मरवाया था। जब फादर को पता चला कि मदर अपने पैशभर के लिये उससे गुनाह करा रही है तो वह अफसर को कहकर फ्रन्ट पर चले गये। वहाँ से सिंगापुर गये और वहाँ एक जापानी के हाथ से मारे गये। इसलिये मैं चौधरी को फिर अपना मोह–जाल माँ पर बिछाने नहीं दूँगी।"

"मेरे मन में तो लालच आ गया था।"

"क्या लालच आ गया था?"

"पाकिस्तान से सम्बन्ध बनाऊँ और उसकी कुछ मदद कर दूँ।"

"वह तो बिना लालच के भी की जा सकती है।"

"क्या फायदा?"

"फायदा हो सकता है, मगर लालच करना तो ठीक नहीं।"

"फायदे का ही तो लालच है?"

"जी नहीं। फायदा तो काम करने का अपने–आप होता है। लालच है किसी बात के लिये चाह न करनी और उसके लिये कोशिश करनी।"

"जब लालच होता है तो कोशिश गलत तरीके पर भी हो जाती है।"

"मुझे इतनी बारीकी में जाने की आदत नहीं।"

"तो आप किसी वक्त बहुत बुरी तरह फँस जायेंगे।"

"लाहौलबिला। खुदा का नाम लो, मरियम।"

मरियम मुस्कुरायी और बोली, "आपसे मेरी एक शर्त यह भी है कि हम मियाँ–बीबी नाम के ही हैं।"

"हाँ। मगर यह राज कि हमारी शादी नहीं हुई किसी को भी पता नहीं होना चाहिए।"

"मैं आज रात अपने बेडरूम में नहीं सोऊँगी।"

"अरे, यह क्यों?"

"बस, मैंने आपको बता दिया है।"

"मगर इससे तो हमारा राज खुल जायेगा।"

"नहीं। सिर्फ यह समझा जायेगा कि एक बूढ़े खाविन्द की बीबी तफरीह के लिए कोशिश कर रही है।"

"देख लो। यदि कुछ गड़बड़ी हुई तो सात साल की कैद की सजा होगी।"

"मेरे किये से कुछ नहीं होगा। आप खुद खबरदार रहियेगा।"

शमशाद को शक हो रहा था कि चौधरी इश्तियाक हुसैन से यह किसी किस्म का ताल्लुक बनाने जा रही है। मगर वह देख रहा था कि उसके सामने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो उसका सलूक चौधरी से बिल्कुल ठंडा था।

शमशाद और मरियम दोनों सोने के लिये अपने–अपने कमरे में चले गये।

रात को शमशाद कारणवश उठा तो उसने मरियम के कमरे में जाकर देखा। दरवाजा खुला था। वह भीतर चला गया। उसने देखा कि मरियम का पलंग खाली है। वह बहुत देर तक निहारता रहा और फिर अपने कमरे में जा सो गया। सुबह पौ फटते उसकी नींद खुली तो उसने पुनः मरियम के कमरे में जाकर देखा। मरियम गहरी नींद सो रही थी। वह तो गुसल के लिये चला गया। मरियम आठ बजे उठी और ब्रेकफास्ट के लिये तैयार हो गयी।

शमशाद तो सफारतखाने के दफ्तर में चला गया और मरियम खाना खा पुनः सो गयी। बात मध्याह्न में खाने के समय हुई। शमशाद ने पूछ लिया, "बेगम, रात कैसी गुजरी।"

"बहुत मजे में।"

"किसके साथ?"

"बताने की इजाजत नहीं।"

"क्या मिला?"

"अभी कुछ नहीं। जो कुछ मिलेगा कुछ दिन के बाद पता चल जायेगा।"

इसके बाद मरियम सप्ताह में दो बार बेडरूम से गायब रहने लगी। इतनी बात थी कि वह शमशाद को बताकर जाती थी। साथ ही जाने और आने के समय का शमशाद को पता नहीं चलता था।

शमशाद को उसके साथी के विषय में शक करने का अवसर मिला। जब मरियम ने एक महीने के उपरान्त सरकारी डाक के थैले में एक बन्द लिफाफा अपनी माँ के नाम भेजा। यह लिफाफा डाक में जा रहा था तो शमशाद से चोरी, परन्तु शमशाद एक चिट्ठी शमा के नाम डाक के थैले में डालने गया तो डाक में एक मोटा–सा लिफाफा फ्लेरा बर्न के नाम का देख उसने उसे उठा लिया। पत्र मुहरबन्द था। शमशाद ने टोह कर देखा तो शक हो गया कि बीच में करेन्सी नोट हैं। एकदम उसे ख्याल आया कि मरियम कुछ रुपये अपनी माँ को भेज रही है। जो रुपये वह अपने वेतन से बचाया करता था, वह तो तीन दिन पहले भेजे थे। वह चिट्ठी को हाथ में पकड़े विचार कर रहा था। क्लर्क ने चिट्ठी शमशाद के हाथ से ले ली और थैले में रखकर कहा, "विनोद बाबू ने इसको भेजा है।"

"तो यह मेरी बीबी की चिट्ठी नहीं है?" शमशाद ने पूछा।

"किसकी है। यह तो मैं जानता नहीं, मगर विनोद साहब ने मुझे दिया है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और इसको नई दिल्ली के डाकखाने से डाक में रजिस्ट्री कराने के लिए कहा है। यह सरकारी खर्च पर रजिस्ट्री होगी।''

शमशाद को यह एक नयी बात पता चली। उसको विनोद और मरियम में विशेष सम्बम्धों का पता चला। यह स्वाभाविक ही था कि विनोद पर उसके राज का साथी होने का सन्देह किया जाये।

उसने क्लर्क से तो कुछ नहीं कहा, परन्तु वह इस सम्बन्ध में मरियम से पूछने की योजना बनाने लगा।

उस रात मरियम ने फिर कहा, ''मैं रात अपने काम पर जा रही हूँ।''

''तो तुम को विनोद मुझसे ज्यादा पसन्द है?'' अकस्मात बिना विचार किये शमशाद के मुख से निकल गया।

मरियम इससे चौंक उठी और विस्मय में शमशाद का मुख देखने लगी। यह घबराहट और विस्मय एक–दो क्षण तक ही रहा। तुरन्त उसने अपने को काबू में करते हुए कहा, ''यह आपके जानने का विषय नहीं है।''

''पर मैं जान गया हूँ।''

''तो मेरी बात मानिये। अपनी जबान पर काबू रखिये। नहीं तो यह सौदा बहुत महँगा पड़ेगा।''

''तो तुम से भी बात न करूँ?''

''बात बिना बोले हो नहीं सकती और आवाज तो दीवारें भी सुन कर कहीं उगल सकती हैं।''

''मरियम, तुम्हारी माँ कब तक आने वाली है?'' शमशाद ने बात बदल दी।

''मैंने उसको लिख दिया है कि वह यहाँ न आये। यहाँ की हवा उसके माफिक नहीं रहेगी।''

''मैं तो यह समझ रहा था कि तुमने चौधरी साहब की राय मान ली होगी।''

''माँ को यहाँ आने से मना करने में चौधरी भी एक सबब है।''

शमशाद ने मन में विचार किया कि मरियम के चोरी–चोरी रात को जाने का स्थान ढूँढ़ना चाहिए। आज उसने सोने से पहिले की शराब नहीं पी। प्रायः वह रोज सोने के लिए एक–दो पैग ले लिया करता था। आज उसने पहिले ही बोतल में एयरटिड वाटर डाल रखा था। मरियम तो रात को पीती नहीं थी और शमशाद सोने से पहिले लेता था। इससे उसको नींद बहुत अच्छी आ जाती थी। आज उसने पानी पीकर सन्तोष कर लिया।

लेटकर उसने आँखें मूँद लीं। आधा घंटा यह नाटक उसे करना पड़ा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मरियम उठी और कपड़े बदल सोने के कमरे से निकल गयी। यह उसके अनुमान के विपरीत था। यदि सफारतखाने में ही विनोद अथवा किसी अन्य के कमरे में जाना था तो कपड़े बदलने की क्या आवश्यकता थी? मरियम ने अपने कमरे से निकल सफारतखाने के बाहर को पाँव कर लिए। शमशाद अपनी रात की सोने की पोशाक में नंगे पाँव उसका पीछा कर रहा था। वह अपने कमरे से बाहर निकला तो आगे उसका पीछा नहीं कर सका। मरियम सफारतखाने के द्वार की तरफ जा रही थी। वह कमरे के बाहर बरामदे में खड़ा उसे देखता रहा। द्वार के पास जाकर उसने अपने पर्स में से कुछ निकाल कर दरबान को दिखाया। दरबान ने द्वार खोल दिया और वह बाहर निकल गयी।

शमशाद अपने सोने के कमरे में लौट आया। उसने अपने को सुलाने के लिये अपनी 'शेरी' की बोतल निकाल ली और उसमें से डबल डोज लेकर सो गया।

: 3 :

शमशाद एक बात समझ गया था कि वह सफारतखाने के अधिकारियों की जानकारी से कहीं जाती है। उसके पास रात के समय बाहर जाने का परमिट है। उसका विचार था कि वही परमिट उसने दरबान को दिखाया होगा।

इसपर भी वह इसका तारतम्य पा नहीं सका। उसने विनोद से मेल-जोल बढ़ाने का यत्न किया! विनोद कश्यप हाई कमिश्नर साहब का प्राइवेट सेक्रेटरी था। वह हाई कमिश्नर का विश्वासपात्र व्यक्ति था। यह समझा जा रहा था कि हाई कमिश्नर साहब का कौई सम्बन्धी भी है।

विनोद कार्यालय के समय प्रायः हाई कमिश्नर के पास काम पूछने के लिए रहता था। जब वह कभी घूमने के लिए जाते थे तो वह साथ जाता था। और उनका पत्र-व्यवहार किया करता था।

इस सब काम के होते हुए भी उसके पास समय बहुत रहता था और वह अपने कमरे में बैठा पुस्तकें पढ़ा करता था। शमशाद ने भी पढ़ने का स्वभाव बना लिया और विनोद से कोई पुस्तक माँगने वह वहाँ पहुँच जाता था।

उक्त घटना के कई दिन पीछे शमशाद विनोद के कमरे में गया तो मरियम हाई कमिश्नर के कमरे से निकली और कश्यप की ओर मुस्कुरा कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखने लगी। वहाँ शमशाद को बैठा देख वह भी वहाँ आ गयी।

विनोद ने मुस्कुरा कर मरियम की ओर देखा और पूछ लिया, मिसेज कुरैशी! आज सायंकाल चाय लेने का अवकाश होगा।"

"हाँ, अगर आप मिस्टर कुरैशी को भी दावत दें तो?"

"मैं यही विचार कर रहा था कि आप दोनों को निमंत्रण दूँ?"

"मगर ये तो आज चौधरी इश्तियाक हुसैन के साथ कहीं जा रहे हैं?"

"क्यों जी, यह ठीक है क्या?" मरियम ने शमशाद से पूछ लिया। शमशाद समझ नहीं सका कि कश्यप उसका कार्यक्रम कैसे जानता है। यह बात तो उसने मरियम को भी नहीं बताई थी।

शमशाद को चुप और परेशान देख मरियम ने कह दिया, "अगर ये नहीं आ सकते तो चाय किसी और दिन कर दीजिये?"

"चाय तो आज ही होगी और मिस्टर कुरैशी मेरी चाय को चौधरी के साथ कराची के किसी 'ब्रोथल' में जाने पर तरजीह देंगे।"

बात ठीक थी। इस कारण शमशाद ने कह दिया, "अगरचे ब्रोथल' की बात गलत है। इस पर भी कश्यप साहब ठीक समझते हैं कि मैं उनकी चाय को चौधरी पर तरजीह देता हूँ।"

"तब तो बात बन गयी।" कश्यप ने कह दिया– "आप दोनों यहीं मेरे कमरे में चाय लेंगे और चाय के बाद हम सफारतखाने में भारत के प्राइम मिनिस्टर के महात्मा बुद्ध की अस्थियों के जलूस में सम्मिलित होने की फिल्म देखेंगे।

चाय पर तो कुछ खास बात नहीं हुई। विनोद की पत्नी दिल्ली में थी। इस कारण एक औरत, दो पुरुषों के भीतर, एक पैंसठ वर्ष का और दूसरा पैंतीस वर्ष का, बातों को भली–भाँति चला नहीं सकी। मगर कश्यप का इस चाय में अपना एक मतलब था। वह था शमशाद को चौधरी से मिलने से रोकने का। उसने अपना एक भेदिया 'सेसिल' होटल में भेज यह जानने का यत्न किया था कि चौधरी को शमशाद से क्या काम है और वे कहाँ जाने वाले हैं।

विनोद ने मरियम को प्रसन्न करने का यत्न किया। उसने मरियम को अपने अंग्रेजी काल की नौकरी के दिनों की कथा सुनानी आरम्भ कर दी। विनोद कश्यप बता रहा था– "एक सरकारी कर्मचारी उस काल में तो राजनीति से बिलकुल अनभिज्ञ समझा जाता था। मैं इंडियन स्टेट डिपार्टमेंट के सेक्रेटरी के कार्यालय में नौकर था। सेक्रेटरी प्रायः अपने अधीन काम करने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
वाले की जाँच–पड़ताल करते– रहते थे और जो राजनीति में सबसे अधिक मूर्ख होता था, वह एक योग्य क्लर्क समझ जाता था।

"जब चैम्बरज ऑफ प्रिंसेस बना तो सेक्रेटरी मुझसे पूछने लगा, 'मिस्टर कश्यप! इस चैम्बर के विषय में तुम क्या समझते हो?' मैंने कह दिया, 'मैं समझता हूँ कि न खुदा ही मिला न विसाले सनम। इन मूर्खों से अंग्रेजी सरकार कुछ भी प्राप्त नहीं करेगी।'

"सेक्रेटरी ने मुस्कुराते हुए कहा, 'मैं सरकार की बात नहीं पूछ रहा। मैं हिन्दुस्तान की बात पूछता हूँ।'

"मैंने कह दिया, 'वह मैं जानता नहीं। जब से अंग्रेजों ने हिन्दुस्तान का राज्य सँभाला है हमने निश्चिन्त हो इसके विषय में सोचना बन्द कर दिया है।'

"यह मैं नहीं जानता कि वह मुझको मूर्ख समझा था या खुशामदी। इतना मैं जानता हूँ कि जब तक मैं वहाँ रहा, मेरे साथ बहुत अच्छा व्यवहार किया गया था।

"हकीकत यह थी कि उस समय एक खापर्ड़े नाम के काउन्सिलर थे। मैं उनको अपने महकमे की सब खबरें दिया करता था। और वे उससे अंग्रेजी सरकार का नाक में दम किया करते थे।"

"परन्तु क्या अब भी आप ऐसा ही समझते हैं?" मरियम ने पूछा।

"अब तो मैं राजनीति में खेलता हूँ। इसमें विचारयुक्त भाग लेता हूँ। और अपनी सरकार के लिये एक उपकारी कार्य कर रहा हूँ।"

शमशाद चाहता था कि कश्यप उस उपकारी कार्य का भी उल्लेख करे जो वह आज कर रहा था। परन्तु कश्यप ने चाय समाप्त कर दी। उसने कह दिया, "आइये 'औपरेटर' हमारी प्रतीक्षा कर रहा है। और यह फिल्म हाईकमिश्नर साहब भी देख रहे हैं।"

रात को शमशाद ने पूछ लिया, "मरियम! आज की चाय कैसी रही?"

"बोरिंग।"[1]

"मैं भी समझता हूँ कि मेरा वक्त बरबाद हुआ है। मगर मरियम डीयर, यह कश्यप मेरे बारे में बहुत देख–रेख रखता लगता है?"

"मैंने एक षड्यन्त्र का पता किया है और उसके बदले में मुझे भारी इनाम मिला है।"

---

1. थका देने वाली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शमशाद अवाक् बैठा रह गया। एकाएक उसको ध्यान हो आया कि इस महीने की पहली तारीख को एक लिफाफा उसकी माँ के नाम की डाक में था। उसमें नोट भरे लगते थे। इस कारण उसने पूछ लिया, "इस इनाम में से कितना अपनी माँ को भेज चुकी हो?"

"माँ को? भला उसको क्यों भेजूँगी?"

"तो वह भारी इनाम की रकम कहाँ गई?"

"वह मैंने सफारतखाने के कार्यालय में जमा करा दी है। जब आवश्यकता होगी निकलवा लूँगी।"

"उसमें से कुछ मुझे भी मिल जाये?"

"परन्तु आपको रुपयों की कुछ कमी है क्या?"

"बारह सौ मिलता है उसमें से दो सौ रुपया तुम्हारी माँ को और पाँच सौ तुमको दे देता हूँ। तीन सौ के लगभग यहाँ खाने तथा रहने में खर्च हो जाता है। बाकी दो सौ में क्या बनता है?"

"और जो चौधरी से वक्त–बेवक्त मिलता है?"

"तो तुम मुझपर जासूसी करती हो?"

"करती नहीं। हो गई है। हाँ, मैं जिस काम में लगी थी, उसके दौरान में ही पता चला है कि आपको चौधरी साहब मालामाल कर रहे हैं।"

शमशाद परेशानी अनुभव करता हआ मरियम का मुख देखता रह गया। मरियम मुस्कुराती रही। आखिर शमशाद ने कहा, "मैं तुमको अपनी बीवी बना यहाँ इस वास्ते लाया था कि अमीर हो जाऊँगा। मगर मैं तो वहीं का वहीं, मस्जिद का चूहा ही रहा हूँ और तुम पैसा पैदा कर रही हो।"

"इसको किस्मत कहते हैं। मेरी वजह से न सही, मगर कराची आने पर आपकी माली हालत अच्छी हुई है।"

"मैं अब समझा हूँ कि भाड़े पर बीवी रखने से कुछ भी फायदा नहीं होता?"

"मैंने आपको नहीं कहा था कि आप मुझे भाड़े पर यहाँ लायें। यह आपकी तजवीज थी। मैं मान गई थी। इसमें कारण यह था कि मैं एक तरह से जीवन में चंचलता अनुभव करती थी। और आशा करती थी कि यह चंचलता इस नये जीवन में शांत हो सकेगी। यह चंचलता सेक्स की नहीं थी। इनके लिए तो साधन नई दिल्ली अनेक मिलते थे। मैं अपने मन की चंचलता को समझ नहीं सकी। आपके साथ तो जीवन में बदल की उम्मीद में ही आई थी। यह तो यहाँ आकर विनोदजी ने एक सुझाव दिया और मैं उसमें रुचि लेने लगी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और एक महीना यह काम करने पर ही मैं अब इस काम में जल में मछली की तरह विचरने लगी हूँ।''

''वह क्या काम है। कुछ मुझे भी बता दो?''

''इजाजत नहीं।''

''देखो मरियम। मेरी एक शादीशुदा बीवी भी है। वह मुस्लिम लीग में काम करती थी और मैं कांग्रेस में काम करता था। दोनों में भारी तनाव चल रहा था। इसपर भी हम रात को जब इकट्ठे सोते थे तो दोनों के राज एक–दूसरे को बता देते थे। हमारा यह कहना था कि खाविंद बीवी में आपस में कोई राज नहीं होना चाहिए।''

''यह ठीक है। मगर हम तो उस तरह से खाविंद बीवी हैं नहीं। हम रात को एक ही बिस्तर पर सोते नहीं। इसलिये यह मिसाल मेरे और आपके ऊपर लागू होती नहीं।''

शमशाद ने कह दिया, ''मेरी एक तजबीज है कि हम उस 'ट्रेडीशनल' (परम्परागत), तरीके से खाविंद बीवी बन जायें तो ज्यादा सुखी रहेंगे।

मरियम हँस पड़ी और बोली, ''मैं एंग्लो इण्डियन औरत हूँ। मुझपर असर योरोपियन ख्यालात का है। आप पहले मुझको 'वू' (शादी के लिए प्रेरणा) करें। जब आप मुझको उस ट्रेडीशनल तरीके से शादी के लिए राजी कर लेंगे तो फिर गिरजाघर में चलकर शादी होगी। वहाँ आपको सौगन्धपूर्वक यह कहना पड़ेगा कि आपकी कोई बीवी जिन्दा नहीं। तब शादी होगी और समय पा कर हमारा लगाव अधिक होगा। तब आपमें और मुझमें कोई राज नहीं रहेगा।''

शमशाद चुप रहा।

: 4 :

शमशाद को कराची में आये एक वर्ष से ऊपर हो गया था। इस काल में पाकिस्तान और भारत के सम्बन्धों में भारी अन्तर पड़ चुका था और कश्मीर में युद्ध–विराम हो चुका था। शमशाद पाकिस्तान के लोगों से कल्चरल सम्बन्ध बनाने के बहाने पाकिस्तान के रईसों और उमरावों से मिलता रहता था। अपने कार्यालय में उसकी मान–प्रतिष्ठा नहीं थी। इस पर भी उसको सहन किया जा रहा था इस कारण कि उसकी बीवी मरियम कुरैशी सफारतखाने की बहुत सहायता कर रही थी।

संयुक्त राष्ट्रसंघ में कश्मीर का मसला जाने से पहले कराची के हाई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कमिश्नर ने एक लम्बा विवरण लिखा था। इसमें उसने स्पष्ट किया था कि किस प्रकार लियाकत अली साहब अंग्रेजी सरकार से मिलकर संयुक्त राष्ट्र संघ की सुरक्षा परिषद के सदस्यों को अपनी ओर कर चुके हैं। लियाकत साहब को विश्वास था कि भारत सरकार अब इस मुआमले को सुरक्षा परिषद में ले जायेगी।

हाई कमिश्नर का कहना था कि भारत सरकार के लिए अपने मुआमले को सुरक्षा परिषद में नहीं ले जाना चाहिए। वहाँ इसे सफलता नहीं मिलेगी। उस परिषद के सामने शेख भारत सरकार से विद्रोह करेगा।

इस पत्र के साथ ब्रिटिश सफारतखाने से प्राप्त पत्रों की नकलें भेजी थीं और अपना विचार पुष्ट किया गया था।

यह पूर्ण षड्यन्त्र मरियम से पता किया था और उसके द्वारा एक लाख रुपये से ऊपर व्यय हुआ था। इन रुपयों में लगभग तीस हजार रुपया मरियम को इस पूर्ण परिश्रम के लिये दिया गया था।

इस पत्र के रहस्योद्घाटन के उपरांत भी सुरक्षा परिषद् में कश्मीर का विषय ले जाया गया और उसमें जो कुछ भारत सरकार चाहती थी वह नहीं हुआ।

भारत के हाई कमिश्नर को एक दिन नई दिल्ली से एक सन्देश मिला। वह उसे पढ़ परेशानी अनुभव करने लगा। एकाएक उसके मन में एक बात आई और उसने घंटी बजाई। बाहर के कमरे में विनोद बैठा कुछ पत्र टाइप कर रहा था। वह घंटी की आवाज सुन हाई कमिश्नर साहब के कमरे में आ गया।

हाई कमिश्नर ने कहा, "विनोद, इधर आओ।"

विनोद समीप आ खड़ा हुआ। हाई कमिश्नर ने कहा, "मुझको नई दिल्ली बुलाया गया है। मैं समझता हूँ कि मुझे इस काम के नाकाबिल समझकर वापिस बुलाया गया है। इसलिए मैं अब कराची वापिस नहीं आऊँगा। मेरे पर्सनल कागज तुम समेटकर बन्द कर दो।"

विनोद इस आज्ञा पर पूछने लगा, "यह सब आपका अनुमान है क्या?"

"देखो विनोद, मैं अपने प्रधानमन्त्री के स्वभाव को जानता हूँ, हमने शमशाद कुरैशी को निकाल देने के लिए कहा था। वह बात नहीं मानी गई। हमने राजनीतिक सुझाव दिये थे। उनसे सब कुछ उलटा किया गया। मैंने दो महीने हुए यह लिखा था कि हमने प्रमाण सहित यह सूचना भेजी थी कि सिक्युरिटी काउन्सिल भारत के विरुद्ध हैं। वह विरुद्ध इसलिए नहीं कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत ने कोई अन्तर्राष्ट्रीय व्यवहार गलत किया है। वे लोग भारत के विरुद्ध इसलिए हैं कि हिन्दुओं के विरुद्ध योरुप में एक विषाक्त वातावरण बनाया जा चुका था। वह विषाक्त वातावरण कुछ तो ईसाइयों ने, कुछ अंग्रेजी सरकार ने और एक सीमा तक अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त किये हिन्दुओं ने ही बनाया है। इस वातावरण में योरुप समझता है कि हिन्दू एक प्लेग का चूहा है। इसे समाप्त कर देना चाहिए। इस कारण जिस किसी भी काम से हिन्दुओं का संसार में नाम उज्ज्वल होगा उसको ये गोरे लोग पसन्द नहीं करते।

"मेरे इस पत्र का उत्तर आज आया है और कहा है कि मैं बूढ़ा हो गया हूँ। मैं दुनिया के 'मॉडर्न ट्रेंड' समझ नहीं सकता। प्रधानमंत्री मुझसे खुद बात करना चाहते हैं। इस कारण मुझे शीघ्रातिशीघ्र दिल्ली पहुँचकर उससे मिलना चाहिए।"

विनोद ने कह दिया, "मैं अपकी छुट्टी का प्रार्थनापत्र अभी दे रहा हूँ। परन्तु मरियम बेचारी मारी जायेगी।"

"उसका पासपोर्ट बनाकर उसे स्विट्जरलैंड भेज दो।"

"वह अपनी माँ के पास दिल्ली जाना चाहेगी?"

इसपर हाई कमिश्नर ने आँखें मूँदकर कुछ विचार किया और फिर कह दिया, "उसे दिल्ली पहुँचा दो। यहाँ उसकी हत्या हो जायेगी।"

: 5 :

इसके दूसरे दिन की बात है, शमशाद मध्याह्न के भोजन के समय आया तो उसने मरियम को अपना सूटकेस ठीक करते देख पूछ लिया, "बेगम, किधर की तैयारी है?"

"स्विट्जरलैंड की।"

"अरे यह क्यों?"

"हुक्म है?"

"किसका?"

"जिनके लिए मैं पिछले डेढ़ वर्ष से काम कर रही थी।"

इसपर शमशाद ने समीप ही कुर्सी खिसका, उसपर बैठते हुए पूछ लिया, "अकेली ही या खाविंद को भी साथ ले जा रही हो?"

"मियाँ कुरैशी को अपने हाकिमों से इजाजत लेनी चाहिए।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो मैं छुट्टी के लिए दरख्वास्त देता हूँ। कितने अर्से के लिए छुट्टी माँगूँ?"

"जितने अर्से के लिये मिल सके। शायद वापस लौटकर न आना हो तो गुजर कैसे होगी?"

"यह तो आपको बताना होगा। मेरा आपसे कॉन्ट्रैक्ट इतना है कि दो सौ रुपया माँ को और पाँच सौ रुपया मुझको मिलेगा। नहीं मिलेगा तो कॉन्ट्रैक्ट टूट जायेगा। और तब.....।"

"तब क्या?"

"मैं अपनी माँ के घर लौट जाऊँगी।"

"पर बेगम, तुमने अभी तक कुछ पैदा नहीं किया? क्या फोकट में ही काम कर रही हो और अब स्विट्जरलैंड भी फोकट में ही जा रही हो?"

"हमारे कॉन्ट्रैक्ट में मेरी आमदनी का जिक्र नहीं था।"

"मगर मैं तो यह जानता था कि तुम एक बेकार की औरत हो। अगर मालूम होता कि तुम भी कुछ आमदनी कर सकती हो तो यह लेने–देने की बात दोनों तरफ से होती।"

"मैं बेकार जरूर थी। मगर इसलिए नहीं कि मुझमें किसी काम की काबलियत नहीं थी। बात यह थी कि मुझमें कई किस्म के गुण थे। उनमें से एक ही आपने देखा। वह मेरी जिस्मानी खूबसूरती थी। उसका दाम आपने देना कबूल किया। मेरी खूबसूरती कुछ दूसरे ने भी देखी थी, मगर वह इसका इस्तेमाल मुझसे 'सेक्सुअल रिलेशन' बनाना समझते थे। मुझे यह पसन्द नहीं था। आपने मेरी खूबसूरती का इस्तेमाल नौकरी हासिल करने में किया। मैंने इसमें आपकी मदद की और अपने इस वसफ से आपकी अभी तक मदद करने की कोशिश की। इसलिए उस मदद का दाम वसूल कर रही हूँ।

"मुझमें एक और वसफ भी था। वह मिस्टर विनोद ने पता किया और उसको उन्होंने खरीद लिया। उससे मुझको आमदन हुई है, मगर उस वसफ का इस वसफ से जो आपने खरीदा है, कोई ताल्लुक नहीं।"

"मगर जब तुम स्विट्जरलैंड चली जाओगी तो मेरी खूबसूरत बीवी यहाँ न होने से मेरा काम छूट भी सकता है।"

"जो लोग मुझको स्विट्जरलैंड भेज रहे हैं, वे आपको इस काम से निकालेंगे नहीं। अगर उन्होंने निकालने का ख्याल जाहिर किया तो मुझे लिखिएगा। मैं आपको तलाक दे दूँगी और आप किसी दूसरी खूबसूरत औरत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
को यहाँ ले आइयेगा। मैं आपका काम छोड़ने के लिए एक महीने का नोटिस दे दूँगी।''

''यह छोड़ने की बात तो हमारे कान्ट्रैक्ट में नहीं थी।''

''मैं छोड़ भी तो नहीं रही। यह तो आपको मुझे छोड़ने में सुविधा बना रही हूँ।''

''पर छोड़कर तो जा रही हो। अगर मेरी नौकरी छूटने का डर हुआ तो तुमको लौटकर आ जाना चाहिए।''

मरियम ने कुछ विचार किया और कह दिया, ''ठीक है। ऐसी हालत पर मैं लौट आऊँगी।''

''तो मैं विनोद जी से इस बात का अभी फैसला कर लेता हूँ।''

''कर लीजिये। वे आपको सब बात समझा देंगे।''

शमशाद मध्याह्नोत्तर तीन बजे के लगभग हाई कमिश्नर के प्राइवेट सेक्रेटरी के कार्यालय में जा पहुँचा। वहाँ का दृश्य देख वह चकित रह गया। विनोद कश्यप की मेज साफ थीं। अलमारी की पुस्तकें एक लकड़ी के केस में बन्द की जा रही थीं। विनोद खड़ा उनके बन्द होने को देख रहा था। शमशाद ने छूटते ही पूछा, ''आप भी स्विट्जरलैंड जा रहे हैं क्या?''

''स्विट्जरलैंड कौन जा रहा है?''

''मिसेज कुरैशी जा रही हैं।''

''ओह हाँ।'' विनोद की बात समझ में आ गयी। वह समझ गया कि मरियम ने अपने पति को अपने जाने का स्थान स्विट्जरलैंड बताया है। इस पर उसने तुरन्त बात बना कर कह दिया, ''वह मेरे अधीन काम नहीं कर रहीं।''

''तो किसके अधीन काम कर रही हैं?''

''नई दिल्ली से एक विशेष गुप्त मिशन आया हुआ है।''

''पहिले तो आपके हुक्म से काम कर रही थीं।''

''हाँ, मगर वह बात पुरानी हो चुकी है। अब कुछ दिनों से एक–दूसरे साहब यहाँ आये हुए हैं। वह उनके साथ काम करती हैं।''

''तो कश्यप साहब कहाँ जा रहे हैं?''

''भाई, मैं नहीं जा रहा। यह तो कमिश्नर साहब दिल्ली जा रहे हैं। यह उनका सामान पैक हो रहा है। उनका ख्याल है कि उन्हें किसी दूसरे मुल्क में भेजा जा रहा है।''

''तो हुजूर वाला?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं अभी तो उनके साथ दिल्ली जा रहा हूँ। वहाँ मुख्य–कार्यालय में रखा जाऊँगा अथवा किसी नये आने वाले कमिश्नर के साथ यहाँ भेज दिया जाऊँगा।"

"आज चाय का कार्यक्रम है कहीं?"

"नहीं। आज तो मैं कमिश्नर साहब के साथ एक जगह जा रहा हूँ।"

"वे कहाँ जा रहे हैं?"

"इन्होंने दिल्ली से पूछा है कि कब छुट्टी मिल सकती है। आशा है आज रात तक या कल तक उत्तर आ जायेगा और शीघ्र ही जाने का कार्यक्रम होगा।"

"और मिसेज कुरैशी कब जा रही हैं?"

"यह मुझे पता नहीं। कल मेरे साथ और चौधरी इश्तियाक हुसैन साहब के साथ सेसिल में चाय ले रही हैं।"

"होस्ट कौन हैं?"

"चौधरी साहब।"

"तो मैं उनसे अपने लिये भी दावतनामा वसूल करता हूँ।"

"मुझको इससे प्रसन्नता होगी।"

शमशाद ने साथ के कमरे में जा चौधरी को टेलीफोन कर दिया। चौधरी बोला तो उसने पूछ लिया, "चौधरी साहब, कल वाली चाय पार्टी कैसी है?"

"भाई, तुम्हरी बीवी कहीं दूसरे मुल्क में जा रही है। इस वास्ते मैंने उसको चाय पर बुलाया तो वह बोली कि कल वह मिस्टर विनोद कश्यप के साथ चाय ले रही है। इस पर मैंने दोनों को बुला लिया है। मगर मिस्टर कुरैशी! तुम तो आज ही मेरे साथ चाय ले सकते हो।"

"कुछ मतलब हल होता हो तो चाय की बात भी हो सकती है?"

"तुम गधे के गधे ही रहे। भारत के सफारतखाने में और हो भी क्या सकते हो?"

"तो आऊँगा।"

"हाँ अब ठीक है। एक–आध ठोकर लगने पर गधे को भी अक्ल आ जाती है।"

चौधरी के साथ चाय लेने जाने के पहिले शमशाद अपनी बीवी को देखने गया। उसका ख्याल था कि उसको साथ लेता चले। मगर वह वहाँ थी नहीं और उसका बँधा सूटकेस भी लापता था।

एक क्षण तक शमशाद सोचता रहा कि क्या हुआ है मरियम को। घड़ी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में समय देख वह सफारतखाने से निकला और टैक्सी लेकर सेसिल की ओर चल पड़ा।

सेसिल में चौधरी एक कोने की मेज पर बैठा उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। शमशाद ने सलामालैकुम अर्ज की। चौधरी ने पहली बात यह कही, "तुम मतलब की बात टेलीफोन पर ही करने लगते हो। जानते हो टेलीफोन विशेष रूप में भारत के सफारतखाने का, हमारे खुफिया डिपार्टमेंट के लोग सुनते रहते हैं।"

"तो तुम्हारी बात भी सुनते हैं वे?"

"मगर बात तो तुम कर रहे थे। अच्छा, यह बताओ, तुम्हारी बीवी की मुहब्बत विनोद से बहुत होती जा रही है?"

"कुछ ऐसा ही मालूम हो रहा है।"

"देखो, मरियम को कुछ ऐसी बातें मालूम हो गई हैं जिनसे इंग्लैंड का हाई कमिश्नर पाकिस्तान से नाराज हो रहा है। मैं कल उसको वही राज की बातें किसी से न कहने के बारे में कहने वाला था। वह यहाँ तो अकेली मिलने आ नहीं रही। वह कहाँ और कब जा रही है?"

"बता सकता हूँ मगर..."

"मगर क्या?"

"एक सौ रुपया इस वाकफियत के लिये।"

"सारी बात बताओ तो यह सौ रुपया कमा सकते हो। बात यह है कि हम मरियम को पाकिस्तान की मुलजिम बनाना चाहते हैं।"

"बहुत मुश्किल है।"

"कुछ मुश्किल नहीं। हर एक की अपनी–अपनी कीमत है। उसकी कीमत जानने के लिये मैंने उसे चाय पर बुलाया था। मगर वह अकेली आ नहीं रही।"

"तो मेरी वाकफियत के लिये सिर्फ एक सौ रुपया? बस मेरी यही कीमत लगायी है?"

"कुरैशी! यह तो फोकट में ही है। इतना कुछ तो हम हवाई अड्डे से पता कर सकते हैं।"

"मुझे बताने में एतराज नहीं। वह स्विट्जरलैंड जा रही है। एक बात और है कि हमारे हाई कमिश्नर साहब वापिस दिल्ली जा रहे हैं। ऐसा मालूम होता है कि वे वापिस कराची लौटकर नहीं आयेंगे। मुझे शक हो रहा है कि वे भी स्विट्जरलैंड ही जा रहे होंगे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"वहाँ क्या करेंगे जाकर?"

"यह तो कोरा ख्याल ही है। तय यह है कि वे अपना सब साजो–सामान बाँध कर दिल्ली जा रहे हैं।"

चौधरी ने चाय का आर्डर तो शमशाद के आने से पहिले ही दे दिया था। इस समय बैरा चाय और कबाब ले आया। वह सामान सजा कर गया तो चौधरी ने कह दिया, "हाँ अब यह सौ रुपया हलाल का समझा जा सकता है।" इतना कह चौधरी ने जेब से अपना पर्स निकाला और सौ रुपये का पाकिस्तानी नोट निकालकर शमशाद को दे दिया। तत्पश्चात् उसने पूछ लिया, "यह विनोद भी साथ ही जा रहा है?"

"हाँ। मगर वह नये कमिश्नर के साथ वापिस आ भी सकता है।"

"यह बहुत ही चालाक बन रहा है।"

"क्या चालाकी की है इसने?"

"इसने मरियम को हमारे करीब नहीं फटकने दिया। इसने ऐसा जादू किया है उस पर कि वह मेरी सब पेशको नामंजूर करती रही है।"

"तो तुम भी मेरी बीवी पर नजर रखते हो?"

"अरे भाई कुरैशी! एक उनतीस–तीस साल की छोकरी पैंसठ साल के बूढ़े के पास तो रह नहीं सकती थी। मैं हैरान था कि वह इतनी पारसा[1] कैसे हो गयी। यह तो मुझे पिछले हफ्ता मालूम हुआ है कि विनोद की बीवी उसके साथ नहीं और वह रात को अपने बेडरूम से निकल उसके बेडरूम में चली जाती है।"

"मैंने उसको कहीं और जाते देखा है।"

"जरूर तुमको धोखा दिया गया है।"

"तो तुम्हारे पास कोई पक्का सबूत है?"

"सबूत तो निकल आयेंगे। एक–दो हफ्ते भारी चहल–पहल रहेगी।"

"क्या चहल–पहल रहेगी?"

"अगर फिर कह दूँ कि गधे ही हो तो कुछ गलत नहीं होगा।"

शमशाद चाय पीता हुआ इसको सोचता रहा। चौधरी ने पूछ लिया, "तो वे दोनों कल इकट्ठे जायेंगे?"

"विनोद की बात से तो यही मालूम होता था।"

इस पर चौधरी गम्भीर विचार में मग्न हो चाय पीता रहा। शमशाद प्रसन्न

---

1. पवित्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था कि वह एक सौ रुपया कमा कर ले जा रहा है।

सायंकाल वह घर पहुँचा तो मरियम अपने पलंग पर लेटी थी। शमशाद ने चिन्ता व्यक्त कर कहा, "क्या है बेगम, जो इस वक्त लेट रही हो?"

"सामान बटोरते हुए कुछ थक गयी थी।"

"तुम्हारा सूटकेस कहाँ है?"

"वह तो गया। मैंने रास्ते में इस्तेमाल का सामान अटैची–केस और हैंड–बेग में रख लिया है। सूटकेस बुक करा दिया है।"

"तो कब जाने का ख्याल है?"

"कल चौधरी साहब की चाय पार्टी से सीधी एयरोड्रोम जा रही हूँ।"

"तो मैं एयरोड्रम तक तुम को छोड़ने जाऊँगा।"

"जी नहीं। मैं आपसे कल यहीं पर से विदा लूँगी।"

इस रात भी मरियम ने कह दिया, "मैं जा रही हूँ।"

"आज की रात तो न जातीं।"

"क्या फायदा होता आपको?"

"तुमसे बातें करता।"

"कल दिन भर मैं घर पर रहूँगी। उस समय बातें हो सकेंगी।"

विवश शमशाद चुप कर गया। वह अपने कमरे में जा सो गया। प्रातः वह उठा और गुसलखाने में चला गया। स्नानादि से निवृत्त हो वह ब्रेकफास्ट के लिये आया तो मरियम दिखाई नहीं दी।

ब्रेकफास्ट के उपरान्त शमशाद अपने कार्यालय में पहुँचा तो वहाँ उसको कमिश्नर साहब का बुलावा मिल गया। कमिश्नर साहब ने कहा कि वह 'पाकिस्तान सेक्रेटरी फॉर फॉरेन अफेयर्ज' से मिल ले और उससे मुसलमानों की संसद में नुमायन्दगी के विषय में भारत की स्थिति बता दे। अभी–अभी प्रधानमन्त्री का यह सन्देश आया है कि इस मसले को कांग्रेस पर छोड़ दिया जाना चाहिए। संविधान में अब किसी किस्म की तबदीली नहीं हो सकती। यह अब कांग्रेस की 'गुडविल' पर छोड़ देना चाहिए कि वह किस तरह मुल्क के फ़िरकों की नुमाइन्दा पार्टी होगी।"

शमशाद प्रधानमन्त्री के पत्र की नकल लेकर पाकिस्तान विदेश विभाग कार्यालय की ओर चला गया।

वह वहाँ से मध्याह्न के एक बजे के उपरांत लौटा। उसने हाईकमिश्नर के पास रिपोर्ट दे दी और लंच लेने के लिए चला गया। वहाँ जा कर उसे मरियम का ख्याल आया। पता लगा कि वह वहाँ प्रातःकाल से ही नहीं। उसने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लंच लिया और अपने कार्यालय में पाकिस्तानी सेक्रेटरी से वार्त्तालाप की रिपोर्ट तैयार करने लगा।

रिपोर्ट करने में एक घंटा लग गया। वह रिपोर्ट कमिश्नर साहब को देने गया तो उसको विनोद का ख्याल आ गया। उसने हाई कमिश्नर साहब से पूछ लिया, "कश्यप साहब दिखाई नहीं दिये हैं।"

"वे मेरे काम से दिल्ली गए हैं।"

शमशाद चुप कर रहा। वहाँ से निकल उसने चौधरी को टेलीफोन करने का यत्न किया। चौधरी टेलीफोन पर नहीं मिला। वह चौधरी को बताना चाहता था कि विनोद दिल्ली चला गया है और मरियम लापता है।

उसने एक घंटे में तीन बार चौधरी को फोन किया परन्तु वह मिला नहीं। इस समय उसकी घड़ी में चार बज रहे थे। इस कारण उसने यही उचित समझा कि स्वयं होटल में पहुँच जाये। चौधरी को दोनों मेहमानों के न आ सकने की खबर दे दे और खुद चाय पी आये।

वह सवा चार बजे के लगभग 'सेसिल' होटल में पहुँच गया। वह अभी टैक्सी से उतर ही रहा था कि एक औरत मुस्कराती हुई उसकी तरफ आती दिखाई दी। उस औरत ने 'मिस्टर कुरैशी' कह कर आवाज दी और उससे हाथ मिलाया। यह मिसेज रिजवी थी।

शमशाद ने रिजवी को पहिचाना और प्रसन्न हो पूछ लिया, "आप यहाँ क्या कर रही हैं?"

"मैं कल ही करांची में आयी हूँ। लियाकत अली साहब से कुछ काम था। मगर वे तो रावलपिंडी गये हैं। यहाँ किसी की खोज में थी जिससे चाय की दावत माँग लूँ सो आप मिल गये। बताइये क्या ख्याल है।"

शमशाद को भला क्या एतराज हो सकता था। उसने पिछले दिन मिले सौ रुपये के नोट का सदुपयोग करने का निश्चय कर लिया। उसने कह दिया, "जहे किस्मत, आइये।"

शमशाद ने टैक्सी वाले को भाड़ा दिया और होटल में चल पड़ा। वह विचार कर रहा था कि चौधरी अपनी मेज पर मरियम और विनोद की प्रतीक्षा कर रहा होगा। उससे उनके न आने की बात कर उन दोनों के स्थान खुद रिजवी के साथ चाय लेगा और फिर रात के लंच और सफर का प्रबन्ध अपने दाम से करेगा।

इस प्रकार विचार करता हुआ वह होटल में दाखिल हो सीढ़ियों से ऊपर चढ़ने लगा। इस समय एक लड़का लपक कर उसके सामने आया और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसकी कुक्षि में छुरा भौंक भागने लगा।

मिसेज रिजवी ने शोर मचाया तो वह पकड़ा गया। शमशाद तो गिरा और वहीं समाप्त हो गया। जब कातिल को पकड़ कर रिजवी के सामने लाया गया तो रिजवी ने कातिल को पहिचान लिया। यह शमशाद का लड़का सादिक ही था।

"अबे यह क्या किया है? बाप का ही कत्ल कर दिया है?"

सादिक ने इतमिनान से कहा, "गलती हो गयी है।"

: 6 :

मरियम और विनोद इकट्ठे ही हवाई जहाज से दिल्ली को चले थे। सब प्रबन्ध तो उस दिन प्रातःकाल से हो चुका था। मरियम ने अपना सूटकेस विनोद के कमरे में मध्याह्न के समय ही पहुँचा दिया था। शमशाद से लुकाव–छिपाव में कारण यह था कि वह किसी प्रहार की बाधा खड़ी कर सकता था। उस दिन चौधरी इश्तियाक हुसैन का चाय के लिये टेलीफोन आया तो मरियम ने तो मजाक किया था कि अगले दिन चाय उसने विनोद के साथ लेनी है। उसके मन में तो यह था कि वह दिल्ली में अगले दिन सायं की चाय विनोद के साथ ले रही होगी। जब चौधरी ने विनोद को भी निमंत्रण दिया तो मरियम ने मजाक कर दिया, "बहुत अच्छा, हम दोनों आयेंगे।"

सदा की भाँति रात मरियम उठी; कपड़े पहिने और अपना अटैची केस और हैंड–बैग ले विनोद के क्वार्टर में आ पहुँची। वहाँ सफरतखाने की मोटर खड़ी थी। दोनों सवार हो एयरोड्रम जा पहुँचे।

मार्ग में विनोद ने कह दिया, "कमिश्नर साहब का ख्याल है कि तुम अंग्रेजी सफारतखाने की चोटी की बातों में इतनी गुथी हुई हो कि तुम्हारे लिए अब कराची में रहना भय से रहित नहीं है।"

"मैं इस बात को समझती हूँ। इस सब मामले में मुझे लगभग बाईस हजार मिला है और उसमें से बीस हजार के लगभग मेरी माँ के पास सुरक्षित रखा है। मगर मैं समझती हूँ कि इतने से जिन्दगी चल नहीं सकेगी।"

"मरियम!" विनोद ने गम्भीर भाव धारण कर कहा, "तुम अच्छी–खासी सुन्दर औरत हो। विवाह क्यों नहीं कर लेतीं?"

"मैंने इस दिशा में अभी सोचा नहीं।"

"तो सोच लो। और दस साल बाद बूढ़ी हो जाओगी तब शादी की आयु नहीं रहेगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो आप मुझसे विवाह करेंगे?"

"मैं? मेरी तो एक पत्नी पहिले ही है। उससे दो बच्चे भी हैं।"

"तो मैं शादी नहीं करूँगी।"

"क्यों, मुझसे कुछ अधिक लगाव हो गया है क्या?"

"आप औरों से कुछ भिन्न प्रतीत होते हैं।"

"हो सकता है, मगर मैं तो दूसरी शादी कर नहीं सकता।"

"तो कोई ऐसा ही काम दिलवा दीजिए जैसा कराची में दिलवाया था।"

"यह सब इस बात पर निर्भर करता है कि मुझे कहाँ भेजा जाता है।"

"तब तक मैं खाली रहूँगी।"

"अच्छा कभी–कभी मिलती रहा करना। दफ्तर में नहीं। किसी पब्लिक रैस्तराँ में। हाँ, अपनी माँ के घर का पता बता दो। मैं राह लेता रहूँगा।"

मरियम ने घर का पता बता दिया। करोल बाग ओरिजनल रोड पर उसका मकान था।

मरियम माँ के पास पहुँची तो उसने बताया कि वह अपने पति को चकमा देकर भागी है। इस पर फ्लोरा बर्न ने यह पूछ लिया, "अब क्या होगा?"

"मम्मी, पहिले तो उससे छुट्टी पानी है। इसके बाद कहीं काम ढूँढूँगी। वैसा ही जैसा कराची में मिल गया था।"

"तुमने लिखा था कि खुफिया काम है?"

"हाँ मम्मी। इससे अधिक कुछ लिख नहीं सकती थी। मेरा काम तो अत्यन्त सफल हुआ। परन्तु हमारे दिल्ली के हैड आफिस ने पसन्द नहीं किया और उन्होंने कमिश्नर साहब को मना कर दिया था।"

"तो सफल क्या रहा?"

"पाकिस्तान ने जो सिक्युरिटी कौंसिल में भारत के विरुद्ध षड्यन्त्र किया था उस सब का भंडा फोड़ दिया था। भारत सरकार को चाहिए था कि उसके प्रचार का प्रतिवाद करती और अब दुनिया के मुल्कों में सिक्युरिटी कौंसिल के सदस्यों की बेईमानी का रहस्य प्रकट करती। इसने उसको रद्दी की टोकरी में फेंक दिया मालूम होता है।"

"मगर यह जान जोखिम का काम तो है।"

"हाँ। इसीलिए तो कराची से भाग आयी हूँ। कुरैशी को भी नहीं बताया। कारण यह कि वह मुझे अपने पास रखता और आने न देता।"

"तो फिर वही काम क्यों करोगी?"

"ऐसे कामों में लाभ बहुत होता है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह हमारे ऊपर की मंजिल वाले प्रोफेसर साहब और उनकी बीवी कहती है कि स्त्री के लिये सबसे बढ़िया काम शादी कर बच्चे पैदा करना होता है।"

मरियम हँस पड़ी।

"क्यों, हँसी क्यों है?"

"कितने बच्चे हैं उसके?"

"पाँच हैं। सब बहुत ही समझदार और सुन्दर मालूम होते हैं।"

"अच्छा, कभी मिलूँगी उससे।"

मिलने का अवसर अगले ही दिन हो गया। ग्यारह बजे के लगभग विनोद मकान ढूँढ़ता हुआ वहाँ आ पहुँचा। मरियम कहीं घूमने के लिए घर से बाहर जा रही थी। उसने देखा मकान के बाहर विनोद टैक्सी से उतर उस की ओर ही आ रहा है। मरियम उसे मकान में ले जा बैठक–घर में बैठा पूछने लगी, बताइये मिस्टर कश्यप! कैसे आए हैं?"

"एक समाचार देने आ रहा हूँ। मालूम नहीं तुम इस समाचार से प्रसन्न होगी अथवा दुखी। इसलिये विचार कर रहा था कि सहानुभूति के भाव में कहूँ अथवा मुबारिकवादी के लहजे में। बात यह है कि आज दफ्तर में रिपोर्ट करने गया हुआ था कि वहाँ यह समाचार पहुँचा कि शमशाद साहब का किसी ने कत्ल कर दिया है। कातिल पकड़ा गया है। एक सादिक कुरैसी नाम का युवक है। यह मालूम नहीं हुआ कि उसने क्यों यह कत्ल किया है।"

"मगर सादिक तो उनका अपना लड़का है।"

"सच? तब तो कोई पारिवारिक बात हो सकती है।"

"मगर दोनों में मुलाकात थी और किसी किस्म का झगड़ा नहीं था।"

"पूरे वाक्यात अभी आये नहीं। दफ्तर को पता नहीं कि तुम दिल्ली में हो। मैं तुम्हारा पता बताने से पहिले यह जानने आया हूँ कि तुम क्या चाहती हो।"

मरियम विचार–मग्न हो गई। इस समय फ्लोरा भी वहाँ आ गई और वह घटना का समाचार सुन बोली, "दफ्तर वाले को पता होना चाहिए कि कुरैशी साहब की पत्नी कल से यहाँ आयी हुई हैं।"

"मैं भी यही समझता हूँ कि मरियम को यहाँ होना बता देना चाहिए। इसे अभी अपने को इस समाचार से अनभिज्ञ बताना चाहिए। कार्यालय से समाचार आयेगा तब इसको शोक परिधान पहिन लेने चाहिए। यह संभव है कि कार्यालय के कुछ लोग मिलने और अफसोस जाहिर करने आएँ। मरियम को शोक मुद्रा बनाये रखनी चाहिए। मैं आशा करता हूँ कि ड्यूटी पर काम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करते हुए कुरैशी साहब के मारे जाने पर किसी प्रकार का उसकी बीवी को वजीफा मिले।

इस प्रलोभन से मरियम विनोद की योजना मानने पर तैयार हो गयी। विनोद तो लौट गया परन्तु मध्याह्नोत्तर विदेश विभाग के मुख्य सचिव मिस्टर दीक्षित यह शोक समाचार कार्यालय की ओर से लेकर आये। समाचार सुन मरियम ने अपना नाटक आरम्भ कर दिया। उसने शोक मुद्रा बना आँसू बहा दिये।

दीक्षित महाशय शोक प्रकट कर पूछने लगे, "मैं यह जानने आया हूँ कि मिस्टर शमशाद का शव दिल्ली मँगवाया जाए अथवा आप कराची जायेंगी और उसको दफनाने का इन्तजाम वहाँ किया जाये।"

"जी नहीं। मैं चाहूँगी कि उनका शव यहाँ मँगवा दिया जाये। मैं विदेश में उनके मजार को पसन्द नहीं करती।"

इस अवस्था में आपको कल दिन के दस बजे शव के स्वागत के लिए पालम हवाई अड्डे पर पहुँच जाना चाहिए। ठीक नौ बजे आपको सरकारी गाड़ी लेने के लिए यहाँ आ जाएगी।"

दीक्षित यह सन्देश दे चला गया। मरियम ने इस समय तक अपने शोक परिधान तैयार करा रखे थे और वह उन्हें पहिन ही रही थी कि सरकारी गाड़ी में शमा और मिस्टर साही वहाँ आ पहुँचे। शमा से उसका पत्र–व्यवहार था, परन्तु जान–पहिचान नहीं थी।

शमा और साब्री मकान के बरामदे में आकर खड़े हुए तो फ्लोरा ने समझा कि शमशाद के दफ्तर के मित्रों में से कोई होंगे। बरामदे में आ उनसे पूछने लगी, "कैसे आना हुआ है?"

"मिसेज कुरैशी से मिलने आए हैं।"

"आइये, भीतर आ जाइये।" लड़की शोक–ग्रस्त है।

साब्री मुस्करा कर शमा की ओर देखने लगा। शमा गम्भीर मुद्रा बनाये रही। वह फ्लोरा के साथ भीतर ड्राइंगरूम में चली गई। मरियम प्रश्न भरी दृष्टि से उनके मुख पर देखने लगी तो शमा ने अपना परिचय दे दिया, "मैं शमा साब्री हूँ।"

"ओह।... मरियम न समझती हुई कि किस भाव में उनसे बात करे, उनका मुख देखती रही।

शमा ने अपने साथी का परिचय करा दिया, "और ये मिस्टर साब्री हैं। वजीरे तालीम के निजी प्राइवेट सेक्रेटरी।"

"मुझे आफिस में ही पता चल गया था कि तुम्हारे साथ यह दुर्घटना हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गई है। खैर, एक बात को तसल्ली है कि भारत सरकार मरहूम की बेवा के लिए एक अच्छी–खासी रकम देने की बात सोच कर रही है।''

''मरियम मन में विचार कर रही थी कि उसके जीवन में शमशाद से सम्बन्ध एक बड़े सौभाग्य का ही कारण हुआ है। उसने इस बात का कुछ उत्तर नहीं दिया और चुपचाप शोकग्रस्त मुद्रा में बैठी रही। एकाएक शमा ने कहा, ''मरियम, जरा दूसरे कमरे में चलो, मैं तुम से एक प्राइवेट बात करने आई हूँ।''

मरियम का माथा ठनका। परन्तु वह इन्कार नहीं कर सकी। वह उठी और मरियम को अपने बेडरूम में ले गई।

शमा ने खड़े–खड़े ही बात कर दी, ''मरियम, जानती हो कि शमशाद की एक दूसरी औरत भी है।''

''हाँ, कुछ सुना तो था।''

''वह भी इस इमदादी रकम में दावा कर सकती है।''

''वैसे उसका हक तो बनता नहीं।...'' मरियम कुछ और कहना चाहती थी, मगर वह कहती–कहती रुक गई।

शमा ने उसके कहने की कुछ देर तक प्रतीक्षा कर कहा, ''वह इसलिए कि तुमने पाकिस्तान की कारिस्तानियों का राज फाश किया है। और वह पाकिस्तान बनाने में एक हिस्सा लेती रही है। यही कहना चाहती हो?''

''मैंने कौन राज–फाश किया है? यही तो मुझ को पता नहीं। न ही मुझको मालूम है कि उस बहिन ने कौन–सा नया काम किया है जिसकी वजह से पाकिस्तान बना है। मैं तो सिर्फ एक बात जानती हूँ कि मैं उनकी नौकरी मिलने में मददगार थी।''

शमा मुस्कराते हुए बोली, ''ठीक है मरियम बहिन। लेकिन मैं तुम्हारे उस काम को जानती हूँ जो तुमने कराची के अंग्रेजी सफारतखाने में किया है। शमशाद की पहिली बीवी मुमताज का मुस्लिम लीग में काम 1945–46 और 47 का जानती हूँ।''

''मुझको इसके मुताल्लिक कुछ इल्म नहीं।''

''ठीक है। मैं यह जानना चाहती हूँ कि इसके बाद तुम्हारा क्या इरादा है? अगर तुम कराची में काम करना चाहो तो मैं तुम्हारी मदद कर सकती हूँ।''

''कराची में किस काम पर?''

''पाकिस्तानी इन्टेलिजेन्स डिपार्टमेंट में, चौधरी इश्तियाक हुसैन के साथ।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मरियम चौधरी का नाम सुन अवाक् मुख देखती रह गई। शमा ने मुस्कुराते हुए कहा, "तुम्हारे जान–जोखम के काम में भारत सरकार को कुछ एतबार नहीं था। मगर पाकिस्तान सरकार पर गहरा असर पड़ा है, और अगर तुम उसकी नौकरी पसन्द करती हो तो हम मदद कर सकते हैं।"

मरियम विचार करती थी कि यह औरत उसको बहकाकर उसकी भारत सरकार के लिए वफादारी की परीक्षा ले रही है। इस पर भी उसने ऐसा निरर्थक उत्तर देने का निश्चय किया जिससे वह कुछ भी समझ सके। उसने कह दिया, "शमा जी! मैं चौधरी इश्तियाक हुसैन के नाम से भी वाकिफ नहीं। मैंने कराची में अंग्रेजी सफारतखाने के दीदार भी नहीं किए थे। मैं कुछ नहीं समझती। मैं तो अपनी बकाया जिन्दगी एक बेवा के तौर पर ही गुजारने का इरादा रखती हूँ।"

शमा मुस्कुराई और उठ खड़ी हुई। कमरे से बाहर निकलते हुए उसने कहा, "मैं समझती हूं कि चौधरी खुद तुमसे मिल ले तो ठीक रहेगा।"

शमा और साब्री अफसोस जाहिर कर चले गये तो ऊपर की मंजिल पर रहने वाले प्रोफेसर विश्वनाथ और उनकी पत्नी रमणी अपने मकान के किरायेदार की लड़की के विधवा हो जाने का समाचार सुन शोक करने चले आए।

फ्लोरा ने इस मकान का नीचे का फ्लैट मरियम के कराची चले जाने के बाद लिया था। पहिले वह अपनी छोटी–सी पैन्शन के आश्रय वाई.डब्लू.सी.ए. के होस्टल में रहती थी। उस पैन्शन में कमी, मरियम इधर–उधर टाइप का काम कर पूरा किया करती थी। मरियम के कराची जाने पर मरियम की माँ को दो सौ रुपया शमशाद से मिलने लगा और मरियम का खर्च कम हो गया तो उसने मकान का यह भाग सौ रुपया महीना किराये पर ले लिया था।

फ्लोरा को प्रोफेसर और उसकी पत्नी बहुत ही अच्छे व्यक्ति समझ आए थे इस कारण वह उनसे मेल–मुलाकात रखती थी।

मरियम आयी थी तो प्रोफेसर की पत्नी रमणी को पता चल गया था कि नीचे की मंजिल पर रहने वाली किरायेदारन की लड़की कराची से आयी है। फ्लोरा ने कह दिया था कि वह आज बहुत थकी हुई है और अगले दिन उनसे मिल कर खुश होगी।

परन्तु उससे पहिले ही उसके विधवा होने का समाचार आ गया था। लोग शोक–ग्रस्त थे। रमणी भी पति के साथ नीचे आयी और शोक प्रकट करने लगी। उसने सामान्य रूप में माँ से पूछ लिया, "लड़की के कोई बच्चा इत्यादि नहीं!"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नहीं," फ्लोरा ने कह दिया।

"विवाह को कितना समय हुआ है?"

"तीन वर्ष होने जा रहे हैं।"

"लड़की देखने में तो स्वस्थ प्रतीत होती है। परन्तु यह प्रभु की माया है।"

इस पर फ्लोरा ने बता दिया कि इसके घर वाले की आयु अड़सठ वर्ष थी। इस पर रमणी समझ गयी परन्तु उसने आगे बात नहीं चलायी। वे अभी अफसोस कर जा ही रही थीं कि प्रधानमंत्री और वजीरे तालीम एक सरकारी गाड़ी से मकान के सामने आ पहुँचे। मोटर साइकिल पर सिक्युरिटी पुलिस के तीन लोग साथ थे। यह देख विश्वनाथ वहीं ठहर गये। प्रधानमंत्री के साथ दीक्षित भी थे। सब लोग ड्राइंगरूम में चले गये। प्रधानमंत्री ने कहा, "बहुत दर्दनाक वाकया पेश आया है। लड़के ने ही बाप का कत्ल कर दिया है। लड़के ने कहा है कि यह गलती में हो गया है। सरकार मरहूम की बेवा को दस हजार रुपये बतौर इमदाद दे रही है।"

: 7 :

शमशाद का शव दिल्ली में लाया गया। उसको सरकारी मान–प्रतिष्ठा के साथ कब्रिस्तान में ले जाकर दफना दिया गया। शमशाद के परिचित कुछ दिल्ली में थे। इनमें शमा और साब्री भी थे। ये सब कब्रिस्तान तक मरियम के साथ गये। प्रोफेसर विश्वनाथ और उसकी पत्नी रमणी भी साथ थी।

कुछ दिन तक मरियम के तथा फ्लोरा के पूर्व परिचित आते रहे। शीरी भी एक दिन आयी। परन्तु उससे कुछ विशेष बात नहीं हुई। शमशाद के दफनाने के छः दिन बाद ही मरियम को दस हजार रुपये का चैक मिल गया। यह प्रधानमंत्री के पर्सनल फंड में से था।

आने–जाने वालों में कमी हो चुकी थी। प्रायः नित्य जब प्रोफेसर साहब यूनिवर्सिटी में चले जाते थे, और बच्चे पढ़ने चले जाते थे, रमणी एक–आध घन्टे का समय निकाल कर माँ–बेटी के साथ आ बैठती थी और अपने ढंग से उनके अफसोस को कम करने का यत्न किया करती थी।

शमशाद की मृत्यु के एक महिने बाद एक दिन रमणी नीचे आयी तो मरियम के भावी जीवन के कार्यक्रम पर बात होने लगी।

"मरियम बेटा! अब क्या करोगी?" रमणी ने पूछ लिया।

"किस बारे में पूछ रही हो भाभी?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जीवन के विषय में?"

"मैं नौकरी के लिए यत्न करूँगी।"

"क्या करोगी नौकरी करके?"

"तो जीवन कैसे चलेगा?"

"देखो। मेरा कहना है कि तुम वह काम करो जिस काम के लिये औरत बनी है।

"किस काम के लिये औरत बनी है?"

"क्या करती रही हो कराची में?"

मरियम मुस्कुरा कर रमणी का मुख देखने लगी। वह बताना नहीं चाहती थी कि वह क्या करती रही थी। वह चुप रही।

रमणी ने कह दिया, "देखो मरियम, प्रकृति ने स्त्री की विशेष बनावट किसी मतलब से की है। और तुम को उसी मतलब को पूरा करना चाहिए।"

"तो आपका मतलब है कि फिर किसी पुरुष से काम–वासना पूर्ण करने की कोशिश करूँ?"

रमणी ने गम्भीर हो कह दिया, "नहीं बेटी! मेरा यह मतलब नहीं है। वासना तृप्ति तो फोकट में हो जाती है। पत्नी का वास्तविक कार्य सन्तान उत्पन्न करना तथा उसका पालन–पोषण कर योग्य नागरिक बनाना है।"

"यह काम तो मुझसे नहीं हो सकेगा।"

"क्यों? तुम में क्या कमी है?"

"क्या जानूँ। तीन वर्ष के विवाहित जीवन में तो कुछ हुआ नहीं। अब क्या होगा?"

"मेरे विवाहित जीवन के पहले तीन वर्ष तक कोई सन्तान नहीं हुई थी। जब होने लगी तो एक एक वर्ष के अन्तर पर पाँच हुई हैं।"

"तो आप बहुत प्रसन्न हैं?"

"मैं अपने को सौभाग्यवान समझती हूँ।"

"तो मेरी पढ़ाई–लिखाई का क्या होगा? इतना पढ़ना–लिखना बेकार है।"

"पढ़ाई तुम्हारे साथ रहेगी। पढ़ा–लिखा, मेरा मतलब है, प्राप्त किया ज्ञान, तो तुम में रहेगा ही।"

"उससे क्या लाभ होगा? उसका प्रयोग तो नौकरी में ही होता है न?"

रमणी मुस्कुरा दी। मुस्कुरा कर उसने कहा, "तुम क्या समझती हो कि मैं क्या पढ़ी हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह तो मैं जानती हूँ कि आप अंग्रेजी पढ़ी हैं। मैंने आपको अंग्रेजी का समाचार पत्र पढ़ते देखा है।"

"यह तो कुछ नहीं। अंग्रेजी पढ़ सकना तो कोई बड़ी बात नहीं है। वैसे तो मैं हिन्दी, संस्कृत, बंगला, तेलुगू, मराठी, अंग्रेजी और फ्रेंच भी पढ़ और समझ लेती हूँ। इतना ही नहीं, मैं तो शास्त्र भी पढ़ी हूँ।"

"वह क्या होता है?"

"ज्ञान की पुस्तकों को शास्त्र कहते हैं। वे अंग्रेजी में भी हैं और दूसरी भाषाओं में भी। मैं भाषाओं का ज्ञान प्राप्त कर उनमें लिखे शास्त्र भी पढ़ी हूँ।"

मरियम रमणी का मुख देखती रह गयी। फिर कुछ विचार कर कहने लगी, "क्षमा करना। मैं यह जानती नहीं थी। इस पर भी मैं समझती हूँ कि इस पढ़ाई का सम्बन्ध बच्चे पैदा करने से तो कुछ भी नहीं है। पढ़ाई का सम्बन्ध तो समाज की सेवा करना ही है न? समाज सेवा का सब से श्रेष्ठ स्थान सरकारी नौकरी नहीं है क्या?"

"मरियम तुम भी छः–सात वर्ष के बच्चों की–सी बातें करती हो। मान लो तुम सरकारी कार्यालय में नौकरी पा जाओ और वहाँ तुमको तैयार कर भोजन करा नौ बजे भेजने में माँ तुम्हारा काम करती है तो वह समाज सेवा नहीं करती क्या? यदि तुम नौकरी कर समाज सेवा करती हो तो तुम को खिला–पिला कर उस सेवा के योग्य बनाना भी तो समाज–सेवा ही होगी। इस कारण मैं तो यह समझती हूँ कि ज्योति के पिता की सेवा कर अथवा बच्चों की देख भालकर समाज की सेवा ही कर रही हूँ। और इस सेवा में मेरा शास्त्रज्ञान मेरी सहायता करता है।"

"आंटी, यह तुम्हारे मन में अपने व्यर्थ के जीवन की सफाई मात्र है। असल में यह अस्वाभाविक बात है। बच्चे पैदा करने में भला 'हैगल' और 'निशे' क्या सहायता करते होंगे। बच्चे तो मजदूर औरत अथवा कुत्ता–बिल्ली भी, जिसने किसी शास्त्र का नाम नहीं सुना होगा, पैदा कर देती हैं।"

रमणी का बरबस हँसी निकलने वाली थी। उसने यत्न से हँसी दबा रखी। वह तो अभी भी उस मरियम के पति का मृत्यु पर शोक ही प्रकट करने आती थी। उसने केवल मुस्कुरा दिया। एक दीर्घ निःश्वास छोड़ उसने कहा, "तुम भी ठीक ही कहती हो। यही तो तुमको कालेज में पढ़ाया गया है। यही सबको पढ़ाया जा रहा है। इसी कारण जो कुछ मैंने सीखा और समझा है उसका तुम सब लोग अस्वाभाविक समझते हो और मुझको तुम सब आज के पढ़े–लिखे अस्वाभाविक प्रतीत होते हो। यह तो इस कारण है कि तुम्हारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आँखों पर चश्मे का रंग दूसरा है और मेरे चश्मे का रंग दूसरा है।"

"तो आंटी, क्या तुम किसी कालेज में नहीं पढ़ीं?"

"पढ़ी थी परन्तु उसको भूल कर पुनः घर पर ही ये भाषायें और ये सब शास्त्र पढ़ी हूँ।"

"ओह, तो यह बात है। तो समझ लो कि तुम्हारे चश्मे का रंग अन–नेचुरल, अस्वाभाविक है। यह इसलिये कि स्वाभाविक वह है जो अधिक लोगों के चश्मे का है।"

"एक समय मैं भी ऐसा समझा करती थी। जब मैं सांख्य–दर्शन पढ़ रही थी और लिखी युक्तियों पर पठित संसार को शंका करती देखती तो मुझको भी सन्देह हो उठा था। परन्तु मेरा सन्देह निवारण किया मुझे पढ़ाने वाले गुरु जी ने। उन्होंने पूछा, 'क्या जो बहुसंख्यक लोग सोचते हैं, विचारते और करते हैं वह सभ्य ही होता है?'

"मैंने कहा था, 'प्रजातन्त्रात्मक पद्धति का यही अभिप्राय है'।'

"इस पर उन्होंने एक दिन मन्दिर के बगीचे में काम करते हुए बीस–पचीस मजदूरों के शिकायत करने पर मेरे सामने ही पूछ लिया, 'तुम्हें क्या कष्ट है?'

"मजदूरों ने कहा, 'आपने हम पर जो काम लेने वाला जमादार नियुक्त किया है वह हमारे काम की नाप–तौल कम कर हमको उजरत कम दिलाना चाहता है। वह हमसे एक आना रुपया कमीशन माँगता है।'

"गुरुजी ने कहा, 'तो उसको पकड़ कर पीट दो।'

"मजदूरों ने कहा, हम पीट तो सकते हैं परन्तु आप नाराज न हो जावें। हम आपसे डरते हैं।"

"इसपर गुरुजी कहने लगे, 'तुम मुझसे क्यों डरते हो? मुझे भी तो पीट सकते हो। मैं तुम सबका मुकाबला नहीं कर सकता।'

"इसपर सब मजदूर बहुत प्रसन्न हुए। एक ने कह दिया, 'यदि आप हमसे न्याय नहीं करेंगे तो वह भी होगा।'

"मैं समीप बैठी यह सब वार्त्तालाप सुन रही थी। मेरे मुख से अनायास निकल गया, 'परन्तु तुम्हारा कहना ठीक होगा तभी तो माना जावेगा?'

"इसपर उसी मजदूर ने कह दिया, 'साहब! हम सत्य कहते हैं।'

"गुरुजी हँसने लगे। हँसकर बोले, 'रमणी, ये पचीस हैं, जमादार अकेला है। भला पचीस लोग किस प्रकार गलत हो सकते हैं?'

"मैंने कहा, 'तो क्या बीस के कहने मात्र से कोई बात सत्य हो सकती है?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"गुरुजी बोले, 'तुम ही एक दिन कहती थीं कि बहुत लोगों की बात असत्य नहीं हो सकती।'

"मैं चकित रह गई। कुछ कह नहीं सकी। इसपर पण्डित जी ने कह दिया, 'रमणी! तुम ही इनकी शिकायत की जाँच करो और देखो, इनसे सहानुभूति रखना। ये बहुत संख्या में हैं।'

"मरियम, मैंने सबका काम नापा। मैंने जमादार का रजिस्टर भी देखा। मुझे जमादार के काम में किसी प्रकार की बेईमानी नहीं दिखाई दी।

"मैंने गुरुजी के सामने रिपोर्ट दी तो उन्होंने सब मजदूरों को निकाल दिया और मुझसे कहा, 'रमणी! यह आवश्यक नहीं कि जो सब लोग अथवा अधिक संख्या में लोग कहें वह ठीक ही होगा। सत्य और झूठ का निर्णय करने का उपाय हाथ उठाकर और हाथों की गणना कर नहीं किया जाता। इसकी नाप–तौल पृथक् है। जैसे इन मजदूरों के कथन का नापने के फीते से निर्णय हुआ है और यह नापने का फीता इनके कथन से एक पृथक् वस्तु है वैसे ही सत्य और झूठ का निर्णय संसार भर के लोगों के चिल्ला–चिल्लाकर कहने से भी नहीं होता।"

मरियम को समझ आया कि रमणी अच्छी युक्ति करना जानती है। अनायास उसके मुख से निकल गया, "आपके ये गुरु कौन हैं?"

"बम्बई में एक साधना–आश्रम के अध्यक्ष हैं। बहुत पढ़े–लिखे और सूझ–बूझ रखने वाले विद्वान हैं।"

"क्या नाम है?"

"पण्डित सदानारायण! वे मेरे पिताजी के बहुत गहरे मित्र हैं।"

"तो क्या स्कूल–कालेज की पढ़ाई से यह पढ़ाई विलक्षण थी?"

"अंग्रेजी और अन्य भाषाएँ तो वैसी ही हैं, जैसी इन कालेजों में पढ़ाई जाती है, परन्तु शास्त्र जो वहाँ पढ़ी हूँ, वे भिन्न हैं।"

"कौन शास्त्र किससे भिन्न है?"

"एक उदाहरण तो बता सकती हूँ। साइंस का नाम सुना है!"

"हाँ, कैमिस्ट्री फिजिक्स, बौटनी इत्यादि।"

"हाँ, मैं कालेज मैं फिजिक्स पढ़ी थी। और फिर गुरुजी से 'सांख्य' पढ़ा। सांख्य भी साइंस शास्त्र है। इनके पढ़ने पर ऐसा लगा मानो पहले मैं दूसरी–तीसरी श्रेणी में पढ़ रही थी। और सांख्य पढ़ने पर ऐसा प्रतीत हुआ कि मैं एम.ए. की साइंस अथवा कुछ उससे भी ऊपर की बात पढ़ रही हूँ। परिणाम यह हुआ कि मैं पहले से भिन्न प्रकार से देखने लगी। वैसे ही जैसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक एम.ए. में पढ़ने वाला तीसरी–चौथी श्रेणी के विद्यार्थी से भिन्न प्रकार से सोचता अथवा समझने लगता है।"

"यह सांख्य क्या है?"

"हिन्दुओं के छः शास्त्रों के नाम पढ़े कहीं?"

मरियम ने मानो कोई भूली बात याद करने के लिए आँखें मूँद लीं। कुछ क्षण तक विचार कर वह कहने लगी, "हाँ, स्कूल में इतिहास के अन्दर पढ़ा था कि सिक्स स्कूल्स आफ फिलासौफी हैं।"

रमणी पुनः मुस्कुराई और बोली, "उन छः शास्त्रों में एक है कपिल का सांख्य दर्शन। मरियम देखो, मैं बताऊँ। साइंस शब्द सांख्य का अपभ्रंश ही है। साइंस लिखा जाता है एससीआईईएनसीई। इस शब्द में पीछे की 'सी, का 'क' करके पढ़ो तो यह सांकी ही पढ़ा जावेगा। यह सांख्य का ही अपभ्रंश है। समझी हो। लोग केवल शब्द ही नहीं भूले साथ ही उसमें निहित विद्या भी भूल गए और फिर एबीसी से आरम्भ कर अभी चौथी–पाँचवीं श्रेणी तक की साइंस ही जान सके हैं।"

"मरियम को कुछ समझ नहीं आया। इस पर भी उसने कह दिया, "मैं भी आपके गुरुजी से पढ़कर सब पढ़ा–लिखा भूलना चाहती हूँ।"

रमणी मुस्कुराई और फिर बोली, "आजकल वे दिल्ली में ही हैं, मिलना चाहो तो मैं मिला सकती हूँ।"

"कहाँ?"

"मैं उनको घर पर भोजन का निमंत्रण देने वाली हूँ।"

"तो मुझे भी निमंत्रण दे देना।"

: 8 :

सदानारायण ने बम्बई में पढ़ा था कि डॉ. मुखर्जी ने भारत के मन्त्रिमण्डल से त्यागपत्र दे दिया है। उसको समझ आया कि भारत की राजनीति को पुनः गति मिलेगी। उसने समाचार पत्र में पढ़ते ही एक तार डाक्टर साहब को दे दिया। उसमें लिखा था–"आपके परिस्थिति के ठीक विश्लेषण और उचित कार्य की सराहना करता हूँ और भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि वह आपको इस मार्ग पर चलने का साहस दे।"

तार के बाद ही उसने एक पत्र भी लिखा। उसमें उसने अपने मन की बात लिख दी। उसने लिखा–"देवप्रयाग में आपसे बातचीत कर निराशा ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुई थी। एक योग्य वक्ता और सूझबूझ वाले तथा अवसर पर ठीक कार्य करने वाले व्यक्ति को कांग्रेस के जाल में फँसा देख शोक हुआ था। और आपको कांग्रेस की मुख्य नीति का समर्थक देख देश का दुर्भाग्य ही समझा था। आज आपके त्यागपत्र का समाचार पढ़कर और उसमें कारण को जानकर यह समझ आया है कि आप अवसर आने पर देश को धोखा नहीं देंगे। इस बात को समझ हृदय को सन्तोष हुआ है। अभी भी भारत–माता के योग्य साहसी सन्तान उत्पन्न करने की सामर्थ्य को देखकर उज्ज्वल भविष्य का विश्वास होता है।

"भारत को न केवल अपना कल्याण करना है वरन् मानव समाज का नेतृत्व भी अपने हाथ में लेना है।

"चित्त तो आपसे मिलकर बधाई देने को करता है। आप क्या अभी दिल्ली में रहेंगे?"

इस पत्र का उत्तर आने पर कि डॉ. मुखर्जी कुछ दिन अभी दिल्ली में ही रहेंगे, सदानारायण दिल्ली चला आया।

सदानारायण का विचार था कि एक कांग्रेस विरोधी दल बनाना चाहिए–और उस दल में हिन्दुओं को संगठित कर इस हिन्दू विरोध का उन्मूलन करना चाहिए। सदानारायण का कहना था, "एक सहस्र वर्ष की राजनीतिक दासता तो समाप्त हुई है परन्तु तीन सहस्र वर्ष की बौद्धिक दासता को तोड़ने के लिए अब यत्न आरम्भ होना चाहिए। यह यत्न निरन्तर होते रहना चाहिए।

डॉ. मुखर्जी ने सदानारायण के विचार जानकर पूछा, "किस बात की दासता इनमें है?"

"कई बातें हैं। सबसे बड़ी बात यह है कि हम प्रायः सब समझते हैं कि योरुप से हमको कुछ सीखना है। यह हीन भावना हमको उठने नहीं देगी।"

"परन्तु किसी से कुछ सीखने में लज्जा की बात क्या है?"

"सीखना तो लज्जा की बात नहीं। परन्तु ऐसी कोई चीज वहाँ सीखने के लिए है भी?"

"है क्यों नहीं। यह रेल, तार, हवाई जहाज इत्यादि इतनी बात हैं जो सीखने की हैं। इनके बिना हम क्या कर सकेंगे।"

"यह सीखने की बात नहीं है। यह तो करने की बात है। हम इन सबके मूल सिद्धान्तों को जानते हैं। केवल करने के लिए दो बातें हैं, एक तो जो हम पहले ही जानते हैं उसे सर्व–साधारण को बता दें। दूसरे जो कुछ जान जावें उसको कार्य में लाने का ढंग सीख लें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मेरे कहने का मतलब यह है कि जीवन चलाने के मूल सिद्धांतों में हम योरुप से बहुत कुछ अधिक जानते हैं। इस बात का व्यापक प्रचार और फिर वे मूल सिद्धान्त क्या हैं इसका ज्ञान अधिकाधिक लोगों को कराना आवश्यक है।"

"आपने जो मूल सिद्धान्तों को कार्यान्वित करने की बात कही है इसी को तकनीकी ज्ञान कहते हैं। इसमें हम पिछड़ गए हैं। यह पिछड़ना इस कारण हुआ था कि हम राजनीतिक दासता में फँस गए हैं। उस दासता में हम अपने मूल सिद्धान्तों को आवश्यकतानुसार कार्य में लाना भूल गये थे।

"यह दासता बहुत लम्बे काल तक रही है। इस काल में हमारे शासक हमें सदा के लिये दास बनाये रखने के लिये हमारे ज्ञान, विज्ञान, हमारे शिक्षा केन्द्रों और हमारी मान्यताओं से हमको विचलित करने का यत्न करते रहे हैं।

"वे बहुत अंशों तक ऐसा करने में सफल भी हो चुके हैं। इस कारण मैं यह कह रहा हूँ कि सबसे पहले यह भावना मिटानी चाहिए कि हम कुछ नहीं जानते। दूसरे अधिक से अधिक लोगों को ज्ञान होना चाहिए कि वे कौन–कौन सी मूल सिद्धांत की बातें हैं जो हम जानते हैं।

"इतना कुछ होने पर यह सम्भव है कि शीघ्र ही हम अपने विचारों को कार्यान्वित करने का ढंग पता कर लें। इसमें आवश्यकता पड़ी तो हम दूसरों से कुछ सीख भी सकते हैं।"

डॉ. मुखर्जी पूर्ण रूप से समझ नहीं सके थे। वे तो जब से सदानारायण का तार और पत्र आया था, यह समझने का यत्न कर रहे थे कि वे बूढ़े स्वामी कैसे जान गये थे कि कांग्रेस उनको नहीं लेगी। उसने त्यागपत्र देकर देख लिया था कि लगभग पूर्ण मन्त्रिमण्डल उससे सहमत होता हुआ भी उस व्यक्ति के साथ चिपटा हुआ है। जिससे वे प्रायः मतभेद रखते थे और जिसके व्यवहार से भी वे संतुष्ट नहीं।

इस कारण त्यागपत्र देने के उपरान्त भी उनके मन में संशय बना ही था कि उन्होंने ठीक किया है क्या? अब सदानारायण को एक अन्य समस्या उपस्थित करते देख वह भौचक्का ही मुख देखते रह गये। वह उसके कहने का अभिप्राय जानने के लिए उसके मुख पर देखने लगे थे।

सदानारायण भी अपनी बात कह मुख देखता रहा। सदानारायण डॉ. मुखर्जी के मुख से किसी प्रकार भी अपने कथन की प्रतिक्रिया न सुन स्वयं ही कहने लगा, "मैं बम्बई से केवल इस कारण यहाँ आया हूँ कि आपको उस दल के विषय में कुछ अपनी तुच्छ सम्मति दे दूँ जो आप बनाने जा रहे हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कैसे जानते हैं कि आप कि मैं कोई नया दल बनाने जा रहा हूँ।"

"आपकी प्रकृति का अनुमान लगाकर और आपकी सामर्थ्य देखकर।"

"तो आप समझते हैं कि मैं कांग्रेस का विरोधी दल बना सकूँगा।"

"यह असम्भव नहीं है। कामना दो बातों की है। एक यह है कि वह दल हिन्दू मात्र के लिए हो और दूसरी बात यह कि जनता में भारतीय ज्ञान–विज्ञान के विस्तार के लिये अबाध प्रोत्साहन हो।"

"देखिये सदानारायण जी! राजनीतिक दल किसी प्रकार की मत–मतान्तर की सभा नहीं हो सकती। इसमें शुद्ध राजनीतिक स्तर पर बात होगी।"

"मगर मैंने क्या कोई मजहबी बात कही है?"

"यह मजहबी बात ही तो है कि पुरानी बातों के प्रचार का अबाध प्रबन्ध हो। पुरानी बातों के विषय में मतभेद है। मैं मानता हूँ कि बहुत कुछ पुराने में छोड़ने योग्य है।"

"इसका निर्णय समय–समय पर हिन्दू विद्वानों की मण्डली में किया जाय। आप तो उस पर कार्य करने के लिये दल बनाइये।"

"यह ठीक है।" डॉ. मुखर्जी ने कहा, "मुझको राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के लोग एक राजनीतिक दल निर्माण करने के लिए कह रहे हैं। मैं समझता हूँ कि वह हमारे बौद्धिक विकास का कार्यक्रम बनायेगा और मैं राजनीतिक कार्य करूँगा।"

"मैं इसको एक ठीक दिशा में कार्य समझता हूँ। परन्तु डाक्टर जी, हिन्दू समाज तो राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से बाहर भी है। वह इससे बहुत बड़ा है। मैं ठीक तो नहीं कह सकता कि इस संघ का विचार क्षेत्र कितना बड़ा है, इसपर भी मेरा आग्रह है कि इनसे बाहर के हिन्दुओं को भी साथ लेकर चलें तो अधिक ठीक होगा।"

"साथ लेकर चलना कठिन है। हाँ, उनके लिए द्वार खुला रहेगा। मैं तो कुछ ऐसा विचार कर रहा हूँ कि केवल हिन्दू को ही क्यों पूर्ण भारतीय को, इस दल में सम्मिलित होने के लिए स्वीकृति हो। केवल शर्त यह होगी कि जो कोई हमारे सिद्धान्तों को और नीतियों को माने वह इस दल में आ सकेगा।"

"यह तो ठीक है परन्तु सिद्धान्त और नीतियों की बात ही मैं कर रहा हूँ। यदि वे ठीक प्रकार से निश्चय किये गए तो फिर द्वार खोल देने से हानि नहीं होगी।

"आप किन सिद्धान्तों को लाना चाहते हैं?"

"सिद्धान्त स्थिर बातें होती हैं। नीतियाँ समयानुसार बदलती रहती हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसपर भी नीतियाँ सिद्धान्तों को तलाक नहीं दे सकतीं। इनका गठबंधन उनसे रहना ही चाहिए।

"सिद्धान्त तो कुछ इस प्रकार होने चाहिए ईश्वर अथवा आत्मा पर विश्वास; समाज में भेदभाव बुरे और अच्छे कार्य अच्छे लोगों के त्राण और बुरों के विनाश के लिए सदा तत्पर रहना; सबके साथ वैसा व्यवहार करना जैसा हम अपने लिए उनसे चाहते हैं। और इसका उप सिद्धान्त यह कि दूसरे हमसे जैसा व्यवहार करेंगे वैसा ही वे हमसे आशा रखें; समाज में विद्वानों की और विद्वत्ता की महिमा सर्वोच्च होगी; राज्य धर्मानुकूल चले; धर्म से ऊपर देश में कुछ भी नहीं होगा; धर्म–व्यवस्था निर्माण करने वाले विद्वान होंगे परन्तु उस व्यवस्था को चलाने वाले वे लोग होंगे जिन पर सर्वसाधारण का विश्वास होगा। व्यक्ति को धर्मानुकूल रहते हुए उन्नति करने की स्वतन्त्रता होगी। व्यक्ति का अपनी धर्मानुसार पैदा की हुई कमाई को धर्मानुसार व्यय करने का अधिकार होगा।

"ये कुछ मोटे–मोटे सिद्धान्त हैं जो भारतीय धर्म–शास्त्र और नीति–शास्त्र में लिखे हैं।"

"और नीतियाँ क्या होंगी?" डाक्टर साहब ने मुस्कराते हुए पूछ लिया।

"उनका आपके दल की कार्यकारिणी समय–समय पर निश्चय करेगी। केवल इतना आग्रह है कि सिद्धान्त और नीतियों में सम्बन्ध–विच्छेद न हो सके।"

"आपने यह परमात्मा–आत्मा पर विश्वास क्यों राजनीति में घसीट लिया है?"

"यह इसलिए कि मैं देश को आत्मवादी देखना चाहता हूँ।"

"आपकी रूप–रेखा का दल सफल नहीं होगा।"

"तो आप मेरी बात न मानिये। मैं तो दल बना नहीं रहा। मैं तो अपनी सम्मति आपको दे रहा हूँ।"

"यह सब कुछ तो होगा नहीं। विशेष रूप में हम व्यक्ति को अबाध स्वतन्त्रता नहीं दे सकते।"

"तो देना कौन चाहता है? मैं तो यह कह रहा था कि किसी भी राजनीतिक, आर्थिक तथा सामाजिक संस्थान को भी अबाध स्वतन्त्रता नहीं देनी चाहिए। जैसे धर्म की सीमा व्यक्ति पर है वैसी ही समाज अथवा समाज के भिन्न–भिन्न अंगों पर है।"

सदानारायण ने देखा कि डाक्टर साहब को उसकी बात समझ नहीं आ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रही और वे स्वयं भी अभी स्थिर मत नहीं रखते। इस कारण उसने दिल्ली में ठहर पुनः डाक्टर साहब से मिलने का निश्चय कर लिया।

वह दिल्ली में रहने लगा। इन दिनों में ही सदानारायण को प्रोफेसर विश्वनाथ की पत्नी रमणी का निमन्त्रण मिला। उसने प्रोफेसर साहब को विश्वविद्यालय में टेलीफोन कर भोजन का समय और दिन निश्चय कर लिया।

मरियम को पति के देहान्त के एक मास से अधिक व्यतीत होने पर शमा का पत्र मिला। उसमें उसने लिखा था, "यदि तुम चाहो तो तुम्हारे लिये भारत सरकार के विदेश विभाग में नौकरी मिल सकती है। तुम ग्रेजुएट हो और अवश्य ही अच्छी अंग्रेजी लिख–पढ़ सकती होगी। इसपर भी तीन मास तक परीक्षा के रूप में काम करना पड़ेगा और वेतन कम से कम 175 रुपये तो मिलेगा ही और यदि तुम ऊपर के अधिकारी को सन्तोष करा सकीं तो उसकी सिफारिश पर वेतन पाँच सौ रुपये मासिक तक जा सकता है। यदि तुम शार्टहैंड और टाइप का काम सीख लो तो तीन मास की भी प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ेगी। एक दिन में ही परीक्षा समाप्त हो जावेगी। इस अवस्था में वेतन एकदम साढ़े तीन सौ मिल जावेगा।"

मरियम विनोद के कार्यालय में सहायता करती हुई टाइप करने में पर्याप्त गति प्राप्त कर चुकी थी। शार्डहैंड उसने सीखा था परन्तु उसमें अभ्यास की अधिक आवश्यकता थी।

वह पहले शमा से ही मिलने के लिए गई। उन दिनों पटेल साहब के बीमार होने से मौलाना साहब आशा कर रहे थे मन्त्रिमंडल में परिवर्तन होगा। और उनको भय लग रहा था कि कहीं उनको भी विभाग बदलना न पड़े। इस कारण वे प्रायः प्रधानमन्त्री से मिलने के लिए जाते रहते थे। वहाँ भी सरदार के स्वास्थ्य के बारे में चिन्ता व्यक्त की जा रही थी। इस चिन्ता व्यक्त करने के बहाने मौलाना साहब जाते थे और दुर्घटना की अवस्था में भारत सरकार के मन्त्रिमंडल के रूप पर चर्चा कर आते थे। वे अपनी सम्मति दे आते थे।

मरियम शमा को मिलने के लिए आई। दोनों मौलाना साहब के ड्राइंगरूम में बैठी चाय पी रही थीं कि मौलाना साहब आ गये। उनके साथ उनके सरकारी सेक्रेटरी भी थे। मौलाना साहब के सब मिलने–जुलने वाले जानते थे कि शमा मौलाना के मुँहचढ़ी है। इस कारण उसको वहाँ बैठे अपने मित्रों को चाय–पानी पिलाना किसी प्रकार विचित्र नहीं लगता था।

मौलाना साहब आज प्रसन्न प्रतीत होते थे। इस कारण वे शमा को देख

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बोल उठे, "तो तुम यहाँ बैठी हो।"

"जी, मैं आपको एक बात कहने आई थी कि यह मियाँ शमशाद कुरैशी की बीवी आ गईं। इनके साथ हुए हादसे की बात तो आपको मालूम ही है। मैं जब से इनसे ही हमदर्दी जाहिर करना चाहती थी।"

"ओ! शमशाद की बीवी है। अच्छा इसको ठहराना, हम अभी आते हैं।"

मौलाना साहब अपने स्टडी रूम में चले गये और वहाँ सेक्रेटरी से बातें करने लगे।

"जनाब।" सेक्रेटरी ने कह दिया, "सरदार साहब की मौत हो जाने के बाद तो आपको होम मैम्बर बनना चाहिए।"

"उससे क्या होगा।" मौलाना साहब ने पूछ लिया।

"सारे मुल्क का इन्तजाम अपने हाथ में हो जायेगा।"

"जिससे हिन्दू–मुसलमान फसाद हो गया तो बदनाम होकर निकलना पड़े।"

सेक्रेटरी मुख देखता रह गया। इसपर मौलाना साहब ने कहा, "देखो गनी! हम मुसलमानों को बहुत होशियारी से रहना चाहिए। यह मौका है कि हम अपने आपको सब तरह से काबिल साबित करें। बिना इसके मुसलमानों का इस मुल्क में रह सकना मुश्किल हो जायेगा। मुसलमानों को अपनी तादाद बढ़ाने की कोशिश करनी चाहिए यह अपने को काबिल जाहिर करने से ही होगा।

"अच्छा, तो यह बताओ कि इस साल उर्दू की कितनी किताबें शाया हुई?"

"हिन्दी की किताबों से बीस फीसदी ज्यादा हैं। मगर उनकी इशायत कुछ ज्यादा नहीं। मसलन एक किताब 'अकबरनामा' है। उसकी तीन हजार जिल्दें शाया हुई थीं और ढाई हजार हमारे महकमे ने लायब्रेरियों के लिए खरीद ली थीं। बकाया पाँच सौ में से अभी तक दो सौ से कम ही बिकी हैं।"

"तो बकाया को भी खरीद लिया जाय जिससे कि इस किताब की दूसरी ऐडिशन शाया हो सके।"

सेक्रेटरी महोदय ने मुस्कुराते हुए कह दिया, "ये फालतू जिल्दें किस को भेजी जायें?"

"बड़ी–बड़ी लाइब्रेरियों को एक के बजाय दो–दो भेजी जायें।"

सेक्रेटरी ने नोट कर लिया और बात बदल दी, "जामिया मिलिया ओखला से शाया किये गये 'ज्ञान सागर' के पहले भाग पर यू.पी. की सरकार ने भारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एतराज किया है।''

''क्या एतराज किया है?''

''यही कि इस ज्ञान सागर का स्टेंडर्ड बहुत नीचा है।''

''तो फिर?''

''यू.पी. की सरकार ने पंडित नेहरू से शिकायत की है और यह माँग की है कि इसको छपवाने का इन्तजाम हिन्दी साहित्य सम्मेलन को दे दिया जाय।''

''कितना रुपया इसके लिये जामिया मिलिया को दिया जा चुका है?''

''पाँच लाख से ऊपर।''

''तब ठीक। अब हिन्दी साहित्य सम्मेलन वालों को भी कुछ पैदा कर लेने दो। सिर्फ इतनी बात लिख दो कि जो सम्पादकीय बोर्ड हिन्दी साहित्य सम्मेलन नियुक्त करे उसकी मंजूरी शिक्षा विभाग से ले ली जाय और देखो उस बोर्ड में एक–दो कट्टर कांग्रेसी जरूर हों।''

सेक्रेटरी इसका मतलब नहीं समझा और परेशानी में शिक्षा मंत्री का मुख देखता रह गया। उसे परेशान देख मंत्री महोदय ने कह दिया, ''गनी, तुम अभी कम तजुरबाकार हो। इसलिये समझते नहीं। मैं जानता हूँ कि बोर्ड में दो कांग्रेसी घुसेड़ देने से यह ज्ञान सागर सदियों में भी समाप्त नहीं होगा और इससे जामिया मिलिया ने जो कुछ थोड़ा–सा किया है उसकी शौहरत हो जायेगी और आखिर में फिर काम इसको दिया जा सकेगा।''

''तो यह बात है। आपका ख्याल है कि कांग्रेसी काम चलने नहीं देंगे।''

''ठीक। सियासत में दिलचस्पी लेने वाले लोग जब अदबी काम में जाते हैं तो ऐसा ही करते हैं। वे सही दिमाग अक्लमन्दों से मुतफिक–उल–राय नहीं हो सकते।''

सेक्रेटरी ने यह बात भी नोट कर ली।

इसी प्रकार कई समस्याओं पर मौलाना साहब ने रोशनी डाली। आधे घंटे में अपना काम समाप्त कर सेक्रेटरी बाहर आया तो शमा और मरियम अभी भी बातें कर रही थीं। चाय समाप्त हो चुकी थी। मरियम ने बताया था कि वह टाइप करने की गति तो अच्छी रखती है मगर शार्ट हैंड में उसकी प्रेक्टिस कम है।

शमा ने पूछा, ''कितने दिन में पूरी हो जावेगी?''

''एक महीना तो लग ही जावेगा। मैं कल से ही शुरू कर दूँगी।''

''और एक महीने की गुजर के लिए क्या इन्तजाम है?''

''इन्तजाम है। अभी तो सरकारी दस हजार भी मिला है।''

CC-0. Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अच्छी बात है, मिलती रहना। जो कुछ मेरे वश में है मैं तुम्हारे लिये करूँगी।"

शमा ने कान के समीप मुख ले जाकर धीरे से पूछ लिया, "चौधरी ने कराची से पता किया है कि उनकी तजबीज का क्या जवाब है?"

"कुछ नहीं।"

मोहम्मद गनी मंत्री महोदय के स्टडी रूम से बाहर निकला तो शमा ने कह दिया, "चलो मौलाना साहब से मुलाकात करा दूँ।"

मरियम संकोच कर रही थी। इसपर शमा उसको बांह से पकड़ कर स्टडी रूम में ले गई।

मौलाना ने दोनों को आते देख कह दिया, "आओ–आओ, मिसेज कुरैशी। मुझको बहुत ही अफसोस है कि शमशाद ने अपने फायदे के लिए तुम्हारी जिन्दगी खराब की है। मुझे तुम्हारे रंज में पूरी हमदर्दी है। मैंने शमा को कहा है कि हर मुमकिन तरीके से तुम्हारी मदद की जाय। अभी प्राइमिनिस्टर फंड में से दस हजार तुमको मिला है। कुछ दिन तक उसपर गुजर करो। मैं अपने महकमे में तुमको काम दिलवा दूँगा।"

मरियम ने हँसी के भाव में कह दिया, "मम्मी की एक सहेली है। वह कह रही है कि अब मुझे किसी हमउम्र आदमी से शादी कर लेनी चाहिए।"

"शादी? किस लिये?"

"औलाद पैदा करने के लिये। उसका ख्याल है कि औरत का फर्ज यह है कि वह औलाद पैदा करे और उसका पालन–पोषण करे।"

मौलाना परेशानी में मरियम का मुख देखता रह गया। बात शमा ने की। उसने कह दिया, "हाँ यह भी ठीक है, मगर औलाद तो खुदा बन्द ताला की मेहर के बिना हो नहीं सकती। एक बात और है। गन्दी नाली में कीड़े–मकोड़े की भी जिन्दगी है और आसमान में उड़ने वाले परिन्दे की भी। बच्चे होने होते हैं तो दोनों के हो सकते हैं। मगर जिन्दगी का दारो–मदार उस जगह है जहाँ पर रहने की कार्य काबलियत रखता है।"

मरियम ने रमणी को बात बता दी। उसने कहा, "वह औरत पाँच बच्चों की माँ है। एक यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर की बीवी है। वह कहती थी कि पन्द्रह सौ रुपया महीना लेने वाले प्रोफसर के बच्चों को पैदा कर और परवरिश कर भी तो वह आसमान में उड़ने वाले परिन्दों की सी जिन्दगी बसर कर रहा है। साथ ही वह एक टाइपिस्ट से ज्यादा मुफीद सामाजिक सेवा कर रही है।"

मौलाना हँस पड़ा। हँसते हुए बोला, "तो यह भी ट्राई करके देख लो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
शायद तुमको भी कोई पन्द्रह सौ रुपया महीना पाने वाला बेवकूफ प्रोफेसर मिल सके।''

''हजरत।'' मरियम ने कह दिया, ''मेरी माँ कैथोलिक है और उनकी एक बात मुझको पसन्द है। कैथोलिक मानते हैं कि शादी खुदा की तरफ से मुकरिर होती है। मैं तो यही समझी थी कि कुरैशी साहब से मेरी शादी खुदा से तजवीजशुदा थी।''

एकाएक मौलाना साहब ने सतर्क हो कह दिया, ''कुरैशी की पहिली बीवी मुमताज बेगम अपने खाविंद की कब्र पर अपनी मुहब्बत की अकीदत[1] जाहिर करने आ रही है।''

मरियम ने इसका कुछ उत्तर नहीं दिश। शमा ने कह दिया, ''मुझे शक है कि वह अपने लिये किसी किस्म की मदद वा वजीफे के लिये अर्जी करने आ रही है।''

''मगर वह तो जो होना था हो गया।'' मौलाना ने कह दिया।

''मेरा इस बात से कोई ताल्लुक नहीं।'' मरियम ने कह दिया।

''ठीक है। तुम अपने लिये कहोगी तो मदद मिल सकेगी। अगर शादी का भी ख्याल है तो वह इन्तजाम भी हो सकता है।''

मरियम चुप रही। इस पर मन्त्री महोदय उठ खड़े हुए और मरियम इस भेंट पर विचार करती हुई घर लौट आयी।

उसके सामने सवाल था नौकरी करे अथवा शादी करे। या दोनों काम। इसी किस्म के विचारों में वह घर पहुँच गयी।

: 9 :

मरियम को रमणी ने पृथक में बैठा कर अपनी कहानी सुनाई थी। उसने बताया, ''मैं बम्बई के एक प्रोफेसर सदाशिव राव की लड़की हूँ। प्रोफेसर साहब कांग्रेस के कार्यकर्त्ता बने तो पहले बम्बई कारपोरेशन के सदस्य और फिर मेयर बन गये।

''उस समय वे दृढ़ नास्तिक, आत्मा, परमात्मा और पुनर्जन्म पर विश्वास नहीं रखते थे। और समझते थे कि इस जीवन में उन्नति करना मनुष्य का कर्तव्य है और मनुष्य के बस में है।

---

1. प्रेम की स्थिरता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"गुरुजी के पिता बम्बई के साधना आश्रम के अध्यक्ष थे और हिन्दू जीवन मीमांसा के प्रबल वकील थे। स्वाभाविक रूप में दोनों में झगड़ा फूट पड़ा और पिता जी ने आश्रम को अधिक से अधिक हानि पहुँचाने का यत्न किया।

"यह सब कुछ मैं देखती थी और एक रूढ़िवादी हिन्दू की दुर्गति होती देख प्रसन्न थी। उन दिनों मैं कालेज में पढ़ती थी। मेरी घनिष्ठता एक कालेज के प्रोफेसर से हुई तो वह मुझको ले भागे। उसने मेरे साथ सम्बन्ध तो बनाया परन्तु विवाह नहीं किया। समय पाकर वह मुझसे ऊब मुझको कलकत्ता जैसे नगर में छोड़ भाग गया।

"मैंने एक कांग्रेस एम.एल.ए. के स्टेनो की नौकरी कर ली। उससे भी मेरा सम्बन्ध बना तो उसके मित्र भी मेरा उपयोग करने लगे। परन्तु शीघ्र ही मुझको वहाँ से छुट्टी हो गई। उस एम.एल.ए. के श्वसुर ने उसको मिनिस्टर बनवाने में सहायता इस शर्त पर की कि मुझको नौकरी से निकाला जाए और उनकी लड़की से अच्छा व्यवहार किया जाए।

"उस समय मैं गर्भवती थी। पिताजी को मेरे घर से भागने का आघात तो हुआ था और उसके साथ ही उनको यह समझ आया कि कारपोरेशन को कांग्रेसी उनके द्वारा लूट रहे हैं। इन दोनों घटनाओं से वे अपने पूर्व के जीवन पर अवलोकन करने पर विवश हो गये थे।

"इस पर एक घटना घटी। पिताजी को मेरा पता चल गया। और उनको यह सूचना मिली कि मेरे बॉस गुरुजी के पिता के परिचित हैं। वे कलकत्ता आये और गुरुजी के पिताजी से प्रार्थना करने लगे कि मुझको समझावें और मेरे बॉस को समझावें कि मैं पिता के घर लौट जाऊँ।

"गुरुजी के पिता स्वामी गरीबदास जी ने मुझे समझाया। मैं समझ तो गई कि मैंने अपने माता–पिता से अन्याय किया है परन्तु अपनी शिक्षा के अभिमान से मानी नहीं। और स्वामी जी का प्रस्ताव माने बिना अपने कार्यालय में जा पहुँची। उसी दिन मुझ को नौकरी से छुट्टी मिल गयी। उससे यह समझ आया कि मैंने न केवल अपने माता–पिता से अन्याय किया है वरंच अपने साथ भी घोर अन्याय कर बैठी हूँ। मैंने अपने को कौड़ियों के मोल बेचना आरम्भ किया हुआ है।

"मुझको मेरे बॉस ने निकाला तो मैं कलकत्ता से बम्बई को चल पड़ी। सौभाग्य से उसी ट्रेन से और उसी डब्बे में मेरे पिताजी भी बम्बई वापस जा रहे थे जिसमें मैं यात्रा कर रही थी। एक रात और दिन–भर बातचीत होती रही। जब मैंने उनको बताया कि मेरे मन पर स्वामी जी के कथन का प्रभाव तो पड़ा था, परन्तु अपने पढ़े–लिखे होने के अभिमान में मैं मानी नहीं थी, तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
मेरी इस स्वीकारोक्ति से तो पिताजी भी अपने व्यवहार पर विचार कर पश्चात्ताप करने लगे।

"उस समय आश्रम में स्वामी जी के लड़के अध्यक्ष थे। पिताजी उनसे मिलने के लिए गये। उन्होंने मेरी अवस्था का वर्णन सुना तो वे मेरी सहायता के लिए तैयार हो गये।

"उन्होंने मुझे अपने आश्रम में रखा। वहाँ मेरे एक लड़की हुई और फिर उनकी शिक्षा–दीक्षा से मेरे ज्ञान–चक्षु खुलने लगे।

"उनकी शिक्षा और प्रेरणा का फल हुआ कि मेरा विवाह विजय के पिता से हो गया। मेरी पहली अज्ञात पिता से उत्पन्न लड़की तो मेरे माता–पिता के पास रहती है और मैं पाँच अन्य बच्चों की माँ बन गई हूँ। अब मैं समझती हूँ कि मैं मानव जीवन को सार्थक कर रही हूँ।"

मरियम इस कथा को सुन चकित रह गई। उसने पूछ लिया, "क्या विजय के पिता यह कहानी जानते हैं?"

"हाँ, यह कहानी उनके विवाह से पूर्व बता दी गई थी।"

"इस पर भी उन्होंने आपसे विवाह स्वीकार कर लिया?"

"स्वीकार ही नहीं किया वरंच विवाह का आग्रह किया। मुझको इस भले पुरुष के गले में पड़ने पर संकोच होता था। परन्तु वे आग्रह करते रहे। एक वर्ष की प्रेरणा के उपरान्त मैं मानी तो विवाह हो गया। ये तो उस लड़की को भी अपने घर ले आने के लिए तैयार थे परन्तु मेरी माताजी ने उसे नहीं दिया। मेरा कोई भाई अथवा बहिन नहीं थे। इस कारण माँ ने अम्बिका को रख लिया। अब तो वह संज्ञान हो गई है। इस समय उसकी आयु सोलह वर्ष के लगभग है।"

"और आपको इतनी बार प्रसव पीड़ाएँ लेने में क्या सौभाग्य मिला है?"

"सौभाग्य तो है ही। पाँच बच्चे हैं। सब सुशील, बुद्धिमान और शरीर तथा मन से स्वस्थ हैं। मैं अनुभव करती हूँ कि भारत के भावी जातीय निर्माण में मेरा भी सहयोग है। यदि हमारे प्रयत्न सफल हुए तो जातीय विचार को शुभ दिशा में मोड़ देने में सहायक होंगे। तब तो मरने के उपरान्त भी मेरा सौभाग्य मेरे साथ जावेगा।"

"आंटी, मुझको कुछ ऐसा दिखाई देता है कि उस पुरुष ने तुमको हिप्नौटाइज कर रखा है।"

"यह तुम स्वयं देख लेना और हो सके तो उनके सम्मोहन से बची रहना।" रमणी हँस पड़ी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रमणी को भी अब तक विदित हो चुका था कि मरियम ने धन के लोभ में एक पैंसठ वर्ष के बूढ़े मुसलमान से विवाह कर लिया था। साथ ही वह यह भी जान गई थी कि वह अनिष्ठावान स्त्री का सा जीवन व्यतीत करती रही है। इस पर भी वह उसको सदानारायण से मिलाने के लिए संकोच नहीं करती थी।

सदानारायण आया और खाने के उपरान्त रमणी ने मरियम का परिचय दे दिया। उसने कहा, "ये हमारे मकान की नीचे की मंजिल में किरायेदार हैं। ये हैं मरियम देवी कुरैशी और ये इनकी माँ फ्लोरा बर्न हैं।

"जब मैंने इनको बताया कि आपने मेरे जीवन को मोड़ दिया है और यह जीवन मेरे सौभाग्य का कारण हुआ है तो ये आपके दर्शन की इच्छा करने लगीं। इस कारण मैंने इनको भी आपके साथ भोजन करने का निमन्त्रण दे दिया है।"

"बहुत प्रसन्नता हुई इनसे मिलकर। मिसेज मरियम, आपके पति क्या काम करते हैं?"

"उनका स्वर्गवास हो चुका है। वे कराची हाई कमिश्नर के दफ्तर में काम करते थे।"

"यह तो बहुत दुःख की बात है। कोई सन्तान भी है?"

"जी नहीं।"

"अभी तो तुम्हारी बहुत ही कम आयु प्रतीत होती है। अभी पूर्ण जीवन पड़ा है। अब किस प्रकार इसको चलाने का विचार किया है?"

"अभी तो सरकारी मन्त्रालय से कुछ धन मिला है। साथ ही नौकरी की भी आशा मिली है।"

"सच? क्या भारतवर्ष में नौकरी करने के लिए लड़कों का अभाव हो गया है जो तुम जैसी सुकुमारियों को यह व्यर्थ का काम करने की आवश्यकता अनुभव हुई है।"

अब मरियम ने सतर्क हो पूछ लिया, "क्या आप औरतों को सरकारी काम के अयोग्य समझते हैं?"

"नहीं! अयोग्य तो नहीं मानता। इस पर भी ऐसा मानता हूँ जैसे एक सुनार को लोहार का काम करने के लिए कहा जाय।"

"परन्तु अब सुनार के पास भूषण बनाने के लिए सोना ही न हो तो वह क्या करे।"

"तो वह लोहे की बेड़ियाँ बनाने लग जाए। यही अर्थ है तुम्हारे कहने का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न? परन्तु देवी! ईश्वर की कृपा से भारत में अभी भी सोना पर्याप्त है। कहो तो कुछ मैं ला दूँ। सुन्दर भूषण घड़ने के लिए?''

"कहाँ से ला देंगे?''

"यहीं दिल्ली में बहुत है। देखो देवी मरियम, एक सुनार का काम सोने और हीरे–मोतियों ये सुन्दर भूषण निर्माण करना है। इसी प्रकर एक स्त्री का कार्य है वह समाज के सुन्दर, स्वस्थ, सबल और ज्ञानवान घटक निर्माण करे। और तुम जा रही हो कोल्हू के बैल की भाँति सूखे तिलों से तेल पेलने के लिए।''

"तो क्या कार्यालय का काम कोल्हू के बैल का सा काम है?''

"बिलकुल। यदि मेरे कथन पर सन्देह हो तो किसी वजीर से भेंट कराकर समर्थन करा दूँ?''

"समर्थन की आवश्यकता नहीं। आप बताइये यदि कार्यालय के काम को रद्दी समझ सब करना छोड़ दें तो देश का कल्याण कैसे होगा?''

"इस देश में बैल बहुत हैं जो कोल्हू चलाने के अतिरिक्त और कुछ करना जानते ही नहीं।''

"और आप कैसे जानते हैं कि मैं वैसी बैल नहीं हूँ।''

"तुम्हारा प्रश्न ठीक है कि मैं कैसे जान गया। देखो, मैं इस समय पचपन वर्ष की आयु का हूँ। सांसारिक कार्यों का मेरा अनुभव लगभग बत्तीस–तेंतीस वर्ष का है। सौभाग्य से मुझको संसार देखने का अवसर भी पर्याप्त मिला है और मैंने शास्त्र भी बहुत पढ़े हैं। भारतीय शास्त्र भी पढ़े हैं और योरोपीय भी। इससे मैं समझता हूँ कि मुझको कुछ तो अनुभव है। उसके भरोसे पर ही मैं कह रहा था कि तुम बन्ध्या नहीं हो। नारी का परम पावन कार्य मानव निर्माण करने का तुम कर सकती हो।''

"मेरी उस कार्य में रुचि नहीं है।''

"सरकारी कार्यालय के काम से यह काम कठिन अवश्य है। परन्तु उसमें शारीरिक परिश्रम अधिक करना पड़ेगा। परन्तु यह शारीरिक परिश्रम की बात गौण भी समझ लें तो भी घर–गृहस्थी का कार्य श्रेष्ठ तो है ही। तो भला उस श्रेष्ठ कार्य में रुचि उत्पन्न करना ठीक नहीं होगा क्या?''

"कराची में एक नजीब हुसैन बाबू थे। उनकी पत्नी को मेरे सामने बच्चा हुआ था। उसके भयानक कष्ट का स्मरण कर मुझे तो डर लगता है।''

"इस पर भी संसार–भर की स्त्रियाँ यह कार्य करती ही हैं?''

"देखिये जी। हम इस युग के युवकों ने यह समझ लिया है कि सन्तान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्पन्न करने का कष्ट स्त्री वर्ग भोगती है विवशता के कारण। पुरुष लोग ऐसी ही बातें बता–बता कर उनको इस कष्ट को भोगने के लिये प्रेरणा देते रहते हैं और वे कुछ तो वासना से विवश हो और कुछ जीवन निर्वाह के लिए पुरुषों के अधीन होने से यह कष्ट भोगा करती हैं। अतः हम सिर तोड़ यत्न कर रही हैं कि इन दोनों विवशताओं को पार कर सकें। वासनाभिभूत जो भय हम मोल लेती हैं उसके लिए विज्ञान ने उपाय बताये हैं और दिन–प्रतिदिन उन उपायों में उन्नति हो रही है। इस कारण उस तरफ से भय निवारण हो रहा है। दूसरी विवशता है पेट भरने की। उसके लिए ही तो नौकरी करने के लिए जा रही हूँ।"

"यही बात रमणी देवी समझती थीं। परन्तु अनुभव ने इनको दूसरा मार्ग अवलम्बन करने के लिए कहा है।"

"पण्डित जी! मैंने इनकी पूर्ण कथा सुनी है। ये बात करती हैं आज से चौदह वर्ष पहले की। इन चौदह वर्षों में विज्ञान ने बहुत उन्नति कर ली है और जिन बातों से ये विवश हुई थीं उन पर हमने बहुत सीमा तक पार पा लिया है।"

"मैं तो यह ही कह सकता हूँ कि तुम्हारा विचार करने का ढंग मिथ्या है। वह अधिक कष्टकारक है। इस पर भी मैं तो यही बता सकता हूँ कि सन्तान उत्पन्न करना केवल उन विवशताओं के कारण नहीं। उनसे बहुत बड़े कारण और भी हैं। यदि तुम परमात्मा और पुनर्जन्म की बात नहीं मानतीं तब भी तो समाज, देश और संस्कृति के नाते मनुष्य परिवार को चलाते रहना भी एक बहुत बड़ा काम है। यदि तुम जैसी स्वस्थ सबल सुन्दर स्त्रियाँ यह कार्य नहीं करेंगी तो फिर कौन करेगा।"

"बहुत हैं पण्डित जी। आपको चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं। हमारे देश में जनसंख्या बहुत गति से बढ़ रही है।"

वास्तव में सदानारायण इस आधे घण्टे के वार्त्तालाप से कुछ अधिक कर नहीं सका। योरोपीय सभ्यता की चमक–दमक ने भारत को ही नहीं वरंच पूर्ण संसार को चकाचौंध कर रखा था।

सदानारायण ने यह समझा कि समय पाकर मरियम ठीक मार्ग पर आ जावेगी, संसार भर की युक्तियों से अधिक प्रभाव किसी दुर्घटना का हो सकता है। आखिर रमणी से भी तो एक दुर्घटना हुई थी। तब ही वह सन्मार्ग देख सकी थी।

उसने अपनी बात को समाप्त करते हुए कह दिया, "अच्छा यह स्मरण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रखना कभी इस विषय में फिर किसी प्रकार का विचार विमर्श करने की आवश्यकता हो तो रमणी के द्वारा मुझको स्मरण कर सकती हो। मैं समझता हूँ कि अभी तुम्हारे मस्तिष्क में मेरे विचारों को ग्रहण करने के लिये द्वार बन्द हैं। वे खुलेंगे तो तुम को किसी से राय करने की आवश्यकता पड़ेगी। यदि उचित समझो तो स्मरण कर लेगा।''

बात समाप्त हो गई। मरियम कचालू के पत्ते की भाँति ज्ञानरूपी जल से भीग नहीं सकी।

: 10 :

सदानारायण का दिल्ली आना विफल ही रहा। डॉ. मुखर्जी अपने मार्ग पर ही चलने वाले सिद्ध हुए। वे एक कांग्रेस विरोधी दल बनाने के पक्ष में रहे थे। परन्तु वह दल सब हिन्दू संस्थाओं का साँझा दल न होकर वैसा ही 'सेक्युलर' होने वाला था जैसी कांग्रेंस है।

इस विषय पर भी एक दिन डाक्टर साहब से बात हुई थी। यह रमणी के घर भोजन करने के अगले दिन की बात थी। सदानारायण डाक्टर साहब से मिलने गया तो छूटते ही डाक्टर साहब ने कहा, ''देखिए, देव–प्रयाग से महात्मा रत्न लाल का पत्र आया है। उन्होंने भी मेरे त्यागपत्र की सराहना की है और स्वामी जी का आशीर्वाद भेजा है। वे भी चाहते हैं कि मैं एक हिन्दू मात्र का प्रतिनिधि दल बनाने का यत्न करूँ। ऐसा प्रतीत होता है कि आपके विचार रत्न जी के विचारों से मिलते हैं।''

''जी। हम एक ही गुरु के शिष्य होने से एक ही दिशा में विचार करते हैं।''

''परन्तु मैं नहीं समझा कि 'हिन्दू मात्र' शब्द से क्या अभिप्राय है। क्या पण्डित नेहरू हिन्दू नहीं हैं? क्या कांग्रेस में कोटि–कोटि कार्यकर्त्ता हिन्दू नहीं हैं?''

''आपने श्री सावरकर जी की हिन्दुत्व पुस्तक पढ़ी है?''

''हाँ, पढ़ी तो है। मैं उसी लक्षण से ही तो कह रहा हूँ कि पण्डित नेहरू भी उतने ही हिन्दू हैं जितने हम और सावरकर जी हैं।''

''मैं नहीं चाहता था कि पण्डित नेहरू को इस बात में ले आता। परन्तु जब आपने पूछा है तो बताता हूँ कि वे हिन्दू नहीं हैं। कांग्रेस में बहुत से ऐसे हैं जो हिन्दू हैं परन्तु नेहरू और गांधी जी की ख्याति के कारण उनको मोह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो गया है। जनसाधारण तो यह योग्यता नहीं रखते कि वे इन महापुरुषों की ख्याति के आवरण को भेद कर इनके आचरण का विश्लेषण कर सकें।

"गांधी जी एक दृष्टि से हिन्दू थे परन्तु उनमें साहस नहीं था कि वे नेहरू से मतभेद रखते हुए भी उसको जनता में प्रकट कर सकते। धर्म के विषय में, हिन्दू मान्यताओं के विषय में, सामाजिक व्यवस्था के विषय में, अथवा शिक्षा के विषय में भी वे नेहरू से मतभेद रखते थे। जहाँ स्वराज्य के आन्दोलन में भी जवाहरलाल नेहरू अपने विचारों को प्रकट करते रहते थे वहाँ गांधीजी छिपे–छिपे उनको समझाने का यत्न करते रहते थे परन्तु जनता के सामने नहीं कहते थे।"

"यह तो मैं जानता हूँ। परन्तु गांधी जी का यह व्यवहार तो स्वराज्य आन्दोलन में सम्मिलित सब व्यक्तियों की मान–प्रतिष्ठा बनाये रखने के लिए ही था।"

"जी नहीं। यह आप प्रमाण से सिद्ध नहीं कर सकते। गांधी जी ने क्रांतिकारियों की निन्दा करने में कभी भी संकोच नहीं किया। हिंसा के नाम पर तो आपने अपने 1922 के प्रबल आन्दोलन को भी ठप कर दिया था।

"परन्तु मैं इन कांग्रेसियों के पूर्व ग्रहों की चर्चा करने में कुछ लाभ नहीं समझता। मैं तो यह चाहता हूँ कि हिन्दुओं की सब धार्मिक संस्थाओं और सामाजिक संस्थाओं का एक संगठित राजनीतिक दल बना लिया जाय। यह दल हिन्दू नाम से हो।"

"ऐसा दल तो हिन्दू महासभा है।"

"उसको भी इसमें सम्मिलित कर लिया जाय।"

"वे नहीं होंगे।"

"कौन?"

"हिन्दू महासभा वाले।"

"वही जो बिरला मन्दिर के समीप एक भवन में हिन्दू सभा सीमित है, वह हिन्दू सभा नहीं है। देखिये डाक्टर साहब। आपने एक भूल की थी। आप ने हिन्दू महासभा दल के द्वार हिन्दुओं के अतिरिक्त जनों के लिए भी खोलने के लिए कहा था। यह न तो सम्भव था और न ही उचित। यह व्यावहारिक भी नहीं था।"

"व्यावहारिक क्यों नहीं है?"

"इस कारण कि हिन्दू शब्द के जो अर्थ हिन्दू महासभा समझता है वे मुसलमान और ईसाई नहीं मानते थे। इस कारण वे उसमें सम्मिलित नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होने वाले थे। यदि उनके लिए द्वार खोलने थे तो आपको हिन्दू का नाम हिन्दू महासभा से निकालना आवश्यक था। यह हिन्दू महासभा वाले करने के लिये तैयार नहीं थे। इस कारण आपको सभा छोड़नी पड़ी थी।''

''नहीं पण्डित जी! मैंने हिन्दू नाम बदलने के लिए नहीं कहा था।''

''तब आपका प्रस्ताव निरर्थक था। कारण यह कि हिन्दू नाम को स्वीकार करने वालों के लिये तो हिन्दू महासभा के द्वार पहले ही खुले थे। कोई भी हिन्दू नाम रखकर हिन्दू सभा का सदस्य बन सकता था।''

''मैं चाहता था,'' डाक्टर साहब ने कह दिया, ''कि एक अब्दुल करीम रहता हुआ भी हिन्दू महासभा का सदस्य बन सके।''

''अब्दुल करीम पर तो आपत्ति नहीं थी। हिन्दुओं में पहले भी कई गुलशन और इकबाल हैं। आपत्ति थी उनके हिन्दुस्तान को अपना देश न मानने पर। यह उसके करीम रहीम रहते हुए नहीं हो सकता था।

''देखिए डाक्टर साहब। मैं और स्वामी जी का विचार यह है कि एक सर्व हिन्दू धर्म सम्मेलन बुलाया जाय और उसमें हिन्दू शब्द के राजनीतिक रूप के लक्षण किये जायें और उस रूप के आधार पर राजनीतिक दल कार्य करे। दल का नाम हिन्दू होना चाहिए। यह इस कारण कि हिन्दू धर्म सम्मेलन का प्रतिनिधि मण्डल बनाया जाय जो समय–समय पर इस राजनीतिक दल का, मार्मिक विषयों में पथ प्रदर्शन करे।''

''यह चल नहीं सकेगा।''

''चल तो सकता है। कांग्रेस इसी प्रकार चल रही है। कांग्रेस कमेटी और कार्यकारिणी पृथक्–पृथक् हैं और कांग्रेस संसदीय दल पृथक् है। एक–दूसरे पर दोनों निर्भर हैं।''

''यह हिन्दुओं में नहीं चल सकेगा।''

''क्यों?''

''इस कारण कि वे बेढंगी बातें करेंगे और कई हिन्दू दल बन जावेंगे।''

''डाक्टर साहब, चलेगा तो इस प्रकार ही। परन्तु यह तब ही चल सकेगा जब लोग स्वार्थ को देश और जाति के हितों के अधीन कर व्यवहार का निश्चय करेंगे।''

''देखो, मैं यत्न कर रहा हूँ कि राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की सहायता से एक राजनीतिक दल संगठित करूँ।''

''तो आप वही कुछ करने जा रहे हैं जो मैं कह रहा था? अन्तर केवल यह है कि सर्व हिन्दू धर्मवादियों को साथ न लेकर आप एक दृष्टि के लोगों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को ही साथ ले रहे हैं।''

''इनकी क्या दृष्टि है?''

''इनकी दृष्टि यह है कि एक संगठित सैनिक दल ब्राह्मण पद पर आसीन होना चाहता है। देखिये डाक्टर साहब! मैं इस संगठन का विरोधी नहीं हूँ। मैं इसको केवल पूर्ण हिन्दू समाज का एक अंग मात्र समझता हूँ। इन्होंने सब प्रकार के हिन्दुओं से बौद्धिक प्रेरणा नहीं ली। केवल सैनिक दृष्टिवालों से ही बौद्धिक प्रेरणा संग्रह करने का यत्न किया है।''

''आपके कथन का प्रमाण क्या है?''

''प्रमाण यह है कि ये अपने स्वयंसेवकों को पढ़ने–लिखने और बाहर से ज्ञान प्राप्त करने की प्रेरणा नहीं देते। ये समझते हैं कि जो कुछ बौद्धिक शिक्षा इनके अधिकारी देते हैं वह ही सब कुछ है, अर्थात् पर्याप्त है।''

डाक्टर साहब गम्भीर हो बोले, ''हम राजनीति में इस संगठन से सहायता लेंगे परन्तु विचार तो संसार भर के विद्वानों से संग्रह करेंगे।''

''यदि ऐसा कर सकें तो ठीक है। परन्तु आप बात संसार से बौद्धिक प्रेरणा लेने की तो करते हैं और सब हिन्दुओं से प्रेरणा लेने में संकोच करते हैं।''

''यह प्रेरणा राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ ले लेगा।''

''यदि वह ऐसा कर सका तो ठीक है। होना यह चाहिए कि इस राजनीतिक दल के पीछे पूर्ण हिन्दू समाज हो। यदि संघ यह उत्तरदायित्व अपने सिर ले लेता हो तो ठीक ही है। मेरी शुभकामना आपके साथ है।''

''दल की स्थापना कर मैं स्वामी जी से मिलने के लिए आऊँगा। एक बात उनकी मेरे मन पर गहरा प्रभाव डालने वाली हुई है। वह है मेरे कांग्रेस से निकलने की बात। मैं निकलना नहीं चाहता था। मैंने हिन्दू महासभा छोड़ी इसी कारण थी कि मैं कांग्रेस में सम्मिलित हो देश का कार्य करूँगा। परन्तु ऐसी परिस्थिति उत्पन्न हो गई कि कांग्रेस को छोड़ने के अतिरिक्त अन्य कोई उपाय ही नहीं रहा।

''इस पर भी मैं मन्त्रिमण्डल छोड़ते समय यह विचार रखता था कि एक बहुत बड़ी संख्या में कांग्रेसी मेरे साथ बाहर हो जावेंगे। परन्तु इस दिशा में मुझे निराशा हुई है। एक भी मतलब का कांग्रेसी मेरे समर्थन में खड़ा नहीं हुआ। प्रायः सब मेरे विचार को ठीक समझते हुए भी नेहरू का समर्थन करते रहे हैं।

''अतः निष्कर्ष यह है कि मैंने हिन्दू महासभा छोड़ी थी कांग्रेस में सम्मिलित होने के लिए और कांग्रेस ने मुझको छोड़ दिया है नेहरू के समर्थन के लिए।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सदानारायण मुस्कराता रहा। डाक्टर साहब ने बात बदल कर कहा, "आप अब देवप्रयाग कब जावेंगे?"

"यहाँ कुछ दिन का काम है। उससे फुरसत पाते ही देवप्रयाग जाऊँगा। एक सप्ताह तक वहाँ रहने का विचार है। मेरी पत्नी वहाँ गई है। मेरा बड़ा लड़का और उसकी बहू अमरीका से आये हुए हैं। वे भी वहीं हैं।"

"जब भी जावें स्वामी जी को मेरी वन्दना कहें।"

"आप भी चलिये।"

"मैं दल का निर्माण कर ही वहाँ जाना चाहता हूँ। मेरा प्रस्ताव नागपुर गया हुआ है। वहाँ से किसी प्रकार का आशीर्वाद आने पर दल निर्माण का कार्य आरम्भ कर दूँगा।"

सदानारायण इस बात से तो प्रसन्न था कि दल बन रहा है। परन्तु वह यह प्रेरणा देने आया था कि एक हिन्दू विद्वानमण्डल बन जावे जो हिन्दू राजनीति के विराट सिद्धान्तों का निश्चय कर दे और दल उसके आधार पर बने। उसका विचार था कि यदि समय–समय पर सब प्रकार के हिन्दू मत–मतान्तरों का बार–बार सम्मेलन किया जाय तो सम्भव है कि हिन्दू समाज एक सूत्र में बँध सके। इस दिशा में उसको निराशा ही मिली थी। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के लिए उसके मन में श्रद्धा थी। परन्तु वह देख रहा था कि यह एक प्रकार का सुनियंत्रित युवकों का संगठन है, जिसमें सैनिक नियंत्रण के अतिरिक्त कुछ अधिक नहीं है। सदानारायण यह देख रहा था कि जब संगठन बौद्धिक प्रेरणा के अतिरिक्त होता है तब वह बहुत सुगमता से पथच्युत हो जाता है।

प्रश्न यह उपस्थित होता था कि सैनिक संगठन स्वयंसेवक ही बौद्धिक काम क्यों नहीं कर सकता। इस विषय में उनका मत था कि ब्राह्मण वर्ग सैनिक संगठन से पृथक् एवं स्वतन्त्र बनना चाहिए। अन्यथा या तो सैनिक कार्य दुर्बल पड़ जायेगा अथवा बौद्धिक कार्य सेना का दास बन प्रभावहीन हो जावेगा।

सदानारायण डाक्टर साहब के व्यवहार का भी विश्लेषण कर रहा था। वह यह तो समझता था कि डाक्टर साहब अपने हृदय में यह विश्वास रखते हैं कि हिन्दू मुसलमान इत्यादि को अपने–अपने मजहबी विचार रखते हुए राजनीति में एक मत होना चाहिए। परन्तु वह हिन्दू और मुसलमान में अन्तर न जानने के कारण ऐसा समझते हैं। हिन्दू–मुसलमान में अन्तर मजहबी ही नहीं है वरंच राजनीतिक मतभेद भी हैं। यह राजनीतिक विशेषता मुसलमानों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने मजहब के साथ जोड़ रखी है। उनकी मजहबी मान्यता है कि जिस देश में इस्लामी राज्य नहीं उस देश में रहना कुफ्र है। अर्थात् उनकी राजनीति मजहबी है। हिन्दुओं में ऐसा नहीं है। हिन्दुओं में मजहब अनेक हैं। प्रायः एक घर में दो–तीन मजहब हो सकते हैं। परन्तु हिन्दू इसको सांसारिक व्यवहार की बातों से पृथक् रखने का यत्न करते रहते हैं। हिन्दुओं के सब मत–मतान्तर तो राजनीतिक मंच पर एकत्रित हो सकते हैं परन्तु इस्लाम ऐसा नहीं कर सकता। वे मजहब और राजनीति को पृथक् पृथक् रख नहीं सकते।

नेहरू और उसके साथियों का विचार था कि कांग्रेस में मुसलमान कार्य करते हैं। इस कारण वे देश के प्रबन्ध में भी कार्य कर सकेंगे।

सदानारायण का विचार था कि यह श्रम है। कांग्रेस में केवल वे मुसलमान ही सम्मिलित हुए थे जो अपने मजहब पर विश्वास छोड़ चुके थे। कुछ मजहबी दीवाने खिलाफत आन्दोलन के दिनों में कांग्रेस के साथ सहयोग करने लगे थे परन्तु खिलाफत का मसला विलीन होते ही वे कांग्रेस छोड़कर चले गये थे।

शेष वे लोग थे जो इस्लाम को रस्मी तौर पर मानते थे। किसी विश्वास के रूप में नहीं। ये इस्लाम को छोड़े हुए थे तो देश और जाति को भी छोड़े हुए थे। इनके अतिरिक्त मौलाना अब्दुल कलाम आजाद थे जो एक मजहबी आलम होने पर भी कांग्रेस के साथ थे। दो–चार और भी थे, परन्तु उनको साथ रखने का भारी मूल्य देना पड़ रहा था। वे इस्लाम के प्रचार में कांग्रेस और भारत सरकार को साधन मात्र का ही इसमें सम्मिलित हुए थे। ऐसा जानते हुए भी श्री जवाहरलाल तथा अन्य कांग्रेसी समझते थे कि वे मुसलमानों को साथ लिए हुए हैं।

सदानारायण समझ रहा था कि इस प्रकार के लोगों से बनी कांग्रेस डॉ. श्यामप्रसाद मुखर्जी को अपने में नहीं रख सकती थी। यह स्वाभाविक ही था कि डाक्टर साहब के साथ एक भी कांग्रेसी सहयोग न दे। कांग्रेसी समझते थे कि डाक्टर साहब का साथ देने से मौलाना के विचार के लोग यह समझेंगे कि वे मुसलमानों के विरोधी हैं। यह भ्रम पैदा होने पर सब मुसलमान कांग्रेस छोड़ भी सकते हैं। इस भय से ग्रसित कांग्रेसी डाक्टर साहब का समर्थन नहीं कर सके।

वह इस सब का एक ही इलाज समझता था कि राजनीति में हिन्दू को हिन्दू के नाम से पदार्पण करना चाहिए। वह डाक्टर साहब के कथन को सुन यह समझता था कि डाक्टर साहब मुसलमानों को दिखाने के लिए, हिन्दू नाम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को छोड़ने के लिए तैयार हो गए हैं।

अतः सदानारायण डाक्टर साहब के व्यवहार से प्रसन्न नहीं था।

: 11 :

मरियम को रमणी के गुरु की बातें सारहीन प्रतीत हुई थीं। वह समझती थी कि प्रकृति ने उसको किसी योजना अथवा कार्य–कारण के सिद्धान्त पर नहीं बनाया। उसका और वस्तुतः पूर्ण संसार का बनना एक घटना–मात्र है और इसमें कारण ढूँढ़ना समय का अपव्यय है। करांची में वह बहुत सुख और आराम में रही थी। वैसा ही सुख और आराम प्राप्त करने में वह यत्नशील थी।

अगले दिन सदानारायण पुनः रमणी के मकान पर पहुँच गया। उसके साथ मुमताज भी थी। मुमताज को शमशाद की मृत्यु का समाचार डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी द्वारा ही मिला था। डॉ. मुखर्जी ने अपने मन्त्री महोदय के त्यागपत्र देने से पूर्व मौलाना के पी.ए. से पूछा था कि शमशाद का पता क्या है, तब साब्री साहब ने कह दिया था कि मौलाना साहब किसी शमशाद के विषय में नहीं जानते। पीछे डॉ. मुखर्जी ने त्यागपत्र दे दिया और फिर नवीन दल बनाने की योजना बनाने लगे। इन दिनों ही समाचार पत्रों में भारतीय हाई कमिश्नर के एक अफसर की करांची में हत्या का समाचार छपा। मृत का नाम भी छपा तो डाक्टर साहब को स्मरण हो आया कि यह तो वही आदमी है, जिसके विषय में देवप्रयाग वाले स्वामी के आश्रम में एक औरत ने पता पूछा था। अतः डाक्टर साहब ने डॉ. अम्बेडकर के द्वारा शमशाद कुरैशी का पुनः वृत्तान्त सरकार के विदेश विभाग से पता किया और फिर समाचार देवप्रयाग को लिख दिया।

वहाँ समाचार गया तो मुमताज ने दिल्ली में आकर अपने पति की कब्र पर अपनी अकीदत जाहिर करने का इरादा बना लिया। उन दिनों सदानारायण दिल्ली में ही था। अतः मुमताज सदानारायण के होटल के पते पर पहुँच गयी। उसने सदानारायण से आने का उद्‌देश्य बताया तो सदानारायण ने शमशाद के विषय में डाक्टर साहब से टेलीफोन पर पता किया। डाक्टर साहब ने बता दिया कि शमशाद की बीवी करोलबाग में एक प्रोफेसर विश्वनाथ के मकान के नीचे रहती है और दफनाने का स्थान उसी से पता लग सकेगा।

प्रोफेसर विश्वनाथ का नाम सुन सदानारायण मुमताज को लेकर रमणी के पास जा पहुँचा। उसने मुमताज को बता दिया था कि भापा की दूसरी बेगम के मकान मालिक भी उसी मकान में रहते हैं और अपने मित्र हैं। अतः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुमताज वहाँ रह भी सकेगी और अपने आने के उद्देश्य की पूर्ति भी कर सकेगी।

रमणी घर पर ही थी। जब उसने सुना कि साथ आने वाली औरत मरियम की सौतन है तो उसने दोनों में भेंट अपने मकान में ही कराने के लिये मरियम को ऊपर बुला लिया।

"तो आप हैं, मिसेज कुरैशी नम्बर वन?" मरियम ने मुस्कुराते हुए पूछ लिया।

"हाँ, मैं ही वह बदनसीब औरत हूँ जिसने यह जानते हुए भी कि वे पाकिस्तान में खत्म होने के लिये जा रहे हैं, उनको वहाँ जाने दिया था।"

"तो आप जानती थीं कि उनका इन्तकाल पाकिस्तान में होना है?"

"हाँ; उनको मना भी किया था कि वे पाकिस्तान में न जायें मगर वे नहीं माने। इस पर भी अगर मैं हठ करती और उनके साथ दिल्ली चली आती तो यह मुमकिन था कि वे मेरी बात मान जाते। तब यह हादसा न होता।"

"बहुत विचित्र है? आपको मालूम था कि पाकिस्तान में मरेंगे। आपको यकीन था कि आप उनको रोक सकती थीं और फिर भी रोका नहीं।"

"हाँ। विचित्र तो है मगर यह है। यह पेशीनगोई आज से तीन साल पहिले कर दी गयी थी। मैंने उनको कहा भी था कि क्यों मौत के मुँह में जा रहे हो। मगर उन्होंने यह वचन दिया था कि वे पाकिस्तान नहीं जायेंगे और दिल्ली की सैर कर लौट आएँगे। मैं मान गयी। और पीछे वे पाकिस्तान गये तो उनका पत्र मिला था, मगर उन्होंने अपना पता नहीं लिखा और न ही यह लिखा था कि उन्होंने एक और शादी कर ली है।"

"मगर बहन, कुछ अपने मुताल्लिक भी पेशीनगोई लगाई है कि कहाँ अपनी मौत होने वाली है?" मरियम ने हँसी उड़ाने के लिये पूछ लिया।

"हाँ, जिन्होंने उनके मुताल्लिक यह बताया था कि वे पाकिस्तान में अपना जिस्म छोड़ेंगे, उन्होंने मेरे विषय में बताया कि मैं अपनी उमर के पचहत्तरवें साल में देवप्रयाग के समीप स्वामी गरीबदास के आश्रम में जिस्म छोड़ूँगी। उन्होंने एक बात और बताई है कि मैं अगले जन्म में भी इसी जमीन पर इन्सान का जिस्म ही पाऊँगी और मुझे अपनी हालत को सुधारने का मौका मिलेगा।

"मैं यह कोशिश कर रही हूँ कि किसी तरह से मुझको जो कुछ मैंने इस जन्म में सीखा है अगले जन्म में याद रहे। मुझको यह बताया गया है कि एक सीमा तक ही यह मुमकिन है। इसके लिये मन को शुद्ध करने की जरूरत है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मन के विकार हैं– काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार। इनको दूर हो जाने से मन के संस्कार अगले जन्म तक टिके रह सकते हैं।''

मरियम हँस पड़ी। उसने हँसकर कहा, ''मैं ऐसे आदमी से अपने बारे में पूछना चाहूँगी। अगर मुझे मालूम हो जाये कि मैं अपनी मौत से कैसे बच सकती हूँ तो बड़ा मजा रहे।''

''यह मुश्किल नहीं है। देवप्रयाग तक का सफर करना पड़ेगा। स्वामी जी तो अब अपने आश्रम से बाहर आते नहीं। उनकी उम्र इस वक्त एक सौ बारह वर्ष की है।''

''गुड गाड।'' मरियम के मुख से निकल गया। उसने कहा, ''तब तो बहुत ही बूढ़े हो गये होंगे?''

''हाँ और नहीं भी। अपनी उम्र के विचार से वे बूढ़े काफी ताकत रखते हैं।''

रमणी ने मरियम को सुझाव दे दिया, ''चलके मिल आओ न उनसे? वे गुरु जी के ताया जी हैं।''

''अरे! तो मिस्टर कुरैशी से आपका परिचय था?'' मरियम ने सदानारायण से पूछ लिया?

''जी। मैं उनको तब से जानता हूँ जब मैं अभी छः वर्ष का था। मैं दूसरी श्रेणी में पढ़ता था और कुरैशी साहब मेरे बड़े भाई के मित्र होने के नाते हमारे घर आया करते थे। स्वामी जी तो उनके विषय में और भी अच्छी तरह जानते हैं।''

मरियम ने कह दिया, ''मैं जा नहीं सकती। मेरी नौकरी का प्रबन्ध हो रहा है?''

''कहाँ?'' रमणी ने पूछ लिया।

''दो स्थान के लोग मेरे लिये यत्न कर रहे हैं। एक तो यहाँ महकमा तालीम में और दूसरे पाकिस्तान में।''

''तब तो तुमको भी पता कर लेना चाहिए कि पाकिस्तान जाना ठीक रहेगा या नहीं।''

''कितने दिन लगेंगे आने–जाने में?''

''एक सप्ताह तो लग ही जायेगा।'' मुमताज ने बताया।

''फिजूल है।''

बात समाप्त हो गयी। मुमताज तीन दिन तक दिल्ली में रही और दो बार कब्रिस्तान में अपने खाविन्द की कब्र पर फूल चढ़ाने गई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब तक मुमताज दिल्ली में रही, मरियम, रमणी और मुमताज में स्वामी जी के विषय में बातें होती रहीं। एक दिन रमणी अपने कलकत्ता से घर लौटने और रेल में अपने पिता से हुए वार्त्तालाप को बता रही थी, तो मरियम ने पूछ लिया, "यह वही स्वामी गरीब दास हैं, जहाँ बहन मुमताज अब रहती हैं?"

"हाँ, वही हैं।"

"परन्तु आंटी, तुम कलकत्ता से बम्बई क्यों लौटीं? बच्चा तो कलकत्ता में भी जना जा सकता था।"

"हाँ, मेरा बॉस जिसके साथ मेरा सम्बन्ध था, मुझको कलकत्ता में रहकर गर्भपात का प्रबन्ध कराने का खर्च भी दे रहा था। मगर इस समय से पहिले मैं स्वामी जी से मिल चुकी थी। और उन्होंने मेरे मन में यह विश्वास बैठा दिया था कि मैंने अपने माता–पिता से अन्याय किया है। मैंने उस समय से पहिले सदैव यही विचार किया था कि मैं युवा हूँ, सुन्दर हूँ, और संसार का भोग मेरा अधिकार है। स्वामी जी ने मेरे मस्तिष्क में यह अंकित कर दिया था कि मैं तो बिलख–बिलख कर कभी की मर चुकी होती, यदि मेरी माँ यही समझती जो मैं समझती हूँ। उसने मेरे शिशुकाल से मेरी सेवा मुझसे स्नेहवश की थी।

"इसी विचार से मैं गर्भपात के लिये तैयार नहीं हुई थी और माँ के चरणों में जाकर अपनी समस्या सुलझाने की योजना बना बैठी थी।"

मरियम समझी थी कि स्वामी कोई हिप्नाटिस्ट है और उसके सम्मोहन का प्रभाव रमणी पर अभी भी बना है। वह उसकी भविष्यवाणी और युक्तियों में किसी प्रकार का तत्त्व नहीं समझती थी।

तीसरे दिन मुमताज ने रमणी से विदा ली और चलने के लिये तैयार हो गयी। विचार आया कि जाने से पूर्व मरियम को भी अन्तिम नमस्कार कर दिया जाये। अतः दोनों ही जब मकान की छत से उतरीं तो मरियम की माँ के मकान की ओर घूम गयीं। मरियम वहाँ खड़ी प्रतीक्षा कर रही थी। मुमताज ने कहा, "लो मरियम बहिन, मैं अब जा रही हूँ। फिर मेल होगा, कह नहीं सकती। इसलिये खुदा हाफिज।"

मरियम ने कह दिया, "मगर बहिन, मैं तो आपके साथ चल रही हूँ।"

"अरे, क्या हुआ है इन दो घण्टों में?"

"बात यह हुई है कि पाकिस्तान के लोग मेरी नौकरी की पेशकश लेकर अभी–अभी आये हुए थे। एक सहस्र रुपया महीना वेतन पर वाशिंगटन में नौकरी। भत्ता मकान और भोजन अलहदा है। मम्मी जोर दे रही हैं कि मैं मान जाऊँ। मुझे डर लग रहा है कि कहीं मेरी मौत तो मुझको नहीं बुला रही।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसलिये आपके स्वामी जी से बात करने को जी कर आया है।''

मुमताज भौंचक्की हो मुख देखती रह गयी। रमणी ने कह दिया, ''यह मानव की प्रकृति है कि वह सुपरस्टिशस (भ्रम–ग्रसित) है। बड़े–बड़े नास्तिक, हिटलर और नैपोलियन जैसे तानाशाह भी इसके शिकार रहे हैं और मरियम भी उसी नौका में है।''

''बहिन! मैंने माँ को टैक्सी लेने भेजा है। वह आती ही होगी और उसमें ही चलेंगे।'' मरियम ने कह दिया।

फ्लोरा टैक्सी लेकर आयी और दोनों रेल के स्टेशन को चल दीं।

: 12 :

देश में नया विधान लागू कर दिया गया था और उसके अनुसार देश भर में नये निर्वाचन होने वाले थे। डॉ. मुखर्जी ने मन्त्रिमण्डल छोड़ा तो एक कांग्रेस विरोधी दल बनाने के पीछे लग गये। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के कुछ लोग राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को ही एक राजनीतिक दल में बदलना चाहते थे, परन्तु यह बात दल के अधिकारियों को स्वीकार नहीं हुई। इस पर यह विचार उत्पन्न हुआ कि संघ के समर्थन से एक दल निर्माण किया जाए। यह विचार अधिक पसन्द किया गया। इस विचार विमर्श के साथ डॉ. मुखर्जी के भारत के मन्त्रिमण्डल से त्यागपत्र का समाचार प्रसारित हुआ। इस पर दिल्ली के नागरिकों की ओर से डाक्टर साहब का अभिनन्दन किया गया। यह अभिनन्दन भी संघ के प्रबन्ध से ही हो पाया था।

हिन्दू प्रायः सब अनुभव करते थे कि पाकिस्तान सरकार का पूर्वी पाकिस्तान में हिन्दुओं के साथ अत्यन्त क्रूरता का व्यवहार हुआ है। कांग्रेस और कांग्रेस के बाहर के सब हिन्दू वहाँ हिन्दुओं के मारे जाने पर क्रुद्ध थे। परन्तु कांग्रेसी तो सरकार की नीति को ठीक मानते थे। वे समझते थे कि पण्डित नेहरू कभी गलती नहीं कर सकते। कांग्रेस के बाहर के लोग कांग्रेस की नीति को अशुद्ध मानते हुए भी नहीं जानते थे कि क्या करें? कांग्रेस के अतिरिक्त सरकार चलाने में समर्थ देश में कोई है, दिखाई नहीं देता था।

डॉ. मुखर्जी ने दिल्ली के अभिनन्दन में अपनी नीति का वर्णन किया। वहाँ उपस्थित जनता ने उसका समर्थन किया। परन्तु उस नीति भेद संचालन के लिये कोई राजनीतिक संस्था चाहिए थी। वह देश में विद्यमान नहीं थी।

वैसे तो हिन्दू महासभा चल रही थी। परन्तु राजनीतिक कार्य करने में यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

असफल सिद्ध हुई थी। हिन्दू महासभा की एक कमजोरी रही थी। वह यह कि यह हिन्दुओं के अन्य सजीव अंगों को न तो सहयोग दे सकी थी और न ही देश में स्वराज्य लाने के किसी आन्दोलन को चला सकी थी। इस कमी में एक कारण था। हिन्दू महासभा जहाँ मतमतान्तरों के विषय में तटस्थ थी, वहाँ राजनीतिक कार्यों से भी तटस्थ रहती थी। 1924 से 1947 तक भारत की स्वतन्त्रता का सबसे बड़ा विरोधी अंग्रेज था। हिन्दू महासभा अपने में उन तत्त्वों को सम्मान और आदर देती थी जो अंग्रेज सरकार के भारत में रहने के पक्ष में थे।

सब राय साहब, राय बहादुर, बड़े–बड़े जमींदार और राजे–महाराजे हिन्दू महासभा में मान पाते थे और उनको भीतर रखने के लिये हिन्दू महासभा अपना राजनीतिक कार्यक्रम नहीं बना सकती थी।

हिन्दू सभा की ओर से 1927 में एक नेशनलिस्ट दल बना था, 1930 में वह दल गांधी के नामक सत्याग्रह में सम्मिलित तो हुआ परन्तु अपना अस्तित्त्व कांग्रेस से पृथक नहीं रख सका। इसका कारण था दल के नेताओं के मस्तिष्क में विभ्रम।

डॉ. मुखर्जी ने अपने मकान पर भावी राजनीतिक दल के विषय में विचार करने के लिये एक गोष्ठी बुला ली। इस गोष्ठी में दिल्ली के संघ के कुछ कार्यकर्ता और पंजाब के कुछ हिन्दू महासभा वाले आए हुए थे। ये हिन्दू सभाइट, महासभा से निकले हुए लोग थे। हिन्दू महासभा में नई दिल्ली के हिन्दू महासभा भवन पर अधिकार जमाने का एक झगड़ा हुआ था और उसके कारण ये लोग हिन्दू महासभा के बाहर हो गये थे।

डाक्टर जी ने उपस्थित मित्रों के सामने अपना प्रस्ताव रखा हमें कांग्रेस की नीतियों का विरोध करना चाहिए। ऐसा करने के लिए एक सुदृढ़ राजनीतिक दल बनाना आवश्यक है। मैं आप सबका इसमें सहयोग चाहता हूँ।

इस विचार के आरम्भ होने पर विचार–विमर्श होने लगा। पंजाब के एक सज्जन, जो हिन्दू सभा में किसी समय सक्रिय भाग लेते रहे थे, कहने लगे, "इस बात की आवश्यकता तो है परन्तु हिन्दुओं में दोष है कि वे अपनी भूलों से लाभ नहीं उठाते। मैं यह कहना चाहता हूँ कि हम को हिन्दू महासभा जैसा दल नहीं बनाना चाहिए।

संघ के एक प्रमुख कार्यकर्ता ने पूछ लिया, "खन्ना साहब! कुछ व्याख्या से बात करिये। हिन्दू महासभा में क्या दोष था?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"था नहीं अभी भी है, खन्ना ने कह दिया, "देखिये, हिन्दू महासभा ने आज तक अपने राजनीतिक सिद्धान्त और नीति का निश्चय नहीं किया। हिन्दू महासभा अपने और कांग्रेस में वास्तविक अन्तर को समझ नहीं सकी। जितना कुछ समझा है उसको शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकी।

"स्वराज्य से पूर्व के काल में तो सिद्धान्तों में सबसे प्रमुख कार्य यह होना चाहिए था कि इसे कांग्रेस को एक कोने में करने का प्रयत्न करना चाहिए था। कांग्रेस अहिंसा के कोने में बैठी हुई देश के पूर्ण प्रांगण में टाँगें पसारे हुए थी। उसने यह प्रकट करने का यत्न किया था कि पूर्ण देश अहिंसा की नीति का समर्थक है। साथ ही कांग्रेस ने यह सिद्ध करने का यत्न किया कि हिन्दुस्तान की परिस्थिति में अहिंसा मार्ग के अतिरिक्त अन्य कोई मार्ग ही नहीं। वे लोग जो हिंसात्मक उपायों को भी ठीक समझते हैं वे उँगलियों पर गिने जा सकते हैं।

"यह बात गलत थी। देश हिंसात्मक उपायों में भी विश्वास रखता था परन्तु उस दिशा में देश का नेतृत्व कराने वाली कोई संस्था नहीं थी। अतः हिंसा में विश्वास रखने वाले असंगठित ही रहे थे।

"इसके अतिरिक्त हिन्दू महासभा अपने और कांग्रेस में कोई मतभेद नहीं रखती थी। मुसलमानों से हिन्दू महासभा सहयोग न करने का निश्चय करती थी। यह कोई 'पौजिटिव' कार्य नहीं था। साथ ही यह नकारात्मक बात थी।

"कराची अधिवेशन के समय कांग्रेस ने अपनी राजनीतिक नीति के साथ आर्थिक नीति की घोषणा भी की थी। इस नीति की बात थी, देश में संयुक्त राज्य (फैडरल स्टेट) की स्थापना और दूसरे थी व्यक्तिगत सम्पत्ति को सीमित करने का विचार। कांग्रेस की ये दोनों बातें अशुद्ध थीं। इस दिशा में हिन्दू महासभा मौन थी। वास्तव में ये दो बातें और स्वतन्त्रता प्राप्त करने में अहिंसात्मक उपाय ही कांग्रेस की नीतियाँ थीं। हिन्दू महासभा इन तीनों बातों में या तो कांग्रेस से सहमत थी अथवा वह इतनी सूझ–बूझ नहीं रखती थी कि इन विषयों पर अपना मत स्थिर कर सके।

"देखिये डाक्टर साहब! केवल एक नया दल बना कर देश की राजनीतिक स्थिति में विषमता उत्पन्न करने की आवश्यकता नहीं। यदि देश को एक नया नेतृत्व देने की आपके मन में कोई निश्चित योजना हो वह बताइये।"

"योजना तो है।" डाक्टर साहब ने कहा, "हम देश में शुद्ध राष्ट्रीयता के आधार पर एक दल निर्माण करना चाहते हैं। व्याख्या की बात तो हम पीछे विचार करेंगे। इस समय सिद्धान्त की बात केवल राष्ट्रवाद ही कही जा सकती है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वही खन्ना पुनः कहने लगा, "यह तो मैं समझता हूँ कि व्याख्या की बात पीछे निश्चय करेंगे। इस पर भी कांग्रेस से कुछ तो भिन्नता होनी चाहिए जिससे एक नवीन दल की स्थापना की आवश्यकता बताई जा सके। कांग्रेस भी तो राष्ट्रवादी संस्था है।

"मैंने निवेदन किया है कि हिंसा–अहिंसा का प्रश्न अब नहीं रहा। राज्य तो अहिंसात्मक हो सकता ही नहीं। कश्मीर में सशस्त्र विरोध करने से कांग्रेस ने गांधी जी की अहिंसा की नीति का त्याग तो कर ही दिया है। अतः इस विषय में कांग्रेस हमारे मत को मानने वाली है। कांग्रेस को भविष्य में अहिंसा से मुक्त रहने के लिए तो कांग्रेस के भीतर ऐसे निर्भीक विद्वानों और नेताओं की आवश्यकता है जो नेहरू को उसके मुख पर सुनाने वाले हों। जो गांधी जी की दूषित नीति की अव्यावहारिकता को प्रकट करने वाले हों।

"नया दल तो यह बताये कि राजनीतिक संगठन और आर्थिक नीति में यह दल कांग्रेस से क्या सिद्धान्तात्मक मतभेद रखता है। क्या हम सम्पत्ति रखना वर्जित करेंगे? क्या हम फैडरल स्टेट को रहने देंगे। हम व्यक्ति की स्वतन्त्रता राजनीति एवं आर्थिक रहने देंगे अथवा नहीं?

"मैं समझता हूँ कि जो भी दल बनेगा यदि वह इन दिशाओं में कांग्रेस के साथ रहेगा तो अंत में कांग्रेस में ही सम्मिलित हो जावेगा। अन्यथा वह दल निस्तेज हो जायेगा। वैसे ही जैसे हिन्दू महासभा स्वराज्य पूर्व काल में कांग्रेस की राजनीतिक तथा आर्थिक नीतियों से भिन्नता न रखने के कारण तेजहीन रही थी।"

डाक्टर साहब ने समझा कि यह भयानक प्रश्न है। जहाँ तक 'फेडरल स्टेट' का सम्बन्ध था वह बात संविधान में निश्चय हो चुकी थी। उसका विरोध कर सकना सम्भव नहीं था। डाक्टर साहब स्वयं इसके पक्ष में थे। जहाँ तक सम्पत्ति का प्रश्न था डाक्टर साहब मन से सम्पत्ति रखने के पक्ष में थे परन्तु किस प्रकार इस बात को प्रकट करें वे निश्चय नहीं कर सके थे। वे खन्ना साहब की युक्ति का खण्डन नहीं कर सके। जब तक कोई आधारभूत सिद्धान्त तथा नीति न हो तब तक नये दल बनाने की आवश्यकता नहीं।

इस कारण वे कहने लगे, "वास्तविक बात है राष्ट्रीयता की। इसके लिये सब नीतियाँ निश्चय की जाती हैं। ये हम दल निर्माण कर समय–समय पर निश्चय करते रहेंगे।"

इस पर संघ के प्रवक्ताओं ने डाक्टर साहब का समर्थन कर दिया। इसके उपरान्त गोष्ठी समाप्त हुई और संघ के सहयोग के विषय में चर्चा होने लगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह बात स्थानीय कार्यकर्त्ता बता नहीं सकते थे। बात नागपुर से करने का विचार हुआ और संघ के केंन्द्रीय कार्यालय से लिखा–पढ़ी होने लगी।

समय व्यतीत होता गया और राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ किसी निश्चय पर नहीं पहुँच सका।

इस समय डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी को कुछ ऐसा अनुभव हुआ कि निर्वाचन इतने समीप आ गये हैं कि नवीन दल निर्माण में अधिक विलम्ब करना उचित नहीं। अतः उन्होंने कलकत्ता में प्रान्तीय स्तर पर एक दल बनाने की घोषणा कर दी। दल का नाम 'इंडियन पीपल्स पार्टी' रखा गया। इस दल के तत्त्वाधान में एक सार्वजनिक सभा भी की गई। इस दल के नेता डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी स्वीकार किये गये।

इस पर राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ में राजनीतिक दल निर्माण करने के विषय में पुनः विचार होने लगा। संघ के तीन विचार हो गये। एक तो राजनीति में संघ के कार्य को अनुचित मानने वाले; दूसरे उचित मानने वाले; इन दूसरे विचार के नेताओं में फिर दो पक्ष बन गये। एक डाक्टर साहब के नेतृत्व को पसन्द करते थे और दूसरे नापसन्द करते थे।

भारी संघर्ष के उपरान्त यह निश्चय हुआ कि दल बनाया जाय और इसके नेता डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी बनाए जावें। इस निश्चयानुसार राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के उन स्वयं सेवकों की एक सभा जालन्धर में बुलाई गई जो राजनीतिक कार्य करने के लिए उत्सुक थे। इस सभा में दल की स्थापना हुई। दल का नाम रखा गया 'भारतीय जनसंघ' और इसके प्रधान निश्चय किए गए पंजाब के एक आर्य समाजी नेता जो अंग्रेजी काल में एक राजनीतिक बहुमत के मुकदमे में दण्ड पा चुके थे।

इस पर वे लोग जो डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी के पक्ष के थे उन्होंने डाक्टर साहब को भारतीय जनसंघ में आने के लिए जनसंघ की स्थापना के लिए मुंगेर (बिहार) में एक सभा बुलाई और उसमें डाक्टर को प्रधान बना दिया गया। इस प्रकार डाक्टर साहब राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के केन्द्रीय कार्यालय की इच्छा के विपरीत भारतीय जनसंघ में आ गए और फिर उनके व्यक्तित्त्व के सम्मुख पंजाब के भूतपूर्व क्रांतिक्रारी नेता रह नहीं सके। इस पर दिल्ली में एक अखिल भारतीय स्तर पर जनसंघ की स्थापना के लिए सभा बुलाई गई।

यद्यपि जालन्धर में भी स्थापना अखिल भारतीय स्तर पर की गई थी और उसमें नेता भी अखिल भारतीय स्तर पर बनाया गया था परन्तु दिल्ली में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जालन्धर वाली सभा को अस्थायी प्रबन्ध बता कर रद्द करने का यत्न किया गया। इससे तीन दिन के कठोर संघर्ष के उपरान्त डॉ. श्यामाप्रसाद को भारतीय जनसंघ का प्रधान बना लिया गया और इसकी नीतियों में आंशिक रूप में समाजवादी सिद्धान्तों को स्वीकार कर लिया गया।

इस सभा में भारतीय जनसंघ नाम स्वीकार किया गया। इसका ध्वज दीपक वाला स्वीकार किया गया और भूमि सुधार के नाम पर सम्पत्ति विहीनता की ओर पग उठाया गया।

इस सभा में कार्यकारिणी में खन्ना साहब को स्थान नहीं मिला। खन्ना को जालन्धर में बनी कार्यकारिणी में भी नहीं रखा गया था। दिल्ली में मिस्टर खन्ना प्रमुख कार्यकर्ताओं से मिला था, परन्तु उसको कार्यकारिणी में लेने का किसी ने प्रस्ताव नहीं किया।

खन्ना को इस विषय में विस्मय तो हुआ परन्तु उसके परिचित शर्मा ने उसका संशय निवारण कर दिया। सभा के उपरान्त शर्मा का ध्यान खन्ना की ओर चला गया। वह उसके समीप आया और अभिवादन कर बोला, "मैंने यत्न किया था कि आपका नाम कार्यकारिणी में रख लिया जाय। परन्तु किसी ने इस ओर ध्यान नहीं दिया।"

"यह स्वाभाविक ही था।" खन्ना ने मुस्कुराते हुए कहा, "मैं बहुसंख्यक स्वयं सेवकों के विचार का नहीं हूँ।"

"विचार की कोई बात नहीं, खन्ना साहब! वास्तव में विचारशीलता का तो यहाँ अभाव ही है। मुख्य बात यह थी कि आप राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की सूची में नहीं थे। यह यत्न किया गया है कि कार्यकारिणी में स्वयं सेवकों के अतिरिक्त कोई न रखा जाय।"

"परन्तु डाक्टर साहब भी तो स्वयं सेवक नहीं हैं। वे तो प्रधान बना दिए गये हैं।

"हाँ, परन्तु वे तो नियम का अपवाद मात्र हैं। कदाचित कुछ और भी है। यह उनके व्यक्तित्त्व के कारण ही है।"

खन्ना समझा तो मुस्करा दिया। उसने कुछ नहीं कहा। डाक्टर साहब मंच से उतर रहे थे। खन्ना उनके सम्मुख जाकर खड़ा हुआ। डाक्टर साहब ने उसको देखा तो मुस्करा कर कहा, "अब तो आपको जनसंघ में सम्मिलित हो जाना चाहिए।"

"वह तो मैं हूँ ही। परन्तु जो कुछ भी अभी तक निश्चय हुआ है वह जनसंघ की स्थापना की अनिवार्यता को सिद्ध नहीं करता।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"देखिए खन्ना साहब! बाल की खाल उतारने में लाभ नहीं। स्टीम रोलर चलना चाहिए। शेष सब कुछ अपने समय पर ठीक हो जावेगा।"

खन्ना मन में सोचता था—गांधी जी भी इसी स्टीम रोलर की आशा में जवाहरलाल जैसे हिन्दू मत विरोधी और अपनी अर्थ व्यवस्था की कल्पना के विरोधी को न केवल सहन करते थे वरंच उसकी नीतियों के सहायक भी हो रहे थे। क्या उसका इतिहास यहाँ भी दोहराया जावेगा। उसने हाथ जोड़ कर डाक्टर साहब को नमस्कार करते हुए कहा, "भगवान करे कि आप स्टीम रोलर हों और कंकड़ दूसरे हों।"

इतना कह कर वह वहाँ से सीधा रेलवे स्टेशन पर पहुँच गया और जालन्धर की गाड़ी में जा बैठा।

सदानारायण भी जनसंघ की स्थापना समारोह में सम्मिलित होने के लिये दिल्ली आया हुआ था। समारोह में केवल दर्शक के रूप में ही रमणी और सदानारायण गए हुए थे। सदानारायण ने समारोह की समाप्ति पर डाक्टर साहब को नमस्कार किया तो डाक्टर साहब ने प्रसन्नता प्रकट करते हुए पूछ लिया, "तो पण्डित जी! आप भी आये हुए हैं।"

"जी मैं आज प्रातः ही यहाँ आया था।"

"किसी काम से आये थे?"

"जी। मेरा एक ही काम है। वह है इतिहास लिखना। वर्तमान युग का इतिहास लिखने के लिए किसी समाचार पत्र से सम्बन्ध बनाना आवश्यक था सो मैंने कलकत्ता के बंगवासी का संवाददाता बनना स्वीकार कर लिया है। उसके प्रतिनिधि के रूप में यहाँ उपस्थित हुआ था।"

"अच्छा। कभी मिलियेगा?"

"जब आशा करिये। मैं एक सप्ताह तक यहाँ रहने का विचार कर रहा हूँ।"

"कल मध्याह्नोत्तर आ जाइये। मैं बंगबासी के लिए एक विशेष संदेश देना चाहूँगा।"

"वैसे तो मैं आपके नवीन दल के प्रधान बनने का समाचार भेज ही रहा हूँ।"

"और क्या लिख रहे हैं?"

"यही कि आप जैसा योग्य व्यक्ति एक सीमित घेरे में बन्द हो गया लगता है।"

"आप तो मुझको केवल हिन्दुओं तक ही सीमित रखना चाहते थे। यहाँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैंने यत्न कर घेरे को पूर्ण भारतवासियों तक फैला दिया है।"

"हाँ, यह तो किया गया है। इस दृष्टि से तो आप कांग्रेसियों को भी मात कर रहे हैं। अच्छा मैं कल मिलूँगा।"

सभा जैन मन्दिर के पिछवाड़े में स्थित कन्या महाविद्यालय में हो रही थी। वहाँ से सदानारायण रमणी के साथ कनाट प्लेस की ओर चल पड़ा। रमणी ने पूछ लिया, "आपने इस क्षेत्र को सीमित कैसे कह दिया?"

"रमणी! मेरा अभिप्राय हिन्दुओं के अन्य समुदायों से पृथक होने से था।"

"परन्तु यह तो अभी आरम्भ ही है। प्रथम तो एक बिन्दु से ही कार्यारम्भ करना पड़ता है। इनकी अवस्था में वह बिन्दु संघ ही बन रहा है।

"यह तो अब देखने का विषय है कि ये हिन्दुओं से सहयोग करेंगे अथवा कांग्रेसियों की भाँति ये भी अहिन्दुओं को अपने में सम्मिलित करने के लिए हिन्दुओं के हितों का बलिदान नहीं कर देंगे। मैं देश और हिन्दू–हितों में अन्तर नहीं समझता।"

वास्तव में संघ तो हिन्दुओं का सक्रिय भाग है। इस कारण हिन्दू–हित संघ के अन्तर्गत है।"

"यह मैं मानता हूँ, रमणी। ये हिन्दू रूपी शरीर की भुजायें तो हैं परन्तु यह मस्तिष्क नहीं हो सकता। मैं यह देख रहा हूँ कि भुजाओं को मस्तिष्क के स्थान पर स्थापित कर दिया है।"

"तो क्या इस संस्था में कोई भी बुद्धिशील व्यक्ति नहीं है।"

"एक दृष्टि से भुजाओं और मस्तक में कोई अन्तर नहीं है। दोनों मांस और अस्थिओं का पुंज ही है। इसपर भी दोनों का कार्य भिन्न–भिन्न है भुजाओं में भी मस्तिष्क की भाँति वाततंतु हैं और ये उनके बल पर काम करती हैं। परन्तु भुजाओं और अन्य सब शरीर के वाततंतु तो मस्तिष्क के आदेश पर काम करती हैं।

"संघ की अपनी वाततंतु हैं। इसपर भी उनका सम्बन्ध तो मस्तिष्क से होना चाहिए। मुझको कुछ ऐसा समझ आ रहा है कि हिन्दू समाज की भुजाओं के वाततंतुओं का समाज के मस्तिष्क से सम्बन्ध नहीं है।

"और यह मस्तिष्क कहाँ है?"

"वह समाज के विद्वान लोग हैं। उनको एकत्रित कर दल के सिद्धांत और नीति का निर्णय उनसे करवाना चाहिए था। मैं देखता हूँ कि भुजायें ही मस्तिष्क का काम करने लगी हैं।"

"क्या यह इस प्रकार नहीं कि संघ अपने में पूर्ण समाज मान सर्वांगपूर्ण हो?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह हो सकता है। परन्तु फिर इस शरीर के बाहर हिन्दू समाज इससे पृथक मानना पड़ेगा। यह एक नवीन समाज हो जावेगा और समय–समय पर इसकी हृदयतंत्री दूसरे हिन्दू समाज से पृथक बोलने लगेगी।"

रमणी ने केवल यह कह दिया, यह भी तो सम्भव है कि एक यात्री की भाँति इस राजनीतिक दल का पालन–पोषण कर पुनः हिन्दू समाज की सेवा के लिए लगा दिया जाय।"

"हो सकता है। किन्तु यह तो भविष्य ही बतायेगा।"

: 13 :

सदानारायण को गिरधारीलाल की याद आ गई। उसके लड़के कुन्दनलाल ने एक एंग्लो–इण्डियन लड़की से किसी दुकान पर सामान खरीदते–खरीदते सम्बन्ध बना लिया था। सदानारायण ने कुन्दन और उसकी पत्नी मेरी से गिरधारीलाल के घर आकर फिर अपने होटल में खाना खाते हुए बातचीत की थी। मेरी बिना विवाह किए एक परिवार में सम्मिलित हो गई थी। उसे कुन्दनलाल तो लड़की के सम्मोहन में फँसा ही प्रतीत होता था।

सदानारायण ने उनके मनोभावों को जानने के लिए उनको साधना आश्रम में आमंत्रित किया या। वे आये भी थे परन्तु जो कुछ वह दिल्ली में दो दिन में जान सका था उससे अधिक कुछ नहीं जान पाया।

आज जनसंघ के समारोह के उपरांत बेकार होने से उसे उस दंपति की याद आ गई। उसे गिरधारी से मिले तो दो वर्ष होने जा रहे थे और मेरी तथा कुन्दन से मिले हुए भी डेढ़ वर्ष हो रहा था।

कनाट प्लेस में पहुँच उसने रमणी से पूछ किया, "अब आप किधर जायेंगी?"

रमणी ने कहा "मैं तो सीधी घर जाना चाहूँगी।"

"तो तुम जाओ। मुझे दरियागंज में कुछ काम है। मैं वहाँ से होटल चला जाऊँगा।

उसने टैक्सी पकड़ी और डाकखाने से बंगवासी पत्र को तार दे गिरधारी के घर जा पहुँचा। गिरधारीलाल का पोता श्रवणकुमार द्वार पर ही मिल गया और वह लपककर मकान पर चढ़ गया और चढ़ता हुआ माँ को पुकार–पुकार कर कहता जा रहा था, "माँ! माँ! बम्बई वाले आये हैं।"

सदानारायण को मकान के नीचे लगी घंटी बजानी नहीं पड़ी। गिरधारीलाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
की पत्नी सुभद्रा नीचे उतर आई। उसने कह दिया, "भापा, यहाँ किस लिए खड़े हैं, ऊपर आ जाइये न?"

"बहुओं वाला घर है, बिना सूचना दिये कैसे आ सकता था।"

"आओ। यहाँ एक नया झगड़ा खड़ा हो गया है।"

सदानारायण उत्सुकता से सुभद्रा का मुख देखने लगा। वह ऊपर की मंजिल पर चढ़ने लगी तो सदानारायण उसके पीछे–पीछे चढ़ने लगा। ऊपर पहुँच कर बैठकघर में सदानारायण को बैठाकर सुभद्रा ने कहा, "छोटी बहू के लड़का हुआ है परन्तु दो मास से कुन्दन लापता है। बहुत खोज की गई और उसका पता नहीं चल पाया।"

"बच्चा कब हुआ है?"

"वह आज बीस दिन का हो गया है। मेरी न तो प्रसन्न है न ही शोकग्रस्त। हम सब विस्मय कर रहे हैं कि वह हम और हमारे समाज के विषय में क्या विचार करती होगी।"

"इस समय कहाँ है वह?"

"श्रवण उसे बुलाने के लिये गया है। बड़ी बहू, बनवारी की पत्नी, तो कह रही है कि मेरी को घर से निकाल दिया जाय। परन्तु मेरा मन नहीं मान रहा।"

"किसलिए?"

"मेरी ने प्रसव से पूर्व ही मुझसे पूछा था कि यदि उसका पति लौट कर नहीं आया तो हम उसके साथ कैसा व्यवहार करेंगे।

"मैंने उससे कहा था–मुझे आशा है कि कुन्दन लौट आयेगा। इसके अतिरिक्त भी हमने उसको घर का प्राणी माना है और कोई कारण नहीं कि उसको अब कुछ और समझें। इसपर भी वह सब प्रकार से स्वतन्त्र है। इस स्वतन्त्रता और हमारे बन्धन से कुन्दन के लौटने अथवा न लौटने का कोई सम्बन्ध नहीं।"

"सुभद्राजी! आप तो दार्शनिकों की–सी बातें करने लगी हैं। मैं इससे बहुत सुख अनुभव करता हूँ।"

"भापा! अपने परिवार में यह चौथी घटना है। पहले निर्मला का पति निर्मला को छोड़ गया था। पीछे निर्मला से रमेश के जन्म की घटना भी हुई। गौरी के विवाह की बात भी हुई और अब कुन्दन की समस्या चल रही है। इन सब घटनाओं ने मुझको भाग्य के भरोसे रहने की सीख दी है। यही तो इस समय भी कर रही हूँ। मैं यह समझती हूँ कि मेरी मेरे कहने पर यहाँ आई नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थी। उसके भाग्य में इस घर का अन्न–पानी खाना लिखा था और वह आ गई। वह घर में हिलमिल गई है। अब परिस्थिति ऐसी हो गई है कि मेरी का सम्बन्ध इस घर से छूट रहा लगता है। मैं विचार करती हूँ कि यदि उसके भाग्य में यहाँ का अन्न–पानी लेना नहीं रहेगा तो वह चली जायेगी। मैं क्यों इसमें किसी प्रकार का हस्तक्षेप करूँ?''

इस समय बनवारी और कुन्दन की पत्नियाँ आ गईं। बनवारी की पत्नी की गोदी में मेरी का बच्चा था और मेरी स्वस्थ, प्रसन्न–बदन और पूर्ववत् चपल थी।

सदानारायण ने दोनों हाथ जोड़ नमस्कार कर दी। सदानारायण को विस्मय हो रहा कि सुभद्रा के कथन का लक्षण तो मालिनी के मुख पर है नहीं।

दोनों बैठीं तो सदानारायण बच्चे को गोदी में लेकर उसके गाल पर उँगली से छूकर उसका ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने लगा। बच्चे ने सदानारायण की ओर आँख घुमाई और मुस्कराना आरम्भ कर दिया। सदानारायण ने कहा, ''हाँ, यह ठीक है। पहचान लो बच्चू! मैं भी तुम्हारा कुछ हूँ।''

इतना कह उसने अपनी जेब से एक पाँच रुपये का नोट निकालकर उसकी ओर किया तो बच्चे का हाथ उसकी ओर उठा। सदानारायण ने वह नोट उसकी उँगली में देकर बच्चे को सुभद्रा की गोदी में दे दिया।

''सुनाओ मेरी! कैसी हो।''

''अपने आपमें तो ठीक प्रतीत होती हूँ।''

''तो कुन्दन तुमको भी बताकर नहीं गया?''

''नहीं। केवल इतना कहते थे– प्राणीशास्त्र का यह कहना है कि प्राणी के पूर्ण जीवन का उद्देश्य सन्तान निर्माण करना है। वह हो गई। हम दोनों ने अपना उद्देश्य पूर्ण किया और अब हमको एक–दूसरे की आवश्यकता नहीं रही।''

''तो तुम भी यही समझती हो।''

''समझती तो नहीं थी। बोटनी मैंने भी पढ़ी है। कुछ पेड़ हैं जो एक बार ही फूल देते हैं। फूलों में बीज पड़ जाने पर पेड़ मुर्झाने लगते हैं और फिर वे सूखकर मर जाते हैं। परन्तु कई पेड़ ऐसे भी हैं कि वे एक ही बार फूल देने से अपना कार्य समाप्त नहीं समझते। वे बार–बार फलते हैं और बार–बार उनके बीजारोपण होता है। मैं तो अपने को इस प्रकार का पेड़ समझती थी। परन्तु कदाचित वे अपने को प्रथम प्रकार का पेड़ मानते थे।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सदानारायण इस विवेचना पर हँस पड़ा। उसने पूछ लिया, "पर मेरी! क्या तुम पेड़ ही हो अथवा उससे कुछ अधिक हो?"

"यह बताना कठिन है कि आम का पेड़ एक आम के भूमि पर गिर जाने पर उसके प्रति क्या भावना रखता है। सब प्राणियों की अपनी–अपनी विशेषताएँ हैं। यह भी सम्भव हो सकता है कि पेड़ पक कर गिरे आम के लिए सहानुभूति और प्रेम रखता हो और उसको उठाकर अपनी गोदी में रखने का यत्न करना चाहता हो। परन्तु अपनी परिस्थिति से विवश हो वह उसे देखता ही रह जाता हो।"

सदानारायण को समझ आया कि मेरी युक्ति करना तो बहुत अच्छा जानती है। इस पर भी वह यह देखना चाहता था कि एक पेड़ और मनुष्य में वास्तविक अन्तर वह समझी है अथवा नहीं। उसने कुछ गम्भीर होकर पूछ लिया, "यह तो तुम ठीक समझी हो। कदाचित आम का पेड़ भी पक कर गिरे आम को गोदी में बैठाना चाहता हो। मनुष्य भी बड़े हो गए अपने युवा पुत्र को गोदी में बैठा रखना पसन्द नहीं करता। वह भी तो शिशु को ही गोदी में बैठाता है। ठीक उसी प्रकार जैसे कच्चे आम से डालें चिपटी रहती हैं। इस पर भी कुछ अन्तर तो प्रतीत होता है। पेड़ और मनुष्य में वह अन्तर किसी भी कारण से हो। है तो अन्तर ही।

"देखो मैं समझता हूँ। वनस्पतियाँ मानव सृष्टि से पहले बनी थीं। मानव ने अपने शरीर की विवशताओं को बहुत सीमा तक दूर कर लिया है। मनुष्य ने मकान, महल, अटारियाँ बना ली हैं। इसने रेल, तार और हवाई जहाज बना लिए हैं। इसने शत्रु से अपनी रक्षा के लिए बढिया से बढ़िया अस्त्र शस्त्र बना लिए हैं। प्राकृतिक भोजन पर्याप्त न होने पर इसने कच्चे भोजन को पका कर खाने योग्य बनाने का प्रबन्ध कर लिया है। सर्दी–गर्मी से बचने के लिए वस्त्र और अन्य कई प्रकार के साधन एकत्रित कर लिए हैं।

"परन्तु आम का पेड़ तो चटनी बनाने के लोभी मनुष्य को कच्चे आम तोड़ कर ले जाने से रोकने का कुछ भी प्रयास नहीं कर सका। लाखों वर्ष से मनुष्य कच्चे आम तोड़–तोड़ कर पीस कर चटनी बनाते रहे हैं परन्तु आम के पेड़ ने उसे अपने बच्चों को उसकी गोदी से छीनकर ले जाने से कभी मना नहीं किया। न ही उसकी रक्षा के लिए किसी प्रकार की तैयारी प्रतीत होती है।

"मेरी! यह अन्तर दिखाई देता है अथवा नहीं?"

"मैं तो समझी हूँ कि उसके शरीर की बनावट ही ऐसी है कि वह कुछ कर नहीं सका।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"यही तो मैं कह रहा हूँ। शरीर के कौन से भाग की बनावट मनुष्य में घटिया है? और क्यों?"

"यह क्यों की बात तो मैं समझ नहीं सकी। हाँ आपने ही बताया था कि मानवों में बुद्धि है जो पेड़ों में अथवा जीव–जन्तुओं में नहीं होती।"

"थोड़ी–बहुत बुद्धि तो सब प्राणियों में होती है। परन्तु मनुष्य की बुद्धि बढ़िया प्रकार की है। यह विकास पा सकती है। इसके विकास की सीमा नहीं।"

"तुमने कहा है कि कदाचित आम भी पक कर गिरे आम से सहानुभूति और स्नेह रखता है। परन्तु वह विवश है। उसके शरीर की बनावट उसको वह स्नेह तथा सहानुभूति प्रकट करने की सामर्थ्य नहीं देता। मैं पूछ रहा हूँ कि यदि उसकी यह विवशता अकारण है तब तो संसार में बहुत अन्याय हो रहा है।

"भारतीय मीमांसक ऐसा नहीं मानते। उनका कहना है कि यह अन्याय का सूचक नहीं कि एक प्राणी जन्म से ही अकारण प्रतिबन्धों में बधा हुआ है और दूसरा उससे बँधा हुआ नहीं है। इस भिन्नता में कारण होना चाहिए। वह कारण यह है कि प्राणी ने पूर्व जन्म में पुण्य कार्य किए हैं कि उनको मानव शरीर मिला है और फिर उस मानव शरीर में बुद्धि मिली है जिसके विकास की कोई उच्च सीमा नहीं।"

"यह सब हो सकता है।" मेरी का कहना था, "परन्तु इस सब विवेचना से लाभ क्या?"

"लाभ यह है कि यदि मुझको यह विदित हो जाय कि मैंने यह बुद्धि पाने के लिए घोर तपस्या और पुरुषार्थ किया था तो मैं इस अमूल्य पदार्थ का दुरुपयोग नहीं करूँगा। साथ ही ऐसा कोई काम नहीं करूँगा जिससे यह मिला हुआ धन छिन जाय।"

"परन्तु यह कैसे पता चले कि अमुक कार्य का यह फल है?"

"जिस कार्य से इस जन्म में बुद्धि निर्मल होती है वही कार्य तो इसकी प्राप्ति में सबल हो सकते हैं। वे हैं ब्रह्मचर्य, योग, ध्यान, अनासक्त भाव से संसार में रहना और सुख–दुःख इत्यादि द्वन्द्वों में एक समान बने रहना।"

"आपने बम्बई में इन सबका अर्थ समझाया था। इनमें से कुछ पर मैंने अपना व्यवहार बनाने का यत्न किया है। उससे कुछ शान्ति भी मिली है। इस पर भी इन्हीं उपायों से मुझको यह बुद्धि मिली है अथवा भविष्य में भी मिलती रहेगी, क्या यह इससे सिद्ध हो रहा है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"छोड़ो इस बात को कि यह किस प्रकार मिली है और कैसे मिल सकेगी। इतना तो तुमने अनुभव किया है कि इस अस्पृहा के भाव से चित्त को शान्ति मिलती है। यह कम लाभ की बात नहीं। भूत और भविष्य स्वयं अपनी चिन्ता कर लेंगे। वर्तमान जीवन से तो इस व्यवहार से सुख मिला ही है।

"परन्तु मेरी! मैं तो यह कह रहा था कि एक पेड़ और मनुष्य में अन्तर है। यह है बुद्धि का। इस कारण बुद्धि के विकास के लिए यत्न करना और फिर उस विकसित बुद्धि का प्रयोग करना तो घर्म का एक अंग है।

"देखो मेरी! धैर्य से अपने कठिन दिनों की प्रतीक्षा करना और धैर्य से ही उस कठिनाई को पार पाने का यत्न करना यह बुद्धि का सदुपयोग होगा।

"परन्तु मुझको तो कोई कठिनाई अनुभव नहीं हो रही। मुझको विदित है कि बहिन मालिनी मेरे इस घर में रहने में आपत्ति कर रही हैं। मैं विचार कर रही हूँ कि इनकी इस आपत्ति को कैसे पार करूँ। इसको कठिनाई कहा जा सकता है। परन्तु मैं इसको पार करना किसी प्रकार भी असम्भव काम नहीं समझती।"

"मुझे तुम्हारे विचार सुन अति प्रसन्नता हो रही है। मैं तो केवल यह कहना चाहता था कि यदि इस विषय में कुछ भी कठिन प्रतीत हो तो तुम हमारे आश्रम की सहायता पर भरोसा कर सकती हो।"

इस पर बनवारी लाल की पत्नी मालिनी ने कह दिया, "तो आप भी मेरी बहिन का यहाँ रहना ठीक नहीं समझते न?"

"देखो बेटी! मेरे कहने का यह अर्थ नहीं निकलता। मैंने तो केवल यह कहा है कि यदि तुम में और मेरी में कभी न बने तो मैं और हमारा आश्रम उसकी सहायता करने के लिए सदैव तत्पर हैं। इसका यह अर्थ नहीं कि तुम दोनों लड़ पड़ो।"

मालिनी मुस्कुराई और बोली, "हम लड़ नहीं रहीं। मैं केवल यह कहती हूँ कि भैया कुन्दन कुछ काम–धाम करते नहीं थे। इस कारण उसका अधिकार नहीं था कि वह इस घर का खर्चा बढ़ाए। और उसको यह अधिकार भी नहीं कि अपनी प्रेमिका का बोझा इस घर पर डाले।"

"परन्तु यह तो बताओ, मेरी का खर्चा है कितना? इसके यहाँ आने और रहने पर कितना तुमको कम मिलने लगा है?"

इस प्रश्न पर मालिनी गम्भीर हो विचार करने लगी। उसने विचार कर कहा, "मेरी आवश्यकताओं की पूर्ति तो हो रही है। उसमें किसी प्रकार की कमी आई प्रतीत नहीं होती। इस पर भी जो कुछ इन दोनों पर खर्च हुआ है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
और अब बच्चे पर होने वाला है वह हमारी जमा पूँजी में और व्यापार की वृद्धि में कमी तो करेगा ही।''

''मालिनी! तुम क्या जानती हो अपने श्वसुर की जमा पूँजी और उसके व्यापार की वृद्धि के सम्बन्ध में।''

''मैं अनुमान से ही कह रही हूँ। मैंने श्रवण के पिताजी से पूछा था। उन्होंने बताया था कि उसके भाई और भावज पर लगभग तीन सौ रुपया प्रतिमास व्यय होता है। इसका अर्थ वर्ष में तीन हजार छः सौ रुपया और तीस वर्ष में बहत्तर हजार रुपया व्यय हो जावेगा। यह कोई साधारण रकम नहीं है।''

''यह तो ठीक है। परन्तु इससे उनके व्यापार में कुछ बाधा खड़ी होगी अथवा नहीं और एकत्रित पूँजी एकत्रित हो भी गई तो उस पूँजी में तुम्हारे सुख सुविधा में क्या वृद्धि होगी। इस विषय में बताओ। देखो व्यापार की बात तो व्यापारी ही बतायेंगे। परन्तु सुख–सुविधा की एक सीमा होती है। उससे अधिक वह प्राप्त हो सकती ही नहीं और होनी भी नहीं चाहिए।

''देखो तुम्हें वर्ष भर में अधिक से अधिक एक दर्जन सूट मिल जायें तो तुम्हारे सुख–सुविधा की सीमा पहुँच जावेगी। इसके अतिरिक्त के लिए भला मेरी को किस लिए कष्ट दोगी।''

''यही बात माताजी ने कही है। परन्तु मेरी गिनती–मिनती इसके विपरीत जाती है। भैया कुछ काम नहीं किया करते थे। दिन–भर पढ़ा करते थे या घूमा करते थे। मैं यह विचार करती हूँ कि उनको इस घर की कमाई में से कुछ पाने का अधिकार नहीं है। जब उनको अधिकार नहीं तो मेरी बहिन को कैसे हो सकता है।''

''अधिकार की बात करके तुम अधिकारियों का अधिकार छीन नहीं रहीं क्या?''

इस पर मेरी ने बातों का सूत्र अपने हाथ में लेते हुए कहा, ''मैं भी इसी प्रकार विचार करती थी। इसी कारण मैंने माताजी से पूछा था। और इनसे कहा था कि पिता जी से पूछ कर बताएँ कि मैं इस घर में रहूँ अथवा नहीं। यदि रह सकती हूँ तो कब तक?

''इस पर माताजी ने कहा है कि मैं उनके परिवार में सम्मिलित हो गई हूँ इस कारण वे मुझे उसमें सम्मिलित ही मानते हैं।''

''अब मेरे लिए प्रश्न यह हो गया है कि मैं इस परिवार में सम्मिलित हो कर इसकी उन्नति में कुछ कार्य करूँ। वह अभी इस बच्चे के बड़ा होने तक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कुछ कर नहीं सकती। मैं समझती हूँ कि दो वर्ष के उपरान्त मैं इस विषय पर विचार कर लूँगी।"

"मेरी! मैं तुम्हारे विचारों की दिशा जान कर यह समझा हूँ कि तुम बुद्धिशील प्राणी हो। तुमको प्रत्येक प्रकार की सहायता मिलनी चाहिए। परमात्मा भी उनकी सहायता करता है जो अपनी सहायता स्वयं करते हैं।"

: 14 :

सदानारायण ने उसी सायंकाल अपने कलकत्ता के समाचार पत्र में डॉ. मुखर्जी द्वारा स्थापित नवीन दल के प्रधान निर्वाचित होने का समाचार भेज दिया। इसके साथ ही उसने इस नवीन दल की रूपरेखा भी लिख कर भेज दी।

इसके उपरान्त उसने कनाट प्लेस के एक रैस्तरां में भोजन किया और फिर होटल में जा कर सो गया। जहाँ तक जमाने के बदलने के लक्षण थे वह स्पष्ट देख रहा था कि स्वराज्य मिला। पण्डित जवाहर लाल नेहरू प्रधानमंत्री बने और डॉ. राजेन्द्र प्रसाद राष्ट्रपति। इन दो निर्वाचनों से ही सदानारायण समझ गया था कि स्वराज्य की प्रगति किस ओर होने वाली है। राष्ट्रपति का पद तो मुख्यतः सजावट का था। देश का मुख्य कार्य प्रधानमंत्री का था। वह पद एक ऐसे व्यक्ति के हाथ में आ गया था जो बलशाली इन्द्रियों वाले रथ पर सवार हो बेतहाशा पश्चिम की ओर भाग रहा था। रथ की लगाम को थाम कर घोड़ों को ठीक मार्ग पर रखने की सामर्थ्य न तो सारथी में थी न रथी में ही।

इसका एक परिणाम मौलाना आजाद और शेख अब्दुल्ला के कार्यों में प्रकट होता हुआ, सदानारायण देख रहा था।

पण्डित जवाहरलाल के स्वराज्य मिलने पर और गद्दी पर बैठते ही रथ के सारथी बन गये थे, लार्ड माउण्टबेटन और लेडी माउंटबेटन। उनके बदलने पर सारथी हो गये मौलाना और शेख। भारत रूपी रथ के रथी सारथी बगावत कर रथ को कुमार्ग पर ले जा रहे थे। अथवा रथी स्वयं भी उनके मन का था कहना कठिन था। रथी ने कभी नहीं कहा कि वह इन लोगों द्वारा विवश कर इस उलटे मार्ग पर ले जाया जा रहा है अथवा उसको इस मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी जा रही है।

कुछ भी हो रथ चल पड़ा था। राष्ट्र की शिक्षा और संस्कृति के ठेकेदार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बन गये मौलाना अब्दुल कलाम आजाद और राजनीति की दिशा का निर्देश करने लगे शेख अब्दुल्ला।

सदानारायण इन दोनों बातों की मिथ्या दिशा में प्रगति को रोकने के लिए किसी कांग्रेस विरोधी दल की सहायता करना कर्त्तव्य मान भारतीय जनसंघ में सम्मिलित हो गया।

यह निश्चय दल के उद्घाटन के अगले दिन डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी से भेंट में हुआ था।

डाक्टर साहब का कहना था, "पण्डित सदानारायण! केवल बातें बनाने से कुछ काम नहीं बनेगा। कार्य क्षेत्र में अवतीर्ण हो जाइये। शेष तो सब समयोन्चित ही होगा।"

सदानारायण ने उसी समय सदस्यता स्वीकार कर अपना शुल्क दे दिया। डाक्टर साहब ने सदानारायण को जनसंघ की कार्यकारिणी में सम्मिलित कर लिया।

उसी दिन कार्यकारिणी की प्रथम बैठक में यह निश्चय हुआ कि संघ के लिए धन एकत्रित किया जाए। बिना धन के राजनीतिक दल चल सकना असम्भव था। डाक्टर साहब इस वस्तु स्थिति को समझते थे और कोष एकत्रित करने के लिए एक समिति बनाई गई। सदानारायण को इस समिति में ले लिया गया।

सदानारायण ने कह दिया, "आज धन है उद्योगपतियों के पास। जमींदारी का उन्मूलन निश्चित है। इस कारण उद्योगपति और व्यापारी जिस दल की सहायता करेंगे वह दल पनपेगा। इस लिए यह आवश्यक है कि इस विषय में दल की स्पष्ट नीति होनी चाहिए।"

"क्या नीति चाहते हैं आप?"

"यही कि व्यक्ति के धर्मयुक्त आय पर हम किसी प्रकार की सीमा निर्धारित नहीं करेंगे।"

"यह तो अधर्म हो जावेगा।"

सदानारायण मुस्कुराया और बोला, "धर्मयुक्त आय अधर्मयुक्त कैसे हो जावेगी?"

"मनुष्य के धिए असीमता ही अधर्म है।" एक सदस्य का कहना था।

"देखो जी। इस चर–अचर संसार में जो कुछ भी ऊपर कहा जाने वाला पदार्थ है वह परमात्मा है। भगवद्गीता में भगवान कृष्ण ने स्पष्ट कहा है– 'अहं सर्वस्य प्रभवो मत्तः सर्व प्रवर्तते।, मैं सबका कारण हूँ, मुझ से ही सब चेष्टा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करते हैं। और फिर कहा है, 'यक्ष रक्षासाय वित्तशः।' भक्षण करने वालों और रक्षण करने वालों में मैं ही वित्तश 'धनकुबेर' हूँ।

"इस प्रकार क्या आप परमात्मा के कार्य पर सीमा निर्धारित चाहते हैं?"

इस पर डाक्टर साहब ने कह दिया, "इस समय धनवानों को धन संचय करने में प्रोत्साहन देना तो दल को बदनाम करना होगा। मैं समझता हूँ कि इस विषय में अभी मौन रहा जाय।"

इस पर मन्त्री महोदय ने कह दिया, "हम यह पहले ही निश्चय कर चुके हैं कि हम न्यूनातिन्यून आय और उच्चाविउच्च आय में एक और बोस से अधिक अन्तर नहीं रहने देंगे।"

सदानारायण को यह ज्ञान नहीं था। इस पर उसने यह पूछ लिया, "मान लो आप राजगद्दी पर विराजमान होते हैं तो आप यह सीमा किस प्रकार लागू करेंगे। मान लीजिये कि एक कुली की आय एक सौ रुपया मासिक होती है तो दो सहस्र से अधिक आय वालों की आय आप किस प्रकार कम कर देंगे।"

"यह हम अभी नहीं बता सकते।" डाक्टर साहब का कहना था। इस पर भी यह समझ लेना चाहिए कि उपाय कई हैं। उनमें बड़ी आय वालों पर भारी टैक्स लगाना एक उपाय है।"

सदानारायण विचार कर रहा था कि बम्बई के उद्योगपतियों से वह इस दल को एक–दो करोड़ रुपया निर्वाचन लड़ने के लिये दिलवाने का यत्न करेगा। परन्तु वह यह समझा कि इनकी बातें सुनकर तो इनको कोई कुछ नहीं देगा। इस पर भी उसने इनको एक और मार्ग सुझाते हुए कहा, "कम से कम एक बात की घोषणा तो कर दी जाय कि मालिक और कर्मचारी के झगड़ों में सरकार मध्यस्थ बोर्ड बनायेगी और दोनों पक्षों को एक–दूसरे को हानि पहुँचाने वाले कार्य की मनाही करेंगे।"

"इसका क्या मतलब है?" कार्यकारिणी के एक सदस्य ने पूछ लिया।

"मेरे कहने का अभिप्राय यह है कि न तो कर्मचारियों को हड़ताल करने का अधिकार होगा और न ही मालिक को कर्मचारियों को कष्ट देने के लिए कारखाना बन्द करने का अधिकार होगा।"

"भला मालिक कारखाना क्यों बन्द करने लगा है। उसकी तो कारखाना बन्द करने से हानि होगी?"

"इस पर भी जब कुछ मजदूर हड़ताल करते हैं तो कारखाने बन्द किये ही जाते हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह सब धोखा होता है।"

"जो कुछ भी हो यह नहीं होने देना चाहिए।"

एक अन्य सदस्य बोल उठे, "यह ठीक है मगर कर्मचारी का हड़ताल करने का अधिकार हम छोड़ना नहीं चाहते।"

"परन्तु हड़ताल का उद्देश्य यदि बिना हड़ताल के पूर्ण हो सके तो भी नहीं?"

"यह नहीं हो सकेगा।"

सदानारायण ने समझा कि बहस करने से कुछ लाभ नहीं होगा। इस कारण वह चुप हो गया।

इस पर डाक्टर साहब ने धन एकत्रित करने के लिए बम्बई चलने का कार्यक्रम बना लिया। सदानारायण ने अपने बम्बई में रहने के दिन बता दिये। और कार्यक्रम बन गया।

जब कार्यकारिणी का अधिवेशन समाप्त हो गया तब सदानारायण और डाक्टर साहब में खुल कर बात हो गई। सदानारायण ने कहा, "डाक्टर साहब। आपके इस दल में केवल मात्र एक बात ने मुझको आकर्षित किया है। वह है भारतीय संस्कृति और वेदों के काल से आज तक निरन्तर चली आ रही परम्परा के अनुकरण का वचन। यदि दल इस बात पर दृढ़ रहा तो फिर किसी दिन हम एकमत हो सकेंगे। अभी तो बुद्धियों में बहुत अन्तर है।

"इस पर भी मैं समझता हूँ कि इन बुद्धियों में भेद को छोड़ कार्य में एकमयता हो सकती है।"

"हाँ। तो बताइये क्या कार्य है जो करने का है।"

"देखिये, इस समय भारत राष्ट्र पर तीन ग्रह अति प्रबल हैं। एक है गांधीवाद। दूसरा नेहरूवाद और तीसरा है मौलानावाद। इन तीनों को निःशेष करने के लिये दल को यत्न करना चाहिए।"

"और ये तीनों क्या हैं?"

"गांधीवाद तो है सर्वत्र सदा अहिंसा। इसका अभिप्राय यह है कि प्रबल विरोध के समक्ष झुक जाना और अपनी जान बचा लेनी। इसकी एक उपसिद्धि भी है। वह है दुर्बल के सिर पर चढ़कर बैठना। यह नीति मिथ्या है। यह न केवल अव्यवहारिक है वरंच अन्याययुक्त भी है।

"नेहरूवाद का अर्थ है भारत की सब बातें त्याज्य और योरोप की सब बातें ग्राह्य हैं। इसका परिणाम यह हो रहा है कि भारत सरपट नैतिक पतन की ओर भागा चला जा रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मौलानावाद है मौलाना आजाद की नीति। हिन्दू की शिक्षा और दीक्षा को वासनोन्मुख कर हिन्दू को पतित कर दिया जाय और फिर इस्लाम को तरक्की देना। तब भारत दारा उल–इसलाम बन जावेगा। बासनाभिभूत संसार इस्लाम के चंगुल में फँसेगा ही। यह निश्चय है।"

डाक्टर साहब हँस पड़े। बोले, "पण्डित जी, यह ठीक बात है। परन्तु इसके उल्लेख में ये नाम नहीं आने चाहिए। हमने दल बनाया है सत्ता अपने हाथ में लेने के लिये। यह धर्मोपदेश करने वालों का समाज नहीं। बिना जनता में बदनाम हुए हम अपना कार्य करना चाहते हैं। नीतियों का विरोध तो होगा। परन्तु व्यक्तियों की बात बीच में नहीं आने देनी चाहिए।"

"परन्तु व्यक्तियों के नाम से तो आज राज्य चल रहा है। और आगामी निर्वाचन चलने वाले हैं।"

"इस व्यक्तिवाद का विरोध कर आदर्शवाद की ओर जनता का ध्यान लगायेंगे।"

सदानारायण एक बात समझ रहा था कि डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी प्रभावशाली व्यक्तित्त्व रखते हैं। यही कारण है कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से विशेष सम्बन्ध न रखते हुए भी वे उस द्वारा स्थापित राजनीतिक दल के प्रधान बन गये हैं।

: 15 :

सदानारायण चुप रहा और मन में निश्चय कर कि दल को अपने विचारों से अवगत करने तथा इसके उचित कार्यों में सहयोग देने का यत्न करता रहेगा।

सन् 1952 के निर्वाचन समीप आ रहे थे और यह अत्यावश्यक था कि एक बार तो पूर्ण प्रयत्न कर इस दल को एक प्रमुख विरोधी दल बना दिया जाय।

सदानारायण को दिल्ली में एक पारिवारिक कार्य के लिये ठहरना पड़ रहा था। उसका लड़का विजय अपनी पत्नी नीला के साथ भारत में आया हुआ था और वह भारत में ही रह जाने का विचार कर रहा था। उसकी पत्नी भारत में रहती हुई उपराम हो गई थी। बम्बई और दिल्ली में उसको किसी प्रकार का आकर्षण दिखाई नहीं दे रहा था। इस कारण पति–पत्नी में तनाव की स्थिति उत्पन्न हो रही थी। विजय किसी काम की खोज में दिल्ली आया हुआ था और उसे किसी प्रकार का काम मिल नहीं रहा था। अहमदाबाद में एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कपड़ा मिल में काम मिला भी था परन्तु नीला ने अहमदाबाद जाना स्वीकार नहीं किया। नीला का कहना था कि यदि भारत में काम करना है तो दिल्ली में किया जाय और वह नई दिल्ली में रहेगी।

विजय और नीला दोनों दिल्ली आये थे। परन्तु कुछ ही दिन में नीला देवप्रयाग आश्रम में चली गई थी। वह अपने बच्चे सुबोध को भी ले गई थी। यह बात सदानारायण को बम्बई में ही पता चल गई थी। और वह दिल्ली को चल पड़ा था। उसी समय सुचेता अपनी पतोहू के मनोभावों को भली–भाँति समझने के लिये देवप्रयाग चली गई थी।

सदानारायण दिल्ली में ठहरा हुआ था और सुचेता तथा नीला की दिल्ली में प्रतीक्षा कर रहा था। उसकी विजय से बात हुई थी और इससे वह केवल यही जान सका था कि नीला उससे लड़ कर देवप्रयाग चली गई है।

"क्यों?" सदानारायण का प्रश्न था।

"यह मैं नहीं जानता। बम्बई से आने के समय सब ठीक था। अहमदाबाद की नौकरी मिली तो उसने वहाँ जाने से इनकार कर दिया। मैंने उसकी बात मान कर उस नौकरी को अस्वीकार कर दिया। इस घटना के उपरान्त वह मुझसे तनी–तनी सी रहने लगी। इसके कुछ दिन उपरान्त एक दिन वह बोली कि वह देवप्रयाग आश्रम में जाना चाहती है। मैंने कहा कि मैं उसे छोड़ आता हूँ। वह बोली कि वह स्वयं जा सकती है। अतः सुबोध को लेकर चल दी। उसे वहाँ गये एक मास हो गया है। उसने वहाँ पहुँचने का समाचार तो भेजा था परन्तु उसके बाद उसने कोई पत्र नहीं लिखा।"

"और तुमने लिखा है?"

"मैं नियमपूर्वक प्रति सोमवार को एक पत्र लिख देता हूँ। विस्मय करने की बात यह है कि वहाँ से रत्न दादा का भी कोई पत्र नहीं आया।"

सदानारायण को दिल्ली में आये पाँच दिन हो गये थे कि सुचेता का पत्र आया। उसमें उसने लिखा, "मैं यहाँ यथा समय पहुँच गयी थी। लौरा यहाँ आई थी और एक दिन यहाँ रह कर मसूरी चली गई थी। मसूरी का पता उसने यहाँ लिख भेजा था। और उसकी सब चिट्ठियाँ वहाँ भेज दी जाती रही हैं। मैं आज मसूरी जा रही हूँ।"

इस पत्र में यह नहीं लिखा था कि उसने अपने मनोभावों को वहाँ प्रकट किया था अथवा नहीं। न ही यह लिखा था कि आश्रम वालों ने उसकी गतिविधियों के विषय में कोई समाचार क्यों नहीं भेजा।

इस पर भी सदानारायण ने भागदौड़ करने की उपेक्षा धैर्य से और अधिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
समाचार आने की प्रतीक्षा करनी ही उचित समझी।

विजय पृथ्वीराज रोड पर अपने एक मित्र के घर ठहरा हुआ था। सदानारायण मरीना हेटल में ठहरा था। जिस दिन वह भारतीय जनसंघ की कार्यकारिणी के प्रथम अधिवेशन में सम्मिलित होकर अपने होटल में लौटा था तो होटल में विजय को अपनी प्रतीक्षा करते देख समझ गया कि मसूरी से पत्र आया है। सदानारायण ने विजय की ओर प्रश्न भरी दृष्टि से देखा तो उसने जेब से अपनी माँ का पत्र निकाल कर सामने रख दिया।

"तो यह मसूरी से आया है?"

"जी।"

सदानारायण ने पत्र पढ़ा। सुचेता ने लिखा था– "यहाँ हिमालय क्लब में नीला मिली है। उसने कहा है कि वह मेरी प्रतीक्षा कर रही थी। कारण यह कि बड़े भापा जी ने उससे कहा था कि मैं उससे मिलने के लिये आऊँगी और उसको अपनी बात मुझसे ही करनी चाहिए। इस पर वह मसूरी चली आई थी। और अपना पता आश्रम में भेज दिया था। महात्मा रत्न जी ने विजय के सब पत्र ज्यों के त्यों नीला को भेज दिये थे। और बिना उसकी स्वीकृति के उसका पता विजय को बताना नहीं चाहता था। बात यह है कि नीला ने विजय पर अनाचार का लांछन लगाया है। जिनके घर में वह रहता है उसकी पत्नी से सीमा से अधिक मेल–जोल रखने से वह विजय के चरित्र पर सन्देह करती है। उसने यह सन्देह विजय को नहीं बताया। वह समझती है कि जब कोई उसके रूठने का कारण जानने के लिये आवेगा तब वह बतायेगी। सो यह कारण उसने मुझे बताया है।

"मैं तो विजय की सफाई दे नहीं सकती। क्योंकि इस विषय में मैं कुछ जानती नहीं। यह काम तो विजय का ही है कि वह उसको अपने सदाचार से विश्वास दिलाये।

"मैं अभी यहीं ठहरी हूँ। आपका तथा विजय का पत्र आने पर अपना कार्यक्रम लिखूँगी।"

सदानारायण ने रिसेप्शन रूम में खड़े–खड़े ही पत्र पढ़ लिया था। वहाँ से वह विजय को अपने कमरे में ले गया और वहाँ बैठकर पूछने लगा, "बताओ, तुम क्या कहते हो?"

"मैं आज रात की गाड़ी से मसूरी जा रहा हूँ।"

"ठीक है। किसी प्रकार की मेरी सहायता चाहते हो?"

"जी नहीं, माताजी वहीं हैं। यदि कुछ आवश्यकता पड़ी तो उनसे राय कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लूँगा। मुझको विस्मय इस बात का है कि यह 'अन अमेरिकन लाइक' है।''

सदानारायण ने मुस्कुराते हुए पूछ लिया, ''और तुमने उसको अमेरिकन समझ कर विवाह किया था। यही कह रहे हो?''

''जब विवाह किया था वह तो अमेरिकन समझ कर ही किया था। हमारा विवाह बिना किसी प्रकार के रस्म–रिवाज के हुआ था। आपने उसे आधा घण्टा भर समझाया और उसको डि अमेरिकनाज्ड करने का सफल प्रयास किया था। वह हिन्दू रीति–रिवाज से विवाह करने पर तैयार हो गई थी। उसको आज तीन वर्ष हो रहे हैं।

''जब से मैं यहाँ आया हूँ, वह माताजी की संगति में रही है और मैं समझता था कि उसका शेष अमरीकीपन माताजी ने निकाल दिया है। मुझसे भूल यह हुई है कि मैं उसमें होने वाले परिवर्तन को समझ नहीं रहा था।''

''और तुम इतने अमेरिकनाइज्ड हो गये कि अपने मित्र की पत्नी से फ्लर्ट करने लगे हो?''

इस बात पर तो विजय गम्भीर हो आँखें नीचे किये बैठा रहा। इससे तो सदानारायण को सन्देह हुआ कि फ्लेर्टेशन की भी सीमा पार की जा चुकी है और नीला का रूठना उचित ही है। इस कारण सदानारायण ने पूछ लिया, ''तो अब क्या करना चाहते हो?''

''मैं यह कहने के लिये जा रहा हूँ कि वह मुझको तलाक दे सकती है।''

''हिन्दू विवाह में तो तलाक दिया ही नहीं जा सकता।''

''मैं उसको समझा दूँगा कि वह चाहे तो मुझको छोड़ सकती है। और कहीं अन्यत्र विवाह कर सकती है। मैं उस पर अपना पूर्ण दावा छोड़ता हूँ।''

''अर्थात् तुम उसे धक्के दे–देकर पुनः अमेरिकन बनाने जा रहे हो?''

''तो क्या किया जाय। जब उसको मुझ पर सन्देह है तो उसे मुझको छोड़ देना चाहिए। पति–पत्नी में सम्बन्ध तो विश्वास पर ही चल सकता है।''

''सन्देह तो मुझको भी हो गया है। तो क्या मैं भी तुमको छोड़ दूँ?''

''पिता–पुत्र की बात दूसरी है।''

''क्या भिन्नता है इन दोनों सम्बन्धों में?''

''यह रक्त का सम्बन्ध है और पति–पत्नी का सम्बन्ध तो...'' विजय कहता–कहता रुक गया।

सदानारायण ने कहा, ''मैं समझता था कि तुम प्राणीशास्त्र पढ़े हुए हो। भला पिता का रक्त किस प्रकार पुत्र में आ जाता है?''

''रक्त तो कहने का एक ढंग बन गया है पिता जी! बीज, जिससे प्राणी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बनता है उसमें माता–पिता का अंश रहता है।''

''अरे जिस वर्कशाप में ये अंश संयुक्त किये जाते हैं उससे किसी का कोई सम्बन्ध बनता है अथवा नहीं। देखो विजय! तुम एक बात समझ लो कि सन्तान निर्माण करते समय पुरुष और स्त्री कुछ अपने लिये भी आदान–प्रदान करते हैं। यही कारण है कि अनेक कारणों से पुरुष–स्त्री में वैमनस्य हो जाने पर भी दोनों में परस्पर कुछ तो सहिष्णुता रहती है।''

विजय के लिये यह एक नई बात थी। परन्तु वह इसकी सत्यता का अनुभव कर रहा था। सदानारायण ने इसकी कुछ अधिक व्याख्या करने के लिये कह दिया, ''पुरुष और स्त्री केवल संतान ही निर्माण नहीं करते। दोनों का वीर्य और रज उनके अपने शरीर का भी अंश बनता रहता है। इससे दोनों एक–दूसरे को पसन्द करने लगते हैं। अनेक उदाहरण ऐसे मिलते हैं कि प्रथम मिलन तो बलात्कार से अथवा विवशता के कारण होता है। परन्तु धीरे–धीरे दोनों पक्ष एक–दूसरे से उत्कट प्रेम करने लगते हैं और फिर एक–दूसरे के लिये त्याग और बलिदान करने में संकोच नहीं करते। यह अपने शरीर के सर्वोत्तम सार के आदान–प्रदान के कारण ही होता है। समय पाकर पुरुष के शरीर में स्त्री का सार प्रवाहित होने लगता है और स्त्री के शरीर में पुरुष के जीवन–सार का अंश। स्त्री को पुरुष से कुछ अधिक मिलता है। यही कारण है कि स्त्री पुरुष के लिये कुछ अधिक ही प्रेम और त्याग की भावना रखती है।''

''परन्तु इस सब का प्रमाण क्या है?''

''संसार का अध्ययन करो। प्रमाण मिल जायेंगे। लड़के–लड़की में प्रथम मिलन के समय तो वासना–तृप्ति के अतिरिक्त अन्य कुछ आकर्षण होता ही नहीं। परन्तु समय पाकर जब दोनों में दूसरे के जीवन सत्व का पर्याप्त संचार हो जाता है तो वासना तृप्ति के अतिरिक्त दोनों का रक्त एक समान स्पन्दन करने लगता है।''

विजय गम्भीर हो गया और अपने अमेरिका के अनुभवों को स्मरण कर विचार करने लगा था। ज्यों–ज्यों वह विचार कर रहा था त्यों–त्यों उसको पिता के कथन के प्रमाण मिल रहे थे।

हिन्दुस्तान में तो स्त्री–पुरुष के सम्बन्ध को तो एक विवशता का संबंध मानता था। उसका विचार था कि यहाँ तलाक की प्रथा न होने के कारण पुरुष–स्त्री अस्वाभाविक रूप में बँधे हुए रहते हैं। कुछ इस को धर्म का बंधन समझ सहन करते हैं। कोई–कोई इससे विद्रोह कर बंधन तोड़ डालना चाहते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं। कानून बंधन के टूटने की स्वीकृति नहीं देता। और लोग विशेष–रूप से स्त्री वर्ग तो अनाचार व्यभिचार में रत हो जाता है। और दूसरा वर्ग भाग्य को कोसता रहता है।

आज उसके पिता के स्त्री–पुरुष में सम्बन्ध के स्थायित्व में बायोलौजिक शारीरिक कारण वर्णन किया तो वह पुरुष स्त्री के सम्बन्ध को एक नये प्रकाश में देखने लगा था।

उसको अनेक ऐसे उदाहरण स्मरण आने लगे थे जिनमें तलाक हो जाने के उपरान्त भी स्त्रियाँ पति से और पुरुष पत्नी से अधिक सहिष्णुता रखते हैं। इन सबमें वह स्त्रियों को पुरुषों से अधिक अपने साथी के लिये प्रेम रखते देख चुका था। वह इस का कारण स्त्री वर्ग का अधिक भावनामय कह कर वर्णन किया करता था। आज उसका मौलिक रहस्य पता चला था। स्त्री में पुरुष के जीवन सत्व का अधिक संचार होता है। पुरुष में स्त्री का जीवन तत्त्व अति न्यून–मात्रा में ही समाविष्ट हो सकता है।

विजय को गम्भीर विचार में निमग्न देख सदानारायण ने पूछ लिया, "अब क्या विचार रहे हो?"

"मैं अपने संसार के अनुभव के प्रकाश में आपके कथन की सच्चाई परख रहा था।"

"और उस परख का क्या परिणाम निकल रहा है?"

"यह फिर कभी बताऊँगा। अभी तो यह बताना चाहता हूँ कि मैं नीला को अपनी सफाई देने का यत्न करूँगा और फिर देखूँगा कि वह क्या निश्चय करती है। मैं उसकी इच्छा के अनुसार ही अपना व्यवहार रखूँगा।"

"अच्छा जाओ। वहाँ जा कर लिखना। पर मैं उस समस्या के मूल कुछ और कारण देख रहा हूँ।"

"क्या?"

"तुम बेकार घूम रहे हो, तुमको बेकार देख कर तुमसे सहानुभूति रखने वाले व्यक्तियों का चिन्तित होना स्वाभाविक ही है।"

"आप अपने और माताजी के विषय में कह रहे हैं न?"

"हाँ, हम भी तुमसे सहानुभूति रखने वालों में से हैं। परन्तु इस समय मुख्यरूप में तुम्हारी पत्नी की बात हो रही है।"

"परन्तु माताजी के पत्र से तो ऐसी कोई बात प्रकट नहीं हो रही। पिताजी! मैंने तीन वर्ष अमेरिका में नौकरी की है और वहाँ से मैं इक्कीस हजार डालर संचय कर लाया था। यहाँ आकर मैंने वह रुपया भिन्न–भिन्न स्थानों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर जमा कर दिया हुआ है। और उसकी आय पाँच सौ रुपये मासिक से अधिक हो रही है। इस के अतिरिक्त नीला की अपनी पैतृक सम्पत्ति भी है। उससे भी तीन–चार सौ प्रतिमास आय हो जाती है। इस काम न पाने से मुझको अथवा नीला को किसी प्रकार का अभाव नहीं है।

"विजय! अभाव की बात नहीं कही। मैंने बेकार रहने से शरीर और मस्तिष्क में जंग लग जाने की बात कही है। यह शरीर कर्महीन नहीं रह सकता। यदि इससे कोई उपयोगी और धर्मयुक्त काम नहीं करो तो अनुपयोगी और अधर्मयुक्त काम स्वयमेव होने लगता है। अतः काम तो करना ही पड़ता है। इस कारण उपयोगी तथा धर्मानुकूल काम की चेष्टा करते रहना चाहिए।"

"परन्तु यह मेरे वश की बात नहीं कि भारत में नौकरियाँ निर्माण करूँ। मेरी योग्यता के अनुसार कार्य यहाँ प्रतीत नहीं हुआ।"

"फिर विदेश क्यों नहीं चले जाते? परन्तु मैं समझता हूँ कि काम तो यहाँ है परन्तु तुम आँखें मूँद कर जी रहे हो। इस कारण तुम को काम दिखाई नहीं दे रहा।

"तुम इंजीनियर हो। बताओ तुम किसी कारखाने को लगा उसमें अपनी तकनीकी योग्यता का प्रयोग नहीं कर सकते क्या?"

"यह तो मैं कर सकता हूँ। परन्तु बने माल को बेचने की योग्यता मुझ में नहीं है। जब तक कोई व्यापारी साथ न मिल जावे कारखाना लग नहीं सकता।"

सदानारायण हँस पड़ा। फिर बोला, "यदि कोई व्यापारी यह कहे कि माल बेच तो सकता हूँ परन्तु बना नहीं सकता। इस कारण मुझे भी नौकरी ही करनी चाहिए तब तो कोई उद्योग चल ही नहीं सकेगा।

"देखो विजय! तुमको एकाध बुद्धि की खुराक पिलानी पड़ेगी। इंजीनियर को जहाँ मजदूर, क्लर्क और मशीनों की जरूरत रहती है वहाँ माल बेचने की योग्यता वाले व्यापारियों की भी आवश्यकता होती है। जैसे तुम मजदूर इत्यादि ढूँढ़ते हो वैसे सहायक व्यापारी भी ढूँढ़ने पड़ेंगे। परन्तु तुमने तो इस दिशा में यत्न ही नहीं किया।

"मैं तुमको दो वर्ष से देख रहा हूँ कि तुम नौकरी की खोज में हो। परन्तु तुमने नौकरी के यन्त्र से बाहर रह काम करने की कभी योजना ही नहीं बनाई।

"आज तो तुम जाओ किन्तु वहाँ पहुँच अपना पत्नी के साथ विचारोपरान्त किसी काम का एक छोटा सा कारखाना लगाने की योजना भी बना लाओ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसके ब्ल्यू प्रिंट तैयार करो और यह दासता के पीछे भाग–दौड़ समाप्त करो।

"काम करोगे तो तुम अपनी पत्नी की दृष्टि में एक महान व्यक्ति बन जाओगे। और तब वह महान व्यक्ति के छोटे–मोटे दोषों को उसकी महानता में देख नहीं सकेगी।

"जाओ, मैं उत्सुकता से तुम्हारे पत्र की प्रतीक्षा करूँगा।"

: 16 :

मुमताज की समझ में एक बात आयी थी कि सादिक की अपने वालिद की हत्या कर देने पर मरियम के मन में भय समा गया है। इसी कारण दो घण्टे पहिले तक जिस भविष्यवाणी की वह हँसी उड़ा रही थी उसी से दिल को सांत्वना देने जा रही है।

इस विचार से वह टैक्सी में बैठी हुई मरियम के मुख पर देखती हुई मुस्करा रही थी। मरियम जब निश्चित होकर बैठ गयी तो पूछने लगी, "बड़ी बहिन! किस लिए मुस्करा रही है मुझे देख देख कर?"

"तुम्हारे तुरंत निर्णय और तुरंत कार्य करने के स्वभाव पर मुस्कुरा रही हूँ। यह एक महान गुण है। 'डिसाइसिव माइंड' एक अति सौभाग्य की बात होती है। इसके साथ थोड़ी बुद्धि निर्मल भी हो जाये तो तुम जीवन में बहुत सफल हो जाओगी।"

"यह मेरा स्वभाव है। मिस्टर कुरैशी ने विवाह का प्रस्ताव किया और मैं मान गयी। और मैं समझती हूँ कि मैं घाटे में नहीं रही। यही बात आज हुई। पाकिस्तान से नौकरी की पेशकश आयी। मैंने नामंजूर करने का फैसला कर लिया था मगर माँ ने कहा मंजूर कर लूँ। इस पर तुरंत विचार आया कि आपके स्वामी जी से नजूम लगवाऊं। रमणा मौसी ने भी उनकी बहुत प्रशंसा की है। सो चल पड़ी हूँ।"

"यही तो कह रही हूँ कि अभी चार बजे चाय पर तुम उनकी हँसी उडा रही थीं और अब पाँच बजे उनसे नजूम लगवाने चल पड़ी हो। बहुत तेज चलता है तुम्हारा दिमाग।"

"यह तो है। मैंने सब बात पर विचार करने से पहिले स्वामीजी के विचार को जानने का निर्णय किया है।"

"चलो यदि उन्होंने कुछ बता दिया तो कुछ लाभ ही होगा।"

इस पर मुमताज विचार करती थी कि यह विचित्र स्त्री है। वास्तव में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मरियम अन्तर–प्रेरणा से काम करती थी।

अगले दिन चार बचे मध्याह्नोत्तर वे देवप्रयाग आश्रम पर जा पहुँचे। ऋषिकेश तो वे नौ बजे पहुँच गयी थीं परन्तु आगे जाने के लिये दो बजे बस मिली थी।

जब वे आश्रम में पहुँचीं उस समय मध्याह्नोत्तर की कथा समाप्त हुई ही थी और कथा सुनने के निए आये लोग विदा हो रहे थे। मुमताज के पास तो कपड़े का एक थैला ही था। मरियम के पास एक बिस्तर और सूटकेस था। महात्मा रत्नलाल ने मुमताज से पूछ लिया, "अम्मी! ये कौन हैं?"

"मेरी सौत है। तुम्हारे भापा ने एक और विवाह कर लिया था।"

रत्न मुस्कराया और बोला, "मध्याह्नोतर के अल्पाहार का समय है। सामान रखवा कर आ जाओ।

ये दोनों चाय पीने के लिये बैठीं तो स्वामी जी, जो उसी समय दूध पी रहे थे, बोले, "मुमताज बेटी! इसे किसलिए ले आयी हो?"

"ये कुछ अपने विषय में आप से राय करने आयी हैं।"

"परन्तु यह मानेगी नहीं।"

"महाराज!" मरियम ने कह दिया, "समझ में आ गयी तो मान जाऊँगी।"

"तो पूछो। क्या जानना चाहती हो?"

"अभी इसी वक्त और अपनी बाबत बताये बिना।"

"देख लो, पाकिस्तान के कुछ लोग तुम्हारी इन्तजार दिल्ली में कर रहे हैं।"

मरियम हैरान थी कि पाकिस्तान के विषय में इन बुजुर्गवार को क्या पता है। इसलिए यह नहीं समझ पा रही थे कि बात इस वक्त कहाँ से और कितनी कहे। उसे चुप और अनिश्चित मन देख स्वामी जी ने कह दिया, "अच्छी बात है। कल सुबह तुम से बात करूँगा। मगर तुम्हारे विचार करने के लिये समय कम रह जायेगा।"

"तो महाराज आज और अभी पृथक में बात करने का मौका दीजिये।"

"यह भी ठीक है। चाय और नाश्ता ले लो। फिर तुमसे अलहदा में बात करूँगा।"

सब बैठे हुए इस बात पर चकित थे कि यह चिकनी–चुपड़ी औरत स्वामी जी से क्या बात करने आयी है। आज कुछ बाहर के लोग भी कथा के उपरान्त ठहर गये थे। खाना–पीना समाप्त हुआ तो स्वामी जी उठ खड़े हुए। और मरियम से बोले "मुमताज से भी पृथक में बात करोगी?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जी।"

"तो उधर चली आओ। हम उस पेड़ के नीचे बैठ कर बात करेंगे। वहाँ की बात यहाँ सुनाई नहीं देगी।"

मरियम उठी और स्वामी जी के साथ उसी पेड़ के नीचे जा पहुँची जहाँ एक समय मुमताज और शमशाद बैठे–बैठे झगड़ा करते थे। स्वामी जी ने खड़े–खड़े ही कहा, "हाँ। अब बताओ, क्या जानना चाहती हो?"

"मैं मिस्टर कुरैशी...।"

स्वामी जी ने बात बीच में ही काटकर कह दिया, "मैं सब जान गया हूँ। तुम शमशाद की नाम की बीवी थीं। हकीकत में तुम्हारा कोई एक खाविन्द नहीं रहा। तुम जिसकी बेटी हो वह भी अपने समय में ऐसी ही रही थी। मगर तुम उससे भिन्न इस बात में ही हो कि वह तो अपने खाविन्द के मारे जाने पर सम्हल गयी थी और तुम इस नाममात्र के खाविन्द के मारे जाने पर भी समझी नहीं।"

मरियम इस कच्चे चिट्ठे को सुन अवाक् खड़ी रह गई। उसके मुख का रंग विवर्ण हो गया था। और इस वृद्ध व्यक्ति को उसके अन्तस्तल की बातें निकाल बाहर प्रकट करते वह पूर्ण शरीर में कँपकँपी अनुभव कर रही थी। उसे ऐसा अनुभव हुआ था कि उसकी टाँगे काँप रही हैं।

स्वामी गरीबदास ने यह देखा तो कह दिया, "देखो इस पत्थर पर बैठ जाओ और चित्त को शान्त कर जो कुछ जानना चाहती हो बताओ। तुम को अपने विषय में बताने की आवश्यकता नहीं।"

मरियम स्वामी जी के समीप पड़े एक पत्थर पर बैठ गई। स्वामी जी अभी भी खड़े थे। मरियम ने सीधी मन की बात बताते हुए कहा, "मुमताज बहिन ने कहा है कि आपने यह पेशीनगोई की थी कि मिस्टर कुरैशी पाकिस्तान में ही रहे जायेंगे। इसी सिलसिले में यह जानने आई हूँ कि मुझे भी वहाँ एक बहुत अच्छी नौकरी मिल रही है। मैं वहाँ जाऊँ अथवा नहीं?"

स्वामी जी ने आँखें मूँद कुछ क्षण विचार किया और कह दिया। "अभी तुम्हारी मृत्यु समीप नहीं। तुम इंग्लिस्तान में मरोगी। इस पर भी तुम्हारे लिये वहाँ जाना कुछ अच्छा नहीं है। सुख प्राप्त नहीं होगा।"

इतना कह स्वामी जी ने आँखें खोल दी।

मरियम ने पूंछ लिया, "और कुछ?"

"इतने में ही बहुत कुछ है।"

"सो मैं रात यहाँ रह सकती हूँ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"वह मुमताज से कहो। वह यहाँ आने वाली स्त्री मेहमानों का प्रबंध करती है।" इतना कह स्वामी जी उधर चल पड़े जिधर लोग बैठे उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे। मुमताज भी उन्हीं में बैठी थी। स्वामी जी अपने स्थान पर बैठ गए और बोले, "मरियम बहुत जल्दी में है। इस कारण उसकी बात सुनने गया था। अच्छा बताओ आनन्द भिक्षु जी! क्या पूछने वाले थे?"

आनन्द भिक्षु ने पूछ लिया, "महाराज। ज्ञान होने से कैसे कर्म बन्धन छूट जाते हैं?"

"भाई, कर्म बन्धन छूटते नहीं। कर्म विदग्ध हो जाते हैं अर्थात् जैसे जली हुई वस्तु सारहीन हो जाती है वैसे ही ज्ञानाग्नि से विदग्ध कर्म फलहीन हो जाते हैं।"

"यह कैसे महाराज? कर्म कैसे आरम्भ होते हैं? और फलहीन हो जाते हैं?"

"ज्ञान दो प्रकार के होते हैं– एक सामान्य ज्ञान। इससे तो कर्म आरम्भ होते हैं। अतः जब स्वप्न में आम समक्ष आता है तो खाने की कामना होती है। जिसको आपके स्वप्न का ज्ञान नहीं, उसके सामने आये आम को खाने की रुचि ही नहीं होती। कर्म की रुचि सामान्य ज्ञान से उत्पन्न होती है। यह ज्ञान कर्म किसी दूसरे से कराया भी जाता है और कभी स्वयं कार्य करने से होता है।

"विशेष ज्ञान आम के स्वाद के अतिरिक्त उसके शरीर पर प्रभाव से होता है। आम दस्तावर होता है। आम पौष्टिक होता है। इस प्रकार से इसके खाये जाने पर शरीर पर प्रभाव का ज्ञान होता है और इस प्रभाव के प्रकाश में खाने न खाने और कितना खाने का संकल्प होता है। यह कर्म करना होता है। मनुष्य अपने शरीर की अवस्था को जान कर उतना ही खाता है जितने की उसमें पाचनशक्ति होती है। अतः आम का शुभ फल ही होता। इसका बुरा प्रभाव नहीं हो सकता।"

"परन्तु महाराज कर्म दग्ध तो न हुआ?"

"जब सोने को तपाया जाये तो उसका मैल जल जाता है और शुद्ध सोना कुन्दन रह जाता है। यह सोने को तपाना अर्थात् दग्ध करना कहाता है। यही बात कर्म की है। कर्म का विधि–विधान करना कर्म को दग्ध करना ही कहाता है। इसको इस प्रकार भी समझा जा सकता है। जब कर्म संकल्प–रहित है तब ज्ञान से दग्ध कर्म कहाता है। भगवद्गीता में भगवान कृष्ण ने लिखा है कि–

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यस्य सर्वे समारम्भा काम संकल्प वर्जिता।
ज्ञानाग्निदग्ध कर्माणं तमाहुर्पण्डितः बुधा।।

भा. गी. 4–19

"किसी कामना की इच्छा को छोड़कर किया हुआ कर्म ज्ञान की अग्नि से दग्ध किया हुआ बुद्धिमानों से कहा जाता है।

"आम खाया जाय इस कारण नहीं कि वह स्वादिष्ट है अथवा किसी अन्य फल की इच्छा कर। खाया जाय तो फिर उतना ही खाया जायगा जितना अभीष्ट होगा। यह ज्ञानाग्नि दग्ध कर्म कहायेगा।"

मरियम को इस वार्त्तालाप में स्वाद नहीं आ रहा था। वह स्वामीजी की भविष्यवाणी पर विचार कर रही थी। उसको इतने से तो संतोष हुआ था कि उसकी मृत्यु अभी समीप नहीं। फिर यह भी बात थी कि उसकी मृत्यु इंगलैंड में होगी। अतः वह यह समझ रही थी कि चौधरी इश्तियाक हुसैन के पत्र में किसी प्रकार का षड्यन्त्र नहीं हो सकता। परन्तु वह चिंता अनुभव कर रही थी इस बात पर कि पाकिस्तान जाने में सुख नहीं होगा।

वह यह जानती थी कि पाकिस्तान से पत्र पाकिस्तान के सफारतखाने के द्वारा आया था। स्वामीजी ने भी कहा था कि उसकी दिल्ली में पाकिस्तान के लोग प्रतीक्षा कर रहे हैं, इससे वह स्वामी जी की बातों को जानने की ताकत तो जान गई थी।

इस कारण सुख के अभाव की भविष्यवाणी चिन्ता उत्पन्न हो गयी थी। स्वामी जी अभी व्याख्या ही कर रहे थे कि वह उठी और महमानखाने में चली गई। मुमताज ने उसे जाते देखा तो उससे एकान्त में उसके विचार जानने के लिए उसके पीछे चली गई।

मुमताज ने उस विस्तर पर, जो बिछा दिया था और जिसपर मरियम लेट रही थी, बैठते हुए पूछ लिया, "तो अब क्या विचार है?"

"स्वामी जी ने कहा है कि मेरी मृत्यु अभी समीप नहीं है और मेरी मृत्यु पाकिस्तान में नहीं इंग्लैंड में होने वाली है।"

"तो?"

"मगर उन्होंने यह भी कहा है कि मुझे वहाँ नहीं जाना चाहिए। वहाँ जाना सुख देने वाला नहीं होगा।"

"तब क्या फैसला किया है?"

"मैं कल बहुत सुबह यहाँ से निकल जाना चाहती हूँ। और दिल्ली में जा पाकिस्तान से कौन्ट्रैक्ट कर लेना चाहती हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जब दुखदायक है तो क्यों वहाँ जा रही हो?"

"मैं दुःख, कष्ट को टाल सकूँगी।"

मुमताज चुप रही। कुछ देर तक दोनों अपने विचार में मग्न रहीं। मरियम लेटी रही और मुमताज उसके समीप बैठी रही, मुमताज सोच रही थी कि वह अपने जीवन के संगी को पाकिस्तान जाने से मना नहीं कर सकी थी। फिर भला इसको किस तरह से मना कर सकेगी। इससे तो उसका कोई सम्बन्ध ही नहीं है।

इतना विचार कर वह उठी और बोली, "अच्छी बात है। अपना भला–बुरा तुम स्वयं विचार कर सकती हो।" इतना कह वह कमरे से निकल गई।

मरियम अगले दिन नौ बजे की बस से ऋषिकेश, वहाँ से हरिद्वार और सायंकाल हरिद्वार से रेलगाड़ी से दिल्ली को चली गई।

जब सदानारायण छः महीने के उपरान्त पुनः दिल्ली आया तो रमणी से भी मिला। यह उस दिन की बात थी जिस दिन जनसंघ का दिल्ली में उद्घाटन था। मध्याह्न का भोजन वह रमणी और प्रोफेसर विश्वनाथ के साथ कर रहा था। तो उस समय रमणी ने कहा, "यह नीचे वाली लड़की आपसे मिलना चाहती है।"

"क्यों क्या बात है?"

"अपंग हो गई है और कहा करती थी कि जब आप आयेंगे तो आपके दर्शन करेगी।"

"अपंग कैसे हो गई?"

"मुमताज अम्मी के साथ वह देवप्रयाग गई थी। वहाँ स्वामी जी ने उसे पाकिस्तान जाने से मना किया था। वह यह तो जान गई थी कि स्वामी जी में अदृश्य बातों को जानने की शक्ति है परन्तु जब स्वामीजी ने कहा कि उसकी मत्यु समीप नहीं तो यह आश्वस्त हो पाकिस्तान नौकरी करने चल पड़ी। तीन महीने वहाँ रहकर यह लौट आई और इसकी एक टाँग कटी हुई थी। स्वामीजी ने इसे कहा था कि इसके लिए वहाँ जाना सुखकारक नहीं होगा।"

जाने से पहिले सदानारायण रमणी के साथ जनसंघ के उद्घाटन समारोह पर जाने लगे तो वे मरियम से भेंट करने जा पहुँचे। मरियम एक आरामकुर्सी पर बैठी थी। उसके समीप एक दूसरी कुर्सी पर बैठी ऐंग्लो–इंडियन युवक बैठा था। मरियम ने सदानारायण को बैठकघर के द्वार पर खड़ा देखा तो समीप रखी बरागन का आश्रय ले उठी और बोली, "पंडित जी, आइए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीन मास से आपकी प्रतीक्षा कर रही थी।''

वह एंग्लो–इंडियन युवक जाने लगा तो मरियम ने कहा, ''विलियम बैठो। मैं आज तुमको अपना अंतिम निर्णय बता दूँगी।''

विलियम बैठ गया। सदानारायण और रमणी भी कमरे में आ गए थे। और जब सब बैठ गये तो मरियम ने कहा, ''पंडित जी! देख लो अब मैं वह नहीं रही जो पिछली बार आप से मिलने आयी थी। मैं तो यह समझती हूँ कि यह होना ही था। इसी कारण मैंने स्वामी जी की साफ–साफ पेशीनगोई को नहीं माना था।''

मरियम ने देवप्रयाग में हुई पूर्ण वार्त्तालाप का उल्लेख कर कह दिया, ''मैं समझती थी कि मुझ में इतनी तो अक्ल है कि मैं किसी के धोखे में नहीं फँस सकती। मैं पाकिस्तान में नौकरी करने चली गयी।

''पाकिस्तान के अधिकारी तो मेरी योग्यता से प्रभावित मेरी सेवाओं को पाकिस्तान के लिये प्रयोग करने वाले थे। वे मुझको अमेरिका भेजने वाले थे। परन्तु एक सायंकाल एक चौधरी इशताक हुसैन मुझे लेकर एक नाइट क्लब में गये। हमने वहाँ खाना खाया और थोड़ी शराब पी और फिर बाहर लॉन में टहलने चले गये। वहाँ अन्धेरा था। पेड़ों के एक झुरमुट के समीप हम लॉन में बैठ गये और चौधरी साहब ने मुझ से मोहब्बत जाहिर करने की कोशिश की। अचानक पेड़ों के पीछे से एक औरत और एक मर्द सामने आ गए और अन्धेरे में ही उस मर्द ने अपना पिस्तौल निकाल गोली चलानी आरम्भ कर दी। जब वह अपनी जेब से पिस्तौल निकाल रहा था मैं समझ गयी थी कि वह कौन है और क्या करने जा रहा है। इस कारण बिजली की तेजी से मैं उठी और पेड़ों के पीछे की तरफ भागी। इस पर भी मेरी जांघ में गोली लगी। चौधरी साहब का तो काम तमाम हो गया। मैं भी गिर गयी थी। उन्होंने यह समझा था कि हम दोनों खत्म हो गये हैं। वह भाग गया किन्तु औरत पकड़ी गयी। मैं अस्पताल में ले जायी गयी और दो महीने के इलाज में टाँग कटवा कर दिल्ली लौट आयी।

''मैं देवप्रयाग जाना चाहती थी और अपनी मूर्खता की कहानी अपनी जवानी स्वामी जी को बताना चाहती थी। मगर शर्म के मारे जाना मुल्तवी करती चली आती थी। कल रमणी मौसी ने बताया था कि आप आ रहे हैं तो मैंने कहा था कि आपके दर्शन हो सकें तो अपनी खुशकिस्मती मानूँगी।

''सो आपने बहुत कृपा की है। मेरी अकीदत और मुआफी स्वामी जी तक पहुँचा दीजियेगा।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"और वह कौन आदमी था और तुमने उसे अन्धेरे में कैसे पहिचान लिया था?"

"वह अंग्रेजी सफारतखाने का आदमी था। मैंने उससे मित्रता बना कर वहाँ के सब कागजों की नकलें भारत विदेश विभाग को लाकर दी थीं। उनमें कुछ बहुत ही मार्के की चिट्ठियाँ थीं। वह तो मैं असल ही उड़ा लायी थी। उन लोगों को मुझ पर सन्देह हुआ तो मैं दिल्ली भाग आयी।

"चौधरी ने विश्वास दिलाया था वह व्यक्ति (वर्नस्टन) कराची में नहीं है। परन्तु गोली चलाने वाला वही था। उसकी साथ वाली औरत ने तो कुछ और नाम लिया था परन्तु मैं जानती हूँ कि वह झूठ बोल रही थी।"

"बहुत ही अफसोसनाक घटना है।"

"अब मैं इस बरागन के सहारे कोठी में इधर–उधर और इन कमरों में घूम सकती हूँ। बाहर तो मैं गाड़ी में ही जा सकती हूँ। मगर एक बात और है, ये मिस्टर विलियम स्टीफनसन मुझ से शादी करने का इसरार कर रहे हैं। ये मेरे पूर्ण जीवन को जानते हैं। मेरे पिछले दस वर्ष से परिचित हैं। मैं समझती हूँ कि जब मैं पूर्णांगी थी तब तो मैंने इनके प्रस्ताव को माना नहीं। अब इस अवस्था में मान लेना इनको धोखा देना होगा। आप क्या कहते हैं। ये जा रहे थे मैंने इनको ठहरा लिया है, जिससे मैं इनको अपना अन्तिम उत्तर दे सकूँ।"

सदानारायण उस युवक को सामने बैठा देख ठीक उत्तर देने में हिचकिचाहट अनुभव करता था। साथ ही वह इस युवक के मनोभावों को नहीं जानता था। इससे गम्भीर विचार में वह प्रश्न भरी दृष्टि में विलियम का मुख देखता रह गया। विलियम इसका अर्थ समझ बोला, "साहब। मैं मरियम को दस वर्ष से जानता हूँ और तब से ही इससे मुहब्बत करता हूँ। मैं आपको बता दूँ कि मैं इसके जीवन की सब अच्छाइयों और नीचाइयों को जानता हूँ। इस पर भी मेरा मन इसकी ओर आकर्षित है। यह जब से इस सूरत में आयी है तब से मैं फिर आशा से भरा हुआ इसके सामने अपना प्रस्ताव रख रहा हूँ।"

"मगर साहब!" सदानारायण ने पूछ लिया, "आपकी आर्थिक स्थिति क्या है? यह आप पर एक बहुत बड़ी बाधा बनी रहेगी।"

"रुपये–पैसे की कमी नहीं है। मेरे पिता के आसाम में चाय के बाग थे। बहुत रुपया कमाया है और इस समय वह बहुत सुरक्षित उद्योगों में लगा हुआ है। मैं भी एक चाय कम्पनी का पत्तीदार हूँ। मैंने मरियम से कहा है कि मैं विवाह के अवसर पर इसके नाम एक लाख रुपया लिख कर दे दूँगा।"

सदानारायण ने कुछ विचार किया और कह दिया, "मिस्टर विलियम! यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपकी बहुत अच्छी बीवी साबित नहीं होगी। हाँ एक लँगड़ा सा साथी होगी। यदि इतनी त्रुटि को सहन कर सके तो मैं चाहूँगा कि आपके वैडिंग का आशीर्वाद देने मैं भी पहुँच जाऊँ।"

"मरियम! मैं तो पहिले भी तुम्हारे लिए यही जीवन ठीक समझता था। अब भी देरी नहीं है। ईश्वर तुमको सुमति दें।"

: 17 :

रमणी सदानारायण को कनाट प्लेस में छोड़ घर आयी तो प्रोफेसर कालेज से लौट आये थे। लड़के भी स्कूल से आ चाय आदि पीकर खेलने के लिए अजमल खाँ पार्क में चले गये थे। प्रमिला और सबला अपने–अपने कमरे में बैठी पढ़ाई में लगी हुई थीं। प्रोफेसर ने भी चाय पी ली थी और अपने पढ़ाई के कमरे में बैठ एक पुस्तक पढ़ रहा था।

रमणी आई तो प्रोफेसर ने पूछ लिया, "किधर गई थी?"

"मैं आज जनसंघ का स्थापना समारोह देखने के लिये गई थी।"

"कितने लोग थे वहाँ?"

"लोग तो कुछ अधिक नहीं थे।"

"मुझे सन्देह है कि यह दल किसी प्रकार का प्रभाव उत्पन्न कर सकेगा।"

"अभी तो आरम्भ है कुछ कहा नहीं जा सकता।"

"सुना है दल की पीठ पर स्वयं सेवक संघ है।"

"हाँ, सुना तो यही है।"

"यह संघ बदनाम हो चुका है इसलिए जनसंघ भी बदनामी से बच नहीं सकेगा।"

"क्या बदनामी हो रही है संघ की?"

"आज कालेज में कुछ प्रोफेसर कह रहे थे कि गांधी जी के हत्यारे अब लड़ने के लिए राजनीतिक दल बना रहे हैं?"

"परन्तु सरकार यह सिद्ध तो नहीं कर सकी कि गांधी जी की हत्या में संघ का हाथ था।"

"यह कहा जाता है कि गौडसे आर.एस.एस. का सदस्य था।"

"आपको कहना चाहिए था कि यह झूठ है। यह बात मुकदमे में तो आई नहीं। फिर संघ के गुरु जी को पकड़ा था परन्तु उनको हत्या के मुकदमे में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभियुक्त भी नहीं बनाया गया।''

''यह तो ठीक है रमणी! परन्तु जनता का मुख कौन बन्द कर सकता है। साथ ही नेहरू ने संसद में यह घोषणा की थी कि संघ के अधिकारी ऐसा वातावरण बना रहे थे कि जिसके कारण गांधी जी की हत्या हो गई है।''

रमणी ने मुस्कुराते हुए कहा, ''यदि वातावरण बनाने पर कोई दोषी हो सकता है तो पण्डित जवाहर लाल और सरदार पटेल भी हत्या के दोषी हो सकते हैं। और ये कांग्रेस के नेता हैं इस कारण कांग्रेस भी दोषी हो सकती है।''

''वह तो मैं जानता हूँ, परन्तु यदि मैं अपने साथियों को यह सब कुछ कहता तो वे मुझको पागल समझते। आज कौन मान सकता है कि जवाहरलाल गांधी का हत्यारा है।''

''परन्तु है यह वास्तविक बात। मेरे साथ पंडित सदानारायण जी भी थे और वे भी कह रहे थे कि देश का दुर्भाग्य है कि कांग्रेस लाखों हिन्दुओं की हत्या करने की अपराधी होने पर भी राज्य सत्ता पा गई है। मजेदार बात यह है कि हिन्दुओं के बलबूते पर ही वह राज्य कर रही है।

''अब पूर्वी बंगाल में हत्याकाण्ड हुआ है। कई लाख हिन्दू वहाँ से भाग कर भारत में आए हैं और जवाहरलाल जी महाराज लियाकत अली खाँ से यह समझौता कर आये हैं कि उधर से भाग कर आने वाले हिन्दुओं को भारत में घुसने नहीं दिया जावेगा।

''यह बात किसी सही दिमाग वाले आदमी को तो समझ में आती नहीं।'' प्रोफेसर साहब ने स्वीकार किया, ''परन्तु जब कालेजों के प्रोफेसर भी पण्डित नेहरू को शान्ति का दूत समझते हैं तो जन साधारण की बुद्धि का क्या रोना रोयें?

''देखो न रमणी! चीन ने तिब्बत पर आक्रमण किया तो हमारे शान्ति देवता ने दलाई लामा को यह शुभ सम्मति दे दी कि चीन के साथ सुलह के साथ रहे। तिब्बत चीन का स्वाभाविक अंग है।

''इस इतिहास से अनभिज्ञ व्यक्ति को यह विदित नहीं कि तिब्बत पर तो मगध के महाराज प्रसेनजित का राज्य रहा है। प्रसेनजित के पंचम पुत्र ने तिब्बत में अपना राजवंश स्थापित किया था। और उस वंश का राज्य तिब्बत में कई सौ वर्ष तक रहा था। इसी वंश के राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार तिब्बत में हुआ था।

''प्रश्न तो यह है कि यदि कभी तिब्बत पर चीन के अधिकार से तिब्बत चीनियों का हो गया तो यह भारत का क्यों नहीं हो सकता?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रमणी मुस्कुराई और बोली, "पण्डित जवाहरलाल जी महाराज ने 'ग्लिम्प्सेज औफ वर्ल्ड हिस्टरी' में लिख कर तो यह बताया है कि वे इतिहास के एक महान् विद्वान् हैं?"

प्रोफेसर विश्वनाथन हँस पड़ा। वह कहने लगा, "अपने घर में अपनी लड़की को पढ़ाने के लिए वे कुछ भी बन सकते हैं परन्तु यह सत्य है कि वह इतिहास की पुस्तक नहीं। वह अनीश्वरवाद, जड़वाद, डारविनवाद और समाजवाद की प्रचार पुस्तक है।"

"देश की अवस्था अति शोचनीय है।" रमणी का कहना था।

"हाँ। देखो रमणी! होगा यह कि यह जनता का पूज्य देवता जनता को शिक्षित और ज्ञानवान नहीं होने देगा। यह सत्य है कि स्कूल–कालेजों की संख्या बढ़ जावेगी परन्तु शिक्षा अति महँगी और अंग्रेजी जैसी दुरूह भाषा के माध्यम में होने से जन साधारण शिक्षित हो जाय तो हो जाय परन्तु विद्वान नहीं हो सकेंगे।

"ये उतना कौशल सीख जावेंगे जितने की सरकार को आवश्यकता है और यथार्थ ज्ञान से वे दूर रहेंगे। पण्डित जी और मौलाना के अधीन शिक्षा से प्रभावित जनता प्राचीन भारत के लोगों को मूर्ख, अज्ञानी और बहमों में फँसा हुआ मानने लगेंगे। तब ही ये नेहरू जी विद्वान माने जा सकेंगे। और इनके द्वारा लिखी पुस्तक इतिहास की प्रामाणिक पुस्तक मानी जावेगी।"

"परन्तु किया क्या जाय। आखिर हमें और हमारे बच्चों को भी इस देश में रहना है।"

"केवल एक ही उपाय है। वह है, साधारण जनता को यह बताना कि ये नेता अविद्वान बुद्धविहीन और चरित्रहीन हैं। जब जनता यह समझ जावेगी तब ही यह हो सकेगा कि देश विद्वत्ता की ओर प्रगति करे।"

"परन्तु शिक्षा के इनके हाथ में रहते हुए ऐसा हो सकेगा क्या?"

"हाँ, यह हम हिन्दू पहले भी कर चुके हैं। मुसलमानों के काल में ब्राह्मणों ने हिन्दू साहित्य घर–घर में जाकर कथा–कीर्तन के माध्यम से प्रसारित करने से मुसलमानों की आंधी को सफलतापूर्वक रोका था। अंग्रेजी काल में आर्य समाज और कुछ अन्य संस्थाओं ने गैर–सरकारी रूप में हिन्दी और संस्कृत को जीवित रख कर जातीयता की आत्मा को मरने नहीं दिया। अब भी इन योरोप के मानसिक दासों के विकृत प्रभाव से जाति की जातीयता को जीवित रखने का उपाय सामान्य साहित्य के द्वारा भारतीयता के शुद्ध रूप को जनता के सामने रखने से ही हो सकेगा।"

CC-0. Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो यह जनसंघ के द्वारा हो सकेगा।"

"बहुत कम आशा है। हाँ, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ चाहे तो इस प्रभावशाली ढंग से कुछ कर सकता है। मेरा मतलब यह है कि यह सांस्कृतिक कार्य कोई राजनीतिक दल नहीं कर सकेगा। इसको करने के लिए तो कोई स्वतन्त्र और राजनीति के कीचड़ से बाहर की संस्था ही कर सकेगी। आर्य समाज इसके लिए एक उपयुक्त संस्था थी परन्तु आर्य समाज के एक विभाग ने तो सरकारी शिक्षा देने का कारभार सम्हाल लिया है। इस प्रकार उसने अपनी शक्ति को व्यर्थ गँवाने का प्रबन्ध कर लिया है। दूसरा विभाग प्रायः कांग्रेस का पोषक हो रहा है। अतः वे भी तो इस स्वतन्त्र सांस्कृतिक कार्य के आयोग्य बनने का यत्न कर रहा है।"

रमणी ने बात बदल दी। उसने कहा, "मरियम ने निश्चय कर लिया है कि वह विवाह करेगी।"

"यह तो खराब बात नहीं। रमणी! मैं कहता हूँ कि कालेज में ऐसे लड़के और लड़कियाँ आने लगे हैं जो गर्भपात करना–कराना अपना एक नागरिक अधिकार समझने लगे हैं।"

रमणी ने विस्मय प्रकट करते हुए पूछ लिया, "और वे बच्चों का गला घोट कर उनका जीवन समाप्त करने का अधिकार नहीं माँगते क्या?"

"वह भी माँगने लग जावेंगे। भारत और वास्तव में पूर्ण सभ्य कहलाने वाला मानव समाज इसी दिशा की ओर अभिमुख हो रहा है। संतान नियोजन से आरम्भ हुए हैं, गर्भपात तक पहुँच गए हैं और अब शिशु हत्या की बारी भी आने वाली है।"

"मैं कभी विचार करती हूँ कि बच्चों को स्कूल से छुट्टी दिलवा, घर पर पढ़ाना आरम्भ कर दूँ।"

"प्रश्न आजीविका का है। यह अनीश्वरवादियों की सरकार भारत में समाजवाद के पक्ष में आवाज उठाने लगी है। दस–बीस वर्ष में समाजवाद आ गया तो पूर्ण वयस्क समाज, स्त्री–पुरुष दोनों, सरकारी वेतनधारी दास हो जावेंगे। तब इन विश्वविद्यालयों की डिग्री से रहित युवक या तो पागलखाने में भेजे जावेंगे अथवा जेलखाने में। वे किसी काम में लगाये नहीं जा सकेंगे।"

रमणी अपनी लड़कियों को हाथ में नौकरी के लिए प्रार्थनापत्र ले भाग–दौड़ करने की कल्पना कर काँप उठी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंचम परिच्छेद

: 1 :

सदानारायण बम्बई में था जब भारतीय जनसंघ, हिन्दूमहासभा और राम राज्य परिषद ने कश्मीर के विषय में सत्याग्रह आरम्भ किया था। वह कानपुर जनसंघ के वार्षिक अधिवेशन पर उपस्थित था। उस समय जम्मू प्रजा परिषद ने रियासत को भारत के साथ विलय न होने के विषय में आन्दोलन आरम्भ कर रखा था।

प्रजा परिषद का कहना था कि कश्मीर के नर महाराजा हरिसिंह ने बिना किसी प्रकार की शर्त के रियासत का भारत में विलय किया था। और भारत को बिना किसी शर्त के ही इसका विलय स्वीकार करना चाहिए था।

पण्डित नेहरू ने पहले तो विलय स्वीकार करने से इनकार कर दिया था। ऐसा कहा जाता है कि तत्कालीन मन्त्रिमंडल में बहुमत विलय के पक्ष में था, परन्तु प्रधानमन्त्री की इच्छा के विरुद्ध कुछ नहीं हो सकता था। मन्त्रिमंडल में कोई ऐसा व्यक्ति नहीं था जो प्रधानमंत्री की नीति को अशुद्ध मानता हुआ भी उसके विरोध में कुछ कह सकता।

कश्मीर के प्रधानमंत्री श्री महाजन दिल्ली आए थे और महाराज की ओर से विलय का प्रस्ताव नेहरू जी के सम्मुख उपस्थित करने के लिए उनके निवास स्थान पर पहुँचे थे। वे अपने साथ शेख अब्दुल्ला को भी लाए थे और जब पंडित नेहरू विलय को किसी भी प्रकार स्वीकार नहीं कर रहे थे और महाजन पण्डित नेहरू से क्रोध में कह रहे थे कि उस अवस्था में कश्मीर की जनता की जान और माल की रक्षा के लिए कश्मीर का विलय पाकिस्तान से करने पर महाराज विवश हो जावेंगे, तब शेख अब्दुल्ला ने पंडित जी को संकेत किया और वे मान गए।

इस समय तो विलय के साथ किसी प्रकार की शर्त का उल्लेख नहीं था। महाराजा हरिसिंह ने जो विलय पत्र भर कर दिया था वह बिना शर्त के था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परन्तु बाद में पण्डित नेहरू ने स्वेच्छा से, अथवा शेख अब्दुल्ला की सम्मति से, अथवा लार्ड माउंटबेटन की प्रेरणा से, प्रजा के मत संग्रह की बात आरम्भ कर दी थी।

शेख अब्दुल्ला ने प्रधानमन्त्री बनते ही नेहरू से मिलकर महाराजा हरिसिंह को गद्दी से उतरवा कर उसके स्थान पर महाराजा के सुपुत्र श्री करणसिंह को रियासत का सदर नियुक्त कर दिया। भारत के संविधान में भी कश्मीर के विषय में एक धारा 371 बनवा दी जिसका अभिप्राय यह था कि कश्मीर का विलय भारत के साथ वैसा नहीं जैसा अन्य रियासतों का हुआ था।

हैदराबाद का विलय भी भारत के साथ पूर्ण था और भारत में इस रियासत को भारत और संसार के मानचित्र से मिटा देने की बात होने लगी थी। दूसरी ओर कश्मीर को विशेष पद पर रखने के लिए संविधान की एक विशेष धारा निर्माण की गई थी।

इसके अतिरिक्त शेख अब्दुल्ला अब कहने लगा था कि रियासत को एक स्वतन्त्र राज्य भी बनाया जा सकता है। इस कथन का भारत में घोर विरोध हुआ था। सरदार पटेल तब जीवित थे और उन्होंने भारत के एक व्यक्ति को भारत के एक भाग में स्वतन्त्र देश बनाने की बात को देशद्रोह समझ शेख को अपने निवासस्थान में बन्दी रहने की आज्ञा दे दी थी। इस पर यह विख्यात है कि नेहरूजी ने शेख का पक्ष लिया था परन्तु बिना कांग्रेस संसदीय दल के सम्मुख अपनी सफाई दिए शेख को मुक्त नहीं करा सका।

इस पृष्ठभूमि पर जम्मू की प्रजा परिषद ने शेख को हटाने और कश्मीर के बिना शर्त विलय का आन्दोलन आरम्भ कर दिया।

डॉ. मुखर्जी कश्मीर गये थे और इस आन्दोलन की तीव्रता को देख आये थे और भारतीय जनसंघ के कानपुर अधिवेशन में यह प्रस्ताव रखा गया था कि जम्मू के लोगों की बात स्वीकार की जाय अन्यथा भारतीय जनसंघ इस विषय में सत्याग्रह करेगा।

भारत सरकार का यह कहना था कि कश्मीर की जनता की अधिक संख्या शेख अब्दुल्ला पर विश्वास रखती है। यह बात सन् 1952 के निर्वाचनों से सिद्ध हो चुकी है। अतः अल्पमत के किसी प्रकार के सत्याग्रह करने में कारण नहीं। यदि वे किसी प्रकार का कानून भंग करेंगे तो उनको सरकार कठोर हाथ से दबायेगी।

प्रजापरिषद वालों का कहना था कि सन् 1951 के निर्वाचनों में प्रजापरिषद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के प्रत्याशियों के सब के निर्वाचन पत्र रद्द कर दिये गए थे। यह जान–बूझ कर एक अनियमित ढंग से किया गया था। इस कारण निर्वाचनों के परिणाम जनता के विचारों का प्रतीक नहीं हो सकता।

यह स्थिति थी जब कानपुर में सत्याग्रह आन्दोलन आरम्भ करने की बात हुई। प्रस्ताव में सदानारायण ने यह सुझाव दिया कि सत्याग्रह के शब्द के स्थान पर आन्दोलन शब्द रखा जाए।

इस पर डॉ. मुखर्जी का प्रश्न था, "दोनों में क्या अन्तर है।"

"अन्तर स्पष्ट है। एक में कानून भंग करने की धमकी है और दूसरे में जनमत तैयार करने की बात। प्रजातन्त्रात्मक व्यवस्था में कानून भंग करने का प्रश्न ही उपस्थित नहीं होता।"

"यह तो बहुत ही कठिन प्रश्न है। इसको इतना अधिक समय लगेगा कि तब तक तो देश के एक टुकड़े में स्वराज्य कायम हो जायेगा।"

सदानारायण यह बात समझता था। उसको विदित था कि जनता में महात्मा गांधी का इतना प्रबल प्रभाव है कि उसको मिटाने के लिए एक बहुत बड़े प्रयत्न की आवश्यकता है और गांधी जी का पूर्ण प्रभाव पंडित नेहरू के समर्थन में था।

इस पर भी सदानारायण सामयिक सफलता के मोह में सिद्धान्तों की हत्या पसन्द नहीं करता था। सिद्धान्त था प्रजातन्त्रात्मक व्यवस्था में नागरिकों का व्यवहार।

इस व्यवस्था में सत्याग्रह, भूख हड़ताल, आत्महत्या अथवा सशस्त्र विरोध के लिए किसी प्रकार का स्थान नहीं था। सदानारायण ने पुनः आग्रह किया कि जब तक हम प्रजातन्त्रात्मक उपायों का दम भरते हैं तब तक सत्याग्रह करने की बात नहीं कर सकते, वह सत्याग्रह का अर्थ कानून भंग करना ही समझता था।

परन्तु जनसंघ के सदस्य एक के उपरान्त एक सत्याग्रह शब्द पर बल देते रहे। और प्रस्ताव पास हो गया।

इसके उपरान्त सत्याग्रह आरम्भ हुआ। सरकार ने प्रजापरिषद का दमन जारी रखा। एक स्वयंसेवक जम्मू के टाउन हाल पर भारत का राष्ट्रीय ध्वज लगाता हुआ गोली का निशाना बना दिया गया। इसके उपरान्त एक भीड़ पर गोली चली और बीस के लगभग सत्याग्रही मारे गए।

दिल्ली में भी सत्याग्रह आरम्भ हो गया था। डॉ. मुखर्जी पकड़े गए और फिर एक मजिस्ट्रेट की भूल के कारण सर्वोच्च न्यायालय ने उनको छोड़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिया। इसके उपरान्त दिल्ली में धारा 144 के उल्लंघन में सत्याग्रह चलने लगा। लाठी चार्ज भी हुआ और जेल में भी डाला जाने लगा।

इस सब समय सदानारायण बम्बई में था। वह अपने मन के द्वन्द्व में पड़ा हुआ था। सत्याग्रह ठीक है अथवा नहीं। यह विचार चल रहा था कि कानून भंग की प्रथा विदेशीय सरकार के विरुद्ध ठीक थी परन्तु भारत की अपनी सरकार के विपरीत जिसका बहुमत से निर्वाचन हुआ है और फिर होने वाला है उसके विपरीत कानून भंग की प्रथा किसी दिन घोर संकट उपस्थित कर सकती है। वह इसके प्रचलन को बन्द करने के पक्ष में था।

इस समय यह समाचार निकला कि डॉ. मुखर्जी ने भारत सरकार से यह पूछा है कि कश्मीर में जाने के लिये परमिट का नियम किस विधि विधान के अधीन है। भारत सरकार ने उत्तर देने की आवश्यकता नहीं समझी। और डाक्टर साहब ने कह दिया कि इस अवस्था में वे बिना परमिट के कश्मीर जावेंगे और यदि यह कानून के विरुद्ध है तो उनको पकड़ा जा सकता है।

डाक्टर साहब कश्मीर को चल पड़े। भारत सरकार ने उनको नहीं पकड़ा। इसका अभिप्राय यह था कि भारत सरकार परमिट के विषय में डरती थी कि कहीं इसके कारण डाक्टर को पकड़ा गया तो मुआमला कोर्ट में जावेगा और कदाचित भारत सरकार यह सिद्ध नहीं कर सकेगी कि परमिट की प्रथा कानून के अनुसार है।

इस पर भी बाद में डॉ. मुखर्जी पकड़े गये। वह कश्मीर सरकार से बिना परमिट के कश्मीर आने के कारण नहीं वरंच रियासत में बदअमनी फैलाने की आशंका के कारण।

इससे एक बात सिद्ध हो गई कि परमिट तो धींगामस्ती थी। हाँ, किसी को पकड़ने के लिये तो एक सौ एक ढंग हो सकते हैं।

इस समय सदानारायण ने भी बिना परमिट कश्मीर जाने का विचार कर लिया। वह नहीं चाहता था कि भारत सरकार के साथ विरोध में आवे। वह चाहता था कि कश्मीर सरकार को उसे वहाँ रहने में विवश कर दे और फिर वह भारत में लौटे तो देखे भारत सरकार क्या करती है।

सदानारायण बम्बई से होशियारपुर, वहाँ से धर्मशाला, धर्मशाला से कुल्लू और कुल्लू से पैदल अनियमित मार्ग से कश्मीर में प्रवेश कर गया। कुल्लू पहुँच कर उसने देखा कि कुछ अन्य सत्याग्रहियों ने भी इस मार्ग से कश्मीर में प्रवेश किया है परन्तु वे किसी नगर में पहुँच घोषणा कर देते थे कि वे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कश्मीर में बिना परमिट के पहुँच गये हैं। इस पर वे कश्मीर में अव्यवस्था स्थापित करने के अपराध में पकड़ लिये जाते थे।

उन्होंने स्वयं को छुड़ाने के लिये कोई मुकदमा नहीं किया। सदानारायण तो अपने को कैद करवाने में कोई तत्त्व नहीं मानता था। उसका अभिप्राय तो इसमें भी आन्दोलन करने का था।

कुल्लू से उसने चम्बा रियासत के रहने वाले दो पहाड़ियों का साथ लिया और एक ऐसा मार्ग ढूँढ़ लिया जो सरकारी रूप में अपरिचित और वैसे भी कठिन था। सदानारायण ने स्वयं भी पहाड़ियों के से वस्त्र पहिन रखे थे और पैदल बिना किसी प्रकार सामान के चल पड़ा।

बम्बई से चलते समय उसने यह प्रबन्ध कर लिया था कि यदि वह रियासत में पकड़ा गया तो उसके छुड़ाने के लिये कश्मीर में मुकदमा लड़ा जावेगा। वह कश्मीर रियासत के किसी भी प्रकार के कानून का विरोध करना नहीं चाहता था। उसका पूर्ण प्रयास यह सिद्ध करने में था कि भारत का एक नागरिक बिना भारत सरकार के परमिट के कश्मीर में रह सकता है।

यों तो वह सन् 1947 के सितम्बर, अक्टूबर और नवम्बर में श्रीनगर में रहा था। तब वह कश्मीर के प्रायः सब बड़ें–बड़े लोगों से मिला था। इस बार भी वह किसी बढ़े अफसर के घर में ही पकड़ा जाना चाहता था।

कुल्लू से पगडंडियों और अपरिचित एवं अपदित पहाड़ों पर से चलता हुआ अपने साथियों के साथ पहलगाम जा पहुँचा। वहाँ उसने अपने लिये विस्तर और पहनने के कपड़े बनवाये। इस प्रकार एक रईस यात्री के रूप में टट्टू पर सामान लाद अनन्तनाग, इस्लामाबाद और फिर झेलम नदी के मार्ग से एक डोंगे में श्रीनगर जा पहुँचा। श्रीनगर में चुंगी पर उसने अपने को चम्बे के उस क्षेत्र का एक महाजन लिखवाया जो कश्मीर में था और सामान की तलाशी करवा श्रीनगर के नीडोज होटल में जा ठहरा।

यहाँ उसने भिन्न–भिन्न प्रकार के अधिकारियों से मिलना आरम्भ कर दिया। एक प्रकार से उसने यही प्रभाव उत्पन्न किया कि वह भारत सरकार का परमिट लेकर ही वहाँ आया हुआ है।

उसका विचार था कि श्रीनगर में कुछ दिन रहकर और अधिक से अधिक लोगों से भेंट करने से वह यह सिद्ध करेगा कि वह कश्मीर में किसी प्रकार से भी अव्यवस्था उत्पन्न नहीं कर रहा। तब वह किसी नाटकीय ढंग से यह घोषणा करे कि वह भारत सरकार के परमिट के बिना वहाँ पर है और बिना परमिट के वापस लौटेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह अपने यह सिद्ध करने के प्रयास में कि वह रियासत के कानून का किसी प्रकार से विरोध नहीं कर रहा, वह श्रीनगर में ठहरा हुआ सरकारी, सैनिक और गैर–सरकारी लोगों से मिलता रहा। वह सबसे यही प्रकट करता था कि वह अपने इतिहास संग्रह के काम से आया हुआ है।

एक दिन वह रियासत के गृहमन्त्री से मिलने के लिये चला गया। गृहमंत्री उसको इतिहास के विद्वान के नाते जानता था। जब उसने अपना कार्ड भीतर कार्यालय में भेजा तो उसे भीतर बुला लिया गया। औपचारिक आवभगत के उपरान्त गृहमंत्री ने पूछा, "चाय पीयेंगे क्या?"

सदानारायण ने कलाई पर बंधी घड़ी में समय देखा और कह दिया, "समय तो है। अगर तकलीफ न हो तो मंगवा लीजिये। मैं आपसे एक अत्यावश्यक कार्य के लिये आया हूँ।"

गृहमंत्री ने बड़े ध्यान से सदानारायण की ओर देखा। सदानारायण मुस्करा रहा था। गृहमंत्री ने पूछ लिया, "चाय पीने से पहले बात करेंगे अथवा बाद में?"

"चाहता तो यही हूँ कि चाय पी लूँ। बाद में शायद आप चाय पूछें ही नहीं।"

"तो यह भी बात है?"

"हो सकती है।"

"तब तो ठहर जाइये। पहले चाय हो जाय। मेरे भी चाय पीने का समय हो गया है।"

सदानारायण ने पूछ लिया, "डॉ. मुखर्जी कैसे हैं?"

"आपका उनका क्या सम्बन्ध है?"

"उनसे भी कुछ सम्बन्ध है ही। वे भी इतिहास निर्माण कर रहे हैं और मैं उनसे मिलता रहता हूँ।"

"देखो सदानारायण! इस रियासत में दो ताकतें दो–दो मुखतलिफ सिम्मतों में काम कर रही हैं। मुझको डर लगता रहता है कि ये दोनों ताकतें आपस में ही भिड़कर एक–दूसरे को तबाह न कर दें।

"जिस दिन से हमारे वजीरे आजम आजाद कश्मीर के ख्वाब देखने लगे हैं उस दिन से ही मेरी उनसे बनती नहीं है और मैं उनको समझाने की कोशिश कर रहा हूँ।"

"परन्तु हुजूर! यह ख्वाब तो वे सन् 1931 से ले रहे हैं न?"

"हाँ, मैं भी उसमें शामिल था। मगर वे अंग्रेजी सरकार के दिन थे और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हम समझते थे कि अंग्रेजी सरकार हमारी मदद पर है। मगर सन् 1931 में जो कुछ हुआ उससे हम दोनों को भारी मायूसी हुई थी। कश्मीर के रेजिडेंट ने हमको यकीन दिलाया था कि अगर हम अपनी मुहिम को कुछ और तेज कर सकें तो वे राजा को गिरफ्तार कर लेंगे और रियासत को एक खुद–मुख्तार इलाका ऐलान कर देंगे। गर्ज कि मैं सियालकोट गया और वहाँ के मुसलमानों को भड़काकर यहाँ लाने लगा। जब हमारी जद्दोजहद उरुज पर थी पहले पंजाब सरकार ने ऐहरारों का आना बन्द किया और फिर अंग्रेजी सेना कश्मीरियों को गोलियों से भून डालने के लिए यहाँ आ पहुँची। बात ठंडी हो गई।

"इसके बाद हमने कांग्रेस से मेल–जोल पैदा किया। पंडित नेहरू यहाँ आये और उनकी राय से हमने कश्मीर मुस्लिम कान्फ्रेंस को खत्म कर कश्मीर नेशनल कान्फ्रेंस बना ली। उस वक्त हमको यह यकीन दिलाया गया था कि कश्मीर को देशी राजा से आजाद करने में कांग्रेस हमारी मदद करेगी। उस समय पंडित नेहरू भी ख्वाब लेते थे कि कश्मीर स्विजरलैंड की भाँति एक आजाद और तटस्थ मुल्क बन सकेगा। मगर स्वराज्य मिलते ही नेहरूजी की नीतियाँ तो आजाद कश्मीर बनाने वाली मालूम होती हैं मगर उनके काम कश्मीर को हिन्दुस्तान के साथ मिलाने वाले समझ आते हैं।

"मैंने अपने वजीरे आजम साहब से कहा था कि कश्मीर के आजाद होने से न तो किसी किस्म का फायदा है न ही यह मुमकिन है। नेहरू साहब भी इस ख्याल की मुखालफत करने लगे हैं।

"पहले तो हम समझते थे कि सरदार की वजह से नेहरू साहब ऐसा करने के लिए मजबूर हैं मगर अब तो उनकी मौत हुए भी तीन साल होने जा रहे हैं।

"मैं तो नेहरू साहब से मुतफिक–उल–राय हो गया हूँ मगर हमारे वजीरे–आजम अपनी धुन में चले जा रहे हैं। वे अमरीका और इंग्लैंड से सांठ–गांठ लगाने की कोशिश में हैं। अमरीका ने तो एक ढंग से उम्मीद भी दिलवाई है। मगर उनकी इमदाद से पहले ही यहाँ बात खत्म होती मालूम होती है।"

"आप जानते नहीं कि नेहरूजी आपकी आजाद कश्मीर की तजवीज की मुखालिफत क्यों करने लगे हैं?"

"क्यों करने लगे हैं?"

"इसलिए कि आप अमेरिका से मदद माँगने लगे हैं।"

"तो किससे मदद माँगते?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"रूस से।"

"मगर वह तो इस मामले में दिलचस्पी नहीं लेता।"

"लेता तो है। मगर आप अमरीका की गोद में बैठ रहे हैं। देखिये, इस दुनिया में जो कुछ अमेरिका करेगा रूस उसकी मुखालफत करेगा। जो कुछ रूस करेगा पण्डित नेहरू उसकी ताईद करेंगे।

"आप महाराजा हरिसिंह से हमदर्दी रखते थे और नेहरू उस महाराजा से नफरत करते थे। नतीजा यह हुआ कि वह आपसे भी नफरत करने लगे। शेख महाराजा हरिसिंह से नफरत करता था और नेहरू शेख से हमदर्दी करता था।

"महाराजा तो गये। अब आपने अमरीका से दोस्ती कर नेहरू को अपने खिलाफ कर लिया है।"

"मुझको यही बात एक ऊँचे रुतवे पर बैठे शख्स ने कही थी।"

"किदवई साहब ने न?"

गृहमंत्री मुख देखता रह गया। "तो आप इन सबके मन की बात जानते हैं।"

"हाँ किदवई साहब नेहरू को बचपन से जानते हैं। वे उनसे मोहब्बत भी बहुत रखते हैं। मगर वे उनके व्यवहार को पसन्द नहीं करते। वे अंग्रेजों और अमरीका दोनों से बनाकर रखना चाहते हैं मगर वे शेख साहब को बहुत ही खतरनाक आदमी मानते हैं।"

इस वक्त चाय आ गई और दोनों चाय पीने लगे। चाय लाने वाला नौकर सामने खड़ा था। इस कारण दोनों चुपचाप चाय पीते रहे।

: 2 :

चाय समाप्त होते ही गृहमंत्री ने पूछ लिया, "अब तो आप अपना काम बता सकते हैं।"

सदानारायण ने गम्भीर हो कह दिया, "मैं अपने आपको हिरासत में देने के लिए आया हूँ।"

"क्यों? क्या खराबी की है आपने? किसी का कत्ल करके आये हैं क्या?"

"कत्ल तो नहीं, हाँ, कानून तोड़कर आया हूँ। मैं कश्मीर में भारत सरकार के परमिट के बिना घूम रहा हूँ।"

"यह हमारी रियासत में जुर्म नहीं है। इसके लिए हम आपको पकड़ेंगे नहीं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मगर आपने डॉ. मुखर्जी और उनके दो साथियों को तो इसीलिए पकड़ रखा है?"

"वह बात दूसरी है। भारत सरकार ने शेख साहब को बताया था कि एक खास वजह से वे मुखर्जी को भारत में पकड़ना नहीं चाहते थे। आप किसी बहाने से इनको कश्मीर में दाखिल होते ही पकड़ लें।

"हमने पंडितजी को खुश करने के लिए फौरन सदरे रियासत से एक आर्डिनैंस जारी करवाया और फिर बहाना बनाकर, कि वे रियासत में बेअमनी फैलाने वाले हैं, हमने उनको नजरबन्द कर लिया है। अब उनकी पिटीशन श्रीनगर हाईकोर्ट में दायर हो गई है और मेरा खयाल है कि दो–चार दिन में वे छूट जायेंगे।"

"तो मुझे भी बहाना बना पकड़ लीजिये और फिर मैं भी पिटीशन कर छूट जाऊँगा।

"आप भी अपने पकड़े जाने की सिफारिश नेहरूजी से ले आइये।"

सदानारायण हँस पड़ा। हँसते हुए कहने लगा, "मैं यहाँ प्रेस कांफ्रेंस करने वाला हूँ।"

"क्या करने वाले हैं उसमें?"

"यही कि भारत सरकार का कश्मीर आने का परमिट लिए बिना मैं यहाँ घूम रहा हूँ। चूँकि कश्मीर सरकार मुझको पकड़ नहीं रही इसलिये मैं भारत सरकार को चैलेंज करता हूँ कि मैं अमुक तारीख को रावी का पुल पार करूँगा। भारत सरकार चाहे तो पकड़ सकती है। मैं उनके इस पकड़ने को सुप्रीम कोर्ट में चैलेंज करूँगा।"

"कब जाने वाले हैं आप?"

"चौबीस जून को।"

"देखिये सदानारायणजी! मेरी एक राय मान लीजिये। अपना जाना और प्रेस कांफ्रेंस एक सप्ताह के लिए मुल्तवी कर दीजिये। तब तक कश्मीर में इन्कलाब आने वाला है।"

"जरा बाजाकर समझाइये।"

"देखिये बैग साहब यहाँ नगर–नगर में मीटिंग कर खलकत को यह समझा रहे हैं कि कश्मीर को पाकिस्तान से सुलह कर लेने में फायदा है। अगर पाकिस्तान से इलहाक हो जाय तो कश्मीर वैली मालामाल हो जावेगी।

"शेख साहब इस प्रोपैगण्डा की इजाजत दे रहे हैं। उनका इसमें मकसद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह है कि इससे नेहरूजी डर जायेंगे और जो कुछ कार्रवाही नेहरू के विलायत से लौटने पर होने वाली है, रुक जावेगी।

"मैंने इस जहरीले प्रचार का विरोध करने का फैसला कर लिया है। आज से पाँच–छः दिन पहले मैंने डॉ. मुखर्जी को जेल से ही सत्याग्रह बन्द करने की सलाह दी थी। उनका कहना था कि अगर बाइज्जत समझौता हो जाय तो वे सत्याग्रह बन्द करने के लिये तैयार हैं।

"मैंने उनको यह खबर भेजी है कि सत्याग्रही सब कैदी छोड़ दिये जावेंगे। और सत्याग्रह के नतीजे में शेख साहब वजीरे आजम की गद्दी से उतार दिये जावेंगे। मगर यह एक जैंटलमैन का कौल है। लिखकर नहीं दिया जा सकता।

"उनका यह जवाब आया है कि रियासत में सत्याग्रह श्री प्रेमनाथ डोगराजी बन्द करा सकते हैं। उनसे राय किये बिना वे कुछ नहीं कर सकते'

"शेख साहब डॉ. मुखर्जी और पंडित डोगरा को इकट्ठा करने की मुखालफत करते हैं। उनका खयाल यह है कि रियासत में गड़बड़ी मची रहे और इससे उनकी वजारत कायम रह सकती है। बैग साहब के जलसे इस गड़बड़ी कराने के सिलसिले में ही थे। आज चार दिन हुए श्रीनगर में अमरीकादल के चौक में बैग साहब ने पाकिस्तान की हिमायत में जलसा करने की कोशिश की। मेरे एक भाई ने जलसे पर कब्जा कर उसे भारत की हिमायत में बदलने की कोशिश की। वहाँ झगड़ा हो गया और पुलिस ने ग्यारह आदमियों को पकड़ लिया। सब पकड़े जाने वाले शेख के आदमी थे।

"शेख ने उनको छोड़ देने का इसरार किया। मैंने छोड़ने से इन्कार कर दिया। शेख साहब ने मुझको स्तीफा देने के लिए कहा। मैंने शेख साहब को मुझे निकालने के लिए पूरी वजारत तोड़ने की राय दी। शेख का ख्याल था कि पूरी वजारत सिवाय मेरे उसकी तरफ है। इसलिए उसने वजारत की राय पूछी। वजारत ने उन बलवा करने वाले शेख के आदमियों को न छोड़ने का फैसला दिया। इसका मतलब यह था कि अगर इस्तीफा देना है तो उसे देना चाहिए।

"इस पर शेख नाराज हो वजारत की मीटिंग बन्द करने लगा। उस वक्त मैंने डोगरा साहब को कश्मीर में मुखर्जी के पास लाने की बात चलाई।

"शेख ने गुस्से में कह दिया, 'जो मन में आये करो। मुझको इन बातों में दिलचस्पी नहीं है।'

"बस फिर क्या था वजारत की राय से डोगरा जी इस वक्त श्रीनगर में डाक्टर साहब के पास हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"एक–दो दिन में डाक्टर साहब छूटने वाले हैं। हाईकोर्ट के मुख्य जज उनका पकड़ा जाना गैरकानूनी मानते हैं। उनके छूटते ही सत्याग्रह वापस हो जावेगा और शेख साहब की वजीरे–आजमी भी खत्म हो जावेगी।"

"और शेख साहब यह बात जानते हैं क्या?"

"एक अक्लमन्द इन्सान को इतना तो समझ लेना चाहिए कि अगर यह आग से खेलता है तो हाथों के जलने की उम्मीद करता रहे।"

"तब तो और भी जरूरी है कि मैं सत्याग्रह में पकड़ा जाऊँ।"

"आपको अब इस जुर्म में पकड़ा नहीं जावेगा। यह जुर्म, अगर है तो रियासत के खिलाफ नहीं।"

"तो मैं प्रेस कान्फ्रेंस करूँगा।"

"देखिये पण्डितजी! मैंने भारत सरकार से इस मजमून पर गुफ्तगू की है और हम इस नतीजे पर पहुँचे हैं कि यह परमिट सिस्टम उड़ा दिया जाय। इस नतीजे पर पहुँचने के बाद तो इस बात के लिये आपको कोई पकड़ेगा नहीं। हाँ अगर प्रेस कांफ्रेंस में कुछ रियासत के खिलाफ कहा तो आप पर रियासत के कानून के मुताबिक मुकदमा चलाया जाएगा। इस किस्म की बात से एक बात आप करेंगे कि शेख साहब के हटाये जाने में देरी होती जावेगी। और इस अर्से में वह अमेरिका से मदद लेने में कामयाब हो सकते हैं।"

सदानारायण जानता था कि अमेरिका कश्मीर के क्षेत्र में सेनायें भेजेगा नहीं। अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति इसके अनुकूल नहीं। इस पर भी यदि यह ठीक है कि शेख अब्दुल्ला के विपरीत भारत सरकार हो गई है तो भारत सरकार के इस शुभ कार्य के मार्ग को साफ करने के लिए कश्मीर में अमनो–अमन हो जाना चाहिए।

उसको यह भी सन्देह हो रहा था कि कहीं यह रियासत का गृहमंत्री किसी प्रकार की चार सौ बीसी न करता हो। राजनीति में ऐसी बातें होनी आश्चर्य का कारण नहीं हो सकतीं। सत्याग्रह अथवा विरोधी के ऐक्शन को शान्त करने के लिए उसको अपने कार्य की सफलता की झूठी आशा दिला देनी एक साधारण–सी चाल है, परन्तु उसे बेग की हो रही सभाओं और अमरीका दल के मैदान की सभा की घटना का ज्ञान था इससे वह मन में विचार कर रहा था कि शेख अब्दुल्ला का पत्ता तो सन् 1950 में कट जाना चाहिए था जब उसने कश्मीर को एक आजाद मुल्क बनाने की घोषणा की थी। उसका स्थान तब ही जेल में था। यदि भारत सरकार अब भी चेती है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो उसका स्वागत करना चाहिए और उसके मार्ग में रुकावट डालनी नहीं चाहिए। इस प्रकार विचारों में वह गम्भीर हो गया।

उसे गम्भीर देख गृहमंत्री कहने लगा, "यकीन नहीं आया न?"

"बात विचित्र तो है। पण्डित नेहरू की शेख से पिछले बीस वर्ष की दोस्ती की रोशनी में यह हो सकेगा, यकीन नहीं आता।"

"आप एक बात नहीं जानते। यह बात तो यहाँ जानकार सर्कल में मशहूर हो रही है कि इन दोनों दोस्तों में तू–तू मैं–मैं हो चुकी है। शेख ने पंडितजी को यहाँ की नेशनल कांफ्रेंस के मुताल्लिक धोखे में रखना चाहा था। यह राज जब फाश हुआ तो दोनों दोस्तों में दरार पड़ गई।

"इसके अलावा नेहरूजी मौलाना पर बहुत एतबार और उनकी बहुत इज्जत करते हैं और शेख ने पिछली ईद के मौके पर उनकी भारी बेइज्जती की है।"

सदानारायण ने गृहमंत्री की बात की परीक्षा करने का निश्चय कर लिया था। इस पर भी उसने गम्भीर भाव में कहा, "मैं आपकी बात पर यकीन करता हूँ और अपने मुताल्लिक घोषणा करने को एक हफ्ते के लिए स्थगित कर देता हूँ।"

गृहमंत्री ने तुरन्त बात बदल दी, "आप कहाँ ठहरे हैं?"

"नीडोज होटल में।"

"आप रियासत के मेहमान क्यों नहीं बन जाते। बहुत–सा खर्चा बच जावेगा।"

"यही तो आपसे कहने के लिए आया था कि मैं आपका मेहमान बनना चाहता हूँ। वरना प्रेस कांफ्रेंस कर दूँगा। आपने दोनों बातों को मुल्तवी करने की बात कही है।"

"मेहमान तो आप बन ही सकते हैं। जेलखाने में नहीं, सरकारी गैस्ट हाउस में।"

"जी नहीं। यह तो गुनाह बेलज्जत हो जावेगा। मेहमान बन आजादी भी खो दूँ और शोभा भी न पाऊँ।"

: 3 :

सदानारायण गृह मन्त्रालय से लौटा तो वह समझ रहा था कि सत्य ही किसी प्रकार का परिवर्तन रियासत में होने वाला है। परन्तु इस परिवर्तन से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसी आधारभूत नीति में अन्तर आता अनुभव नहीं करता। कश्मीर की परिस्थिति यह थी कि यह सीमावर्ती क्षेत्र था। चीन, तिब्बत, रूस और पाकिस्तान से सम्बद्ध होने के कारण यह अन्तर्राष्ट्रीय कूटनीतिक गतिविधियों का अखाड़ा होता जा रहा था। यह आवश्यक था कि इस क्षेत्र के रहने वाले कट्टर देशभक्त और भारत के निष्ठावान नागरिक हों। परन्तु नेहरू जी ने इस क्षेत्र के रहने वालों में भारत के लिए निष्ठा उत्पन्न होने में किसी प्रकार का प्रोत्साहन देना तो दूर अनिष्ठा उत्पन्न करने का ही यत्न किया था।

कश्मीर के पृथक संविधान, पृथक् राष्ट्रपति, पृथक पताका और फिर कश्मीर में आने–जाने में बाधायें तथा यहाँ भारत के अन्य क्षेत्रों से आकर बसने पर प्रतिबन्ध, कश्मीरियों के मन में यह बात अंकित कर रही थी कि वे भारत के दूसरे रहने वालों से पृथक हैं।

साथ ही शेख अब्दुल्ला और उसके साथियों को यह स्वीकृति दे रखी थी कि वे कश्मीर को भारत से पृथक करने का प्रचार कर सकें। प्रत्येक प्रकार के प्रचार की स्वीकृति तो नागरिक स्वतन्त्रता का अंग है परन्तु यह स्वतन्त्रता एकपक्षीय होने से तो स्वतन्त्रता न होने से भी खराब बात हो जाती है।

इस पर सदानारायण के मन में यह सन्देह हो रहा था कि पण्डित नेहरू को या तो शेख के साथ इतना प्यार है कि वह उसके लिए देश के हितों का बलिदान देने के लिए तैयार हो गये हैं। या पण्डित नेहरू राजनीति की इस (अ–आ–इ–ई) को भी नहीं जानते कि देश के भिन्न–भिन्न भागों में ऐक्य स्थापित करने के लिये उनमें यातायात और सम्पर्क होना अत्यावश्यक है।

गृहमन्त्री ने यह संकेत किया था कि पण्डित नेहरू जी भी एक समय कश्मीर को स्विट्जरलैंड की भाँति एक स्वतन्त्र देश बनाने के पक्ष में थे। यदि यह सत्य है तो नेहरू जी की कश्मीर के सम्बन्ध में पूर्ण नीति दर्पण की भाँति स्पष्ट हो जाती है। कश्मीर के भारत के साथ विलय होने में बाधा, फिर विलय में मतसंग्रह की शर्त, कश्मीर का पृथक् संविधान, इसे पृथक देश की रूपरेखा देने का यत्न, पृथक प्रधान और पृथक् ध्वजा, यहाँ भारत के अन्य नागरिकों के आकर बसने अथवा यहाँ उद्योग–धन्धे चलाने में बाधा, यह परमिट पद्धति, ये सब बातें गृहमन्त्री के कथन का न केवल समर्थन करती थीं वरंच नेहरू के मन में अभी भी वही विचार होने का संकेत करती थीं।

परन्तु यह तो देशद्रोह है। भला देश का प्रधानमन्त्री यह कैसे कर सकता है। इतना विचार कर सदानारायण स्तब्ध हो बैठा रह गया। उसका चित्त इतनी बड़ी बात भारत के प्रधानमन्त्री के विषय में विचार नहीं सका।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कश्मीर की जनता में अपनी विशेष स्थिति पर विचार संघर्ष चल रहा था। कश्मीरियों में पृथक्ता की भावना का बीजारोपण महाराज रणवीरसिंह के काल से आरम्भ हुआ था। उस समय अंग्रेज कश्मीर को अपना स्वर्गलोक बनाना चाहते थे।

महाराज गुलाबसिंह की अंग्रेजों से संधि में कश्मीर को स्वतन्त्र देश माना गया था। उस समय स्वतन्त्रता का अर्थ था एक विदेशीय राज्य से स्वतन्त्रता। पूर्ण भारत पर अंग्रेज छा रहा था और उससे स्वतन्त्रता के अर्थ भारत से स्वतन्त्रता का अर्थ नहीं था। इसका अर्थ यदि कुछ था तो गुलाम भारत से स्वतन्त्रता का ही था।

अंग्रेज अपनी शक्ति और राजनीति के आश्रय गुलाबसिंह के साथ हुई संधि का उल्लंघन करना चाहते थे। एक तो हिन्दुस्तान की विदेशीय सरकार अपने अंग्रेज अफसरों के लिए कश्मीर को विनोद भूमि बनाना चाहती थी और दूसरे वे चित्राल और गिलगित में अपना विशेष अधिकार बनाकर विकासोन्मुख रूस से हिन्दुस्तान में अपनी प्रभुसत्ता की रक्षा करना चाहती थे। महाराज रणवीरसिंह अंग्रेजों की इस नीति का विरोध करने लगा था। उसने फरमान जारी कर दिया– कश्मीर राज्य में– कि कश्मीर के नागरिकों के अतिरिक्त कोई भूमि नहीं खरीद सकता।

इस आशा से अंग्रेजों का कश्मीर में बसना तो रुक गया परन्तु साथ ही कश्मीर की जनता के मन में हिन्दुस्तान से पृथक्ता का बीजारोपण हो गया। इस स्थिति में ही अंग्रेज ने अपनी इस नीति के अधीन राजा हरिसिंह से हिन्दुस्तान सरकार का अधिक हस्तक्षेप प्राप्त करने के लिए राज्य के विरुद्ध मुसलमानों को भड़का दिया। महाराज हरिसिंह ने लन्दन की प्रथम गोलमेज कांफ्रेंस में अपना लगाव हिन्दुस्तान की स्वतन्त्र सरकार के साथ प्रकट किया था। उसने हिन्दुस्तान में स्वराज्य माँगने वालों के साथ हिन्दुस्तान की देशी रियासतों के सहयोग की बात कही थी। यह अंग्रेज शासकों को पसन्द नहीं आई और सन् 1931 में मुसलमानों की बगावत हो गई। शेख अब्दुल्ला, जो अलीगढ़ की उपज था, मुसलमानों का नेता बन गया और जब राजा अपने गोलमेज कान्फ्रेंस में यह वाक्य का दाम चुका चुका था तो मुसलमान दबा दिए गये।

इस पर भी रियासत के राज्य प्रबन्ध में कुछ सुधार और एक कौंसिल बना दी गई। शेख अब्दुल्ला को कुछ मिला नहीं। अतः वह नेहरू के कहने पर मुस्लिम कान्फ्रेंस के स्थान नेशनल कान्फ्रेंस का नेता बन गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नेहरू के मस्तिष्क में दो बातें थीं। एक तो संयुक्त राज्य का चित्र। उसके अनुरूप वे सब प्रान्तों को और रियासतों को स्वतन्त्र स्वायत्त प्राप्त राज्य बनाने का सुझाव देते जाते थे। नेहरू भाषाई राज्य बनाने के पक्ष में भी थे और भाषाई झगड़ा करने वालों को प्रोत्साहन देते थे।

अब स्वराज्य प्राप्ति के समय पण्डित नेहरू अपने पूर्वग्रहों से प्रेरित संयुक्त राज्य प्रणाली का संविधान बनाने लगे और कश्मीर को स्वतन्त्र देश बनाने वाले शेख अब्दुल्ला को वहाँ का प्रधान बना बैठे।

इसके साथ ही कश्मीर को हिन्दुस्तान से पृथक् रखने के सब प्रतिबन्ध लागू किए गये। यह कश्मीरियों के मस्तिष्क में पृथक्ता को सुदृढ़ करने में बहुत सीमा तक सहायक हुए।

सदानारायण होटल में अपने कमरे में बैठा था कि होटल का मैनेजर आया। मैनेजर एंग्लो इण्डियन था। उसने कमरे का द्वार खटखटाया तो सदानारायण ने कहा, "आ जाओ।"

वह द्वार खोल भीतर आ गया। सदानारायण ने मैनेजर को देख कहा, "आइये, क्या आज्ञा है?"

"आपसे एक बात करनी है।"

सदानारायण ने कुर्सी की ओर संकेत कर कहा, "बैठिये। बताइये क्या बात है?"

"अभी–अभी एक सरकारी अधिकारी आया था और कह गया है कि आपका होटल का बिल आपसे वसूल न किया जाय। और आप जब जाना चाहें तब गृहमन्त्रालय को सूचना भेज दी जाय।"

सदानारायण यह समझा था कि गृहमन्त्री ने उसको स्टेट गेस्ट मान कर ही ऐसी आज्ञा दी होगी। इस कारण विशेष चिन्ता व्यक्त न करते हुए वह मैनेजर के और कुछ कहने की प्रतीक्षा करते हुए उसका मुख देखता रहा। मैनेजर ने आगे कहा, "इस कर्मचारी के जाने के उपरान्त एक अन्य व्यक्ति आया है और आपके विषय में जाँच करता हुआ पूछता था कि आप पंजाबी है, बंगाली हैं, सपत्नीक हैं अथवा अकेले। जब मैं उसके सब प्रश्नों का उत्तर दे चुका तो वह कहने लगा कि यह आदमी खुफिया पुलिस की जैर निगरानी है।

"जब मैंने उसको बताया कि आप तो गृह मन्त्रालय के मेहमान हैं तो वह मुस्करा दिया। अब मैंने देखा है कि आधे दर्जन से भी अधिक सफेदपोश होटल के चारों ओर चक्कर लगा रहे हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सदानारायण इन परस्पर विरोधी कार्यवाहियों पर मुस्कुराता हुआ मैनेजर से पूछने लगा, "इस अवस्था में आप मुझसे क्या चाहते हैं?"

"यह कि आप कौन हैं? और कब तक यहाँ रहने का विचार रखते हैं?"

"अगर मैं कहूँ कि गर्मियों भर यहाँ रहूँगा तो आप क्या कहेंगे?"

इस पर तो मैनेजर भौचक्का हो सदानारायण का मुख देखता रह गया। उसने कहा, "मैं आपको यही राय दूँगा कि आप श्रीनगर से जल्दी से जल्दी किसी अन्य पहाड़ी स्थान पर जाने का प्रबन्ध कर लें।"

"यह मुझे होटल छोड़ने का नोटिस है क्या?"

"नोटिस तो मैं दे सकता ही नहीं। मुझको आज्ञा है कि आपकी सुख–सुविधा का ध्यान रखूँ। मगर जब राज्य सरकार में आपके विषय में परस्पर विरोधी कार्यवाहियाँ हो रही हैं तो चिन्ता लग रही है।"

"मेरी जान की अथवा किसी और बात की?"

"जान की बात चिन्ता से बाहर नहीं हो सकती। कुछ भी हो यह स्थिति ठीक नहीं। एक बात मैं आपको बताना चाहता हूँ कि आज श्रीनगर का वायुमण्डल तनाव की अवस्था में प्रतीत होता है।"

सदानारायण ने इस प्रकार की व्यर्थ की बात छोड़कर कहा, "देखिये मैनेजर साहब! स्पष्ट बातें बताइये, मैं यहाँ रहूँ अथवा नहीं। मैं मरने से डरता नहीं, मुझे यहाँ के वायुमण्डल में तनाव से कोई सरोकार नहीं।

"यदि आप मेरा यहाँ रहना पसन्द नहीं करते तो मैं तुरन्त यहाँ से चला जाऊँगा?"

"मैं कुछ नहीं कहता। न ही मैं यह चाहता हूँ कि आप मेरी इस गुफ्तगू को किसी को बतायें। आप अपने विषय में विचार कर लें। सिर्फ एक राय मैं देना चाहता हूँ कि रात के वक्त कमरे से बाहर मत निकलिये। कश्मीरियों का आप भरोसा नहीं कर सकते।"

"आपका धन्यवाद।" सदानारायण ने कह दिया। इसका अर्थ था अब आप जा सकते हैं।

सदानारायण इस सब का मतलब समझने का प्रयत्न कर रहा था। उसने होटल के बाहर जाकर देखा कि उसका पीछा किया जा रहा है। यह सब क्यों था, वह समझने का यत्न कर रहा था।

होटल में डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी का वकील ठहरा हुआ था। डाक्टर साहब को छोड़ दिये जाने की पिटीशन श्रीनगर हाई कोर्ट में दर्ज थी। और उसकी अन्तिम पेशी अगले दिन थी। सदानारायण उस वकील से मिला।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोनों एक–दूसरे से परिचित थे। और उसने बताया कि डाक्टर साहब बीमार हैं और उनको जेल से निकाल कर हस्पताल ले गये हैं।

सदानारायण ने बताया, "मुझको इस होटल में आये आज एक सप्ताह से अधिक हो गया है। परन्तु आज होटल खुफिया पुलिस वालों से भरा हुआ प्रतीत होता है।"

वकील साहब ने कहा, "सम्भवतः ये पुलिस वाले मेरी देखरेख कर रहे हों।"

"किसलिये?"

"यह मुमकिन है कि डाक्टर साहब के छूटते ही मुझको हिरासत में ले लें।

"क्यों? आपने क्या किया है?"

"यहाँ लोग कुछ करने पर ही पकड़े जाते हों ऐसी बात नहीं हैं। यहाँ शेखशाही चलती है।"

दोनों हँसने लगे। इसके उपरान्त अन्य कोई घटना नहीं घटी। सदानारायण को वकील साहब का अनुमान कि उनके पकड़े जाने की सम्भावना है, ठीक प्रतीत नहीं हुआ। वह इस विषय में भावी घटनाओं की प्रतीक्षा कर रहा था।

सायंकाल उसने वकील साहब के साथ खाना खाया। वकील साहब ने बताया कि वे सायंकाल डाक्टर साहब से मिलने के लिये गए थे और उनकी अवस्था प्रातःकाल से ठीक है।

रात दोनों ने इकट्ठे भोजन किया। तदनन्तर दोनों अपने–अपने कमरे में चले गए। जब सदानारायण अपने कमरे में प्रवेश करने लगा तो एक युवक, जो रूप रेखा से कश्मीरी ब्राह्मण दिखाई देता था, कहने लगा "पण्डित जी!"

सदानारायण घूमा। उस युवक ने कहा, "मैं आपसे मिलने के लिए यहाँ प्रतीक्षा कर रहा था।"

"कहिये, कौन हैं आप?"

"भीतर चलिए, बताता हूँ।"

सदानारायण अनिश्चित अवस्था में खड़ा रह गया। उसको मैनेजर का कथन स्मरण हो आया कि कश्मीरियों का भरोसा नहीं करना चाहिए। परन्तु सदानारायण ने एक क्षण में ही निश्चय किया सावधान रहने का अर्थ भयभीत होना नहीं।

उसने द्वार खोला और युवक को कहा, "आइये।"

युवक उसके पीछे–पीछे भीतर आ गया। सदानारायण ने बत्ती जलाई और सामने खड़े युवक को बैठने के लिए कह स्वयं वह भी उसके सामने ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बैठ गया। जिससे कि वह उसकी गतिविधियों को देखता रह सके।

उस युवक ने बताया, "मेरा नाम विश्वनाथ रैना है। मैं गृहमन्त्री का विशेष कार्यकर्ता हूँ। मुझे उन्होंने सायं पाँच बजे आज्ञा दी थी कि मैं आप से मिलकर उनका सन्देश दे दूँ। मैं छः बजे से आपके कमरे के बाहर खड़ा प्रतीक्षा कर रहा हूँ।"

"कहिए, क्या सन्देश दिया है?"

"उनका कहना है कि आप शेख साहब की दृष्टि में चढ़ गये हैं। इस कारण आपकी देखरेख हो रही है। इस पर भी वे बिना अनुमति के आप को पकड़ नहीं सकते। हाँ वह किसी को कत्ल करा सकता है। इसलिए आप होटल से बहुत कम बाहर निकलें। और सावधानी से ही निकलें। कश्मीरियों में यह साहस नहीं कि सामने से आक्रमण करें। डर है कि छिप कर पीछे से बगल में छुरा न घौंप दे।"

इतना कह कर रैना उठ खड़ा हुआ और सदानारायण के कुछ उत्तर न देने पर नमस्कार कर कमरे से निकल गया।

सदानारायण इस दूसरी चेतावनी पर सतर्क हो गया। उसने कमरे का द्वार भीतर से बन्द किया फिर कमरे को भली भाँति देख सोने की तैयारी करने लगा।

वह अभी सोने के लिए कपड़े बदल ही रहा था कि फिर द्वार खटकने का शब्द हुआ। सदानारायण ने कमरे में रोशनी की और द्वार खोल कर एक ओर खड़ा हो बोला, "आ जाइये।"

यह व्यक्ति होटल का मैनेजर था। उसने कमरे में आकर भीतर से द्वार बन्द कर दिया। फिर सदानारायण से कहने लगा, "मैं सोने के लिये जाने से पहले आपको सावधान करने के लिए आया हूँ।"

सदानारायण ने उसका धन्यवाद कर पूछा, "आपके मन में क्या बात है? आप सब कुछ बताते नहीं मालूम होते।"

"मेरे मन में केवल एक ही बात है कि मेरे होटल में कोई ऐसी बात नहीं होनी चाहिए। जिससे होटल की किसी किस्म की बदनामी हो। मैं देख रहा हूँ कि रियासत के कुछ कर्मचारियों के मुख पर घबराहट और चिन्ता है। कुछ लोग यहाँ खाना खाने आये थे। वे पहले भी आया करते थे परन्तु आज वे सब कुछ गम्भीर बने हुए थे।

"मुझको उनके गम्भीर होने की चिन्ता नहीं। वे तो केवल भोजन करने आये थे और चले गये। परन्तु आप तो यहाँ हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं एक बात बताऊँ? आप उसे अपने मन में रख सकेंगे?"

"जरूर बताइये। मेरे मन से बोझ हलका हो जावेगा।"

"कश्मीर राज्य में इन्कलाब होने वाला है। शायद प्रधानमन्त्री बदल रहा है।"

वह मुस्कुराया और बोला, "यह मुमकिन नहीं। यहाँ का बच्चा–बच्चा जानता है कि शेख के सिवाय कोई दूसरा यहाँ का प्रधानमन्त्री हो ही नहीं सकता। पण्डित नेहरू शेख की मुखालफत सहन नहीं कर सकते।"

सदानारायण को शरारत सूझी। उसने पूछ लिया, "क्यों?"

"दोनों में पारिवारिक सम्बन्ध हैं।"

"पारिवारिक? क्या दोनों के परिवारों में कोई शादी हो चुकी है अथवा होने वाली है?"

"तो क्या आप समझते हैं कि शादी से ही पारिवारिक सम्बन्ध बनते हैं। हमख्याली क्या विवाह से अधिक सुदृढ़ सम्बन्ध नहीं?"

सदानारायण इसका अर्थ समझता था। उसे चुप देख मैनेजर ने बताया, "मैं आपसे अब सुबह मिलूँगा। गुडनाइट।"

वह गया तो सदानारायण इस गोरखधन्धे को सुलझाने के लिए बिस्तर पर लेट कर विचार करने लगा। अब उसने लैंप नहीं बुझाया और रोशनी में ही सोने का यत्न करने लगा।

: 4 :

सदानारायण अभी उठा ही था कि दरवाजा खटखटाया जाने लगा। इस समय दिन के पाँच बजे थे। सदानारायण ने समझा यह समय है जब राजनीतिक अपराधी पकड़े जाया करते हैं। रात उनके मकान को घेरा रहता है और दिन निकलने से पहले वे पुलिसवैन में बैठा कर जेल को ले जाये जाते हैं। यह प्रथा अंग्रेजी काल से चली आती है।

सदानारायण कुछ इसी प्रकार की बात ही समझता था। उसने अपना शाल लपेटा और भीतर से ही पूछा, "कौन है?"

"मैनेजर।"

सदानारायण ने दरवाजा खोला तो मैनेजर ने लम्बा मुख लिए बताया, "साहब! वह पुलिस का पहरा आपके लिए नहीं था। अब वे लोग यहाँ पर नहीं हैं। मैं देखने के लिए आया था कि आप तो सुरक्षित हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हाँ, शुक्रिया।"

"डॉ. मुखर्जी के वकील अपने कमरे में नहीं हैं। उनका टेलीफोन आया था और वे फोन सुनकर बाहर निकल गये थे और उनके जाने के बाद ही होटल पर से पुलिस चौकी उठ गई है।"

इससे सदानारायण को कुछ चिन्ता हुई। यह वकील साहब के लिये थी। परन्तु यह विचार कर कि आज वकील को पकड़ना तो कोर्ट का अपमान हो जावेगा। यह कोई सरकार कैसे कर सकती है।

मगर एक घटना उसने समाचार पत्र में पढ़ी थी। डाक्टर साहब के वकील ने हाई कोर्ट में बयान दिया था कि उसको अपने मुवक्किल से पृथक में बात करने नहीं दिया गया। जिला के हाकिम ने कहा है कश्मीर सरकार का हुक्म था कि दोनों की भेंट के वक्त वह सामने देखता रहे।

इस पर तो चीफ जस्टिस ने सरकारी वकील से इसका कारण पूछा था और जब वह कोई सन्तोषजनक उत्तर नहीं दे सका तो यह आशा दी थी कि वकील को अपने मुवक्किल से प्राइवेट में मिलने की इजाजत है और जेल के अधिकारी को इनके समीप बैठने की इजाजत नहीं।

जब यहाँ की सरकार यह कर सकती है तो किसी मुकदमे में उपस्थित होने वाले वकील को पकड़ भी सकती है। इस पर भी वह प्रतीक्षा में था कि देखें हाई कोर्ट में क्या गुल खिलता है।

परन्तु घटने वाली घटना दूसरी ही निकली। पिछली रात डॉ. मुखर्जी का हस्पताल में देहान्त हो गया। लगभग आठ बजे यह समाचार पूर्ण नगर में फैल गया और एक भारी संख्या में लोग हस्पताल के सामने एकत्रित हो गये। सदानारायण भी वहीं भीड़ में जा खड़ा हुआ। वह चुपचाप भीड़ में हो रही चर्चा को सुन रहा था। उसको यह जान कर विस्मय हुआ कि लोग कानोंकान कह रहे थे कि जरूर डाक्टर जी की हत्या की गई है।

एक स्थान पर कुछ लोग खड़े धीरे–धीरे बातें कर रहे थे। सदानारायण उनकी तरफ पीठ कर ध्यान से उनकी बात सुन रहा था। एक ने कहा था, "विष्णु जी! यह तो पुराने जमाने के राजे–महाराजों की बात हो गई है। जिसके खिलाफ कुछ शिकायत हुई, जहर देकर उसका काम तमाम कर दिया।"

"ठीक है रामजी। परन्तु हस्पताल के लोग तो कह रहे हैं कि दिल की धड़कन बन्द हो जाने से यह हादसा हुआ है।"

"मतलब यह कि चोर अपनी सफाई दे रहा है! भाई! कश्मीरियों का कोई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
विश्वास कर भी सकता है?''

सदानारायण, गृहमन्त्री, होटल का मैनेजर और आम जनता, सबके मुख पर एक सरस्वती चढ़ी देख चकित रह गया। वह वहाँ से टल गया और एक दूसरी टोली के समीप जा खड़ा हुआ। वहाँ भी चर्चा थी। एक ने कहा था, ''यह शेख की बदमाशी है।''

''देख लो किस तरह यह हिन्दुस्तान के बड़े से बड़े आदमी पर भी हाथ सफा करने में डरता नहीं।''

''भाई! जब नेहरू हिमायत पर खड़ा है तो कौन पूछ सकता है। कहावत है– सैंया भए कोतवाल, अब डर काहे का।''

सदानारायण लोगों में हो रही चर्चा सुन रहा था कि हस्पताल से बहुत से पुलिस के लोग बाहर निकले और लोगों को कहने लगे, ''अब आप लोग जाइये लाश एयरोड्रम चली गई है।''

''चली गई है?''

''हाँ।''

''कैसे?''

''हस्पताल के पिछले द्वार से।''

एक ने खड़े–खड़े ही कह दिया, ''चोर साले।''

सदानारायण होटल लौट आया। मध्याह्न के समय वह गृहमन्त्रालय में गया। गृहमन्त्रालय सूना पड़ा। था। वह मन्त्री महोदय के घर की ओर चल पड़ा। वहाँ भी उसे आधा घन्टा प्रतीक्षा करनी पड़ी। तब ही मन्त्री महोदय से भेंट हो सकी।

गृहमंत्री ने अफसोस जाहिर करते हुए कहा, ''देखिये पण्डित जी! इस घटना ने मेरी योजना में भारी रुकावट डाल दी है।''

''मगर नगर में यह अफवाह गरम है कि डाक्टर जी की हत्या की गई है।''

''मैंने भी यह बात सुनी है। मगर मुझको यकीन नहीं आया। एक बात विचित्र हुई है कि हस्पताल के लोग बहुत घबराये हुए हैं। डाक्टर, जो उनका इलाज कर रहा था, उसका मुख पीला पड़ रहा है।''

''मगर यह तो एक महापुरुष की मृत्यु हो जाने पर भी हो सकता है। इसमें कोई कारण नहीं भी हो सकता। इसका अर्थ कुछ भी हो सकता है। मैंने यह बात इसलिये कही है कि इस पूर्ण घटना की जाँच होनी चाहिए।''

''मैं इसके हक में नहीं हूँ। देखिये पण्डित जी! जाँच का कुछ नतीजा नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
निकल सकता। अगर यह सच्च मान लें कि कोई साजिश हुई है तो साजिश में कश्मीर के प्रधानमंत्री, जरूर शामिल होंगे। अतः वे साजिश के सब के सब निशानात मिटा दिये जा चुके होंगे।

"इसलिये प्रधानमंत्री को हटा कर और उसकी जगह किसी जबरदस्त शख्सीयत की तकरीर के बिना जाँच ठीक हो नहीं सकती।"

"आप जो हैं?"

"मैं तहकीकात के हक में नहीं हूँ। मैं तो जल्द–अज–जल्द सत्याग्रह बन्द कर कश्मीर राज्य में नार्मल हालात लाने में दिलचस्पी रखता हूँ और इससे ही मेरी योजना चल सकेगी और शेख का कांटा निकल सकेगा।

"अगर यह दुर्घटना न हुई होती तो डाक्टर साहब आज जेल से छूटते। मैं उनसे और डोगरा जी से मिल कर सत्याग्रह बन्द करने की योजना बनाता। उसके बन्द होते ही अगले कदम को उठाया जा सकता था।"

"मैं परमिट सिस्टम को रद्द कराने में कामयाब हो जाता। शेख साहब के खिलाफ नो–कान्फिडैंस–मौशन पास हो जाता। और नई वजारत बन जाती। मैं समझता हूँ कि भारत से इलहाक मुकम्मल हो जाता।"

"अब क्या होगा?"

"दो–तीन दिन में मैं दिल्ली जा रहा हूँ। और अब बातचीत वहीं होगी। प्रजा परिषद और जनसंघ के नेता लोग ही मिलकर यह फैसला कर सकेंगे कि सत्याग्रह बन्द होना है या नहीं।"

"मैं भी तो अब लौट जाना चाहता हूँ।"

"तो प्रेस कान्फ्रेंस करियेगा।"

"अब तो रावी के पुल पर अपने को बिना परमिट के कश्मीर से लौटने की बात करनी होगी।"

"कुछ नहीं होगा। वे लोग आपको कश्मीरी नागरिक मान हिन्दुस्तान में जाने देंगे।"

"तो कश्मीरियों के लिये परमिट की आवश्यकता नहीं होती?"

गृहमंत्री हँस पड़ा। वह बोला, "परमिट हिन्दुस्तान से कश्मीर में दाखिल होने की है न कि कश्मीर से हिन्दुस्तान जाने की। हकीकत यह है कि यह एक बेमायने की बात है। परन्तु शेख और नेहरू दोनों इसको जारी रखने के हक में हैं। इसमें उनका क्या मकसद है समझ नहीं आता। शायद वे कश्मीर को भारत के धनी–मानी लोगों से महफूज रखना चाहते हैं। जो कुछ एक मेरे जैसे नाकस अक्ल को समझ आता है वह तो यही है कि दोनों मुदब्बर जान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कर या अनजाने में अभी भी कश्मीर को एक अलेहदा मुस्क तसव्वर करते हैं।''

''और आप क्या समझते हैं।''

''मैं तो इसके भारत में घुल–मिल जाने को पसन्द करता हूँ।''

''तो अगर आप यहाँ के वजीर–ए–आजम बन गये तो कितने अर्से में कश्मीर को हिमाचल प्रदेश से मिलाना मंसूर करेंगे?''

''जितने अर्से में हिन्दुस्तान के लोग पण्डित नेहरू को इस बात के लिये राजी कर सकेंगे।''

''तो आपको अभी भी उस ओर से विघ्न–बाधाओं का डर है?''

''मैं तो समझता हूँ कि अगर नेहरू साहब मान जावें तो चौबीस घंटे में यह बात तय हो जावेगी।''

''पाकिस्तान का क्या होगा?''

''उससे जंग होगी। यह तो एक दिन होना ही है। जितनी देरी से होगा हमारे लिये मुजिर होगा।''

''और यहाँ के मुसलमान आपकी बात मान जावेंगे।''

''यह डरपोक कौम भला क्या कर सकती है? इनको तो बुहारी से बुहारा जा सकता है। लाठियों या बन्दूकों की जरूरत नहीं पड़ेगी।''

''आप भी तो उनमें से ही हैं।''

''मैं कश्मीर वादी का रहने वाला नहीं हूँ। वैसे तो मेरे बुजुर्ग पंजाब से आये हुए हैं। कुछ भी हो मैं जम्मू के इलाके का रहने वाला हूँ।''

''ओह! तो आपका मतलब कश्मीरी मुसलमानों से है?''

''मुसलमान–हिन्दू का सवाल नहीं है। यह एक निहायत ही बुजदिल कौम वाक्या हुई है।''

''पण्डित नेहरू भी कश्मीरी हैं।''

''कुछ पीढ़ियों से हिन्दुस्तान में रहते–रहते उनके खून में गरमी आ गई मालूम होती है। बहरहाल कहीं उनके खून में किसी मरहठे या राजपूत का खून की पैबन्द लग गई होती तो भारत का नक्शा मुखतलिफ हो गया होता।''

सदानारायण ने उठते हुए कह दिया, ''मुआफ करें। आपका बहुत वक्त लिया है। मैं वापिस जा रहा हूँ। मेरे पास परमिट नहीं और मैं यह बात वहाँ बताने वाला हूँ।''

''अच्छी बात है। खुदा हाफिज।''

सदानारायण उसी दिन श्रीनगर से चल पड़ा और चौकी पर उससे परमिट माँगा गया। उसने जब बताया कि उसके पास नहीं है। इस पर चौकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
पर हलचल मच गई। फौरन पुलिस ने उस बस पर घेरा डाल दिया जिसमें सदानारायण यात्रा कर रहा था। एक पुलिस अधिकारी ने कहा, "साहब! नीचे उतर आइये।"

"क्यों? मेरे वारण्ट हैं?"

"अपना परमिट दिखाइये।"

"मेरे पास नहीं है और न ही परमिट न रखने वाले के खिलाफ कोई कानून है।"

वह पुलिस अधिकारी अभी बात समझ ही रहा था कि एक सफेदपोश आया और उस पुलिस अधिकारी के कान में कुछ कह कर उसको वापस ले गया।

उसे इस प्रकार जाते और बस पर से पुलिस का घेरा उठाते देख बस के यात्रियों को बहुत विस्मय हुआ। एक ने सदानारायण के पास बैठते हुए पूछ लिया, "यह क्या बात थी साहब?"

"बात यह है कि कश्मीर में कोई कानून नहीं है कि परमिट लिया जाये। ये लोग भारत सरकार के हुक्म की तामील में मुझको पकड़ना चाहते थे मगर इनके बड़े अफसर ने बताया है कि मुझको भारत सरकार ही पकड़ सकती है। और अब पुल के पार जाकर पूछताछ होगी।"

पुल के पार भी पूछगछ हुई। पुलिस अधिकारी ने पूछा, "आप बिना परवाना राहगीरी के गये थे?"

"यह तो अमर वाकया है कि मैं गया हूँ। कारण यह कि मैं बम्बई का रहने वाला कश्मीर से आ रहा हूँ। अब यह तुम बताओ कि मैं गया कैसे?"

"हम तो आपको पकड़ रहे हैं।"

"यही तो मैं चाहता हूँ।"

"हम आपको छोड़ सकते हैं, यदि आप यह लिखकर दे दें कि आप किस रास्ते गये हैं।"

"मगर मैं छूटना नहीं चाहता।"

"तो नीचे उतर आइये।"

सदानारायण ने अपना सामान बस से उतरवाया और पुलिस चौकी जा पहुँचा। उसे वहाँ बैठा दिया गया। उसके बयान कलमबन्द किये गये और फिर उन बयानों पर किसी अन्य अधिकारी से टेलीफोन पर बातचीत होने लगी।

एक घण्टा भर प्रतीक्षा करने के उपरान्त सदानारायण को एक पुलिस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
जीप में बैठाया गया। उसका सामान भी उसी में रख दिया गया। जीप में उसे पठानकोट स्टेशन पर ले जाकर कह दिया गया, "आपके जुर्म की यही सजा ठीक समझी गई है कि आपको बम्बई की गाड़ी में चढ़ा दिया जाय।"

सदानारायण हँस पड़ा। उसने सिर्फ इतना ही कहा, "भाई! आप लोगों ने इस गैर–कानूनी कानून से बहुत लोगों को कष्ट दिया है और उसका पाप जहाँ भारत सरकार के सिर पर है वहाँ आप लोगों पर भी कम नहीं है।"

"ठीक है। मगर हम तो नौकर हैं। हुक्म सरकार का चलता है। सरकार लोगों से बनी है। अगर इस धींगामस्ती का कोई जिम्मेवार है तो भारत सरकार है या भारत की खलकत है जिसने पिछले ही साल इस सरकार को बनाया है।"

सदानारायण इस पुलिस अफसर की बात समझता था और वह समझ रहा था कि कदाचित यह व्यक्ति भी वास्तविक दोषी को नहीं जान सका। वास्तविक दोषी हैं हिन्दुस्तान के विद्वान लोग जिन्होंने मिथ्या जीवन मीमांसा का समाज में प्रचार कर सब की बुद्धियाँ कुंठित कर रखी हैं। सात सौ वर्ष तक मुसलमानों ने राज्य किया, डेढ़ सौ वर्ष से अधिक अंग्रेजों ने और अभी भी इस जाति की कुंठित बुद्धि सान पर नहीं चढ़ी और यह जाति विचार ही नहीं कर सकती कि कौन किस बात का अधिकारी है। जिसके नाम के साथ महात्मा शब्द लग गया वह पूजनीय हो गया। जो कुछ किसी भी महात्मा नामधारी ने कह दिया वह भगवान का वाक्य हो गया। कोई मूल धर्म, कोई मूल सभ्य अथवा मान्यता है ही नहीं।

पुलिस अधिकारी तो सदानारायण को प्लेटफार्म पर खड़ा कर चल दिये और वह विचार कर रहा था कि डाक्टर साहब की हत्या किसने की है? क्या यह परमिट सिस्टम चलाने वाले व्यक्ति ने नहीं की? अथवा उस व्यक्ति को प्रधानमंत्री बनाने वाले कोटि–कोटि भारतीयों ने नहीं की?

: 5 :

सदानारायण कश्मीर से लौट दिल्ली पहुँच गया। वह इस बार स्विस होटल में ठहरा था। उसने प्रोफेसर विश्वनाथन के घर पर टेलीफोन किया और वहाँ मिलने चल पड़ा। सायंकाल की चाय वहाँ पीने का विचार था।

इस समय प्रोफेसर घर पर ही था और पूर्ण परिवार सदानारायण की प्रतीक्षा कर रहा था। बच्चे भी आज वहाँ बैठे थे। डॉ. मुखर्जी की मृत्यु ने पूर्ण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
देश और विशेष रूप से दिल्ली में भारी हलचल उत्पन्न कर रखी थी।

रमणी का सबसे बड़ा लड़का अश्विनी कुमार इस समय ग्यारह वर्ष का था और वह अपने स्कूल से डॉ. साहब के विषय में बहुत बातें सुन कर आया था। उसके देखादेखी दूसरे बच्चे भी वहाँ बैठे गुरु जी की प्रतीक्षा कर रहे थे। सब कश्मीर की घटना का आँखोंदेखा वृत्तान्त जानने के लिए उत्सुक थे।

मरियम माँ से मिलने आयी तो रमणी से भी मिलने चली आयी। वहाँ पूर्ण परिवार को बैठे देख पूछने लगी, "किसी की प्रतीक्षा हो रही है क्या?"

"हाँ, गुरु जी कश्मीर से लौटे हैं। और हम वहाँ की घटनाओं का वृत्तान्त जानने के लिये उनकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। वे चाय पर आने वाले हैं।"

"तो मैं भी ठहरूँ?"

"क्यों नहीं? विवाह के बाद तुमसे वे पहिली बार मिलेंगे। इस बात से उनको बहुत प्रसन्नता होगी।"

मरियम से बात हो ही रही थी कि सदानारायण आ गये। सब उनके अभिवादन में लग गये।

सदानारायण ने मरियम को पहिचान कर पूछा, "मरियम जी है? सुनाओ कैसी हो?"

"जी, ठीक हूँ।"

सदानारायण ने गम्भीर हो कहा, "ठीक तो प्रतीत नहीं होता। तुम्हारा स्वास्थ भी तो ठीक नहीं लगता।"

मरियम ने इसका कोई उत्तर नहीं दिया। रमणी ने इतना बता दिया, "इसका विवाह हो गया है और इसको अभी दो महीने हुए बच्चा हुआ है।"

"ओह! यह तो बहुत प्रसन्नता की बात है।"

नौकर ने चाय का सामान लगा दिया था और सब चाय की मेज पर बैठ गये।

रमणी ने सदानारायण से कश्मीर यात्रा की बात पूछी तो सदानारायण ने अपनी यात्रा के उद्देश्य, यात्रा के मार्ग और फिर श्रीनगर में हुई घटना का सविस्तार वर्णन कर दिया। अन्त में उसने बताया, "मैं दिल्ली कल पहुँचा था। मैं यह देख कर विस्मय कर रहा था कि नेहरू तो इस घटना की जाँच करने में आपत्ति कर रहा है और शेख जाँच का स्वागत कर रहा है।"

इस पर प्रोफेसर साहब ने पूछा, "और पण्डित जी! आप इस मृत्यु के विषय में किस परिणाम पर पहुँचे हैं?"

"मैं अभी कश्मीर में ही था तो मेरा यह अनुमान था कि हत्या कराई गई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। और इस हत्या में शेख का हाथ है। इस अनुमान को सिद्ध करने में मैं कोई प्रमाण नहीं दे सकता। मैंने यहाँ के गृहमंत्री से जाँच के विषय में कहा था और उसने इसका विरोध किया था। यह इस कारण नहीं कि उसको भी इसमें सन्देह नहीं था, वरंच इसलिए कि वह जाँच कराने से लाभ नहीं समझता था। उसका अनुमान है कि शेख कश्मीर के राजनीतिक मंच से हटाया जा रहा है। और जाँच इस प्रक्रिया में बाधा बन सकती है। गृहमंत्री के दृष्टिकोण से उसकी आपत्ति ठीक ही प्रतीत होती थी। वह आशा लगा रहा है कि शेख के बाद कश्मीर का वजीरे–आजम बनने का उसका ही नम्बर है।

"यहाँ आकर नेहरू के जाँच के विरोध का कारण मैं समझ नहीं सका। सुना है नेहरू भी शेख को गद्दी से उतारने का विचार कर रहा है। मेरा अनुमान है कि यह जाँच ऐसा करने में एक बहुत अच्छा बहाना था। उसको पदच्युत कर जाँच कराई जाती और उस जाँच में कश्मीर में हो रही दूसरी खराबियों को भी सम्मिलित किया जा सकता था।

"इस सम्बन्ध में मैं भारत सरकार के कुछ सही दिमाग लोगों से मिला हूँ। और उनकी बातों से जो चित्र मेरे दिमाग में बना है कि डाक्टर साहब की हत्या अथवा मृत्यु जो कुछ भी कहो, नेहरू जी के कारण ही हुई है। यह परमिट सिस्टम अवैधानिक है। नेहरू से स्वर्गीय डाक्टर साहब ने पूछा था कि किस कानून से वे यह प्रतिबन्ध लगा रहे हैं और कम्युनिस्टों के लिए यह प्रतिबन्ध क्यों नहीं। नेहरू ने उत्तर नहीं दिया। इसके उपरांत डॉ. मुखर्जी ने अम्बाला से श्रीनगर तक के लिए चलने से पूर्व नेहरू को तार दिया था कि वे वहाँ की सही अवस्था जानने के लिये जा रहे हैं। वहाँ किसी प्रकार का आन्दोलन करने का विचार नहीं है। इस पर नेहरू ने डाक्टर साहब को पठानकोट में पकड़ लेने की आज्ञा दे दी। परन्तु बाद में यह आज्ञा वापस ले ली। कदाचित उसको विदित था कि यदि डाक्टर साहब इस परमिट न रखने के विषय में पकड़े गये तो इसके वैधानिक होने को सर्वोच्च न्यायालय में चुनौती देंगे और यह परमिट सिस्टम ही अवैधानिक घोषित हो जायेगा।

"नेहरू ने शेख को लिखा था कि डाक्टर साहब को रियासत में पकड़ लेना चाहिए। फिर डाक्टर साहब के वकील को उनकी श्रीनगर कोर्ट में अपील करने के लिये वहाँ जाने में भारत सरकार द्वारा बाधा खड़ी की गई। डाक्टर साहब के लड़के को अपने पिता से मिलने के लिए परमिट नहीं दिया गया। ये सब बातें प्रकट करती हैं कि नेहरू के मन में चोर था। उसने डाक्टर साहब को पकड़ने का षड्यंत्र किया था।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"श्रीनगर में जब हाई कोर्ट में पिटीशन कर दी गई और हाई कोर्ट ने डाक्टर साहब से मिल कर मुकदमे को तैयारी के लिए स्वीकृति दे दी तो शेख ने वकील पर निगरानी रखने के लिए मजिस्ट्रेट को साथ भेज दिया। और उसने उनको पृथक् में बात नहीं करने दी। इस पर हाई कोर्ट ने सरकारी वकील को डांट बताई और डाक्टर साहब के वकील को डाक्टर साहब से पृथक् में बातें करने की स्वीकृति मिल गई।

"अन्तिम दिन हाई कोर्ट में डाक्टर के वकील ने बहस की और मुख्य न्यायाधीश ने सरकारी वकील से पूछा कि इस सबके उपरान्त भी क्या वह कुछ कहना चाहेगा? इस का अर्थ था कि न्यायाधीश डाक्टर साहब को जब ही छोड़ना चाहता था परन्तु सरकारी वकील ने बहस का उत्तर देने का हठ किया और अगले दिन उसको कहने का अवसर दे दिया गया।

"परन्तु उसी रात डाक्टर साहब की मृत्यु हो गई। एक बात और हुई कि जिस रात मृत्यु हुई उससे पहली सायंकाल वकील साहब के होटल को पुलिस ने घेर लिया और उसे तब तक घेर रखा जब तक डाक्टर साहब की मृत्यु नहीं हो गई।

"यह ठीक है कि ये सब प्रमाण नहीं कि डाक्टर साहब की हत्या की गई है। इस पर भी ये इस बात को प्रकट करते हैं कि दाल में कुछ काला जरूर है।

"इसमें सन्देह नहीं कि डाक्टर साहब की मृत्यु के लिए हालात और वाकयात भारत और कश्मीर के प्रधानमन्त्रियों ने मिल कर बनाये हैं। उन्होंने एक पूर्ण घटना चक्र में अनेक अवैधानिक कार्य किये हैं।

"नेहरू साहब कदाचित डरते हैं कि जाँच में उनके अवैधानिक व्यवहार की आलोचना न हो जाय और इतिहास सदा के लिए उनकी ओर उँगली करता रहे।

"शेख अब्दुल्ला का विचार यह प्रतीत होता है कि भारत सरकार जाँच नहीं कराएगी। इस कारण वह जाँच से इन्कार कर भला क्यों बदनाम हो। यदि जाँच हुई तो वह पूर्ण दोष नेहरू जी के सर कर देगा।"

"तो जाँच नहीं होगी?"

"यह जाँच तो एक प्रकार से भारत के प्रधानमन्त्री की 'इम्पीचमेंट' होगी। और यह नहीं होनी चाहिए न?"

"यह मैंने नहीं कहा। मैं तो पूर्ण देश की दयनीय अवस्था देखता हूँ। इस अवस्था में कारण है अनाधिकारियों के हाथ में राज्य चला जाना।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अब तो आप इस राज्य को अनाधिकारियों का राज्य नहीं कह सकते। पिछले निर्वाचन में देश भर में कांग्रेस निर्विवाद बहुमत में निर्वाचित हुई है।"

"यह ठीक है। हिन्दुस्तान में हिन्दू अन्धविश्वास रखने वाली जाति है। यह अन्धविश्वास गांधी जी ने निर्माण किया था, कि नेहरू जी ने देश को स्वराज्य दिलवाने में बहुत बड़ा त्याग किया है और वे इतने योग्य व्यक्ति हैं कि तीन बार कांग्रेस के प्रधान बनाए जाने के योग्य माने गए थे। गांधी जी यह जानते हुए भी कि नेहरू न तो परमात्मा को मानते हैं, न ही राष्ट्रवादी हैं, न वे सफल वकील रहे हैं, न ही उनको इतिहास का ज्ञान है, न वे गांधी जी की रुचि का स्वराज्य चाहते हैं, न ही वे अपने विरोधियों से मिलकर राज्य कार्य चला सकते, सबसे बड़ी बात यह भी कि वे राष्ट्र की भाषा तक तो जानते नहीं, मानते नहीं और आचार–विचार में राष्ट्र–विरोधी हैं– इन सब बातों के होते हुए भी गांधी जी नेहरू जी को आगे करते रहे। और अन्धविश्वासी हिन्दू बिना विचार किए नेहरू के विषय में विचार करने के लिए भी तैयार नहीं।

"प्रोफेसर साहब! एक बात मैं अभी–अभी जान कर आया हूँ कि पिछली बार जब नेहरू श्रीनगर में था तो शेख ने उसका अपमान कर दिया था और वह अब उस अपमान का मजा शेख को चखाना चाहता है। सब कुछ तैयार है, इस पर भी नेहरू शेख को गद्दार सिद्ध करने के लिए तैयार नहीं।"

"इसका क्या मतलब है?" प्रोफेसर ने विस्मय में पूछ लिया।

"मतलब यह कि अपने अपमान का बदला तो लेना चाहते हैं परन्तु देश और राष्ट्र से द्रोह को वे कोई गुनाह नहीं मानते। उनको भय है कि वे स्वयं भी उसी श्रेणी में माने जायेंगे।"

चाय समाप्त हो चुकी थी। परन्तु सब उपस्थित वयस्क इस विश्लेषण को दत्तचित्त हो सुन रहे थे। मरियम भी अपने विचार इस स्पष्टोक्ति के सामने भूल गई थी। मरियम बड़े–बड़े अफसरों से घनिष्ट मेल–जोल रखने के कारण पण्डित जी के विचारों और व्यवहार को बहुत कुछ जानती थी। और एक बाहरी आदमी को भी ठीक परिणामों पर पहुँचते देख चकित हो गई थी।

सदानारायण ने रमणी से पूछ लिया, "स्वामी जी से मिलने कब जा रही हो?"

"उन्होंने कुछ कहा है?"

"मुझे तो वहाँ गये एक वर्ष के लगभग होने जा रहा है। हाँ पता चला है कि आप के पिता आश्रम में गए थे और मेरे कश्मीर के लिए प्रस्थान करने तक वहीं थे। मैंने वहाँ पत्र लिखा है परन्तु वहाँ से अभी कोई उत्तर नहीं आया।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो आप वहाँ कब जा रहे हैं?"

"सुचेता को पत्र लिखा हुआ है। विजय से भी अभी नहीं मिल सका। इस कारण अभी कुछ भी निश्चय नहीं कर सका।"

"मुमताज के विषय में समाचार जानने की इच्छा है।"

"अभी तो बम्बई भी चल सकती हो। आजकल वहाँ एक अन्य स्त्री रहती है। वह ईसाई मतानुयायी थी परन्तु अपने पुराने विचारों और व्यवहार को ऐसे छोड़ रही है जैसे साँप अपनी केंचुली उतार कर फेंक देता है।"

"क्या नाम है?"

"अन्ना।"

इतने में सदानारायण ने घड़ी में समय देखा और रमणी की ओर देखकर कहा, "मैं अब जाना चाहता हूँ।"

: 6 :

सदानारायण उठा तो रमणी ने पूछ लिया, "आप यहाँ कब तक ठहरने वाले हैं?"

"मैं कल अपने लड़के विजय को मिलने जा रहा हूँ।"

"कहाँ।"

"उसने दिल्ली के पास फरीदाबाद में एक कारखाना लगा लिया है। वह इलैक्ट्रिकल इंजीनियर है। उसने बिजली के डाइनेमो बनाने का कारखाना लगाया है।"

"वहाँ से कब तक लौटेंगे।"

"कल प्रातःकाल जा रहा हूँ, सायंकाल तक अथवा अगले दिन मध्याह्न तक वापस आ जाऊँगा।"

"तो हम आप से कहाँ मिलें?"

"मैं स्वयं मिलने का यत्न करूँगा।"

सदानारायण ने अपने लड़के विजय को समझाया था कि उसकी पत्नी की नाराजगी का मूल कारण उसका बेकार पड़ा रहना है। उसे कुछ अपना स्वतन्त्र–कार्य करना चाहिए।

विजय अपने पिता की सूझ–बूझ पर बहुत विश्वास रखता था। इस पर अपनी माँ के बुलाने पर मसूरी जाता हुआ मार्ग में ही नई दिशा में विचार करता हुआ गया। अगले दिन दस बजे तक वह मसूरी के हिमालय क्लब में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहुँच गया। माँ ने पुत्र को आशीर्वाद दिया और चाय–पानी पूछ कर वह पति पत्नी को पृथक् में अपनी बात करने का अवसर देने के लिए उसने स्वयं भ्रमण के लिए जाने का विचार प्रकट किया। नीला ने कहा, "माँ जी! आप जावेंगी तो बात कैसे होगी?"

"देखो बेटा! पति–पत्नी को अपनी समस्याएँ स्वयं सुलझाने का यत्न करना चाहिए। यह सर्वोत्तम ढंग है। दूसरे की सहायता तो तब ही लेनी पड़ती है जब दोनों पक्ष अपनी बुद्धि निःशेष कर चुके हों। वह स्थिति तुम दोनों में मैं नहीं देखती।

"इस पर भी यदि तुम स्वयं किसी परिणाम पर नहीं पहुँच सकोगे तो मैं एक घण्टे में आ रही हूँ। तब देखूँगी कि मैं क्या कर सकती हूँ।"

इतना कह सुचेता होटल से निकल गई। पति–पत्नी दोनों बैठे एक–दूसरे का मुख देखते रहे। आखिर बात विजय ने आरम्भ करते हुए कहा, "नीला डीयर! माँ ने पत्र में लिखा है कि तुमको मेरे विपरीत बहुत शिकायत है। यह हो सकती है। इसमें सत्य और झूठ की बात तो बाद में विचार कर लेंगे। परन्तु माँ ने अपने व्यवहार से एक बात स्पष्ट कर दी है कि तुम को अपनी शिकायत मुझसे कहनी चाहिए थी। वे हम दोनों को पढ़ा–लिखा और बुद्धिशील समझती हैं। इससे आशा करती हैं कि हम आपस में समझ–समझा लेंगे।"

"देखिए जी! मैं यह समझी हूँ कि कोई मनुष्य विचार करने पर तैयार नहीं होता जब तक उसको ऐसा करने के लिए विवश न कर दिया जाए। मैं आपको विचार करने पर विवश नहीं कर सकती थी। उसके लिए ही मैंने यह सब कुछ किया है।"

"मैं तुमसे प्रेम करता हूँ नीला! इस कारण मैं तुम्हारी बात सदैव मानने के लिए तैयार रहता हूँ। इसमें तुमको संदेह नहीं करना चाहिए था।"

"परन्तु मेरी कई बातें आपने नहीं मानीं। इससे मुझे आपके प्रेम पर सन्देह हो गया था।"

"भला क्या नहीं माना मैंने?"

"देखिए, आपको अहमदाबाद मिल में नौकरी मिल रही थी, मैंने आप को मना किया था। आपने यह तो मान लिया, परन्तु आपने कभी पूछा ही नहीं कि मैंने क्यों मना किया था। मैं तो कुछ ऐसा समझी थी कि उस नौकरी को आप स्वयं भी करना नहीं चाहते थे। आप नौकरी करने पर विवश हो रहे थे। मेरे किंचित मात्र संकेत पर आप राजी हो गए। परन्तु आपने यह जानने का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
यत्न नहीं किया कि मैं वहाँ की नौकरी से आपको क्यों मना करती थी।"

"हाँ बताओ क्यों मना करती थी?"

"देखिए न, अब आप यह बात पूछ रहे हैं। आपको यह पूछने के लिए मेरे रूठ कर यहाँ चले आने ने ही तो विवश किया है। अन्यथा आप तो वही कुछ कर रहे थे जो आपके मन में था।"

"मेरे मन में क्या था?"

"मिसेज वर्मा से मीठी–मीठी बातें करने की उत्कट लालसा। जो अहमदाबाद जाने से असम्भव हो जाती।"

"मैं समझता हूँ कि यह तो सर्वथा पृथक बात थी।"

"इसका प्रमाण तो है नहीं। आपने सरकारी नौकरी के लिए प्रार्थना–पत्र बहुत भेजे थे परन्तु उन प्रार्थना–पत्रों के विषय में मुझसे कभी पूछा नहीं था। मैं इससे ही इस परिणाम पर पहुँची थी कि अहमदाबाद की नौकरी के विषय में न पूछना और दिल्ली की नौकरी के लिए न पूछना यही प्रकट करता था कि मेरा मना करना तो केवल बहाना था। आप अपने मन की बात करने का निश्चय तो पहले ही कर चुके थे।"

"यह आरोप तो तुम्हारा ठीक है कि मैंने दिल्ली में नौकरी के लिए तुमसे कभी पूछा नहीं था। परन्तु मैं यह समझता हूँ कि मेरे इस विषय में न पूछने का कारण तो यह था कि दिल्ली के विषय में मुझे विश्वास था कि तुम पसन्द करोगी और फिर नौकरी मिलती तो पूछता भी। रोग होने से पूर्व ही चिकित्सा करना मैं ठीक नहीं समझता था। अहमदाबाद में प्रार्थना–पत्र भेजने से पूर्व तुमसे पूछा था।"

"जी, यह इस प्रकार नहीं है। अहमदाबाद के लिए आपने प्रार्थना–पत्र भेजा था बम्बई से। उस समय मिसेज वर्मा वहाँ नहीं थीं। और मैं समझती हूँ कि उस समय का न पूछना अकारण था। परन्तु इस समय तो आपके पूर्ण व्यवहार पर मिसेज वर्मा छाई हुई थीं।"

"तो असल बात यह है कि तुमको मिसेज वर्मा से ईर्ष्या हो रही है?"

"ईर्ष्या कहिए अथवा कुछ और। जो आपके मन में आए, कह सकते हैं। परन्तु यह बात निर्विवाद है कि वह औरत आपके विचार को कुण्ठित कर रही थी। और इससे आपके कल्याण की आशा नहीं थी। सौभाग्य अथवा दुर्भाग्य से मेरा जीवन आपसे सम्बद्धित हो गया है इस कारण आपको झकझोर कर उसके प्रभाव से बाहर करना आवश्यक है। इसी कारण मैंने आपको यहाँ पर आकर बात करने के लिए विवश किया है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विजय हँस पड़ा। उसने हँसते हुए कहा, "अच्छा बाबा! माना कि तुमने मुझे अपनी बात सुनने पर विवश किया है। अब तो विवश हो गया हूँ। बताओ, तुम क्या चाहती हो?"

"एक तो यह कि नौकरी का विचार छोड़िए। कहीं स्वतन्त्र कार्य करना चाहिए। कोई ऐसा कार्य हो जिससे आप इतने व्यस्त हो जावें कि मिसेज वर्मा अथवा किसी अन्य औरत के लिए यहाँ स्थान ही न रहे।"

"तुम्हारे लिए भी नहीं?"

"मैं तो स्वयं ही साथ रहूँगी। मैं स्वयं को कहीं बाहर से आ कर अधिकार जमाने वाली नहीं मानती। आप जब कार्य में अतिव्यस्त होंगे तो मैं आपकी सहायता कर अपने योग्य आपको अवकाश दिलवा दूँगी। परन्तु बाहर वाला तो ऐसा नहीं कर सकता।"

नीला में यही गुण था कि वह विशेषणात्मक बुद्धि रखती थी। उसकी इस दिशा में प्रतिभा ने ही उसे उसके सम्मोहन में फँसाया था। इस समय भी विजय यह अनुभव कर रहा था कि नीला ने अपनी विश्लेषणात्मक बुद्धि से ही उसके मन की उन बातों को जान लिया है जिनको वह स्वयं भी समझ नहीं रहा था। इस कारण उसने बात को शीघ्र ही समाप्त करने के लिए कह दिया, "नीला! क्या मैं यह जान सकता हूँ कि तुम नौकरी से स्वतन्त्र कार्य को किस कारण पसन्द करती हो?"

"केवल इस कारण कि स्वतन्त्र कार्य में मनुष्य को ऊपर उठने के लिए किसी प्रकार की सीमा नहीं रहती। वह अपनी–अपनी शक्ति के अनुसार उन्नति करने के लिए स्वतन्त्र रहता है। यह बात नौकरी में नहीं है।"

"स्वतन्त्र कार्य में भी सीमा होती है। धन की, बुद्धि की, शिक्षा की और सरकारी कानूनों की।"

नीला का कहना था, "ये सीमाएँ ऐसी हैं जिनको मनुष्य अपने प्रयत्न से दूर कर सकता है। नौकरी में सीमाएँ कर्ता के अपने अधीन नहीं होतीं। इनके विषय में सीमा निर्धारित करने वाला कोई दूसरा होता है और वे सीमा में बाँधे जाने वाले की सामर्थ्य एवं योग्यता के अनुसार नहीं होतीं। वरंच उसका आधार कुछ दूसरा ही होता है।"

"देखो, नीला! पिताजी ने भी मुझको कुछ ऐसी ही बात कही है। कदाचित तुमने अथवा माताजी ने उनको भी लिखा है। कुछ भी हो मैंने नौकरी का विचार छोड़कर अब किसी प्रकार का उद्योग चलाने का विचार बना लिया है।

"परन्तु इस सब कुछ करने पर भी मिसेज वर्मा तो रह ही सकती है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"देखें, वह रहती है अथवा नहीं। यदि आपके अत्यन्त व्यस्त रहने पर भी वह आपके मस्तिष्क पर छाई रही तो फिर विचार कर लूँगी। मेरा विचार है कि वह आपके मार्ग से हट जायेगी।"

"तो सुलह हो सकती है?"

"मेरी आपसे लड़ाई तो थी नहीं। मतभेद था, उस मतभेद पर विचार करने पर मैं आपको विवश करना चाहती थी और मैं इसमें सफल हुई हूँ। इस विचार की दिशा देने में भी मैं सफल हो रही प्रतीत होती हूँ। बताइए क्या करने का विचार है, कौन सा उद्योग चलाना चाहेंगे आप?"

"यह अभी विचार नहीं किया। अभी तो रात भर विचार करते हुए मैं किसी परिणाम पर नहीं पहुँचा।"

"इसमें मैं भी कुछ राय दे सकती हूँ क्या?"

"तुम राय तो दे रही हो। इस क्षेत्र में भी राय दे दो।"

"देखिये भारत उद्योगीकरण की ओर चल पड़ा है। उद्योगीकरण मशीनों द्वारा होने वाला है। मशीनों में शक्ति निर्माण प्रथम चरण है और सरकार ने बिजलीघर लगाने की योजना बना ली है। उस बिजली की शक्ति के प्रयोग के लिए बिजली की मोटरों की बहुत बड़ी आवश्यकता होने वाली है। आप बिजली की मोटर बनाने का कारखाना लगाइये।"

विजय की समझ में बात आ गई। उसने कहा, "बात तुम ठीक कहती हो। इस में विचार करना पड़ेगा कि कितना रुपया लगेगा और वह रुपया कहाँ से आयेगा तथा उसमें उन्नति करने में मेरा क्या योग होगा इत्यादि।"

"तो विचार कर लीजिए। मैं भी तो कुछ सहायता कर सकती हूँ।"

जब सुचेता लौटी तो पति–पत्नी में सुलह हो चुकी थी। उसके आने पर नीला ने अपनी कृतज्ञता प्रकट की और अपने भावी जीवन की सफलता के लिए आशीर्वाद माँगा।

विजय ने पूछ लिया, "माँ जी! आपने पिताजी को क्या लिखा था?"

"यही कि नीला तुमको मिसेज वर्मा के प्रभाव से बाहर करने के लिए यहाँ चली आई है और तुमको चाहिए कि यहाँ आकर उससे बातचीत कर लो।"

"बहुत आश्चर्य की बात है कि जो बात कल सायंकाल पिताजी ने कही थी वहीं आज यहाँ आकर नीला ने भी मुझसे कही है।"

"इसमें आश्चर्य की क्या बात है। जब योग्य लोग निस्वार्थभाव से किसी समस्या पर विचार करते हैं तो वे भिन्न–भिन्न भागों से चलते हुए भी एक लक्ष्य स्थान पर पहुँच जाते हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"देखो जब भिन्न–भिन्न देशों और कालों में लोग इस जगत का कारण ढूँढ़ने लगे तो सब इस परिणाम कर पहुँचे कि इस जगत को बनाने वाला कोई चेतन, ज्ञानवान और सर्वव्यापक शक्ति है। यह ठीक है कि सबने उस का नाम अपनी भाषा में अलग–अलग रख दिया है। हम उसको परमात्मा के नाम से स्मरण करते हैं।"

"जब विद्वान लोग किसी समस्या पर विचार करते हैं तो वे सब एक ही परिणाम पर पहुँचते जाते हैं।"

विजय ने मुस्कराते हुए कहा, "तो नीला की भी विद्वानों में गणना होने लगी है।"

"तो क्या विद्वानों के सिर पर सींग होते हैं।"

: 7 :

कारखाना लग गया। एक वर्ष में ही काम चालू हो गया। नीला ने कारखाने में न केवल धन लगाया था वरंच वह इसके विज्ञापन और बिक्री विभाग का प्रबन्ध करने लगी थी। अभी इसमें दस लाख रुपया लगाया गया था। इसके लिए एक प्राइवेट लिमिटेड कम्पनी चालू की गई थी। सात पत्तीदार थे। नीला, विजय, साधना का लड़का मानक, मोहन, महानारायण का छोटा लड़का और सोहन का छोटा लड़का सोमेश तथा वीरेन्द्र। सिवाय विजय और नीला के सब धन लगाने वाले पत्तीदार ही थे। विजय और नीला ही मालिकों में कार्य करने वाले थे।

जब तक कारखाना चालू नहीं हुआ वे बिना वेतन के कार्य करते रहे और बाद में दोनों एक–एक सहस्र रुपया पारिश्रमिक और अपने लगाए धन के लाभ के अधिकारी थे।

कारखाने में माल तैयार होते हुए चार मास से अधिक हो चुके थे और बिक्री खूब होने लगी थी। माल जितना तैयार होता था उससे अधिक की माँग बनी रहती थी।

सदानारायण बिना सूचना दिए वहाँ पहुँचा था। वह भाड़े की टैक्सी में वहाँ गया था। कारखाने के बाहर टैक्सी खड़ी कर वह छोटे मैनेजर नीला के द्वार के बाहर जा चपरासी से बोला, "भीतर सूचना दो कि कोई उनसे मिलने के लिए आया है।"

"क्या नाम बताऊँ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"सदानारायण।"

चपरासी के भीतर जाने से पूर्व नीला बाहर आ गई। वह भीतर बैठी सदानारायण की आवाज सुन पहचान गई थी। हाथ जोड़ प्रणाम कर वह उसको भीतर ले गई। उसको बैठा उसने मेज पर लगी घंटी बजाई। चपरासी आया तो उसने कहा, "साहब से कहो, पिताजी आए हैं।"

सदानारायण ने चपरासी को रोक दिया। उसने कहा, "मैं स्वयं वहाँ जा रहा हूँ। तुम्हारे जाने की आवश्यकता नहीं।"

चपरासी बाहर गया तो सदानारायण ने पूछ लिया, "पहले यह बताओ कि उससे अब कैसी निभ रही है?"

"हमारा अनुमान ठीक निकला है कि 'एम्प्टी माइंड इज डेविल्स वर्कशाप।' मैं उनको खाली बैठने ही नहीं देती। परिणाम यह हो रहा है कि मिसेज वर्मा भूलती जा रही है। वह कभी–कभी यहाँ आती भी है, परन्तु कुछ अधिक अवकाश न होने के कारण वह निराश हो लौटती प्रतीत होती है।"

"तुम अपनी सुनाओ। अपने जीवन से संतुष्ट हो?"

"अब असन्तोष के लिए कोई कारण नहीं रहा। हाँ, माताजी का पत्र आया था। वे यहाँ आने का विचार कर रही हैं। उनको विदित नहीं कि आप कश्मीर से लौट आए हैं।"

"मैं स्वयं बम्बई जाने का विचार कर रहा हूँ। यदि वह आ रही है तो तार कर देता हूँ जिससे वह शीघ्र ही आ जाए। फिर सब देवप्रयाग चलेंगे।"

"और यहाँ का काम?"

"देखो नीला! काम का उद्देश्य होता है। यह स्वयं उद्देश्य नहीं है। उस उद्देश्य की ओर चलने के लिए बड़े भापा से मिलते रहना चाहिए।"

नीला ने एक क्षण तक विचार किया और बोली, "चलिए। उनसे राय कर लेंगे।"

दोनों वहाँ विजय कुमार के कमरे में जा पहुँचे। वह अपनी मेज पर एक बहुत बड़े कागज पर बना हुआ मानचित्र बिछा, एक आर्चिटैक्ट से राय कर रहा था।

विजय ने अपने पिता को देखा तो वह उसके चरण स्पर्श करने लगा। उसने आर्चिटैक्ट को कह दिया, "अभी इनको रखिए, मध्याह्नोत्तर इस पर फिर विचार कर लिया जावेगा।"

विजय ने अपने पिता को एक सोफा पर बैठा कर कहा, "कारखाना छोटा अनुभव होने लगा है। इसमें वृद्धि करने के लिए एक नई इमारत बनाने लगे हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"औसतन कितना माल तैयार हो जाता है एक महीने में?"

"माल बिक्री दाम से पन्द्रह लाख तक होता है।"

"और उत्पादन लागत क्या बैठती है?"

"उत्पादन और वितरण लागत 90 प्रतिशत बैठ जाती है।"

"और नकद लाभ क्या होता है?"

"आठ से दस प्रतिशत तक। इसमें से सरकारी आय कर देना पड़ता है और मैं आशा कर रहा हूँ कि इस वर्ष हम लाभ दो लाख के लगभग वितरण करेंगे। इसमें पचास प्रतिशत कर्मचारियों का बोनस और शेष एक लाख से सात पत्तीदारों को चौदह सहस्र मिल सकेगा।"

"ठीक है, मैं प्रसन्न हूँ। परमात्मा ने तुमको सद्‌बुद्धि दी है और तुम उन्नति के मार्ग पर चल पड़े हो।

"बताओ पत्नी से अब पटती है अथवा नहीं?"

"मैं तो इसके आदेशाधीन ही काम करता हूँ। नित्य यह ग्राहकों की माँग उपस्थित करती है और मैं कारखाने में तीन शिफ्ट चला रहा हूँ। इस पर भी माँग पूरी न हो सकने के कारण हम कारखाने को विस्तृत करने का विचार कर रहे हैं।"

"देखो विजय! बुद्धि निर्मल और स्थिर हो तो इसको ब्राह्मी स्थिति कहते हैं। और इसके विषय में शास्त्र का वचन है–

एषा ब्राह्मीस्थितिर्पार्थ नैनां प्राप्य विमुह्यति।
स्थित्वास्यामन्तेकालेऽपि ब्रह्मनिर्वाणमृच्छति।।

"इसका अर्थ है–

"इस ब्राह्मी स्थिति पर पहुँच कर मनुष्य अपने पथ से विचलित नहीं होता और उस के चित्त को महान शान्ति प्राप्त होती है।"

विजय ने बात बदल दी। उसने कहा, "आप कब तक रहेंगे?"

"मैं दिन भर के लिए टैक्सी लेकर आया हूँ। सायंकाल की चाय पीकर मैं यहाँ से चला जाऊँगा।"

"मेरा तो विचार था कि माताजी आ रही हैं, आप भी यहीं रह जाइये।"

"तो उनको तार भेज दो। जब वे आ जावेंगी तब मैं भी यहीं आ जाऊँगा। मुझे दिल्ली में अभी काम है। रमणी भी हमारे साथ ही देवप्रयाग जायेगी और हमारे साथ वहाँ रहेगी।"

"आपको औरतों से खूब भक्ति प्राप्त होती है।"

"यह बात नहीं है। पुरुष भी तो अपने विचार के अनुयायी हो जाते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारा ट्रस्ट ही उन लोगों का है जो हमारी भाँति ही विचार करते हैं। लाखों रुपये प्रतिवर्ष यह ट्रस्ट खर्च करता है। हाँ, अहिन्दू मर्दों से अहिन्दू औरतें सुगमता से अपनी बात समझ लेती हैं।

"देखो एक सरस्वती है। उसका पहला नाम नासिर था। एक वैश्या की लड़की थी। परन्तु बाद में उसने अपना नाम सरस्वती रख लिया और वह मुझसे विवाह की इच्छा करने लगी थी। मैं अभी इस विषय पर विचार कर ही रहा था कि उसको अमेरिका तथा योरोप से नाचने तथा गाने का काम मिल गया और बहुत सा कमा कर तथा एक अमेरिकन की पत्नी बन हिन्दुस्तान लौटी थी। यहाँ उसका पति उसे छोड़ वापिस अमेरिका चला गया। तब से वह बम्बई में एक विख्यात गायिका के रूप में रहती है।

"राधा के विषय में तो तुम जानते ही हो। इधर रमणी भी है। मेरे कहने का अभिप्राय यह है कि हमारे सम्पर्क में जो कोई भी आता रहा है उस पर प्रभाव हुए बिना नहीं रह सकता।

"परन्तु अब जमाना बदल गया है। और मैं देख रहा हूँ कि हमारे प्रभाव से बाहर भी लोग हैं और समझाने पर भी वे हमारी बात नहीं मानते।

"लाला गिरधारी लाल को जानते हो?"

"जी।"

"उनका लड़का कुन्दनलाल एक दिन किसी चलती–फिरती लड़की को पकड़ कर घर ले आया था। उनके एक लड़का हुआ है परन्तु कुन्दन लड़के के पूर्व अपनी पत्नी और होनेवाली सन्तान को छोड़कर घर से भाग गया है। अब उसका समाचार आया है कि वह साधु हो गया है। कल मैं उसकी पत्नी मेरी से मिलने के लिए गया था। वह यह सुन कि वह साधु हो गया है हँस पड़ी। हँसते हुए कहने लगी, 'मैं उसकी प्रतीक्षा में हूँ। मुझे विश्वास है कि वह लौट आयेगा।'

"अन्ना को तो तुमने आश्रम में देखा है। बम्बई और कराची में वह कई लोगों से सम्बन्ध बनाये हुए थी और उसका पति उसकी आय से धन एकत्रित कर रहा था। पाकिस्तान के गवर्नर जनरल की उस औरत से अनबन हुई तो पाकिस्तानी सरकारी कर्मचारियों ने उसकी सब सम्पत्ति लूट ली। इस पर वह सर्वथा निर्धन हो गई। अपने जीवन–भर की कमाई को लुट गया देख औरत के मन में तो संसार असार दिखाई देने लगा है। मैंने उसके पति को समझाया था परन्तु उसको मेरी बात समझ आती ही नहीं।

"इस कारण मैं कहता हूँ कि जमाना बदल गया है। इस बदले जमाने में

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ लोग अभी भी हैं जो नए लोगों से भिन्न प्रकार से विचार करते हैं परन्तु धीरे–धीरे उनकी संख्या कम हो रही है और वह नया वर्ग बढ़ रहा है।''

''यह क्यों?''

''इसमें कारण प्रतीत होता है देश की वर्तमान शिक्षा प्रणाली। यह इन्द्रिय सुखों की प्राप्ति के लिए साधन जुटाने के लिए बनी है। इसका परिणाम यह हो रहा है कि इन्द्रिय सुखों की प्राप्ति ही जीवन का उद्देश्य बन गया है। इन्द्रिय सुखों में प्रतिबन्ध किसी प्रकार का नहीं रहा। अतः कोई भी बात इन्द्रिय सुखों के अतिरिक्त अस्वीकार हो जाती है। यहाँ तक कि दूसरों की हत्या तक इसके लिए करनी क्षम्य हो गई है। भ्रूण हत्या अथवा शिशु हत्या तो साधारण बात हो गई है।

''जो लोग समझाने से समझ जाते हैं वे कुछ तो पूर्व जन्म के संस्कारों के कारण कुछ परिस्थितियों के कारण सीधे मार्ग पर आ जाते हैं। इसमें तुम अपना ही उदाहरण ले सकते हो। तुम इन्द्रिय सुख के पीछे एक सामाजिक पाप करने लगे थे। यदि तुम्हारी रुचि धनोपार्जन में न लग जाती तो तुम मिसेज वर्मा से अपना मुख काला करते रहते।''

''परन्तु पिताजी! यह पाप कैसे हो गया?''

''सामाजिक व्यवस्था उल्लेख करने से। समाज ने यह उचित समझा है कि पति–पत्नी परस्पर निष्ठावान रहें।''

''परन्तु हम दोनों सज्ञान थे। स्वेच्छा से विचरते थे। उसके पति को आपत्ति नहीं थी। इससे मैं समझता हूँ कि अनियमित होने पर भी पाप नहीं था। हम दोनों अपने विवाहित सम्बन्धों को तोड़कर प्रत्यक्ष में भी रह सकते थे परन्तु हमने अपने सम्बन्ध को कभी छिपाकर रखने का यत्न नहीं किया। केवल विवाह की रस्म की भाँति डुग्गी नहीं पीटी थी।''

''परन्तु तुम्हारी पत्नी को तो आपत्ति थी।''

''वह आर्थिक हानि के कारण थी। सम्बन्ध पर उसने कभी आपत्ति नहीं की।''

इसपर तो सदानारायण को विस्मय हुआ। उसने आश्चर्यवत् नीला के मुख पर देखा तो वह कहने लगी, ''पाप–पुण्य की बात तो मैं सोचती नहीं। मैं तो अपने जीवन के पूर्ण विकास के विषय पर विचार करती थी। आपने अमेरिका में मुझे विवाह की प्रेरणा देते हुए कहा था कि विवाहित जीवन में यौन सम्बन्ध तो उसका एक छोटा–सा अंग है। संसार में अनेक प्रकार के कार्य हैं जो पुरुष–स्त्री इकट्ठे रहते हुए करते हैं। आपने कार्यों को पाँच श्रेणियों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में बाँटा था। मैं तो उनका चिन्तन करती थी और उनको पूर्ण न होते देख चिन्ता करने लगी थी।

"उन पाँचों प्रकार के कार्यों में अर्थ की आवश्यकता तो रहती है। परन्तु अर्थ साधनमात्र है। साध्य तो वे कर्म हैं। अब ये उन कर्मों को करने के लिये साधन जुटा रहे हैं और उसके साथ ही इनकी यौन लिप्सा शान्त होती जाती प्रतीत होती है।"

"पर नीला!" विजय ने पूछ लिया, "तुमने यह बात तो कभी बताई नहीं। तुम तो यही कहती रही हो कि स्वतन्त्र रूप से कार्य करूँ।"

"जी! परन्तु धन कमाना उद्देश्य तो नहीं। यह तो साधन है। आपने कभी पूछा नहीं कि मैं धन अर्जन करने में क्यों हठ कर रही हूँ। अभी तो कारखाना चलते एक वर्ष भी नहीं हुआ। वर्ष के अन्त में जब हानि–लाभ का चिट्ठा निकलेगा तो फिर हम उपार्जित धन को व्यय करने के विषय में विचार करेंगे। तब आपको पता चलेगा कि विवाह करने के अन्य प्रयोजन किस प्रकार सिद्ध होते हैं।"

"तो यह बात है। परन्तु इसमें मिसिज वर्मा से सम्बन्ध बनाने अथवा न बनाने की बात तो आती नहीं।"

"आती तो है। यद्यपि कहने में वह नहीं आती। परन्तु जीवन कार्य बदलने का प्रभाव उसपर भी तो पड़ा है।

"देखिये, यदि आप सरकारी नौकरी पाते तो वेतन सीमित होता और आप सीमित समय में ही नौकरी करते। शेष समय में रिक्त होते। इसका परिणाम दो बातें होतीं। एक तो उस सीमित आय से आपका पेट भरता नहीं। इससे आप अनियमित आय करने के पीछे लग जाते। सरकारी नौकरी में ऐसा करने के अवसर सुगमता से मिल जाते हैं। यह अनियमित आय मति भ्रष्ट करती है और उस भ्रष्ट मति से आप क्या–क्या करते इस समय कहना कठिन है।

"दूसरी बात यह होती कि सीमित समय में काम कर रिक्त समय में आप क्या करते इसका अनुमान मिसेज वर्मा से संबंध को देखकर पता चलता था। रिक्त समय को उपयोगी काम में लगाना तो स्वतन्त्र कारोबार वाले ही कर सकते हैं।"

विजय की समझ में यह बात नहीं आई। उसने कहा, "रिक्त समय पर तो प्रत्येक मनुष्य का अधिकार है। इसमें तुम आपत्ति क्यों करती हो? लेजर इज साल्ट औफ लाइफ। –अवकाश पाना तो जीवन का रस है।"

नीला ने मुस्कुराते हुए कहा, "एक दिन आपकी माताजी बता रही थीं कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर्म के बिना तो एक क्षण भी नहीं रहा जा सकता। इस कारण अवकाश का अर्थ कर्मरहित होना नहीं। इसका अर्थ केवल कार्य का रूप बदलना है। इसी कारण मैंने कहा है कि रिक्त समय में कार्य का उपयोगी रूप होना चाहिए। मिसेज वर्मा से संबंध तो किसी के लिए भी उपयोगी नहीं हो सकता था।''

''और उपयोगी क्या हो सकता था?''

''जो आप अब कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त भी कई कर्म उपयोगी हो सकते हैं। परन्तु मैं चाहती थी कि आपकी इस काम में रुचि है इस कारण आप इसमें चित्त लगा सकेंगे। यह काम उपयोगी इस कारण है कि इससे हम अपनी सामर्थ्य से पंच महायज्ञ करने की सामर्थ्य बढ़ा रहे हैं। पंच महायज्ञ ही लोक कल्याण के कार्य हैं।''

''परन्तु हम वे कार्य करेंगे ही, वह कैसे कहती हो?''

''इतना तो निश्चय ही है कि मेरी आय बीस और पच्चीस हजार वार्षिक होने जा रही है। उससे तो मैं कुछ कर ही सकूँगी। मुझे विश्वास है कि आप मेरे इस कार्य में सहयोग देंगे।''

नीला युक्ति करने में विजय से श्रेष्ठ सिद्ध होती थी। सदानारायण यह देख रहा था। वह इसकी युक्ति और उससे निकल रहे निष्कर्ष को ठीक ही समझता था। इस कारण उसने बात समाप्त करते हुए कह दिया, ''देखो विजय! यह नीला न तो अमेरिकनों के ढंग से सोचती है न ही वर्तमान भारतीय नवयुवकों के ढंग से। इसके सोचने के ढंग को कहते हैं स्थिर बुद्धि का ढंग। देखो मेरा कहा स्मरण रखो कि यह तुमको ठीक मार्ग पर ले जा रही है। इसपर भी तुम इसकी युक्तियों और निष्कर्षों पर पुनरावलोकन करते और कराते रहोगे तो तुम्हारा कल्याण होगा।''

''किससे कराता रहूँ?''

''अपने घर के बड़े लोगों से। उनसे जो तुमसे आयु, अनुभव और ज्ञान में बड़े हैं। बड़े भापा हैं जो देवप्रयाग में रहते हैं। वहाँ महात्मा रत्नजी हैं। मैं भी अपने को कुछ पढ़ा–लिखा मानता ही हूँ और फिर तुम्हारी माताजी हैं। हम सब अपने–अपने विषय में पण्डित हैं। और इस विषय की बात तुम उससे पूछ सकते हो जिसका वह पण्डित है।''

विजय इलैक्ट्रिकल एंजीनियरिंग का पण्डित था। यद्यपि बचपन में उसको कुछ धर्म–कर्म की शिक्षा मिली थी। परन्तु अपनी कालेज की पढ़ाई में वह उसके मस्तिष्क से निकल चुकी थी। अब पुनः वह उसके मन में जागृत हो रही थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
नीला के विषय में तो उसको समझ आया कि उसकी माता ने उसके मस्तिष्क पर गहरा प्रभाव डाला है और वह अपनी तीव्र बुद्धि से माताजी की बातों को स्पष्ट रूप में बताने लगी है।

: 8 :

सुचेता तार मिलते ही दिल्ली आई। वास्तव में उसको डॉ. मुखर्जी का समाचार मिलने के उपरांत बहुत भय लगने लगा था। डॉ. मुखर्जी की मृत्यु के समय भारत के प्रधानमन्त्री लन्दन में थे। उनके भारत में लौटने की उत्सुकता से प्रतीक्षा की जा रही थी। लोग यह समझते थे कि शेख अब्दुल्ला का डॉ. मुखर्जी के विषय में व्यवहार सन्देहजनक है और मृत्यु के विषय में जाँच वस्तुतः शेख के व्यवहार की जाँच हो जायेगी और उसके व्यवहार पर जाँच करने में सब पण्डित नेहरू के कोप से डरते थे। मन से चाहते हुए भी कोई मन्त्री साहस नहीं कर सकता था कि इस जाँच की माँग का समर्थन करे। अतः सब उत्सुक थे कि नेहरूजी आवें तो वे ही इस जाँच की स्वीकृति दे सकते हैं।

सुचेता भी इसी प्रकार की आशा कर रही थी। परन्तु नेहरूजी आये और उन्होंने जाँच करने से इनकार कर दिया। इससे तो यह बात कानोंकान कही जाने लगी कि नेहरू भी इस पूर्ण दुर्घटना से पृथक् नहीं हैं। लोग अनुभव करते थे कि यही कारण है कि पण्डितजी ने जाँच को अस्वीकार कर दिया है।

सुचेता इस पृष्ठभूमि में अपने पति के कश्मीर जाने की बात पर विचार कर रही थी। सदानारायण का एक पत्र श्रीनगर से आया था कि वह वहाँ पर बिना परमिट के पहुँच गया है और अब वह देखना चाहता है कि किस प्रकार कश्मीर और भारत का कानून उसके इस कार्य को देखता है।

इस पत्र के उपरांत कोई सूचना नहीं आई थी। अतः वह चिंतित थी। इसी चिन्ता में उसने एक पत्र विजय को लिख दिया था कि वह दिल्ली आ रही है। उसके बम्बई से चलने के पूर्व ही विजय का तार मिल गया था कि पिताजी कश्मीर से लौट आये हैं और उसकी दिल्ली में प्रतीक्षा कर रहे हैं। अतः वह हवाई जहाज से दिल्ली आ गई।

विजय और सदानारायण पालम हवाई अड्डे पर उसको लेने के लिए जा पहुँचे थे। सुचेता के आने के साथ ही सदानारायण देवप्रयाग जाने की तैयारी करने लगा था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुचेता के आग्रह पर नीला भी चलने को तैयार हो गई। एक दिन के लिए विजय भी तैयार हो गया।

इस समय सबको देवप्रयाग जाते देख तो प्रोफेसर विश्वनाथ और रमणी तथा उनके बच्चे भी चलने के लिए तैयार हो गये। वे सब रेल से और हरिद्वार से आगे बस से यात्रा करते हुए देवप्रयाग में स्वामी गरीबदास के आश्रम पर पहुँच गये।

वहाँ पहुँचकर सदानारायण के विस्मय का ठिकाना नहीं रहा जब उसने देखा कि बम्बई से और भी कई लोग वहाँ आये हुए हैं। सेठ देसाई खटाऊ जी, राधा, रुक्मिणी तो वहाँ पहले ही रहते थे। इस बार आने वाले व्यक्तियों में विशेष थे प्रोफेसर सदाशिव उनकी पत्नी कामिनी तथा रमणी की लड़की जो कामिनी के पास रहती थी।

इस सब भीड़ को देख सदानारायण सब परिचितों से एकदम मिलने के कारण प्रसन्न था। वैसे आश्रम में तो इससे भी अधिक लोगों के आतिथ्य का प्रबन्ध हो सकता था।

मुमताज और अनिमा पहले एक–दो बार मिल चुकी थीं और इस बार अनिमा आई तो उसके मुमताज की कुटिया में रहने का प्रबन्ध हो गया।

प्रोफेसर सदाशिव तो वैसे ही स्वामीजी के दर्शनों के लिए आया था। वह पंचमढ़ी में रहते–रहते अकेलेपन से ऊब गया था। परन्तु उसकी पत्नी कामिनी एक विशेष प्रयोजन से आई थी। वह चाहती थी कि स्वामीजी उसके पति को समझाकर या तो घर पर उसके पास रहने की प्रेरणा दें अथवा अपनी पत्नी को अपने पास रहने के लिए कहें। उसको यह पता चला कि प्रोफेसर कभी–कभी देवप्रयाग स्वामीजी के पास जाया करता है। उसको भी अपने पति को यहाँ पहले उपस्थित देख विस्मय हुआ था। कामिनी को अपने पति के साथ रखने का प्रयत्न होने लगा तो प्रोफेसर ने रत्नजी को कह दिया, "उसको स्त्रियों के साथ पृथक् ठहराया जाय।"

"तो आपने संन्यासी की दीक्षा ले ली है?"

"नहीं, यह बात तो नहीं। इसपर भी मैं उसको अपने साथ एकान्त में रहने की स्वीकृति नहीं दे सकता।"

रत्न प्रोफेसर की विशेष मति की बात जानता था। इस समय उनकी मति अपनी पत्नी के विरुद्ध जा रही थी। इसपर भी उसने उनकी निजी बातों में झाँकने में अरुचि के कारण कामिनी को मुमताज और अन्ना के साथ ठहरा दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रोफेसर विश्वनाथ भी केवल दो दिन कालेज से अवकाश लेकर आया था परन्तु रमणी वहाँ कुछ दिन ठहरने का विचार करती थी।

विजय और नीला तो केवल एक ही दिन के लिये आए थे। उनके कारखाने का काम उनको अधिक काल तक ठहरने की स्वीकृति नहीं देता था।

अतः सबसे पहले तो स्वामीजी ने इनको ही मिलने के लिए बुलाया। नीला पिछली बार अपने पति से रूठकर आई थी। वहाँ से वह मसूरी चली गई थी। यह सब उसकी अपनी ही योजना के अनुसार था। यद्यपि स्वामी जी उसकी समस्या को एक–दूसरे ढंग से सुलझाना चाहते थे। परन्तु जब नीला ने अपनी योजना बताई तो स्वामीजी समझ गये थे कि यह लड़की विशेष प्रतिभा रखती है और इसको अपने ढंग से अपना मार्ग बनाने देना चाहिए।

अतः यह विजय के साथ आई तो स्वामीजी ने इससे और विजय से उनके परस्पर सम्बन्धों की बात जाननी चाही थी।

मध्याह्न के भोजन के समय स्वामीजी ने दूसरे आये अतिथियों में इनको बैठे देखा तो पहले विजय से ही पूछ लिया, "तो विजय सपत्नीक आया हुआ है?"

"जी।"

"कब तक रहने का विचार करके आये हो?"

"कल चला जाऊँगा।"

"तुम्हारी पत्नी भी?"

उधर नीला ने कह दिया, "जी। अब तो घर के साथ–साथ व्यवसाय में भी सहयोग को स्वीकार किया हुआ है।"

"तब तो ठीक है। देखो, तुम दोनों जाने से पूर्व प्रातः पाँच बजे मिल लेना।"

सदाशिव की पत्नी कामिनी पंक्ति में बैठी भोजन कर रही थी। वह सदाशिव और रुक्मिणी के बीच बैठी थी। इससे स्वामीजी ने यह अनुमान लगाया कि वह प्रोफेमर साहब की पत्नी है। अतः स्वामीजी ने पूछ लिया, "तो प्राफेसर साहब भी सपत्नीक आये हैं?"

"जी, आये तो पृथक–पृथक थे परन्तु बैठा हुआ सपत्नीक हूँ।"

"और वह लड़की कौन है?"

"यह रमणी की लड़की है, जो कामिनी ने गोद ले लिया है।"

"कब तक रहने का विचार है प्रोफेसर साहब?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं तो अब यहाँ आपकी संगति में ही रहना चाहता हूँ।"

"क्यों, पंचमढ़ी वालों ने जाने के लिए कह दिया है?"

"जी नहीं, यह बात नहीं। मैं वहाँ कोई ऐसा व्यक्ति नहीं देखता जो मेरी उन्नति करने में सहायक हो। यहाँ इस विषय में आपसे सहायता लेना चाहता हूँ।"

"और ये आपकी श्रीमती आपकी सहायता नहीं करतीं?"

"यह बेचारी क्या करेगी। इसको तो अभी अपने लिए ही सहायता की आवश्यकता है।"

"तो आप करते क्यों नहीं इनकी सहायता?"

"मैं तो स्वयं ही डूबता हुआ अनुभव कर रहा हूँ। इसके बोझ से तो रसातल में ही जाकर गिरूँगा।"

"हम तो इससे उलटी बात देख रहे हैं। यह है तरणी, जिसकी सहायता से अनेक पुरुष इस भवसागर को पार कर गये हैं।"

सदाशिव मुस्कुराया और अपनी पत्नी की ओर देखने लगा। कामिनी आँखें नीची किये बैठी थी। उसे मौन हो भोजन करते देख सदाशिव ने स्वामीजी की ओर देखकर कहा, "कदाचित आपका कथन ठीक हो। मुझे तो यह पत्थर प्रतीत हुई थी जो स्वयं डूबने वाली है और मुझको भी ले डूबेगी।"

"तो आप इस तरणी से बाहर कुछ तट पर आ गये हैं? हम समझते हैं कि यह तट भवसागर के पार वाला तट नहीं है, यह तो इधर का किनारा ही है।"

"इस पर भी यह रसातल नहीं। वहाँ तो वायु के अभाव में मर ही जाता। यहाँ खुली हवा में जी तो रहा हूँ।"

"पर यह रसातल में जाने वाली है क्या?"

"आप क्या समझते हैं?"

"अच्छा रात को भोजनोपरांत तुम दोनों मेरी गुफा में आ जाना। वहाँ बताऊँगा कि मुझे क्या दिखाई देता है।"

अब सदानारायण से बात हो गई। स्वामीजी ने पूछा, "क्या कर आये हो कश्मीर में?"

"भापा! प्रत्यक्ष में तो कुछ नहीं हुआ। वरंच देश का बहुत बड़ा आदमी खोया गया है। इसपर भी परोक्ष में भी एक नाटक हो गया है।

"क्या?"

"मैं सन् 1947 के अक्टूबर मास में कश्मीर गया था। दूसरी बार मैं सन्

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

1952 में वहाँ गया था और अब तीसरी बार गया हूँ। 1947 में तो भारतीय सेना घोर संघर्ष में लगी थी और शेख भीगी बिल्ली की भाँति भयभीत बैठा था। वह महाराजा नरसिंह की खुशामद करता था। और चाहता था कि कश्मीर में शीघ्रातिशीघ्र शान्ति स्थापित हो जाए। इस शीघ्र–शान्ति की लालसा में भले लोगों को कष्ट होता है और गुण्डों की बात मानी जाती है। महाराज रियासत के विषय में जम्मू के हिन्दुओं की रक्षा के लिए उत्सुक था। इस कारण शेख, जो कुछ नहीं चाहता था, अपनी स्थिति डाँवाँडोल देख महाराज की खुशामद करता रहता था। साथ ही वह सरदार पटेल से डरता था और यह वहाँ विख्यात था कि सरदार महाराजा की हिमायत करता था और शेख पर सन्देह की दृष्टि से देखता था।

"ज्यों–ज्यों पाकिस्तानी सेनायें पीछे हटती गईं त्यों–त्यों शेख उच्छृंखल होता गया और महाराज को आँखें दिखाने लगा था। उसके इस व्यवहार में जवाहरलाल उसको प्रोत्साहन देता था। एक समय आया कि शेख हिन्दू विरोधी हो गया। जो हिन्दू पुंछ–राजौरी इत्यादि क्षेत्रों से पाकिस्तानी सेनाओं ने निकाले थे उनको जम्मू और कश्मीर में बसने नहीं दिया गया। अब वह महाराजा की जवाहरलाल से झूठी–सच्ची शिकायत करने लगा। परिणाम यह हुआ कि महाराजा हरिसिंह को हटाया गया और उसके स्थान पर उसके लड़के कर्णसिंह को रियासत का सरदार बनाया गया।

"शेख के भाग्य से सरदार की मृत्यु हो गई और वह अब खुलेआम रियासत में हिन्दुओं का उत्पीड़न करने लगा। जब मैं दूसरी बार कश्मीर गया तो जम्मू के हिन्दू शेख को हटवाने का आन्दोलन कर रहे थे। शेख उस आन्दोलन को कठोरता से दबाने लगा था। निर्वाचनों में प्रजा परिषद के प्रायः सभी प्रत्याशियों के परचे रद्द कर दिये गए थे। न रहा बाँस न बजी बांसुरी।

"इससे तो शेख नेहरू को भी आँख दिखाने लगा था।"

"यद्यपि शेख जम्मू की प्रजा परिषद के आन्दोलन को कठोरता से दबा रहा था, परन्तु इसका प्रभाव भारत सरकार पर और कश्मीर सरकार पर हो रहा था। कश्मीर नेशनल कान्फ्रेंस में फूट पड़ गई थी और भारत सरकार भारत की जनता में कश्मीर में हो रही दुर्व्यवस्था के कारण, बढ़ रही अशान्ति को दबाने के लिये उनकी आँखें पोंछना चाहती थी। परिणाम यह हुआ कि शेख और नेहरू में भी तनातनी हो गई। इस समय भारतीय जनसंघ का आन्दोलन चल पड़ा। इससे तो नेहरू शेख अब्दुल्ला के द्वारा कश्मीर के भारत से विलय का अधिक हठ करने लगे। नेहरू चाहता था कि यातायात और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न्यायालय भारत के अधीन हो। शेख दिल्ली में तो मान आया था कि वह इतना करा देगा परन्तु श्रीनगर में पहुँच टाल–मटोल करने लगा।

"मई के महीने में नेहरू कश्मीर गये थे। और यह सुना जाता है कि नेहरू ने शेख को विलय की उक्त मुद्दों की घोषणा करने की बात कही। शेख ने झूठ बोल दिया कि नेशनल कान्फ्रेंस में विरोधी धड़ा इस विलय का विरोध कर रहा है। सुना है कि यह झूठ नेहरू को पता चल गया और वहीं दोनों मित्रों में तू–तू मैं–मैं हो गई।

"मौलाना आजाद को दोनों में वैमनस्य मुसलमानों के हित में प्रतीत नहीं हुआ और वे जून के आरम्भ में कश्मीर गये और शेख को समझाने में असफल रहे। इस समय तक शेख कश्मीर की जनता को यह समझाने लगा था कि कश्मीर की जनता के हित में यह है कि पाकिस्तान के साथ मधुर सम्बन्ध बनाये जावें। इससे कश्मीर नेशनल कांफ्रेंस में शेख विरोधी धड़ा सक्रिय हो गया। वह धड़ा इस बात में लगभग सफल हो चला था कि जम्मू और भारत में सत्याग्रह बन्द हो जाय और शेख का तख्ता उलट दिया जाय। इस समय डॉ. मुखर्जी की मृत्यु की घटना हो गई। इस घटना के कारण इस धड़े की योजना सफल नहीं हो सकी। इस पर भी यह धड़ा इस समय दिल्ली में सत्याग्रह बन्द करने और शेख को पदच्युत करने का यत्न कर रहा है।

"नेहरू साहब डॉ. मुखर्जी की मृत्यु के विषय में जाँच कराने के पक्ष में नहीं। दिल्ली के जानकार क्षेत्रों का यह अनुमान है कि शेख के व्यवहार के साथ नेहरू इतना अधिक सम्बन्धित है कि वह जाँच की स्वीकृति दे सकता ही नहीं। इस कारण उसे अपने को शेख से पृथक् प्रकट करने के लिये शेख का तख्ता उलटना अनिवार्य है।

"इस प्रकार भापा! मैं यह समझा हूँ कि भारतीय जनसंघ का आन्दोलन तो सफल हुआ है। कश्मीर की तानाशाही में परिवर्तन हो रहा है।"

भोजन समाप्त हो चुका था। और स्वामी जी भोजनोपरान्त कुछ काल के लिये एक पेड़ के नीचे साये में बैठने आ जाया करते थे। सदानारायण उनके साथ ही वहाँ पर आ गया। स्वामी जी ने सदानारायण की कथा पर अपनी प्रतिक्रिया बताते हुए कहा, "शेख अब्दुल्ला पदच्युत होगा। परन्तु उस पर आरोप सिद्ध नहीं किया जा सकेगा। इसे सिद्ध करने के लिये न तो नेशनल कान्फ्रेंस उत्सुक होगी न ही भारत सरकार अर्थात् पण्डित नेहरू। इस कारण शेख अब्दुल्ला पहले से अधिक ऊँचा होकर जेल से बाहर निकलेगा। यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
भारत के गले में मुसीबतों का हार बन जावेगा। कश्मीर की समस्या इस प्रकार शान्त नहीं हो सकती।

"साथ ही एक बात स्मरण रखनी चाहिए कि कश्मीर की समस्या शेख की उत्पन्न की हुई नहीं। यह अंग्रेज सरकार की निर्माण की हुई है। इसमें अंग्रेज सरकार का भारत में यन्त्र पण्डित नेहरू है। पण्डित नेहरू की पूर्ण शक्ति है जनता में उसकी ख्याति।

"यह ख्याति एक बहुत बड़े अंश तक भाग्याधीन है और साथ ही इसमें कारण है अंग्रेजी पढ़े लिखे हिन्दू। अंग्रेजी देश में बुद्धि का माप–दण्ड हो गई है। वास्तव में ये मानसिक दासता में ग्रसित होने के चिह्न हैं। ये अंग्रेजी पढ़े–लिखे लोग नेहरू की ख्याति में सहायक हो रहे हैं।

"और अपने जनसंघ की बात सुन लो। ये लोग एक भिन्न प्रकार की दासता में बंधे हुए हैं। यह दासता है संगठन की। किन का संगठन? ये लोग जानते नहीं। जिस संगठन में काल और परिस्थिति से अनुकूलता नहीं उसकी दासता तो जड़ बना देगी। आवश्यकता है हिन्दू समाज में बुद्धिशीलों के संगठन की न कि दस–बीस अनुभवविहीन कार्यकर्ताओं के संगठन की। ये लोग अपने घर से बाहर वालों को भारतीय जनसंघ में अछूत मानते हैं। साथ ही जिसकी इस संगठन से अनबन हुई वह जनसंघ में भी त्याज्य हो जाता है। डॉ. मुखर्जी इस संगठन में स्वीकार किये गये तो बड़े दबाव के कारण। डाक्टर तो स्वीकार हो गये परन्तु दबाव डालने वाले बहिष्कृत हो गये। अब दबाव डालकर डाक्टर को बीच में लाने वाले निःशेष किये जा रहे हैं।

"इसका परिणाम यह होने वाला है कि यह संस्था एक विशेष गुट की संस्था बन रही है। उससे इसका क्षेत्र सीमित ही रहेगा। लोग इसमें आशा में भरे हुए आयेंगे परन्तु यहाँ भी एक वर्ग की तानाशाही देख इसे छोड़ जायेंगे। वह देश का दल नहीं हो सकेगा।"

"पर भापा! यह तो सम्भव है कि यह दल निकट भविष्य में सत्ता सम्पन्न हो सके तब भी यह दस–बीस निष्ठावान लोगों के आश्रय ही चलता रहे।" रत्न का कहना था।

"तुम ठीक कहते हो। परन्तु निष्ठा और बुद्धि साथ–साथ चलनी चाहिए। बुद्धिविहीन निष्ठा तो पूर्णदल को ही गर्त में ले जा कर डाल देगी। दल का घेरा ऐसा विस्तृत होना चाहिए कि निष्ठा और बुद्धि साथ–साथ चल सकें। यदि केवल निष्ठा ही संगठन में गर्त रही है तो यह एक छोटा–सा घेरा रह जावेगा। जो कभी सत्ता प्राप्त करने में सफल भी हुआ तो उस सत्ता से देश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और राष्ट्र को लाभ के स्थान हानि अधिक होने की सम्भावना है।

"अब तनिक कांग्रेस दल की बात देखो। 1947 तक कांग्रेस एक विचार विशेष वालों की संस्था बन चुकी थी। उस समय गांधी पर निष्ठा रखने वाला, मुसलमानों के अराष्ट्रीय व्यवहार पर आँखें मूँदने वाला तथा हिन्दुओं की प्रत्येक बात को साम्प्रदायिक समझने वाला कांग्रेसी था। जिस किसी कांग्रेसी ने इनके विपरीत कुछ कहा वह कांग्रेस से बहिष्कृत कर दिया गया। परिणाम यह हुआ कि कांग्रेस उन लोगों का टोला बन गया जो गांधी तथा उक्त बातों को स्वीकार करता हो।

"ये लोग प्राणवान तो थे परन्तु प्राणवान बुद्धिमान भी होंगे यह आवश्यक नहीं। उस समय भी कांग्रेस में कुछ लोग थे जो गांधी और उक्त मिथ्या सिद्धान्तों को स्वीकार नहीं करते थे। परन्तु ये प्राणवान लोग उनकी चलने नहीं देते थे।

"परिणाम यह हुआ कि गांधी भक्तों और मुसलमानों के पक्षपाती और हिन्दू विरोधियों के हाथ में राज्य आ गया। ये प्राणवान लोग राज्य सत्ता का आश्रय पा जाने से देश में काले को सफेद और सफेद को काला करने लगे हैं। प्राण बुद्धि का स्थानापन्न नहीं।

"मुझे तो कुछ वही बात दोहराई जाती प्रतीत हो रही है। प्राणवान लोग बुद्धिमानों का बहिष्कार कर रहे हैं।"

: 9 :

रात सदाशिव और उसकी पत्नी स्वामी जी से मिलने के लिए आये। कामिनी यह चाहती थी कि वह अब वृद्ध हो गई है और अकेली रह नहीं सकती। उसे पति का आश्रय चाहिए।

सदाशिव का कहना था कि वह तो अपनी पत्नी से भी अधिक वृद्ध हो गया है। वह भला क्या आश्रय देगा इसको। फिर यह लड़की इसके साथ है। इसकी शिक्षा–दीक्षा किसी वनस्थल में चल नहीं सकती और वह किसी नगर में रह नहीं सकता।

स्वामी जी का निर्णयात्मक उत्तर था, "तुमने सन्तान निर्माण नहीं की। मेरा अभिप्राय है कि पुत्र। न तो औरत और न ही मानस पुत्र बनाये हैं। इस कारण तुम निराश्रय हो। लड़की पुत्र का स्थानापन्न प्रायः नहीं हो सकती।

"अतः तुम्हारे लिए दो मार्ग खुले हैं। या तो तुम लड़की के घर चले जाओ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और वहाँ अपना वृद्ध जीवन व्यतीत करो। अन्यथा तुम किसी आश्रम में स्वयं पुत्र बन जाओ। तुम इस आश्रम में आकर रह सकते हो, यहाँ पुत्रवत् आश्रय पा जाओगे।''

कामिनी का प्रश्न था, ''महाराज, कब तक!''

''जब तक तुम सज्ञान होकर अपने पुत्र उत्पन्न नहीं कर लेते। औरत पुत्र तो अब तुम बना नहीं सकोगे। हाँ, मानसपुत्र बना कर अपना परिवार, मेरा मतलब है, आश्रम चला सकते हो।''

''और यह लड़की?''

''यह भी यहाँ के परिवार में सम्मिलित हो सकती है परन्तु इसकी शिक्षा–दीक्षा तो यहाँ की पद्धति से ही चल सकेगी।''

कामिनी अपने पति का मुख देखने लगी। प्रोफेसर साहब ने कह दिया, ''मैं समझता हूँ कि इस औरत के यहाँ रहने से आपको कष्ट होगा।''

''देखो सदाशिव! मैं अब कष्टों से ऊपर हो गया हूँ। साथ ही मेरी आयु की अवधि अब दो वर्ष की रह गई है। बाद में किसको कष्ट होगा। यह बाद में रहने वालों से पता करना चाहिए। जब तक मैं हूँ आप दोनों और चाहो तो लड़की भी यहाँ रह सकते हैं।''

''महाराज!'' कामिनी ने कहा, ''अभी इस देह को छोड़ने की जल्दी क्या है?''

गरीबदास ने मुस्कुराते हुए कहा, ''जल्दी और देरी का प्रश्न नहीं। प्रश्न है उपयोगिता का। मैं देह नहीं छोड़ रहा। यह देह मुझको छोड़ रही है। जैसे हम समझते हैं कि कपड़ा घिस गया है और नया बनवाना चाहिए। वही बात मेरे इस शरीर की हो रही है। समय आ रहा है कि इसको उतार कर नवीन वस्त्र पहिन लूँ।''

सदाशिव अभी भी स्वामी जी की इन बातों में कुछ अधिक तत्त्व नहीं समझता था। उसका विचार था कि शास्त्रों को पढ़ने से बने संस्कार ही एक रूप धारण कर मनुष्य के मुख से निकलते रहते हैं। मनुष्य इनकी सत्यता और इनके बार–बार कहने से मानने लगता है। इस पर उसने स्वामी जी को निरुत्तर करने के लिए कह दिया, ''और नया शरीर कैसे ले रहे हैं?''

''मैंने जानने का यत्न किया है। जो कुछ अभी तक समझ पाया हूँ वह इतना ही है कि इस प्रकार का पंचभौतिक शरीर नहीं होने वाला। इस पृथ्वी पर भी नहीं होगा। कुछ काल के लिए अन्तरिक्ष में स्वच्छन्द विचरने के उपरान्त ही मैं शरीर में आऊँगा। जहाँ जाऊँगा वह स्थान इस सौर जगत में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं। न ही वह इस आकाश गंगा के किसी भाग में है। वह यहाँ से बहुत दूर है। यही कारण है कि उसका स्पष्ट चित्र दिखाई नहीं देता।"

"महाराज! यह मिथ्या धारणा नहीं क्या?"

"क्या मिथ्या धारणा है इसमें?"

"यही कि मनुष्य मरने के उपरान्त कहीं जन्म लेता है।"

"हाँ, वो बात हमको दिखाई नहीं देती उसको मानने में संकोच होता है। इस अवस्था में हमारे लिये दो विकल्प हैं या तो हम उसको न मानें अथवा आप्त मनुष्यों के कथन पर विश्वास करें। यह अपने–अपने विचार करने की बात है। परन्तु एक आप्त मनुष्य के लिये अर्थात एक ऐसे मनुष्य से लिए जिसको दिखाई देता है उसके लिए तो मानने–कहने में संकोच नहीं हो सकता।"

"तो आपने देखा है?"

"जितना निश्चय से बताया है उतना तो दिखाई देता है। इसके अतिरिक्त निश्चय से नहीं कह रहा।"

"तो आपका निधन होने वाला है?"

"मैंने तो अपने जाने का दिन, वार, तिथि लिख रखे हैं।"

"और वह कौन–सा दिन है?"

"यह मैं बताऊँगा नहीं। केवल एक आदमी को मैंने बताया है और उसे भी कह दिया है कि मेरी स्वीकृति के बिना किसी को न बताये।"

"और वह आदमी कौन है?"

"महात्मा रत्न।"

"तो हम उससे पता कर लेंगे।"

"हाँ, यत्न करो।"

"परन्तु आपने अपने शरीर त्याग के दिन को छिपा कर क्यों रखा हुआ?"

"इस साधारण सी घटना को लोग महान् बात बना लेंगे और फिर यहाँ आकर लोग मेरी शान्ति को भंग कर सकते हैं।"

कामिनी अवाक् यह सब सुन रही थी। उसने अपने पति को किसी विचार में लीन होते देख स्वयं पूछना आरम्भ कर दिया, "आप इस दुर्घटना को टाल नहीं सकते?"

"मैं इसको दुर्घटना नहीं मानता। इस पर भी मैं इसको आगे–पीछे करने में रुचि नहीं रखता।"

"तो क्या कोई इसको आगे–पीछे कर भी सकता है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अनेक करते रहते हैं। समय के पूर्व मरने के और मरने को टालने के उपाय हैं। उनका अनुकरण करना होता है। जो लोग आत्महत्या करते हैं वे शरीर छोड़ने के दिन को समय से पूर्व लाने की बात ही करते हैं और योगी अपने मरण काल को पीछे धकलने का यत्न करते हैं।"

"ऐसा वे क्यों करते हैं?"

"जिनको यह जीवन अत्यन्त दुखदायक हो जाता है वे आत्महत्या कर लेते हैं। जिनको अपने इस जीवन का कर्म असमाप्त दिखाई देता है, वे योगी लोग इसको लम्बा करते रहते हैं।"

"और आपको कैसा लग रहा है?"

"मैं कुछ ऐसा अनुभव करने लगा हूँ कि मैं जो कुछ इस जीवन में प्राप्त कर सकता था वह कर चुका हूँ। इस पर भी मुझे यहाँ किसी प्रकार का कष्ट नहीं। इस कारण मैं न तो यहाँ से जाने के लिये उतावली में हूँ न ही यहाँ ठहरने के लिये उत्सुक हूँ। मैंने अपने को ईश्वराधीन कर रखा है। इस पर भी में देख रहा हूँ कि यह शरीर घिस गया है और अब बहुत देर तक चल नहीं सकेगा।"

"यदि मुझे यह विश्वास होता कि मुझे अभी कुछ देर तक यहाँ रहना चाहिए तो इस शरीर को पैबन्द लगा कर रखने का यत्न करता।"

"परन्तु अन्य लोगों को तो आपके यहाँ रहने से लाभ है?"

"तो वे यत्न कर मुझको पकड़ कर रखें।"

"कैसे पकड़ कर रखें?"

"यह शरीर जहाँ से घिस कर टूटने वाला है उसको टूटने से पहले ही मरम्मत कर दें।"

"और शरीर का कौन–सा अंग टूटने वाला है।" प्रोफेसर ने मुस्कुराते हुए पूछ लिया। उसे अभी भी स्वामी जी का कथन मिथ्या आभास प्रतीत हुआ था।"

"वह हृदय है। यह पिछले 115 वर्षों से निरन्तर चलता–चलता घिस गया है। मैंने अनुमान लगाया है कि यह सन् 1959 तक ही चल सकेगा। शेष तो गणना की बात है।"

अब कामिनी ने बात को अपने विषय पर बदल दिया और अपने पति से कहा, "आप बताइये महाराज के परिवार में सम्मिलित होते हैं अथवा नहीं।"

"एक–दो दिन में विचार करके बताऊँगा।"

"कुछ भी निर्णय करिये। मैं आपके साथ रहने का निश्चय कर चुकी हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"और यदि अपने साथ न रखूँ तो क्या करोगी?"

"आत्महत्या कर लूँगी।"

"अर्थात् तुमको यह जीवन अत्यन्त दुःखदायी प्रतीत होने लगा है।"

"जी। और मुझे इसका कारण यह समझ आया है कि पति के बिना पत्नी का जीवन दुर्भर होता जाता है।"

"और यदि मैं अब तक मर गया होता तो?"

"तब की बात मैं अब कैसे बताऊँ। अभी तो आप जीवित ही हैं।"

इस समय स्वामी जी ने बात बीच में ही रोक कर कहा, "देखो सदाशिव! कामिनी तुम्हारी जन्म-जन्मान्तर की भार्या है और यह तुमको छोड़ेगी नहीं। विवश होकर कुछ करना पड़े तो बात दूसरी है। स्वेच्छा से यह तुम्हारे साथ रहेगी। विवशता इतने वर्ष रही है, परन्तु अब यह उस विवशता के विरुद्ध विद्रोह कर रही प्रतीत होती है।"

"मैं एक-दो दिन में अपने मन की बात विचार कर बताऊँगा।"

अगले दिन प्रातःकाल विजय और नीला स्वामी जी की गुफा में आ पहुँचे। स्वामी जी अपनी समाधि से उठे ही थे। इनके बैठते ही उन्होंने आँखें खोलकर कहा, "तो तुम आ गये हो?"

"नीला तो आधे घंटे से तैयार होकर बैठी थी। आपने पाँच बजे बुलाया था। हम समय होने की प्रतीक्षा में थे।"

"देखो विजय! जब बुद्धि में द्वन्द्व चल पड़े अर्थात् इससे बात में सन्देह होने लगे कि अमुक कार्य उचित है अथवा अनुचित तब उसका निर्णय करने के लिये अपने को अनासक्त, निराश्रय और फल की इच्छा त्याग कर विचार करोगे तो मार्ग पा जाओगे।

"मैं देख रहा हूँ कि तुम अभी भी अपनी पत्नी से लुकाव-छिपाव की बात रखते हो। यह बात वैमनस्य उत्पन्न करने वाली हो सकती है।"

"मैं तो अपनी जानकारी में ऐसा व्यवहार नहीं रखता।"

स्वामी जी ने ध्यानपूर्वक विजय की ओर देखकर कहा, "मुझे तो यही दिखाई देता है।"

"और मैं इसको जानती हूँ तथा सिद्ध भी कर सकती हूँ। परन्तु इस सब में मैं कुछ लाभ नहीं देखती।"

विजय टुकुर-टुकुर मुख देखता रह गया। स्वामी जी हँस पड़े। हँसते हुए कहने लगे, "मैं समझता हूँ कि तुम उसको लुकाव-छिपाव की बात मानते नहीं। परन्तु मैं यह कहता हूँ कि पति-पत्नी एक ही आत्मा को दो भाग होते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं। यदि इनमें लुकाव–छिपाव की प्रथा बन जावे तो फिर से उनके एक होने में देरी होती है और तब इस जन्म–मरण के बन्धन से छुटकारा नहीं पा सकते।''

और कोई होता तो विजय कह देता कि उसको इस प्रकार की काल्पनिक एवं मिथ्या बातें नहीं करनी चाहिए। परन्तु वह जानता था कि घर के सब लोग परलोक की बात पर विश्वास करते हैं। वह स्वयं इस पर कुछ भी विश्वास न रखता हुआ चुप था।

परन्तु स्वामी जी उसके चुप रहने का अर्थ समझ गये। वे मुस्कुराते हुए कहने लगे, ''विश्वास नहीं आता न? परन्तु मैं समझता हूँ कि तुम्हारी पत्नी को विश्वास आ रहा है।''

विजय ने नीला के मुख पर देखा। वह बाबा–पोते की बात सुन रही थी। इस पर विजय ने पूछ लिया, ''तो तुम समझ गई हो?''

''बिलकुल। आपकी माताजी ने एक बहुत ही सुगम ढंग से समझाया था और मैं समझ गई थी।''

''क्या समझाया था?''

''वे कहने लगीं कि एक आश्रम का कुत्ता है और एक सड़क पर का आवारा। आश्रम के कुत्ते को नियम से खाना मिलता है। सरदी–गरमी में सुख कारक स्थान मिलता है और सब परिचित उससे प्यार करते हैं। सड़क का आवारा कुत्ता तो सबसे दुत्कारा जाता है। उसे भूख लगती है तो आश्रम की जूठन में से बचा–खुचा खाने योग्य पदार्थ उठाने चला आता है और उस पर भी भंगी उसे डांट–फटकार कर भगाने का यत्न करता है।

''माताजी पूछने लगीं कि यह अन्तर क्यों है?

''मैंने घटनावश कहा था। परन्तु मन ने कह दिया कि घटना से तो भारी अन्याय हो रहा मानना पड़ेगा। जो भी उस घटना को करने वाला हो। ईश्वर हो, प्रकृति हो अथवा मनुष्य हो, उसको घोर अन्यायी मानना पड़ेगा। माताजी का कहना था कि यह पूर्वजन्म के कर्मों का फल है। इसके अतिरिक्त कोई युक्तियुक्त कारण समझ नहीं आया तो पूर्वजन्म मान लिया। फिर भविष्य का जीवन मानना पड़ा। इसके साथ ही जन्म–जन्मान्तर तक चलने वाला आत्मा मानना पड़ा। अन्त में विवश हो परमात्मा को भी स्वीकार कर बैठी हूँ।''

''मेरे माता–पिता कैथोलिक थे। उनको जीवन की विवेचना आपकी माताजी की विवेचना से भिन्न थी। वे इस जन्म से पूर्व कुछ नहीं मानते। हाँ, इस जन्म के उपरान्त दूसरा जन्म प्रलय के उपरान्त मानते हैं। उनकी यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विवेचना तो समझ आई नहीं थी। और फिर अपने देश में फैल रही जड़वाद में बह गई थी। परन्तु जड़वादियों का युक्तिबाद हिन्दू जीवन दर्शन के सम्मुख परास्त हो गया है।"

"तो तुम मानती हो कि हमारा जन्म–जन्मान्तर का सम्बन्ध है।"

"यह अभी समझ नहीं आया परन्तु अपने और आपके व्यवहार से किसी प्रकार के सम्बन्ध को मानना ही पड़ेगा।"

"प्रमाण तो दिखाई नहीं देता।"

"देता तो है। आपके व्यवहार पर मेरी प्रतिक्रिया बनी हुई है। जब मैं पूर्वजन्म के विचार को मानती नहीं थी परन्तु आपसे सुलह कर लेने की इच्छा का कारण ढूँढ़ने लगी, तो माताजी की बात कि हमारा पूर्वजन्म का कुछ तो सम्बन्ध प्रतीत होता है ठीक ही मासूम होता है।"

"तो भापा!" विजय ने स्वामी जी की ओर देखकर पूछ लिया, "आप क्या आज्ञा करते हैं?"

"मेरा कहना है कि धनोपार्जन उद्देश्य नहीं। यह तो साधन है।"

"जी, यह तो मैं जानता हूँ। उपभोग में ही धनोपार्जन का उद्देश्य है।"

"उपभोग तो ठीक है। परन्तु उपभोग मुख्य रूप में दो प्रकार के हैं। एक इन्द्रिय सुख के लिये और दूसरा यज्ञ के लिये। दोनों में सन्तुलन रहना चाहिए।"

"नीला कह रही है कि धन एकत्रित कर इसको किसी लोक–कल्याण के काम में लगायेंगे।"

"यही यज्ञ है। यज्ञ उसको कहते हैं जिससे निकलने वाला फल सबके लिये कल्याण करने वाला हो।"

: 10 :

विजय और नीला तो उसी दिन लौट गये। सदाशिव ने रमणी की लड़की कल्याणी को प्रोफेसर विश्वनाथ को दे दिया और स्वयं कामिनी के साथ आश्रम में ही रहने लगा। सबसे विचित्र बात रुक्मिणी और देसाई की थी। वे स्वामी जी से शेष जीवन वहाँ बिताने के लिये स्वीकृति माँगने लगे।

"और कारोबार?"

"सब एक ट्रस्ट के हाथ में दे दिया है। उस ट्रस्ट का स्थायी प्रधान सोहनलाल को बना दिया है।"

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"और तुम लोग?"

"अपने लिये पर्याप्त ले आये हैं। उसके ब्याज से निर्वाह हो जावेगा।"

"तब तो ठीक है।"

परन्तु अन्ना के वहाँ ठहरने पर तो स्वामी जी को भी विस्मय हुआ। स्वामी जी को अन्ना के जीवन का पूर्ण वृत्तान्त विदित था। उन्होंने पूछा, "अन्ना! यहाँ रह कर क्या करोगी?"

"महाराज! अपने जीवन की कालिख धोने का यत्न करूँगी।"

"वह तो निष्काम भाव से कर्म करने से ही होगा।"

"परन्तु वहाँ बम्बई में तो महाराज! मिस्टर जॉन बहुत ही कष्ट देने लगा है। वह दिल्ली की नौकरी छोड़ वहीं आश्रम में रहने लगा है।"

"परन्तु तुम उससे डरती क्यों हो?"

"मुझे भय है कि कहीं वही चक्की फिर न पीसनी पड़ जाय।"

"परन्तु तुम उस चक्की की आयु से ऊपर नहीं हो चुकी हो क्या?"

"अपने मन में तो ऊपर हो गई अनुभव करती हूँ। परन्तु जॉन को तो अभी भी मैं सोलह–सत्रह वर्ष की कुमारी ही दिखाई देती हूँ।"

"तो तुम उसको वहाँ से चले जाने के लिये क्यों नहीं कह देतीं।"

"मैं कहना तो चाहती हूँ पर कह नहीं सकती। इसका कारण मैं जानती नहीं।"

"अच्छी बात है। परन्तु वह यहाँ भी तो आ सकता है।"

"यहाँ उसका साहस नहीं कि किसी प्रकार की खराबी कर सके।"

सदानारायण पन्द्रह दिन तक वहाँ रहा और फिर बम्बई अपना काम देखने के लिए चल पड़ा।

अक्तूबर के महीने में शेख पकड़ लिया गया। और उस पर मुकदमा तैयार होने लगा। उसके स्थान पर बख्शी गुलाम मोहम्मद को कश्मीर का मन्त्रिमण्डल बनाने के लिये कहा गया। उसने कश्मीर राज्य की सरकार चलानी आरम्भ कर दी।

: 11 :

यह सन् 1957 की बात है। महात्मा रत्नलाल देवप्रयाग आश्रम में अपने कमरे के बाहर बैठ उस दिन का समाचार पत्र पढ़ रहा था। उसकी दृष्टि एक समाचार पर जा पड़ी। समाचार का शीर्षक था– "एक भारतीय अधिकारी का पाकिस्तानी हत्यारा दिल्ली में गिरफ्तार।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसके नीचे समाचार था कराची हाई कमिश्नर के एक अटैची का हत्यारा सादिक हुसैन दिल्ली में पकड़ा गया है। पुलिस को सुराग मिला था कि एक पाकिस्तानी जासूस भारतीय विदेश विभाग के अधिकारी से कुछ सरकारी गुप्त कागजात खरीदता रंगेहाथों पकड़ा गया और पुलिस की हिरासत में उसकी पहिचान की गयी तो पता चला कि यह व्यक्ति शमशाद खाँ कुरैशी, कल्चरल अटैची, कराची हाईकमिश्नर का हत्यारा है। इसको कराची में पाकिस्तानी अदालत ने आजन्म कैद का दंड दिया था। परन्तु पीछे कराची हाईकोर्ट में उसे पाँच वर्ष की सख्त कैद का दंड कर दिया गया था। वह उस दंड को भोग कर कुछ महीने पूर्व ही जेल से छूटा था।

रत्नलाल विचार करने लगा था कि वह इस समाचार को मुमताज को बताये अथवा नहीं। इसके अतिरिक्त वह विचार कर रहा था कि उस विदेश विभाग के अधिकारी के विषय में कुछ नहीं लिखा जिससे यह कुछ कागजात खरीदते पकड़ा गया है।

अनिश्चित मन वह उठा और स्वामी जी को देश के समाचार सुनाने चल पड़ा। सामान्य समाचार सुना कर उसने यह समाचार भी सुना दिया। इसे सुन स्वामी जी ने कहा, "मुमताज अम्मी से पूछ लो कि वह सादिक को मिलने जाना चाहती है क्या?"

"भापा। मैं तो विचार कर रहा था कि उसे यह समाचार सुनाऊँ ही नहीं।"

"क्यों?"

"व्यर्थ में उसे दुःख होगा।"

"तुम कौन हो सुख और दुःख देने वाले? देखो रत्न, उसे यह समाचार दे दो। मैं समझता हूँ कि वह अपने लड़के से मिलने जायेगी। यदि उसे नहीं बताओगे तो आश्रम के कुछ रुपये बचाने के लिए एक सामर्थ्यहीन आश्रम निवासी के दुःख का कारण बन जाओगे।"

स्वामी जी ठीक कह रहे थे। जब रत्नलाल ने मुमताज को समाचार सुनाया तो वह रो पड़ी। रत्नलाल मुख देखता रह गया। मुमताज ने आँसू बहाते हुए कहा, "कई दिन से मेरी बांयी आँख फड़क रही थी और पाँव के तलवों में खुजली हो रही थी।"

"मगर अम्मी...।"

"खर्चे की बात कर रही हो। देखो मेरी एक अँगूठी अभी बाकी है। मैं समझती हूँ कि इस परिवार की यह आँखीरी पूँजी भी इस परिवार के लिए ही खर्च कर दूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नहीं अम्मी। इसे तुम रखो। स्वामी जी ने कहा है कि यदि तुम दिल्ली जाना चाहो तो तुमको आने–जाने का खर्च और वहाँ किसी स्थान पर रहने का प्रबन्ध कर दूँ।"

"मैं समझती हूँ कि मैं आश्रम पर व्यर्थ का बोझा डाल रही हूँ।"

"नहीं अम्मी। यह बोझा नहीं है।"

मुमताज दिल्ली गयी तो रमणी के घर जा ठहरी। वहाँ जाकर उसे पता चला कि मरियम ने विवाह कर लिया है और उसके घर एक लड़का हो चुका है।

मुमताज को उसके लंगड़ी हो जाने का समाचार भी मिला। प्रोफेसर साहब के टेलीफोन लगा था और मरियम के घर वाले के भी टेलीफोन था। रमणी ने उसे टेलीफोन कर दिया और बताया कि आश्रम वाली बड़ी बहिन आयी है। तो वह घर की मोटरगाड़ी में सवार हो वहाँ आ पहुँची। मुमताज ने उसे बधाई दी और जब पूछा कि बच्चे को क्यों नहीं लायी। तो वह खिलखिला कर हँस पड़ी।

रमणी और मुमताज उसकी ओर प्रश्न भरी दृष्टि से देखने लगीं तो मरियम ने हँसने के कारण बताया, "बड़ी बहिन। मैं अपनी सात–आठ वर्ष की आवारा जिन्दगी के बाद बच्चा होने की उम्मीद नहीं रखती थी। परंतु मेरे घर वाले का भाग्य ही समझो कि शादी होने के दो महीने के भीतर ही हमल ठहर गया। और फिर एक गुलाब के फूल की तरह खूबसूरत लड़का हो गया। मैं इसको न समझ में आने वाली एक घटना ही मानती थी और अब वह पाँच साल का हो गया। मैं फिर पेट से हूँ।"

इस पर तो रमणी और मुमताज भी हँस पड़ीं। मुमताज ने कहा, "यह सब खुदा की मेहर है। बिना उसकी मर्जी के एक तिनका भी हिल नहीं सकता।"

"बात तो कुछ ऐसी ही मालूम होती है। यह मैं अपने घरवाले पर खुदा की मेहर ही मानती हूँ। इस चमत्कार को तो डाक्टर भी बयान नहीं कर सकते।"

जब मुमताज ने बताया कि वह अपने लड़के से मिलने आयी है तो मरियम ने कहा, "मैं सब प्रबन्ध कर दूँगी। यह गनीमत है कि उस पर से जासूसी का इलजाम उठा लिया गया है। अब सिर्फ एक कत्ल का इलजाम ही रह गया है। अगर जासूसी का इलजाम होता तो उससे मिलने की स्वीकृति न मिल सकती।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह जासूसी का मुकदमा क्यों उठा लिया गया है?"

"कहा यह जा रहा है कि वह इलजाम साबित नहीं किया जा सकेगा। साथ ही इस जुर्म के दंड में तो उसका दंड भी आ जाएगा। मगर हकीकत यह है कि उस मुआमले में एक ऐसी औरत भी फँसती है जिसके मददगार बड़े–बड़े लोग हैं।

"तो स्वराज्य में भी यह कुछ चलता है।"

"बड़ी बहिन! कुछ न पूछो, क्या–क्या कुछ चल रहा है। खैर मैं कल रमणी मौसी को टेलीफोन कर दूँगी। फिर खुद तुम को आकर उससे मिलाने ले जाऊँगी। वह सैन्ट्रल जेल में है।"

इस सब प्रबन्ध में दो दिन लग गये। रमणी नियत समय पर मुमताज को लेने आयी तो उसके साथ शमा भी थी।

मुमताज शमा को देख समझ गयी कि वह अभी भी शमशाद के साथ और उसके परिवार के साथ लगाव रखती है। शमा ने आते ही पूछा, "मुमताज बी। पहिचाना मुझको?"

"हाँ पहचाना क्यों नहीं? मैं तो यह सोच रही थी कि तुम यहाँ कैसे आ गयी हो?"

इस पर शमा और मरियम मुस्कुरा कर चुप कर रहीं। मरियम ने बात बदल दी और कहा, "हम तुमको सादिक से मिलाने के लिए लेने आयी हैं।"

सादिक से मुलाकात कचहरी की पुलिस चौकी में हुई। उस दिन सादिक को मजिस्ट्रेट के पास रिपोर्ट लेने के लिए लाया गया था। वहाँ पुलिस चौकी के बरामदे में सादिक को हथकड़ी–बेड़ी में बाँध इन औरतों के सामने बैठा दिया गया। शमा से तो उसकी भेंट पहिले भी कई बार हो चुकी थी। मरियम पहिली बार उससे मिलने आयी थी। सादिक अपनी माँ और मरियम को इकट्ठी आते देख खिलखिला कर हँस पड़ा। हँस कर वह स्वयं ही कहने लगा, "अम्मी। तुम को यह कहाँ से मिल गयी है?" उसने मरियम की ओर संकेत कर दिया। अगले ही साँस में उसने मरियम से पूछ लिया, "और तुम्हारी टाँग को क्या हुआ?"

सादिक मरियम को तब से जानता था जब वह मिसेज कुरैशी के रूप में कराची में रहती थी। उसकी बात का उत्तर मरियम ने ही दिया, "तो तुम जानते नहीं कि तुम्हारी माँ मेरी बड़ी बहिन लगती है?"

सादिक इस रिश्ते को समझ नहीं सका और बोला, "मैं नहीं जानता कि तुम मेरी मौसी भी हो।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जो अपने बाप का कत्ल कर सकता है वह भला मौसी को कैसे पहिचानेगा।"

"अम्मी।" सादिक ने माँ की तरल आँखें देख कह दिया, "मैं मुआफी चाहता हूँ। वह सब भूल से हुआ है। मैं इसके असल के खाबिन्द विनोद कश्यप को मारने लगा था। वह उसके साथ मियाँ इश्तियाक हुसैन की दावत पर चाय पीने होटल में आने वाली थी। मगर वहाँ पहुँच गये मिसेज रिजवी के साथ अब्बा जॉन।

"दरवाजे पर खड़े आदमी ने इशारा किया और मैंने अपनी छुपी जगह से निकल औरत के साथ आते आदमी के पेट में छुरा घोंप दिया। मैंने अब्बा जान को पहिचाना जरूर, मगर देरी से। तब तक छुरा पूरा उनके पेट में जा चुका था। मुझे सख्त अफसोस हुआ।"

"मैं कौन हूँ। तुमको सजा देने वाली या मुआफ करने वाली। सादिक उस परवर्दिगार रहीम करीम से मुआफी माँगो। याद है एक बार पहिले भी छुरे से तुम उन पर वार कर बैठे थे। यह 16 अगस्त, सन् 1946 की बात है।"

"वह भी गलती में था। अम्मी, तुम्हारे रहीम करीम को तो मैं जानता नहीं। हाँ, कुछ लोगों पर मुझको बहुत भरोसा है। वे मुझ को छुड़ा सकेंगे मुझको उम्मीद पूरी है।" सादिक ने अर्थ भरी दृष्टि से शमा की ओर देखा।

"ठीक है। कुछ लोगों ने तुमको कराची में भी बचा लिया था और शायद वे अब भी बचा लेंगे। मगर मैं तो एक दूसरी अदालत की बात कह रही हूँ। देखो मैं ढाई सौ मील की यात्रा कर तुमको यही कहने आयी हूँ कि उस अदालत से बचने का इन्तजाम करो। उस बड़ी अदालत से जहाँ सिर्फ तुम्हारी रूह की परख होने वाली है।"

सादिक हँसता हुआ बोला, "अम्मी। तब तो तुम को रोना–धोना बन्द कर खुश होना चाहिए। मेरी रूह तो बिल्कुल पाक है। मैंने कभी किसी मौमिन को किसी किस्म का भी नुकसान पहुँचाने की कोशिश नहीं की। हमेशा काफिरों को ही तहेतेग करने में लगा रहा हूँ।"

"सादिक। तुम कुफ्र को मत बोलो। देखो। मेरा दिल तुम को देखकर मर गया है। मैं जा रही हूँ। इस पर भी एक इल्तजाह करती हूँ। खुदा का नाम लो और अपने गुनाहों के लिये उससे मुआफी माँगो।"

मुमताज उठ खड़ी हुई। वह अभी भी रो रही थी। मरियम मुमताज के दिल में परस्पर विरोधी भावनाओं का संघर्ष देख पिघल उठी थी। उसकी भी आँखें भीगने लगी थी। अब वह भी एक बच्चे की माँ थी। वह भी अपने दिल में अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
बच्चे के लिए ममता का विचार कर मुमताज के दिल की अवस्था का अनुमान लगा रही थी।

उसने सादिक की तरफ हमदर्दी से देखते हुए कह दिया, "माँ की कदम बोसी करो। माँ को नाराज करके भेज रहे हो। यह बहुत बुरी बात है।"

"मैंने माँ को क्या कहा है? वह नाराज हो कर भूल कर रही है। मैंने अपनी जानकारी में इसका कोई नुकसान नहीं पहुँचाया। माँ भी तो मिल्लत के लिए बहुत कुछ कर चुकी है।"

मुमताज और अधिक सहन नहीं कर सकी। उसको कुछ ऐसा मालूम हो रहा था कि उसका सिर वैसे ही भन्नाने लगा है जैसा नोआखाली में वहाँ की घटनाओं को देख भन्नाने लगा था। उसने मरियम के कन्धे पर हाथ रख कर कहा, "मरियम। अब चलो।"

इस पर मरियम उठ खड़ी हुई। शीरी ने आँख से कुछ संकेत किया और वह भी उनके साथ मोटर की तरफ चली आयी।

मार्ग में मुमताज ने कहा, "मैं उस दिन को बद्दुआ दे रही हूँ जिस दिन मेरा निकाह इसके बाप से पढ़ा गया था। सारी जिन्दगी ही फजूल गयी है। लड़की गयी, लड़के गये, घरवाला गया और अब जिन्दगी की इस शाम के वक्त खाली हाथ जा रही हूँ।"

: 12 :

सदानारायण अपनी नवीन पुस्तक 'इतिहास में नवीनता का अभाव' लिखने में लीन हो गया। इसके लिए उसे अपने पुस्तकालय में बन्द हो जाने की आवश्यकता पड़ गयी।

तीन वर्ष से अधिक समय लग गया पुस्तक लिखने में। वास्तव में यह सृष्टि के आदिकाल से लेकर वर्तमान काल तक इतिहास का विहंगम अवलोकन था। संसार रूपी नाटक में मुख्यपात्र एक ही है। वह है मानव। मानव भिन्न–भिन्न कालों में, भिन्न–भिन्न देशों में और भिन्न–भिन्न परिस्थितियों में भिन्न–भिन्न परिधानों और बनाव–शृंगार के साथ रंगमंच पर आता है और, अपने कार्य में एवं दर्शकों के विचार में रोचकता उत्पन्न करने के लिए अनेक रूप, अनेक अभिनय और अनेक नामों के साथ प्रकट होता रहता है। उसके वस्त्र, शृंगार मन और अभिनय में भेद होने से दर्शक भूल जाते हैं कि भीतर तो वह मानवमात्र है। उसमें मन, शरीर और आत्मा तो एक समान ही हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शरीर इन्द्रिय सुखों के पीछे भागना है। मन उस पर नियन्त्रण रखना चाहता है। यह नियन्त्रण आत्मा की सहायता से ही सफल होता है। परन्तु इन्द्रियाँ और मन आत्मा के नियन्त्रण की प्रायः आवश्यकता अनुभव नहीं करते। इस अवस्था में मन और इन्द्रियों की उच्छृंखलता अनेक प्रकार के अभिनय करती है। जब आत्मा का इन्द्रियों और मन पर नियन्त्रण हो जाता है तब नाटक करने वाला और देखने वाले पूर्ण संसार नाटक में एकरसता का अनुभव करने लगते हैं। यह कभी–कभी ही हो पाता है। बस यही इतिहास है।

सदानारायण की पुस्तक अभी समाप्त नहीं हुई थी कि देवप्रयाग से तार आ गया–"सदा भापा! फाल्गुन पूर्णिमा से पहले पहुँच जाओ।" सदानारायण अर्थ समझ गया। रत्न को स्वामी जी ने अपने शरीर छोड़ने का दिन, वार, तिथि और समय बता रखा था। रत्न ही तार देने वाला था।

वह स्वामी जी की इच्छा को भी समझता था कि उनके शरीर छोड़ने के समय हल्ला–गुल्ला न किया जाय। इस पर भी रत्न ने सदानारायण को तिथि की सूचना दे देनी उचित समझी। तार पहुँचा था एकादशी को इस कारण सदानारायण सुचेता के साथ उसी रात के हवाई जहाज से दिल्ली और वहाँ से रेल द्वारा ऋषिकेश तथा बस द्वारा त्रयोदशी को ही देवप्रयाग पहुँच गया।

उसके पहुँचते ही रत्न ने उनको सूचित करते हुए कहा, "भापा जी अब प्रातः–सायं टहलने के लिए निकलते हैं। और उस समय ही आश्रम के लोग उनके दर्शन कर सकते हैं। भोजन के समय अब वे बाहर नहीं आते। उन्होंने भोजन भी चौबीस घन्टों में एक बार और वह भी दूध लेना आरम्भ कर दिया है।

"पिछली दशमी को वे पूछते थे कि मैंने किसी आश्रमवासी को उनके प्रयाण काल की बात बताई है अथवा नहीं। मैंने उनको बताया था कि मैंने तो बताई नहीं। परन्तु आश्रम निवासी यह अनुमान लगा रहे हैं कि वह दिन अब समीप ही है। आपके अन्नादि खाना बन्द करने से वे यही समझ रहे हैं।"

"ठीक है। उनको अनुमान लगाने दो।"

"मैंने उनसे कहा कि यदि वे आज्ञा दें तो मैं तुमको बुला लूँ।"

"वे कहने लगे कि जैसा मन करे। परन्तु किसी प्रकार का हल्ला नहीं होना चाहिए। मैं यहाँ से पूर्ण शान्ति में प्रस्थान करना चाहता हूँ।

"मैंने कह दिया कि आपकी इच्छा का पूर्ण ध्यान रखा जावेगा।"

सदानारायण ने पूछा, "तो भापा जी को विदित है कि मैं आ रहा हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हाँ।"

"आश्रम में स्थायी रूप से रहने वाले भी कई लोग थे। खटाऊ जी, उनकी पत्नी राधा, रुक्मिणी और उसके पति देसाई। मनोहरलाल और उसकी पत्नी सरला। अन्ना और उसका पति जॉन। मुमताज और दिल्ली से आये प्रोफेसर विश्वनाथ, उनकी पत्नी रमणी, रमणी की लड़की और रमणी के पिता सदाशिव। आश्रम के सेवक और रत्नलाल इन सबसे पृथक् थे। ये सब लोग इतना तो जानते थे कि स्वामीजी के प्रयाण का समय समीप है। परन्तु वे यह नहीं जानते थे कि अन्तिम दिन और घड़ी पल कौन–सा है।

रमणी की माता का देहान्त हो चुका था। और अब सदाशिव अकेला वहाँ रहता था। सदानारायण अभी अपने आवास में टिका ही था कि रमणी और विश्वनाथ मिलने के लिए आ गए। उन्होंने कहा, "पण्डित जी! आप तो बिना सूचना दिए ही आ गाए हैं?"

"मैं पिछले तीन वर्ष से एक काम में लगा हूँ। उससे जी ऊब गया तो यहाँ चला आया हूँ।"

"यहाँ यह चर्चा जोरों पर है कि स्वामी जी के शरीरान्त का समय समीप ही है।"

"कब है?"

"यह कोई नहीं जानता। सेठ देसाई कहते हैं कि स्वामी जी ने तो आज से इक्यावन वर्ष पूर्व जब वे पहली बार बम्बई में आये थे, यह बता दिया था कि वे एक सौ बीस वर्ष की आयु का भोग करेंगे। इनके विचार में वह समय आ गया है।"

सदानारायण ने उत्तर नहीं दिया और मुस्कुराता रहा। "पिताजी ने देसाई जी की वह बात हमको दिल्ली लिख भेजी थी और हम भी कामकाज छोड़ पिछले महीने से यहाँ पड़े हैं।"

"और प्रोफेसर साहब के कालेज का काम?"

"उसे छोड़े तो एक वर्ष हो चुका है। अब वे स्वतन्त्र रूप से अन्वेषण का काम कर रहे हैं और अपनी जानकारी के आधार पर एक त्रैमासिक पत्रिका निकाल रहे हैं।"

"यह तो बहुत अच्छा किया है और निर्वाह के लिये?"

"प्रोफेसर साहब ने डिप्लोमैटिक ऐन्क्लेव में एक मकान बनवाया था। उस पर पचास हजार लागत आई थी। और उससे एक सहस्र भाड़ा मिलने लगा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। इतने में गुजर बहुत मजे में हो रही है। हम अभी अपने करोलबाग वाले मकान में ही रह रहे हैं।''

''और आपके किरायेदार?''

''लड़की ने विवाह कर लिया है। यह तो आप पहिले ही जानते हैं। अपने पालन–पोषण में लगी वहीं रह रही है। लड़की अपने घर वाले के साथ विदेश में जाती रहती है। जब दिल्ली में आते हैं तो प्रायः अपनी कोठी में रहते हैं।

''मरियम की बात तो उसका मन ही जानता होगा। प्रत्यक्ष में वह कहती है कि उस को अपनी भूल का ज्ञान हो गया है। उसने अपने जीवन के दस वर्ष व्यर्थ में गँवाये थे। उसका पति तो उसको पहले ही विवाह के लिए कह रहा था।

''कुछ भी हो, ज्ञान कहो अथवा विवशता कहो, परिणाम ठीक ही हुआ है।''

सदानारायण की समझ में यह आ रहा था कि देश का नैतिक पतन भी तभी सुधर सकेगा जब या तो देश को अपनी भूल का ज्ञान होगा अथवा यह विवश होकर अपनी गतिविधि बदलेगा।

सायंकाल स्वामीजी भ्रमण के लिए निकले तो वे देखने में, कुछ दुर्बल प्रतीत होते थे। परन्तु उनकी आँखों में अभी भी चमक थी। मुख पर ओज था और टाँगों में स्थिरता थी। स्वामीजी ने अभी तक भी हाथ में लाठी लेने की आवश्यकता अनुभव नहीं की थी। सदानारायण ने चरण स्पर्श किये तो स्वामीजी ने मुस्कुराते हुए कहा, ''तो आ गये हो सदा!''

''जी।''

''कल विजय की पत्नी भी आ रही है।''

''तो उसका संदेश आया है।''

''नहीं। मैंने तो उससे सम्पर्क स्थापित कर उसका आने के लिए कहा है।''

''तो उसपर विशेष कृपा हुई है।''

''उतनी ही जितनी तुम पर है। वह पिछले जन्म की एक पुण्यात्मा है।''

''भापा! कुछ वर्ष और ठहर जाते तो ठीक नहीं था क्या?''

''क्या हो जाता मेरे ठहरने से?''

''आपकी सम्मति से हम कुछ तो देश और राष्ट्र की सेवा कर सकते।''

''केवल एक ही सेवा है जो की जा सकती है। वह है जन–जन को ज्ञानवान बनाना। तुम ज्ञान की परिभाषा जानते हो अतः उसके लिए अब मेरी

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
आवश्यकता नहीं। व्यवहार में परिवर्तन तो देश को किसी भारी ठोकर लगने से ही होगा।''

''कैसी ठोकर लगनी चाहिए।''

''युद्ध में पराजय। परन्तु मृत्यु नहीं।

''पराजित तो हिन्दू पहले भी होते रहे हैं। पाकिस्तान बनना तो महान पराजय ही माननी चाहिए।''

''ठीक है। ज्ञानवान को ठोकर लगे तो वह सुधर जाता है। अज्ञानी को ठोकर तो क्या उसकी मृत्यु भी उसे सन्मार्ग नहीं दिखा सकती।''

''देखो सदा। कर्म के बिना कुछ भी प्राप्त नहीं हो सकता। यह किसी अज्ञानी ने बात चला दी है कि ज्ञान ही मोक्ष का मार्ग है। ज्ञान कर्म की दिशा का निर्देशक है। फल तो कर्म से ही मिलता है। ज्ञान प्राप्ति भी कर्म का ही फल है। इस कारण मनुष्य को चाहिए कि कर्म तो करे ज्ञानयुक्त कर्म करे। फल मिलेगा।''

सदानारायण को विस्मय हुआ था कि भापाजी ने नीला को किस कारण बुलाया है। क्या वे उसके भविष्य के विषय में बताने वाले हैं। वह मन में विचार कर रहा था कि क्या विजय भी साथ आ रहा है।

स्वामीजी ने सदा के मन की बात को जानकर उसका समाधान करते हुए कहा, ''मैं चाहता नहीं था कि नीला को उसके पूर्वजन्म के रहस्य की बात बताऊँ। परन्तु विजय का व्यवहार उससे ठीक रहता प्रतीत नहीं हो रहा। इस कारण उसको बुला रहा हूँ।''

अगले दिन नीला ग्यारह बजे के लगभग पहुँच गई। सदानारायण उसको लेने के लिए बस स्टैंड पर गया था। नीला अपने श्वसुर को वहाँ उसकी प्रतीक्षा करते देख आश्चर्य करती थी।

''पिताजी! आप यहाँ आये हुए हैं।''

''हाँ, तुम्हारे आने की सूचना पाकर मैं बस पर लेने के लिए चला आया। यह विदित नहीं था कि विजय भी आ रहा है या नहीं।''

''नहीं, वे नहीं आये। परन्तु पिताजी! मेरे आने की सूचना आपको किसने दी है?''

''तुमने ही।''

नीला विस्मय में मुख देखती रह गई। नीला अपने साथ एक छोटा–सा सूटकेस ही लेकर आई थी। वह सदानारायण ने पकड़ लिया और दोनों आश्रम की ओर चल पड़े। मार्ग में ही बात हो गई। नीला ने कहा, ''मैं कई दिन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से मन में बेचैनी अनुभव कर रही थी। इसका कारण समझ नहीं आ रहा था। सुबोध के समय तो मुझको किसी प्रकार का कष्ट नहीं हुआ था। इस बार दिन चढ़ने पर चित्त अशांत रहने लगा है। परन्तु क्यों, समझ में नहीं आ रहा। सुबोध के समय भी मैं भापाजी से मिलने के लिए आई थी। और उन्होंने कहा था कि लड़का होगा। वह बहुत भाग्यशाली है। उसके आते ही उसके माता–पिता के जीवन में करवट आयेगी। सो वही हुआ है।

"अतः मैं विचार कर रही थी कि यहाँ आना चाहिए और उनकी सम्मति इस बच्चे के विषय में भी लेनी चाहिए। मैं सुबोध के पिता से यहाँ आने के लिए कह रही थी और हम यहाँ आना दिन–पर–दिन कर स्थगित करते जा रहे थे। कल लगभग चार बजे सांयकाल मुझे यह विचार आया कि मुझे आज ही आना चाहिए। मैं उसी समय उठी और उनके कमरे में जाकर बोली, 'हमें देवप्रयाग चलना चाहिए।'

'इसपर उन्होंने कहा कि 'मैं एक सप्ताह तक नहीं जा सकता।'

"मैंने कह दिया, 'तो मैं जा रही हूँ।'

'ये पूछने लगे कि 'किस लिए?'

"मैंने कह दिया, 'कह नहीं सकती। मेरी अन्तरात्मा कह रही है कि मुझे वहाँ जाना चाहिए।

"मैंने इधर चलने की तैयारी कर दी। वे मुख देखते रह गए। मैंने मोटरगाड़ी निकलवाई और दिल्ली के लिए चलने के लिए उसमें आ बैठी सुबोध के पिता आये और बोले कि यदि मैं एक–दो दिन तक ठहर जाऊँ तो वे भी चलेंगे।

"मैंने मन की अवस्था बताकर कह दिया कि यदि मैं अभी न गई तो मेरा प्राणान्त हो जावेगा।

"वे समझे नहीं। खड़े रहे और मैं मोटर भगा कर चली आई। परन्तु पिताजी, आपने कहा है कि मैंने यहाँ आने की सूचना भेजी है। मैंने तो सूचना नहीं भेजी। कल चार बजे से पूर्व तो मैं भी नहीं जानती थी कि मैं आ रही हूँ।"

सदानारायण ने मुस्कुराते हुए कहा, "इस पर भी तुम्हारे आने की सूचना यहाँ थी। इसका प्रमाण यह है कि मैं यहाँ उपस्थित हूँ।"

नीला को परेशानी में अपना मुख देखते सदानारायण ने कह दिया, "भापाजी बतायेंगे। यह बात तुम उनसे ही समझ सकोगी।"

नीला पहुँची तो रत्नलाल ने कहा, "नीला बेटी! शीघ्र तैयार हो जाओ,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
भापा तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे हैं।"

नीला ने जल्दी–जल्दी स्नान किया, वस्त्र बदले और चाय का एक प्याला पी भापा जी से मिलने के लिये उनकी गुफा में चली गई। रत्न उसे पहुँचाने गया था। नीला बैठी तो स्वामी जी ने कह दिया, "रत्न, तुम बाहर जाओ। और देखो भीतर कोई न आये।"

एक घंटे के बाद नीला बाहर आई। वह अपनी आँखों और गालों से आँसू पोंछ रही थी। गुफा के बाहर रत्न और सदानारायण खड़े थे। वे यह देख रहे थे कि कोई आश्रमवासी किसी कार्य से भी भीतर न जाने पावे।

नीला मुख पोंछती हुई बिना उनकी ओर देखे उस आवास की ओर चल पड़ी जहाँ उसे ठहराया गया था। रत्न और सदानारायण विस्मय में देखते हुए खड़े रह गये।

नीला अपने स्थान पर गई और भीतर से कुंडा चढ़ाकर आवास को बन्द कर दिया। रत्न चाहता था कि उससे पता करे कि क्या हुआ है। परन्तु दिन भर उसके आवास का द्वार नहीं खुला। वह सायंकाल निकली। उस समय स्वामी जी गुफा के बाहर खेत में टहल रहे थे और सब आश्रमवासी उनसे बातें करते हुए उनके साथ–साथ टहल रहे थे।

नीला कुछ देर तक सबको टहलता देखती रही। बाद में वह भी उनके साथ चलने लगी। कुछ देर तक टहल कर स्वामी जी पीपल के पेड़ के नीचे बैठ गए और सब लोग उनके सामने बैठ गए। आश्रम में उपस्थित सभी स्त्रियाँ भी वहीं बैठ गईं।

स्वामी जी ने कहा, "आज मैं जल्दी ही गुफा में चला जाऊँगा। दूध वहीं पर लूँगा। कल्याण दूध देने के लिए आयेगा। यदि हो सके तो आप सब लोग सूर्योदय के समय मेरी गुफा में मुझसे मिलने आइएगा। उसके उपरान्त ही मैं बाहर आऊँगा।"

सदानारायण नीला के मुख पर देखता रहा। उसने देखा कि स्वामी जी के उक्त बात कहने पर उसकी आँखें पुनः लाल हो गई थीं।

स्वामी जी उसकी ओर नहीं देख रहे थे। वे उठे और गुफा में चले गए। सदानारायण ने नीला के समीप पहुँच कर पूछा, "क्या बात है नीला?"

"कुछ विशेष बात नहीं। यह सबके साथ होता है। वही हो रहा है। पिताजी अब मुझसे और कुछ न पूछिये।" इतना कह कर वह भीतर चली गई।

आश्रमवासियों ने स्वामी जी के प्रातःकाल सबसे मिलने की बात को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साधारण बात समझा। सदानारायण और रत्न इसका अर्थ समझते थे। उनका विचार था कि इस महाप्रताण के रहस्य को नीला भी जान गई है।

प्रातःकाल सूर्योदय से पहले ही लोग स्वामी जी की गुफा में उपस्थित हो गए थे। स्वामी जी समाधि अवस्था में निश्चिन्त बैठे हुए थे।

एकाएक उन्होंने आँखें खोली और "हरि ओउम्, हरि ओउम्, हरि ओउम्" कहते हुए उनका सिर उनकी छाती पर लुढ़क गया।

: 13 :

स्वामी जी को गंगा जी में प्रवाह दिया गया। बहुत लोग एकत्रित हो गए थे और कीर्तन–भजन करते रहे। स्वामी जी के देहावसान की सूचना बम्बई, दिल्ली, कलकत्ता, जहाँ–जहाँ उनके परिचित थे, भेज दी गई।

नीला का पति विजय भी सूचना पाकर आ गया। वह नीला से मिला और अपना विस्मय प्रकट करने लगा, "नीला तुमको किसने यह सूचना दी?"

"भापा जी ने मुझे बताया था कि उन्होंने ही मुझको बुलाया था। मेरी आत्मा ने उनकी आवाज सुनी और मैं यहाँ चली आई। वास्तव में मेरी इच्छा हुई थी कि मैं स्वामी जी से मिलूँ। परन्तु यह इच्छा क्यों हुई थी मैं नहीं जानती। यह इच्छा इतनी प्रबल थी कि मैं इसका विरोध नहीं कर सकी। स्वामी जी का कहना था कि उन्होंने मुझे बुलाया था।

"यह सब उन्होंने बताया था और..."नीला चुप हो गई।"

विजय ने कुछ काल तक प्रतीक्षा कर पूछा, "और क्या?"

"उन्होंने मुझे अपने सामने बैठाया और मुझको कहा कि मैं आँखें मूँद लूँ। मेरे सामने एक लड़की की जन्म से मरणपर्यन्त पूर्ण कथा एक चलचित्र की भाँति चल गई। जब उस लड़की का देहान्त हो गया तो स्वामी जी ने बताया कि यह मेरे पूर्वजन्म की सत्य कथा है।

"मैं उस कथा को सुन अति दुःखी भी हुई और फिर सन्तोष भी अनुभव करती हूँ। वह एक पुण्यात्मा थी और मैं वह ही हूँ।"

"और वह कौन थी। कहाँ की थी और कब थी?"

"यह नहीं बताऊँगी। बताने से लाभ नहीं होगा। हानि हो सकती है।"

"मुझे भी।"

"वह मैं किसी को भी नहीं बताऊँगी।"

परन्तु एक बात हुई। नीला अपने श्वसुर और श्वसुर के भाई महात्मा रत्न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से लेखवती के विषय में अनेकानेक प्रश्न पूछती रहती थी।

एक बात और हुई। उसने फरीदाबाद में रहना छोड़ दिया और आश्रम में आकर रहना आरम्भ कर दिया। सुबोध विजय के पास रह गया। उसका दूसरा लड़का आश्रम में ही हुआ। वह भी उसने दो वर्ष का हो जाने पर फरीदाबाद भेज दिया। स्वयं वह संन्यासिनी का–सा जीवन व्यतीत करने लगी।

■ ■ ■

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

GURUKUL KANGRI LIBRARY

	Signature	Date
Access No.		
Class No.		
Cat No.		
Tag etc.		
E.A.R.		
Checked By		
Date Ent. By		
Misc.		

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय

गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

वर्ग संख्या R089.9143 GUR-A आगत संख्या 167893

167893

पुस्तक विवरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित 30वें दिन यह पुस्तक पुस्तकालय में वापस आ जानी चाहिए। अन्यथा 50 पैसे प्रतिदिन के हिसाब से विलम्ब शुल्क लगेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुदत्त

शिक्षाः एम. एस. सी.

8-12-1894 से 8-4-1989

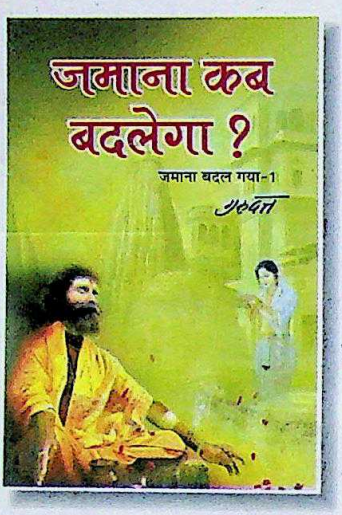

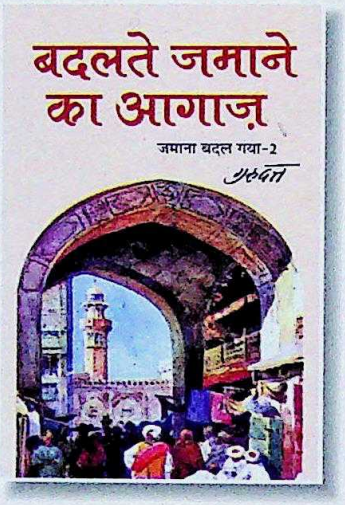

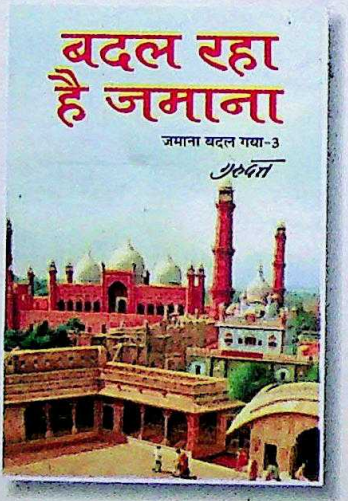

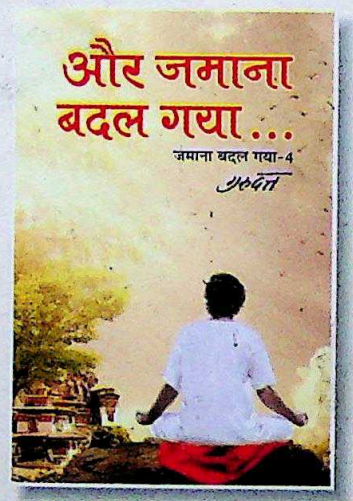

हिन्दी साहित्य सदन

2 बी.डी. चैम्बर्स, 10/54 देश बंधु गुप्ता रोड,
करोल बाग, नई दिल्ली-110005, फ़ोन- 9213527666, 7065618655
ई-मेल : indiabooks@rediffmail.com, hindisahityasadan@gmail.com
www.hindisahityasadan.com

9 789386 336767

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar